मनोहर कहानियाँ

चार्ल्स शोभराज के अन्तर्राष्ट्रीय अपराधों के प्रदर्शन पर कांग्रेस सरकार ने रोक क्यों लगाई थी?



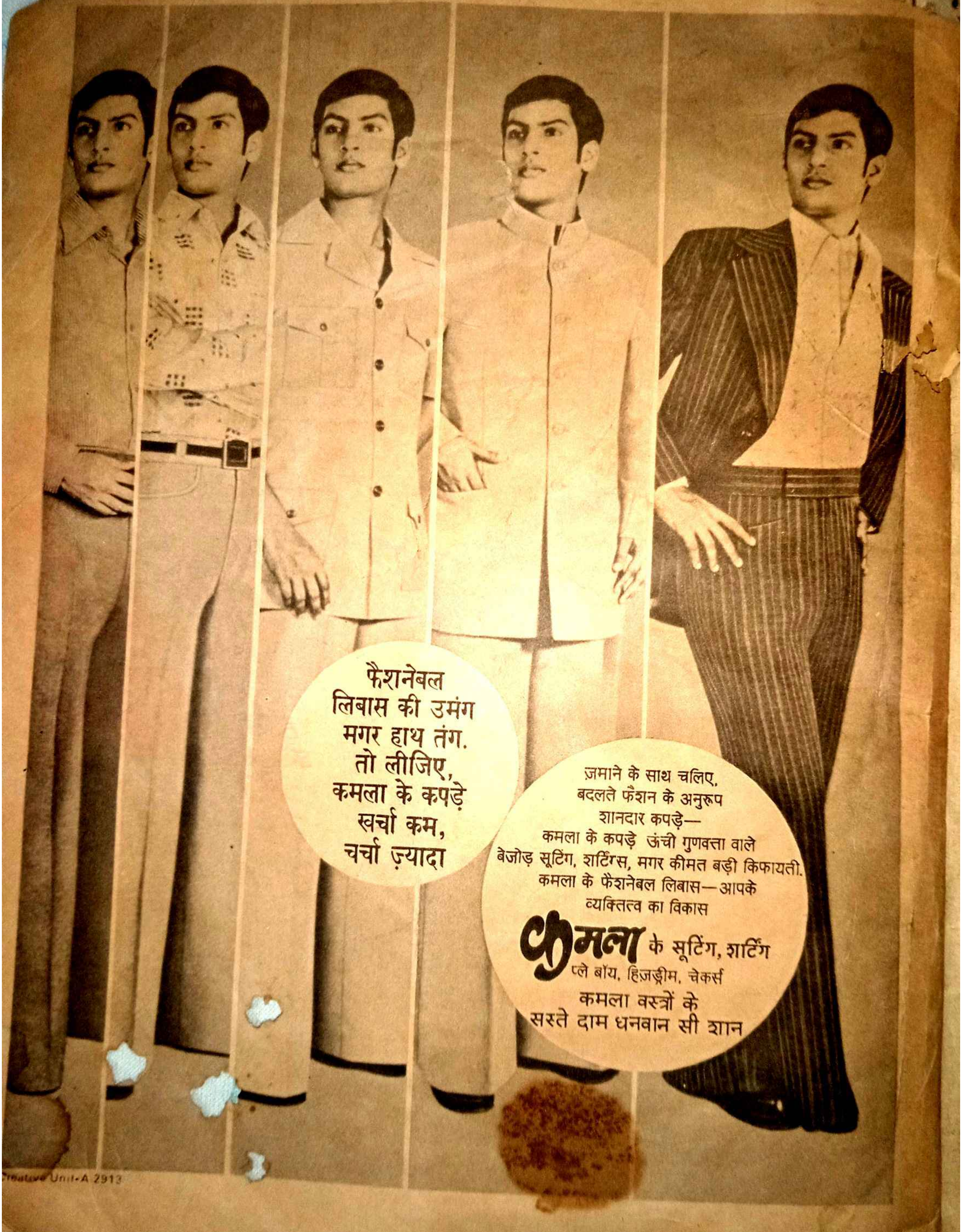
राजनेताओं के गुरु: तांत्रिक पी. एन. कपूर

कर्नल आनंद की मौत: हमारे अन्वेषकों की विशेष रिपोर्ट

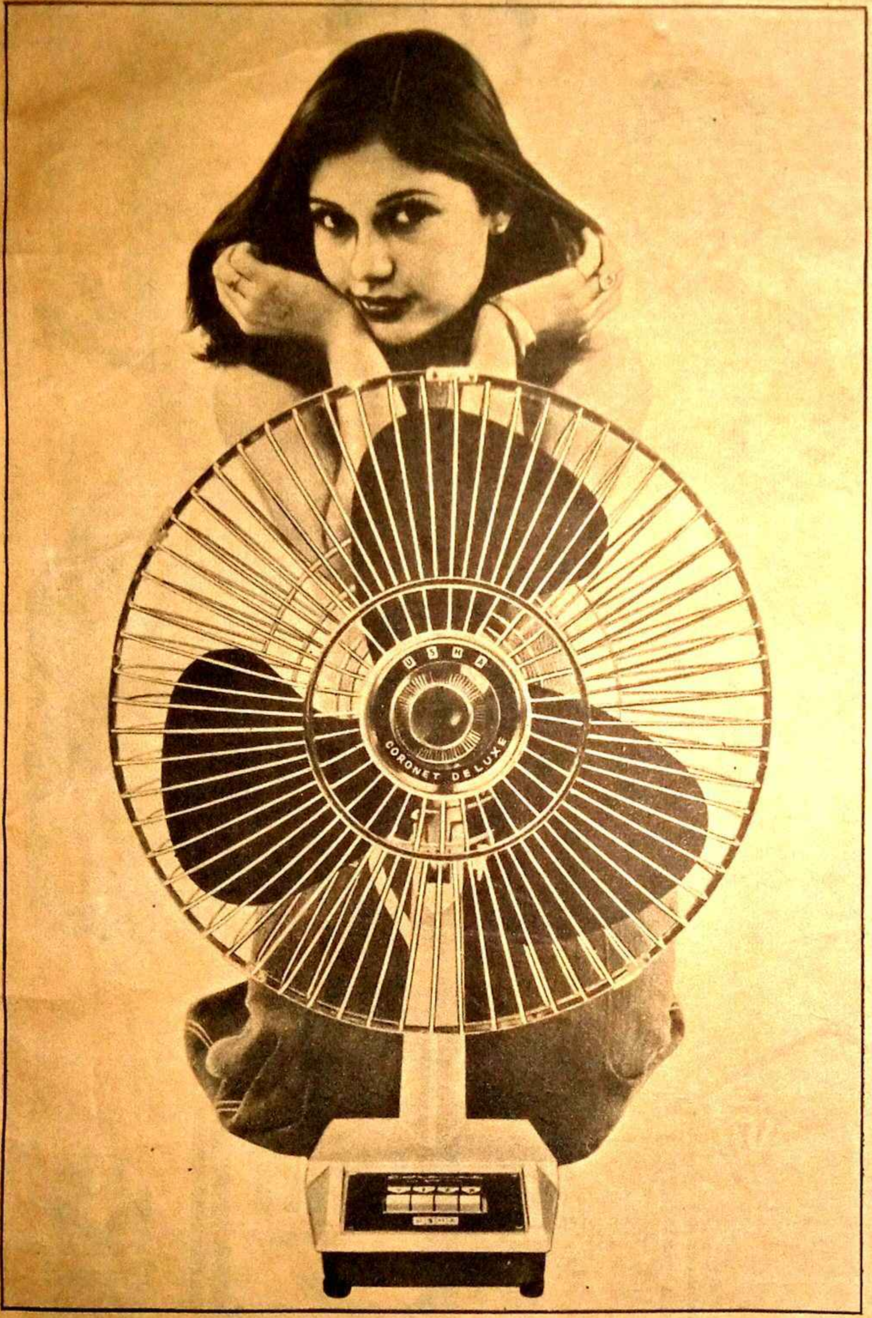




चार्ल्स शोभराज


फैशनेबल
लिबास की उमंग
मगर हाथ तंग.
तो लीजिए,
कमला के कपड़े
खर्चा कम,
चर्चा ज़्यादा
ज़माने के साथ चलिए,
बदलते फैशन के अनुरूप
शानदार कपड़े—
कमला के कपड़े ऊंची गुणवत्ता वाले
बेजोड़ सूटिंग, शर्टिंग्स, मगर कीमत बड़ी किफायती.
कमला के फैशनेबल लिबास—आपके
व्यक्तित्व का विकास
कमला के सूटिंग, शर्टिंग
प्ले बॉय, हिज़ड्रीम, चेकर्स
कमला वस्त्रों के
सस्ते दाम धनवान सी शान
Creative Unit-A 2913

सर्वाधिक विश्वसनीय पंखे उषा देते हैं।



इसके प्रमाण हैं-

उषा टेबलफ़ैन के नवीनतम डिज़ाइन ठीक ग्राकार वाले गाईस, सही ढंग से बने ब्लेड, खूबसूरत पियानो-किस्म के बटन ग्रौर हर किनारे तक मनमोहक रंगों की एक जैसी चिकनी सतह।

उषा टेबलफ़ैन शानदार हैं; हर तरह की सजावट के ग्रनुकूल ग्रौर विविध ग्राकर्षक रंगों में उपलब्ध। इतना होने पर भी ग्रापके पास पहुंचने से पहले इनकी हर प्रकार से जाँच कर ली जाती है।

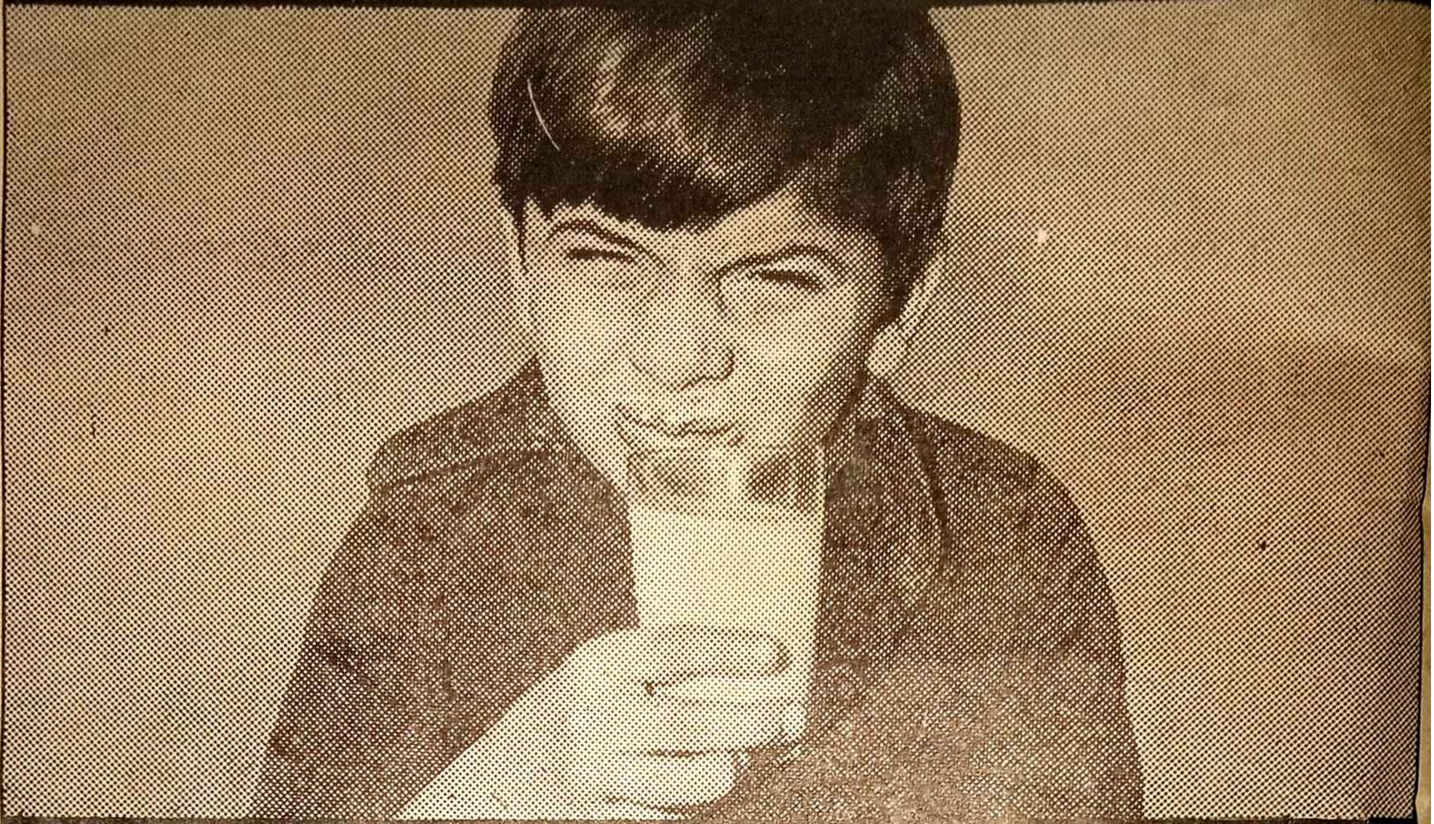
उषा पंखे शानदार हैं बनावट में, कार्य में, रंग में।

उषा टेबल फ़ैन

JEW-346B


उत्कृष्टता-सौंदर्यदायक
अरविंद की उत्कृष्टता १००% पोलिएस्टर की आकर्षक साड़ियां—आरती और भारती।
मुलायम व चिकना पोत कारीगरी का अनूठा नमूना—हमारी डोरिया तथा अन्य फुल वायल तथा बूटा साड़ियों की ही तरह।
अरविंद
जब हम उत्कृष्टता को इतना महत्व देते हैं तो फिर आप क्यों न दें?
अरविंद मिल्स
लालभाई ग्रुप के वस्त्र
Interpub/AM/12/77/HN
मेसर्स मोहन ब्रदर्स, क्लोक टावर, ७५२ चांदनी चौक, दिल्ली—६ * मेसर्स भँवरलाल मुठा एण्ड सन्स, एस.एम. एस. हाईवे, जयपुर * मेसर्स बन्सल ब्रदर्स, जी. टी. रोड, नाकोडर चौक, जलन्धर सिटी (पंजाब)

बहुत से बच्चे पर्याप्त दूध नहीं पीते यही कारण है कि उन्हें



कैल्शियम-सैंडोज़® गोलियों की ज़रूरत पड़ती है

भारत में अधिकांश बच्चे कैल्शियम के अभाव से पीड़ित हैं।

क्या आपका बच्चा भी उनमें से एक है? आपके बच्चे के दांतों और हड्डियों को आवश्यक मात्रा में कैल्शियम मिल रहा है या नहीं इसकी आप आसानी से जांच कर सकते हैं। क्या आपका बच्चा प्रति दिन तीन बड़े गिलास दूध पीता है? अगर नहीं तो उसे कैल्शियम-सैंडोज गोलियां अवश्य लेनी चाहिए।

कैल्शियम-सैंडोज़ मज़बूत दांतों तथा ठोस हड्डियों के विकास में मदद करती है। विटामिन सी, डी व बी१२ से भरपूर, रास्पबेरी के स्वादवाली कैल्शियम-सैंडोज़ गोलियों के ज़ायके का क्या कहना! बच्चे इसे बेहद पसंद करते हैं।



कैल्शियम-सैंडोज®-स्विटजरलेंड में सैंडोज द्वारा निर्मित विश्व में सर्वश्रेष्ठ कैल्शियम है।

दैनिक खुराक—४ गोलियां, दो गोलियां हर भोजन से पहले।



कैल्शियम-सैंडोज़®

मज़बूत दांतों तथा स्वस्थ हड्डियों के लिए

SANDOZ

daCunha/CS/19L HN

मनोहर कहानियाँ

भारत में सबसे ज्यादा बिकनेवाली मासिक पत्रिका

सितम्बर, १९७७

इस अंक में :


सुंदर कपड़े ज्यों
तन को सजाएँ
मुखड़े को
मोहक
पॉण्ड्स
बनाए
अपने मुखड़े को अपूर्व मोहक बनाइए,
पॉण्ड्स फ़ेस पाउडर के मृदुल रेशमी स्पर्श
से जगाइए अभिनव मोहक कांति,
चिर अम्लान शबनमी ताज़गी,
घंटों-पहरों तक...
पॉण्ड्स फ़ेस पाउडर,
जितना रेशमी स्पर्श
उतना मोहक रूप.
Pond's
FACE POWDER
Pond's

CPF.1462

सम्पादकीय

हमें यह कहना है

पिछले अंक में हमने आपात स्थिति के दौरान पुलिस की की गयी अमानवीय, बर्बर कार्यवाहियों का जिक्र करते हुए पुलिस विभाग की संरचना, व्यवहार, आचरण आदि पर जनता तथा सरकार से गम्भीरतापूर्वक विचार करने का आग्रह किया था। हमें प्रसन्नता है कि इस विषय पर अन्य समाचार-पत्रों ने भी इधर काफी लिखा है। आपात स्थिति के दौरान पुलिस की की गयी कार्यवाहियों का उद्घाटन जैसे-जैसे होता जा रहा है, पुलिस की समस्या और भी गम्भीर रूप धारण करती जा रही है।

हमारे देश में १९४२ के बाद भी एक ऐसी ही स्थिति उत्पन्न हुई थी, जब पुलिस के 'कारनामे' लोगों के सामने आये थे। इसी कारण देश के स्वतंत्र होने के बाद पुलिस में सुधार की मांग जोरों से उठायी गयी थी। लेकिन यह कितने आश्चर्य की बात है कि हमारी राष्ट्रीय सरकार ने इस विषय में कुछ भी नहीं किया और स्वतंत्रता के बाद जो पुलिस सहमी और आशंकित दिखायी पड़ रही थी, थोड़े दिनों बाद ही वह फिर उसी तरह डंडा उठाकर चलने लगी, जैसे अंग्रेजों के शासन-काल में चलती थी। यहां तक कि उन बदनाम पुलिस-अधिकारियों के विरुद्ध भी कोई कार्यवाही नहीं की गयी, जिन्होंने देशभक्तों पर वहशियाना जुल्म तोड़े थे। इसका परिणाम यह हुआ कि पुलिस समझ गयी कि शासक जो हो, उसे अपने विरोधियों को कुचलने के लिए और आम जनता को आतंकित करने के लिए उसकी (पुलिस की) जरूरत पड़ेगी ही। इसी परम्परा में पुलिस ने अपने नये मालिकों की जो अभूतपूर्व 'सेवा' आपात स्थिति के दौरान की, वह हमारे सामने है।

अब प्रश्न यह है कि नयी जनता सरकार भी क्या पुलिस की इसी परम्परा को कायम रखेगी या तोड़ेगी? पिछले तीन-चार महीनों में जनता सरकार के प्रवक्ताओं ने पुलिस के सम्बन्ध में जो वक्तव्य दिये हैं, केरल और दिल्ली के कुछ वरिष्ठ पुलिस-अधिकारियों के विरुद्ध जो कड़ी कार्यवाही की गयी है और गृह मंत्री श्री चरण सिंह ने पुलिस आयोग के गठन की जो बात कही है, इनसे लगता तो है कि नयी सरकार पुलिस के बारे में गम्भीरतापूर्वक कुछ सोच रही है और शायद वह पुलिस की इस भयानक परम्परा को तोड़ने के लिए कोई कदम उठाए। लेकिन कार्यवाही तेजी से हो, इसके लिए यह जरूरी है कि जनता सरकार पर अपना दबाव बराबर बढ़ाती जाए और नागरिक स्वतंत्रता, मानवीय अधिकार और समान न्याय की हामी संस्थाएं, संगठन तथा व्यक्ति अपना आन्दोलन तेज करें और सरकार के सामने पुलिस में सुधार के ठोस सुझाव रखें।

यह याद रखें कि कुछ पुलिस-अधिकारियों को पदच्युत करने, स्थानान्तरित करने, निष्कासित करने, अवकाश देने या दंडित करा देने से ही इस समस्या का समाधान होनेवाला नहीं है। यह सब तो पहले भी होता ही रहा है। आवश्यकता आमूल परिवर्तन की है, सम्पूर्ण पुलिस संगठन में, उसकी आचार-संहिता में और उसके जनता के साथ सम्बन्ध में। पुलिस मानवीय स्तर पर सबके साथ समान रूप से, सेवा-भाव तथा सज्जनता के साथ व्यवहार करे, इसके लिए सभी आवश्यक कदम शीघ्र-से-शीघ्र उठाने चाहिए। लोकतंत्र का यह सबसे बड़ा तकाजा है कि पुलिस लोकतांत्रिक ढंग से जनता के साथ आचरण करे और अपना आतंककारी दृष्टिकोण बदल कर मानवीय बने!

●

आपने लिखा है

आपकी पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियां पढ़कर लाखों युवक और युवतियां प्रेरणा प्राप्त करते हैं और नैतिक पतन और अपराधों से बचने का प्रयत्न करते हैं। सचमुच देश से अपराध प्रवृत्ति को समाप्त करने और नैतिक पतन को रोकने का जो काम आप कर रहे हैं, वह सराहनीय है। अगर आप इसी तरह इस महान कार्य में अपना योगदान देते रहे, तो मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि आपके प्रशंसकों की संख्या बराबर बढ़ती जाएगी।

—विनोद बहल, चंडीगढ़

'सरिता' के जून, १९७७ अंक में प्रकाशित शकुन्तला साह के 'असहाय पाठकों' वाले लेख के सम्बन्ध में 'मनोहर कहानियां' ने जो टिप्पणी दी है, उससे 'सरिता' का निहित मन्तव्य और षड्यंत्र पाठकों के सामने स्पष्ट हो गया है। ... आशा है कि पत्रिका भविष्य में भी पाठकों को ऐसे षड्यंत्र से आगाह कराती रहेगी।

—मनमोहन ठाकुर, सीतामढ़ी

मैं आपकी पत्रिका के सहयोग से एक अपराधी का हृदय-परिवर्तन करने में सफल हुआ।

आज से तीन वर्ष पूर्व, मैं बोकारो स्टील सिटी में एक कैमरामैन की हैसियत से काम करता था। वहां मेरा एक परिचित अव्वल दर्जे का ठग था, लेकिन साथ ही वह एक कुशल साहित्यकार और फोटोग्राफी-विशेषज्ञ भी था। वह अपनी अपराध-वृत्ति के कारण कई बार जेल जा चुका था। मेरे समझाने पर भी वह अपने बुरे कामों से बाज नहीं आया। फिर मैं हर महीने 'मनोहर कहानियां' अपने पैसे से खरीदकर उसे पढ़ने को देने लगा। आजकल मैं बेरमो में हूं। एक दिन अचानक ही वह मुझे मिल गया। उसने मुझे बताया, "मैंने तुम्हारी 'मनोहर कहानियां' से प्रेरित होकर अपराध करना छोड़ दिया। मैं इंडियन पुलिस सर्विस की परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुका हूं।"

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई। लेकिन इसका सारा श्रेय 'मनोहर कहानियां' को है।

—गोपाल प्रसाद अकेला, बेरमो

महोदय,

'चावल मिल का भूत' कहानी पढ़ी। यह कथा हम बड़े-बूढ़ों से विगत कई वर्षों से सुनते आ रहे थे। आज उस कथा को 'मनोहर कहानियां' में पढ़कर हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। श्री स्वर्ण सिंह विराट प्रशंसा के पात्र हैं कि उन्होंने इतनी वर्षों पुरानी कहानी को खोज कर पाठकों के समक्ष रखा।

—आर० पी० दीक्षित, दुर्ग

'मनोहर कहानियां' के अगस्त-अंक में आपके सम्पादकीय आलेख ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया। पुलिस व्यवस्था में व्याप्त विसंगति एवं भ्रष्टाचार पर आपके उद्गार सराहनीय हैं। आश्चर्य है कि स्वाधीनता-प्राप्ति के तीस वर्ष के पश्चात भी हमारे राष्ट्र में पुलिस की मनोवृत्ति में रंचमात्र भी परिवर्तन नहीं आया है।

—कामेश्वर प्रसाद सिंह, रांची

●

कर्नल आनंद

विशेष प्रतिनिधि द्वारा

पुलिस और सी० बी० आई० के यह घोषणा करने के बावजूद कि संजय गांधी के ससुर कर्नल आनन्द ने 'आत्महत्या' की थी, लोगों के मन में यह सन्देह ज्यों-का-त्यों बना हुआ है कि कर्नल आनन्द की मृत्यु के पीछे निश्चय ही कोई गहरा रहस्य है, जिसका उद्घाटन करने में पुलिस असफल रही है। हमारे अन्वेषक इस कांड के सभी पक्षों की विस्तृत विवेचना यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। पाठक स्वयं देखें कि पुलिस ने 'आत्महत्या' के पक्ष में जो प्रमाण प्रस्तुत किये हैं, वे कितने दोषपूर्ण हैं!



कर्नल आनंद : संदेहास्पद मृत्यु

गत ४ जून को संजय गांधी के ससुर ले० कर्नल तेजिन्दर सिंह आनन्द को पंजाबखोर गांव में उनके खेत से लगे उनके साले के खेत के पास मरा पाया गया। लाश के डाक्टरी परीक्षण से मालूम हुआ कि मृत्यु ४८ घंटे पहले हो चुकी थी। उनकी कनपटी में गोली का निशान था। मगर तमंचे का कहीं पता न था। पुलिस ने पहले कहा कि हत्या का मामला है, लेकिन बाद में कहा कि कर्नल आनन्द ने आत्महत्या की थी। तब मामला जांच के लिए सी० बी० आई० को सौंप दिया गया। मगर रहस्य ज्यों-का-त्यों बना हुआ है। एक गुत्थी सुलझती, तो दूसरी पैदा हो जाती है। गुत्थियां पारिवारिक और राजनीतिक हैं।

ले० कर्नल आनन्द की मृत्यु से एक ऐसा आदमी उठ गया जो एमरजेंसी, श्रीमती गांधी, संजय गांधी और अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों से संजय की साठ-गांठ के बारे में शायद सबसे अधिक जानता था।

पुलिस को सूचना किसने दी?

४ जून की शाम के तीन बजे टेलीफोन की घंटी बजी, तो इंसपेक्टर जनरल पुलिस श्री भवानीमल ने फोन उठाया। दूसरी तरफ से वह आवाज सुनायी पड़ी, जिसको सुनकर थोड़े दिन पहले आई० जी० ही नहीं, मंत्री भी थर-थर कांपते थे। मगर उस समय वह आवाज खुद कांप रही थी। वह आवाज संजय गांधी की थी। संजय बता रहा था, "मेरे ससुर ले० कर्नल आनन्द २ जून से गायब थे। अभी-अभी खबर मिली है कि पंजाब खोर गांव में उनकी लाश पायी गयी है। शायद किसी ने उनकी हत्या कर दी है।"

लेकिन संजय गांधी की यह सूचना प्रथम सूचना रिपोर्ट में दर्ज नहीं है। क्यों? डिप्टी इंसपेक्टर जनरल श्री मंदर का कहना है कि नांगलोई पुलिस थाने में किसी ने गुमनाम टेलीफोन से इत्तिला दे दी थी, इसलिए आई० जी० को गुप्त सूचना प्रथम सूचना रिपोर्ट में देने की आवश्यकता नहीं थी। नांगलोई पुलिस ने सूचना देनेवाले का न तो नाम जानने की कोशिश की और न इसी बात की जांच की कि फोन नांगलोई से किया गया था या दिल्ली से। पंजाबखोर गांव से तो फोन आने की कोई सम्भावना ही नहीं थी, क्योंकि उस गांव में एक भी फोन नहीं है।

इस स्थिति में सहज ही यह संदेह पैदा होता है कि कहीं नांगलोई पुलिस थाने को भी संजय गांधी ने ही सूचना न दी हो और अगर दी थी, तो उसे नाम छिपाने की क्या आवश्यकता थी?

जो हो, आई० जी० भवानीमल, डी० आई० जी० मंदर और एस० पी० सेंट्रल, निखिल कुमार घटना-स्थल पर पहुंच गये। नांगलोई थाने की पुलिस तो वहां मौजूद थी ही।

उन्होंने देखा कि कर्नल आनन्द का शव उनके खेत से लगभग ३०० गज दूर, उनके साले के खेत के पास पड़ा था। शरीर चित पड़ा था, बिल्कुल सीधा, पैर बिल्कुल सीधे और जुड़े हुए थे और हाथ भी दोनों ओर सीधे पड़े थे। लगता था कि कर्नल सो रहे हैं। उनकी पीठ के नीचे अखबार बिछे हुए थे और सिर सिंचाई की नाली की नन्हीं मेंड़ पर टिका हुआ था। उनकी दाहिनी कनपटी से होकर गोली बायें कान के ऊपर से निकल गयी थी। लहू बह कर सूख चुका था। एक विचित्र बात यह थी कि माथे पर खून की लकीर



घटनास्थल पर पहरा देते सिपाही

दिखाई दे रही थीं और बायें पांव की पिंडली के नीचे पायजामा खून से रंगा हुआ था।

वहां इतने बड़े-बड़े अधिकारी मौजूद थे, फिर भी जांच का काम स्थगित कर दिया गया, क्योंकि अंधेरा हो रहा था और वहां बिजली की रोशनी नहीं थी। क्या परीक्षण अधिकारी यह बात नहीं जानते थे कि उस गांव में बिजली बहुत कम थी? क्या वे जांच के लिए रोशनी की व्यवस्था नहीं कर सकते थे?

लाश को अगले दिन सुबह ३ बजे पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। इतनी देर करने का क्या कारण था?

पुलिस ने छानबीन में जान-बूझकर देर की, इसका सन्देह एक और तथ्य से भी होता है। बताया जाता है कि उस क्षेत्र में डी० डी० टी० छिड़कने वाले एक मलेरिया-उन्मूलन दल ने कर्नल आनन्द की लाश दोपहर में ही देखी थी और उन्होंने अपने अधिकारी को खबर दी थी कि वे उस क्षेत्र में छिड़काव करने नहीं जा सके, क्योंकि वहां एक लाश पड़ी थी। मलेरिया कार्यालय से इसकी खबर लगभग ३ बजे शाम को पुलिस को दी गयी। तब फिर पुलिस वहां शाम के साढ़े सात बजे क्यों पहुंची? इस बीच संजय गांधी और उच्च पुलिस के बीच या उन अधिकारियों और उच्च अधिकारियों के बीच क्या वार्त्ता हुई, इसकी पूरी रिपोर्ट मिले, तो इस देरी का कारण प्रकट हो सकता है। पहली सूचना रिपोर्ट में इन बातों का कोई उल्लेख नहीं है। हां, पुलिस के प्रवक्ता ने ४ जून को पत्रकारों को बताया कि उन्हें लगभग ३ बजे उस लाश के पड़े होने की सूचना मिल गयी थी। मगर बाद में पुलिस ने यह बयान देना शुरू किया कि उन्हें सूचना लगभग ७ बजे शाम को एक गुमनाम आदमी से टेलीफोन पर मिली थी।

पहली सूचना रिपोर्ट और पुलिस के बयान में एक और खामी दिखायी देती है। रिपोर्ट में दर्ज किया गया है कि जब पुलिस घटना-स्थल पर पहुंची, तो मृतक के एक भाई कर्नल एस० [illegible]० आनन्द और साले कुलदीप सिंह को वहां खड़े पाया गया। मगर उसी दिन पत्रकारों को सूचना देते हुए पुलिस ने कहा कि मृतक कर्नल आनन्द के या संजय गांधी के परिवार से कोई भी वहां नहीं आया, हालांकि उन्हें सूचना भेज दी गयी थी।

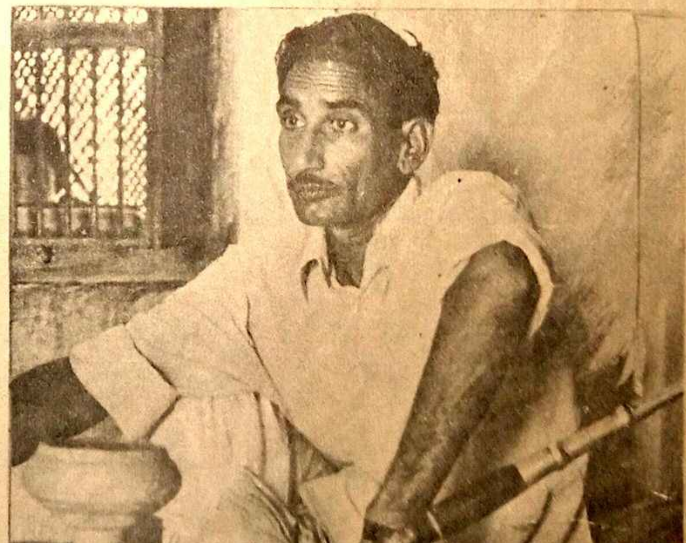
कर्नल आनन्द गांव क्यों और कैसे पहुंचे

पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पुलिस की इस आशंका की पुष्टि हुई कि कर्नल आनन्द की मृत्यु ४८ घंटे पहले यानी २ जून की शाम को ७-८ बजे के बीच हुई थी। प्राणलेवा गोली उनकी कनपटी के पास तमंचा सटा कर मारी गयी थी और उस समय वे लेटे हुए थे। उनकी मृत्यु उसी समय हो गयी थी। उनके खेत-मजदूर प्यारेलाल ने, जो वहां काम कर रहा था, उन्हें शाम सात बजे तक जीवित देखा था।

मगर कर्नल आनन्द वहां क्यों और कैसे गये थे?

पुलिस और पत्रकारों की छानबीन से पता चला कि कर्नल आनन्द (नयी दिल्ली) डिफेंस कालोनी के अपने निवास-स्थान से १ जून की शाम को रवाना हुए थे और चलते समय उन्होंने अपनी नौकरानी से ५ रु० उधार लिये थे। यह आश्चर्य की बात है कि लखपति होते हुए भी उन्होंने अपनी नौकरानी से ५ रु० उधार क्यों लिये? उन्होंने अपनी पत्नी या अन्य किसी से रुपये क्यों नहीं मांगे? अगर उनकी पत्नी उस समय घर पर नहीं थीं, तो क्या वे अपनी यात्रा सुबह तक के लिए स्थगित नहीं कर सकते थे? रात में गांव जाने की क्या जरूरत थी?

कर्नल शायद मानसिक रूप से बेहद परेशान थे। इसलिए शायद वे सारी रात पैदल चले और सुबह ५ बजे, ४० मील की दूरी तय कर पंजाब खोर गांव पहुंचे। सुबह ५ बजे उस गांव में किसी भी दिशा से कोई बस नहीं आती। कर्नल के पास कार थी। मगर वे अपने गांव



ओमप्रकाश

अक्सर बस से ही जाते थे। मगर १ जून को उन्होंने पैदल यात्रा ही की।

उन्होंने अपने मित्र शेरसिंह का दरवाजा खटखटाया। शेरसिंह कई बसों का मालिक है और बताया जाता है कि इस व्यवसाय को जमाने में उसे कर्नल आनन्द से बड़ी सहायता मिली थी। कर्नल आनन्द शेरसिंह के घर पर हमेशा अपना एक जोड़ा कपड़ा रखते थे ताकि वहां टिकने पर वे अपने कपड़े बदल सकें। कर्नल का अपना मकान अभी बन रहा था।

शेरसिंह के यहां कुछ समय बिताने के बाद कर्नल एक और मित्र उमेदसिंह के घर गये। उमेदसिंह इलैक्ट्रीशियन है और चक्की चलाता है। उसके यहां कर्नल ने गर्मी बहुत होने की शिकायत की, तो उमेदसिंह ने उन्हें अपने भाई भीमसिंह के यहां ले चलने का प्रस्ताव रखा। भीमसिंह का घर गांव के उन चंद घरों में से एक है, जिनमें बिजली है। भीमसिंह जौंटी गांव के स्कूल में अध्यापक हैं।

भीमसिंह ने बताया कि कर्नल आनन्द उसके यहां पहुंचे, तो वे बेहद थके हुए दिखायी पड़ रहे थे। उन्होंने भीमसिंह से पूछा, "क्या मैं दोपहरी आपके यहां बिता सकता हूं?"

भीमसिंह ने अतिथि को आराम देने का पूरा प्रयास किया, चाय और ठंडा शर्बत दिया और भोजन भी कराया। कर्नल आनन्द ने बहुत कम खाया।

इसके बाद भीमसिंह दिल्ली चला गया, जहां उसे शिक्षा विभाग में कोई काम था। वह शाम को ४ बजे लौटा, तो कर्नल उसके घर पर ही थे। कर्नल ने बताया कि दोपहर में लगभग तीन घण्टे तक बिजली गायब थी और बच्चों ने पंखा करने के लिए एक पुराना अखबार दे दिया था। भीमसिंह ने देखा कि कर्नल उस अखबार में वह खबर बड़ी गम्भीर मुद्रा में पढ़ रहे थे, जिसमें बंसीलाल को कांग्रेस से निकाले जाने की घोषणा थी। वे बार-बार अखबार में छपी बंसीलाल, विद्याचरण शुक्ल और संजय गांधी की तस्वीरें भी देख रहे थे।

बात राजनीति पर चल निकली। भीमसिंह ने कर्नल से पूछा, "क्या श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित के राष्ट्रपति बनने की आशा है?"

कर्नल साहब का ख्याल था कि राष्ट्रपति पद पर अशोक मेहता के चुने जाने की सम्भावना अधिक थी।

शाम छः बजे भीमसिंह के घर शाम का खाना बनने की बात उठी,



वीरेन

तो कर्नल आनन्द ने कहा, "मेरे लिए खाना न बनाएं। खाने की कतई इच्छा नहीं है।"

भीमसिंह ने जोर दिया, तो उन्होंने कहा कि वे शेरसिंह के यहां खाएंगे। उसके बाद कर्नल आनन्द शेरसिंह के घर जाने की बात कह कर चल पड़े थे।

मगर कर्नल अपने खेत पर पहुंच गये। वहां तड़के उन्होंने अपने नौकर प्यारेलाल से खेती की कटाई की बाबत पूछा। शाम को फिर इसी सिलसिले में उन्होंने प्यारेलाल से बात की। उससे छुट्टी करने को कहा। प्यारेलाल इस तरह अन्तिम व्यक्ति था, जिसने उन्हें जीवित देखा था।

उसके बाद कर्नल आनन्द हवाखोरी के लिए निकले। लोगों का कहना है कि वे खेतों में हवाखोरी के लिए कभी नहीं जाते थे, वे पक्की सड़क पर सैर करते थे। मगर उस दिन खेतों की ओर क्यों गये?

कर्नल का मित्र उमेदसिंह कर्नल को खोजते हुए भीमसिंह के यहां पहुंचा, तो उसे मालूम हुआ कि कर्नल तो शाम को ही चले गये थे। तब उन दोनों ने कर्नल को खोजना शुरू किया, तो गांव के एक लड़के ने बताया कि उसने कर्नल साहब को गांव के पास एक बस में चढ़ते देखा था। उमेदसिंह को आश्चर्य हुआ कि कर्नल बिना कुछ बताये वापस दिल्ली कैसे चले गये।



संजय-मेनका के विवाह के अवसर पर पीछे श्री राजीव, श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री कर्नल आनंद।

परिवार ने पुलिस में रिपोर्ट क्यों नहीं लिखायी ?

अगले दिन कर्नल आनन्द का एक नौकर गुरुदेव सिंह भीमसिंह के पास आया और उसने बताया कि कर्नल आनन्द दिल्ली नहीं पहुंचे थे। उसने भीमसिंह से स्कूटर मांगा, ताकि वह कर्नल की खोज कर सके। स्कूटर का साइलेंसर खराब था, इसलिए भीमसिंह उसको ठीक कराने के लिए निकल पड़ा था। वह लौटकर आया, तो गुरुदेव सिंह नदारद था।

बताया जाता है कि इसके पहले शेरसिंह ने प्यारेलाल को कर्नल का पता लगाने के लिए दिल्ली भेज दिया था। प्यारेलाल ने दिल्ली जाकर कर्नल के परिवार के लोगों से कर्नल के बारे में पूछा। लेकिन तब भी परिवार के किसी सदस्य ने कर्नल आनन्द के गायब होने के विषय में पुलिस को कोई रिपोर्ट नहीं की। उन्होंने ड्राइवर गुरुदेव सिंह को प्यारेलाल के साथ गांव भेज दिया।

गुरुदेव सिंह के वहां पहुंचने से पहले गांव के कुछ लड़कों ने मलेरिया उन्मूलन दल के लोगों को यह बातचीत करते सुना था कि खेत के पास एक लाश पड़ी है। इन लड़कों में कर्नल आनन्द के एक नौकर उमेदसिंह का लड़का भी था। उससे खबर पाकर उमेदसिंह, प्यारेलाल और गुरुदेव सिंह खेत पर पहुंचे और लगभग ४ बजे शाम को उन्होंने वहां लाश पड़ी देखी। तब भी उन्होंने पुलिस में कोई रिपोर्ट नहीं की।

गुरुदेव सिंह ने कर्नल के परिवार वालों को सूचना देने के लिए दिल्ली जाने का फैसला किया। वह बस स्टैण्ड पर पहुंचा, तो उसने देखा कि कर्नल आनन्द के एक भाई डा० एस० एस० आनन्द अपनी पत्नी के साथ पहुंच गये थे।

कर्नल आनन्द की पत्नी श्रीमती अमितेश्वरी लगभग सवा आठ बजे घटना-स्थल पर पहुंचीं। उनके साथ डा० एस० एस० आनन्द की पत्नी भी थीं। श्रीमती अमितेश्वरी अपने पति की लाश से कोई तीन गज दूर खड़ी हुई और उन्होंने हाथ जोड़कर और आंखें मूंदकर लगभग तीन-चार मिनट तक ईश्वर से कोई प्रार्थना की। फिर चुटकी से मिट्टी उठाकर उन्होंने माथे से लगायी और बैठ गयीं।

प्राण लेवा गोली छः दिन बाद मिली

वह प्राणलेवा गोली जो कनपटी के पास मस्तक चीरकर निकल गयी थी, क्यों छः दिन तक गायब रही ? यदि वह आत्महत्या का मामला था तो मृतक की पिस्तौल कहां गयी ?

पुलिस की जांच का सबसे परेशान करने वाला पहलू यह है कि हालांकि धातु का पता लगानेवाले यंत्र का व्यापक रूप से उपयोग किया गया, मगर घातक गोली छः दिन के बाद मिली। लाश जिस स्थिति में पड़ी हुई मिली थी, उससे पुलिस का अनुमान था कि गोली कर्नल के सिर के पास ही कहीं जमीन में धंस गयी होगी। सिर के नीचे जो अखबार था, उसमें गोली का छेद होना बताया गया, यानी गोली दाहिनी कनपटी को चीरकर जब सिर की बायीं ओर से बाहर निकली थी तो वह अखबार में छेद करती हुई जमीन में समा गयी थी। मगर गोली एक खड्ड में एक ईंट के नीचे बरामद हुई !

विशेषज्ञों का कहना है कि अगर धातु का पता लगानेवाले यंत्र का उपयोग किया गया था, तो कोई ईंट बाधक नहीं हो सकती थी। गोली मिलने की जगह लाश से १०० गज दूर बतायी जाती है, जब कि विशेषज्ञों का कहना है कि .३२ गोली सिर छेद कर पार करने के बाद हद-से-हद छः गज दूर और जा सकती है।

यह भी एक संयोग ही है कि जिस दिन गोली मिली, उसी दिन पुलिस ने कस्टम दफ्तर में जाकर यह जानकारी हासिल की कि गत वर्ष नवम्बर में अमेरिका से कर्नल आनन्द एक रिवाल्वर लाये थे, जिसमें .३२ गोली इस्तेमाल की जाती थी। और यह भी एक संयोग ही है कि कर्नल आनन्द ने कारतूस १६ अप्रैल को खरीदे थे, जिस दिन सुबह के समाचार पत्रों में खबर छपी थी कि बंसीलाल को कांग्रेस से निकाल दिया गया और विद्याचरण शुक्ल को डांट पिलायी गयी।

मगर रिवाल्वर कहां गया ? प्यारेलाल का बयान है कि ४ जून को जब वह गुरुदेव सिंह के साथ घटना-स्थल पर गया था, तो लाश के दायें हाथ के पास रिवाल्वर पड़ा हुआ था। गुरुदेव सिंह ने उसे उठा लिया और अपनी कमर में खोंस लिया। प्यारेलाल का ख्याल है कि उसी रिवाल्वर से उसके मालिक की हत्या की गयी थी।

गुरुदेव सिंह ने शुरू में यह स्वीकार किया कि उसने रिवाल्वर उठाया था और आनन्द-परिवार के एक सदस्य को दे दिया था। मगर बाद में उसने बयान बदल दिया और इससे इनकार कर दिया। पुलिस के हिरासत में अधिकारियों के सारे 'उपायों' के करने के बावजूद उसने फिर वह बयान नहीं दिया।

फिर भी पुलिस का ख्याल है कि गुरुदेव सिंह ने रिवाल्वर परिवार के उस सदस्य को दिया था, जो घटना-स्थल पर सबसे पहले पहुंचा था। ध्यान रहे कि स्व० कर्नल आनन्द के साले और भाई



कर्नल आनन्द के अंतिम संस्कार के अवसर पर श्रीमती गांधी और संजय।

डा० एस० एस० आनन्द ४ जून को घटना-स्थल पर पहुंचे थे और फिर गुरुदेव सिंह के साथ वे दिल्ली लौट गये थे। दिल्ली जाते हुए उन्होंने नांगलोई के पेट्रोल पम्प के फोन से श्रीमती अमितेश्वरी से सम्पर्क किया था। उसके बाद वे अपनी कार में सीधे दिल्ली चले गये थे। उन्होंने भी पुलिस में कोई रिपोर्ट नहीं की।

कर्नल के परिवार के लोगों को यह रिवाल्वर छिपाने में कोई 'दिलचस्पी' हो सकती है, इसका एक प्रमाण इस तथ्य से भी मिलता है कि जब पुलिस ने पहली बार डिफेंस कालोनी के मकान की तलाशी ली थी, उन्हें वे कारतूस नहीं मिले थे, जो अप्रैल में कर्नल आनन्द ने खरीदे थे। मगर जब दूसरी बार पुलिस ने तलाशी ली, तो कर्नल आनन्द की मेज की दराज में वे कारतूस मिल गये। इससे मालूम होता है कि पहली तलाशी के समय कारतूस छिपा दिये गये थे, मगर जब तलाशी का भय नहीं रहा फिर कारतूस यथा-स्थल रख दिये गये थे।

पुलिस का ख्याल है कि कर्नल आनन्द की मृत्यु हत्या करने से हुई, यह सिद्ध करने में परिवार के सदस्यों को गहरी दिलचस्पी है। इसका मुख्य कारण है कर्नल आनन्द के बीमे की रकम। कर्नल आनन्द के तीन बीमों की रकम ५०,००० रु० है। बीमों में जो 'डबल' रिस्क की व्यवस्था है, उसके कारण परिवार को १ लाख रु० मिल सकते हैं, बशर्ते कि यह सिद्ध हो जाय कि कर्नल आनन्द की हत्या की गयी थी। लेकिन अगर आत्महत्या सिद्ध हो जाए, तो एक भी पैसा नहीं मिलेगा।

'संजय के लिए चिन्ताएं बर्दाश्त के बाहर हो गयीं'

पुलिस और सी० बी० आई० का ख्याल है कि कर्नल आनन्द ने आत्महत्या की। उनकी इस धारणा का मुख्य आधार वह पुर्जा है, जो कर्नल की जेब में मिला था। उस पुर्जे में लिखा है: 'संजय की समस्या से दम घुट रहा है।'

कर्नल आनन्द के शव के पास जो दो अखबार पाये गये थे, उन दोनों में संजय गांधी की मारुति कार फैक्टरी के बारे में मुखपृष्ठ पर लेख हैं।

ध्यान रहे कि कर्नल आनन्द को सेना से मुक्त होने के बाद श्रीमती गांधी के कैबिनेट सेक्रेटेरियट की मातहत जासूसी संस्था 'रा' (तथा कथित शोध-विश्लेषण विभाग) में प्रमुख अधिकारी के रूप में नियुक्त कर लिया गया था। एमरजेंसी के दौरान कर्नल आनन्द संजय की 'चौकड़ी' के साथ घनिष्ट रूप से सम्बद्ध थे। यह 'चौकड़ी' लोगों को आतंकित ही नहीं कर रही थी, रुपया बनाने का काम भी कर रही थी। कर्नल आनन्द पर रुपयों की बौछार होने लगी थी। सेना की सिगनल कोर का यह अफसर रातों-रात तमाम तरह के देशी-विदेशी उद्योगों का सलाहकार बन गया था। अकेले कृष्ण कुमार बिड़ला उन्हें २,२०० रु० प्रति मास वेतन, ६५० रु० मकान-किराया, पेट्रोल सहित कार, ड्राइवर की तनख्वाह और एक नौकर की तनख्वाह दिया करते थे, क्योंकि वे बिड़ला की एक कम्पनी 'श्री सर्विसेज एण्ड ट्रेडिंग कम्पनी' के सलाहकार बना लिये गये थे। नारंग उद्योग से भी उन्हें लगभग इतनी ही रकम मिलती थी। इसके अलावा वे तोशीबा आनन्द के भी 'सलाहकार' थे। और पश्चिमी जर्मनी की फर्म देमाग से भी सम्बद्ध थे।

इन सूत्रों से कर्नल आनन्द ने कितनी दौलत जमा कर ली थी। इसका अनुमान इसी एक तथ्य से लगाया जा सकता है कि हाल में कर्नल आनन्द ने जोर बाग में कोठी खरीदी थी, जिसकी कीमत ८-१० लाख आंकी जाती है।

मार्च के चुनावों में कांग्रेस और उसके साथ ही संजय की 'चौकड़ी' का सूर्यास्त होने के बाद कर्नल आनन्द को चारों ओर अंधेरा-ही-अंधेरा नजर आने लगा था, तो कोई आश्चर्य नहीं। पूंजीपतियों ने उनकी 'सलाहकारी' खत्म कर दी और परिणामस्वरूप नेहरू प्लेस जैसी शानदार जगह में स्थित कर्नल आनन्द का कंसल्टेंसी आफिस बन्द हो गया।

हत्या या आत्महत्या की पहली कोशिश ?

कर्नल आनन्द के मित्र बताते हैं कि मार्च के संसद चुनाव में कांग्रेस की पराजय के बाद से ही कर्नल आनन्द मौन और उदास रहने लगे थे। वर्ना वे बड़े खुशमिजाज आदमी थे और राजधानी में होनेवाली पार्टियों में सपत्नीक भाग लिया करते थे। मगर अब वे अकेले रहना पसंद करते थे। अधिकांश समय वे आंखें मूंदे चारपाई पर लेटे रहते थे। उन्हें शराब पीने का कोई विशेष शौक नहीं था। वे सोने की गोलियां खाने लगे थे।

३० मार्च को एक पार्टी से वे रात में काफी देर से लौटे और तुरन्त सो गये। सुबह जब वे देर तक नहीं जागे, तो परिवार के लोगों ने देखा कि वे बेहोश पड़े थे। उनके भाई डा० एस० एस० आनन्द को बुलाया गया, जो उन्हें अचेत अवस्था में ग्रेटर कैलाश के एक प्राइवेट अस्पताल में ले गये। वहां पता लगा कि कर्नल नींद की अधिक गोलियां खा लेने के कारण बेहोश हो गये थे।

एक साप्ताहिक ने कर्नल आनन्द का नाम लिये बिना अपने २४ [...] अंक में लिखा था कि एक रिटायर्ड कर्नल जिनके पिछली सरकार के एक उच्चाधि[...] व्यक्ति से सम्बन्ध हैं हाल में एक नर्सिंग होम से बाहर आये, जहां [...] से लगे घावों के लिए उनकी चिकित्सा की गयी। इस रिपोर्ट के अनुसार कर्नल आनन्द का घायल अवस्था और किसी नशीली चीज के सेवन से बेहोश हालत में भर्ती किया गया था। इस साप्ताहिक ने यह भी कहा था कि पिछली सरकार के एक वी० आई० पी० से सम्बद्ध एक गिरोह ने कर्नल पर हमला किया था। हाल ही में उस व्यक्ति से कर्नल के मतभेद पैदा हो गये थे और कर्नल देश छोड़ने की योजना बना रहे थे।

जमीन का झगड़ा : संजय के जुल्मों का बदला ?

सवाल उठता है कि अगर कर्नल आनन्द को आत्महत्या ही करनी थी, तो वे इतनी दूर पंजाब खोर गांव क्यों आये? रिवाल्वर की गोली से सुनिश्चित मृत्यु तो दिल्ली में भी हासिल की जा सकती थी। फिर वे अपने साले के खेत के पास मरने क्यों गये? क्या कुछ जमीन-जायदाद के झगड़े भी इस वारदात की जड़ में थे?

झगड़ा एमरजेंसी से दो साल पहले शुरू हुआ। १९७३ में कर्नल के साले महिन्दरपाल सिंह के पिता सर दातार सिंह की मृत्यु हो गयी। वे १९६[.] में गृह मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव पद से रिटायर हुए थे और कृषि मंत्रालय में 'सलाहकार' के रूप में नियुक्त कर दिये गये थे।

सर दातार सिंह के पास पाकिस्तान के मोंटगुमेरी जिले में लगभग १०,००० एकड़ का भारी फार्म था। विभाजन के बाद उन्हें उसके एवज में ३०० एकड़ कृषि-भूमि दिल्ली के पास मिली। १९५२ में भूमि की हदबन्दी से बचने के लिए इस भूमि का बंटवारा माता, पिता, दोनों बेटे और दोनों बेटियों के बीच कर दिया गया था। १९६० में सर दातार सिंह और उनकी पत्नी ने अपना हिस्सा विवाह की भेंट के रूप में महिन्दरपाल सिंह को दे दिया। महिन्दरपाल सिंह एक बड़ी व्यापारिक कम्पनी में अफसर हैं, मगर उन्हें खेती से बड़ा शौक है। उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों तथा कुछ अन्य लोगों को मिलाकर 'मोंटगोमेरी सहकारी समिति' बनायी।

पता चला है कि आनन्द के परिवार के सदस्यों ने भोपाल की जमीन बेचकर मेनका की शादी के लिए दहेज जुटाया था। दहेज में एक १०,००० रु० की शातूश शाल भी दी गयी थी। एक काफी बड़ी रकम मेनका गांधी को स्त्री धन के रूप में भी प्राप्त हुई थी। उस समय तक संजय गांधी का दहेज विरोधी अभियान आरम्भ नहीं हुआ था।

मेनका का विवाह संजय के साथ होते ही कर्नल आनन्द 'चौकड़ी' के चोबदार बन गये थे और चारों तरफ उनकी तूती बोलने लगी थी। अप्रैल, १९७५ में महिन्दरपाल सिंह ने एक हार्वेस्टर कम्बाइन खरीदना चाहा, तो संजय के दरबारी डेवलपमेण्ट कमिश्नर ने खरीद रुकवा दी। महिन्दरपाल सिंह को दूसरा धक्का अक्तूबर, १९७५ में लगा, जब 'मोण्टगोमेरी सहकारी समिति' का २ लाख रु० के बीज का पश्चिमी बंगाल के एग्रो इंडस्ट्रीज कारपोरेशन का आर्डर 'ऊपर के दबाव से' रद्द करा दिया गया। फिर एक दिन दिल्ली की पुलिस ने महिन्दरपाल सिंह के घर पर छापा मारा। उन पर औरतों का व्यापार चलाने का आरोप था। फिर सी० बी० आई० ने महिन्दरपाल सिंह के एक दोस्त के घर पर भी छापा मारा। संजय-गुट के इन कुकृत्यों में एक म्युनिसिपल कमिश्नर भी योगदान देने से न चूका। उसने महिन्दरपाल सिंह के दिल्ली-स्थित मकान का टैक्स ४,२०० रु० से बढ़ाकर ३१,००० रु० प्रति वर्ष कर दिया।

महिन्दरपाल सिंह के ड्राइवर तक को नहीं बख्शा गया। पिछले वर्ष दिसम्बर में एक व्यक्ति सड़क-दुर्घटना में मारा गया था। उसकी 'हत्या' के आरोप में महिन्दरपाल सिंह के ड्राइवर को पकड़ लिया गया।

खून सांप का या कर्नल आनन्द का ?

इस पारिवारिक झगड़े की पृष्ठभूमि में कर्नल आनन्द की 'हत्या' के कई सूत्र मिले, लेकिन फिर वे खो गये। उदाहरण के लिए, जिस जगह पर कर्नल आनन्द का शव प्राप्त हुआ था, उसके पास टायर के निशान पाये गये, जो पड़ोस में महिन्दरपाल सिंह के खेत से वहां तक आये नजर आते थे। वे निशान ठेकेदार नेतराम की घोड़ागाड़ी के थे। नेतराम ने महिन्दरपाल सिंह के बाग से फल तोड़ने और बोने का ठेका ले रखा था। महिन्दरपाल सिंह के माली की झोपड़ी के बाहर खून के निशान भी पाये गये थे। माली से पूछताछ करने पर पता चला कि कुछ दिन पहले उसने एक सांप मारा था। जमीन पर उसी

(शेष पृष्ठ ११० पर)

फिरौती

एस॰ पर्ल॰ बक

विश्वविख्यात, नोबुल पुरस्कार प्राप्त करनेवाली लेखिका पर्लबक की यह अपहरण-कथा पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। एक अपराध कथा के रहस्य तथा रोमांच की रक्षा करते हुए लेखिका ने इस कथा-कृति में साहित्यिक स्तर का जो निर्वाह किया है, वह अनुकरणीय है। यहां अपहरण एक सामाजिक समस्या के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहां अपराध नहीं, माता-पिता के मानसिक द्वन्द्व तथा यातना का चित्रण प्रमुख है!

रेडियो पर चल रहा बीथोवन संगीत अचानक रुक गया। तीसरी लय के स्वरानुक्रम को काटते हुए एक स्पष्ट, खनकता स्वर बोला, "प्रेस, रेडियो समाचार! मिस्टर हैडले लेन के अपहृत पुत्र जिमी लेन का शव हडसन नदी के तट पर स्थित उसके घर के पास, आज शाम पाया गया। इस तरह खोज समाप्त हुई।"

एलिन ने कहा, "कैट! रेडियो बंद कर दो!"

कैट एक क्षण के लिए हिचकिचाया। फिर उसने रेडियो बंद कर दिया।

खामोशी में एलिन अपने निचले होठ को काटती कुछ सोचने लगी। फिर वह बोली, "बेचारी मां! इतने दिन बीत गये थे, पर उसने आस न छोड़ी थी।"

कैट ने शांत स्वर में कहा, "पक्की खबर मिल जाना, भले ही वह खराब-से-खराब क्यों न हो, कोई खबर न मिलने से तो अच्छा ही है।"

वह जानता था कि जिमी लेन के अपहरण की खबर ने एलिन के मन को काफी दिनों से जकड़ रखा था। उसने सोचा कि इस खबर के बाद अब एलिन से इस बारे में बात की जा सकती है और उसे चेतावनी दी जा सकती है। आखिर अमरीका में उसके-जैसे खुशहाल



एस० पर्लबक:

विश्वविख्यात अमेरिकी लेखिका श्रीमती पर्लबक चीन के जीवन पर आधारित उपन्यासों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका जन्म १८९२ में हिल्सबोरो में हुआ था। वे एक धर्म-प्रचारक की बेटी थीं और उनकी प्रारम्भिक शिक्षा शंघाई में हुई थी और फिर रेंडोल्फ मेकोन वीमन कालेज, वर्जिनिया से ग्रेजुएट होने के बाद वे चीन चली गयी थीं, जहां १९१७ में उन्होंने एक धर्मप्रचारक के साथ विवाह कर लिया था। १९२१ से १९३१ तक उन्होंने अध्यापन कार्य किया। इस बीच उन्होंने 'ईस्ट विंड-वेस्ट विंड' नामक एक उपन्यास लिखा। चीन के एक किसान और उसकी पत्नी के भूमि के लिए किये गये संघर्षों पर आधारित उनका उपन्यास 'दि गुड अर्थ' सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस उपन्यास पर उन्हें १९३२ में पुल्तीजर पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अपने पति को तलाक देकर वे पुनः अमेरिका आ गयीं और १९३५ में उन्होंने पुनः विवाह कर लिया। उनकी प्रकाशित रचनाओं में 'संस', 'ए हाऊस डिवाइडेड', 'दि गुड अर्थ', 'पहली पत्नी और अन्य कहानियां' 'दि मदर' आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। १९३८ में उन्हें उनके साहित्यिक योगदान के लिए नोबुल पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने एक दर्जन से अधिक उपन्यास, कितनी ही कहानियां और बालकथाएं लिखी हैं। उनकी प्रसिद्ध कथा- 'रैनसम' का हिन्दी अनुवाद 'फिरौती' हम सगर्व प्रकाशित कर रहे हैं।

परिवारों के बच्चे भी बड़े होते ही हैं। वे अमीर तो थे, पर इतने अमीर नहीं कि अपने बच्चों की हिफाजत के लिए अंग-रक्षक रख सकें। वैसे वे अमीर जरूर थे। उनके सब पड़ोसी जानते थे कि वे कागज की एक मिल के मालिक हैं।

कंट चाहता था कि एलिन इस बात को समझे और माने कि वे लोग इतने अमीर नहीं थे कि कोई उनके बच्चों को अपहरण के लायक समझे। अपने बेटे ब्रूस की खातिर, उसे ऐसा समझना जरूरी था। अगले साल से ब्रूस स्कूल जाने लगेगा। स्कूल जाते-आते वक्त वह अमरीका के लाखों-करोड़ों बच्चों की भांति सड़कें पार करेगा। यों, उनका नौकर पीटर ब्रूस को स्कूल में पहुंचा, वहां से वापस ला सकता था, पर कंट ऐसा न होने देगा, क्योंकि इससे फायदे की जगह नुकसान ही ज्यादा होगा। . . .आखिरकार, वे लोग प्रजातंत्र के युग में जी रहे हैं, उनके ब्रूस को भी अन्य बच्चों के समान ही बड़ा होना चाहिए।

एलिन बोली, "बैटसी सोते वक्त कम्बल उतारकर फेंक देती है। जाकर देखती हूं कि बच्चों ने कम्बल ओढ़ रखे हैं या फेंक दिये हैं।"

कंट समझ गया कि एलिन बहाना बना रही थी। दरअसल वह जाकर यह देखना चाहती थी कि कोई बच्चा गायब तो नहीं हुआ है। कंट ने अपना पाइप सुलगाया और एलिन के साथ-साथ हो लिया। जाते-जाते वह सोच रहा था कि जो-कुछ उसे कहना है, वह कैसे शुरू करे? हाथ में हाथ लिये, वे दोनों एक साथ सीढ़ियों पर चढ़ने लगे। एलिन ने धीमे से नर्सरी का दरवाजा खोला। कंट को यह देखकर बड़ा अजीब लग रहा था कि जो डर एलिन के मन पर छाया था, वह धीरे-धीरे उसके मन में भी घर करता जा रहा था। दरवाजा के खुलने की हर आवाज से उसका मन बैठने लगता।

अंत में उसे दो बिस्तर दिखायी दे गये, दो बिस्तर, जिनके तकियों पर दो छोटे-छोटे सिर दिखायी दे रहे थे। तो, कोई बच्चा गायब नहीं हुआ था, दोनों बिस्तरों पर ठीक-ठाक सो रहे थे। वह ब्रूस के बिस्तर के पास खड़ा होकर अपने बेटे को देखने लगा। शैतान ब्रूस सोते वक्त भी कितना आकर्षक लग रहा था! उसकी मां उसके ऊपर झुकी हुई थी, फिर भी उसकी नींद भंग नहीं हुई थी। उसके बाल अस्त-व्यस्त थे और लाल होंठ फूले हुए थे। उसका रंग थोड़ा सांवला था, आंखें अपनी मां एलिन के समान नीली थीं।

पति-पत्नी खामोश खड़े थे। एलिन ने ब्रूस की फैली बांह को कम्बल से ढक दिया। उसके बाद पति-पत्नी हाथ में हाथ लिये बिस्तर के पास खड़े रहे। फिर एलिन अपने पति की ओर देखकर मुस्करायी और कंट ने उसका चुम्बन लेकर अपनी बांहें उसके कंधों पर रख दीं। फिर वे दोनों बैटसी के बिस्तर की ओर बढ़े।

कंट अपने बेटे से अधिक अपनी बेटी को चाहता था, पर इस चाह को वह एक राज की तरह मन में छिपाये हुए था। अपने बेटे ब्रूस के बारे में वह निश्चयपूर्वक चाहता था कि वह बहादुर लड़का बने और दूसरे लड़कों के साथ उठे-बैठे और खेले। मगर अपनी नन्ही,



प्यारी बेटी के बारे में ऐसा सोचते ही उसे डर लगता था। बेटसी की त्वचा का रंग अपनी मां की त्वचा के रंग के समान ही सुनहरा था, पर आंखें पिता की आंखों के समान काली थीं। कैंट जब भी अपनी नन्ही और प्यारी बेटी को देखता था, उसे लगता था, जैसे वह खुद अपने को ही देख रहा हो।

उसे नाक से सांस लेते देखकर कैंट ने अपनी पत्नी से पूछा, "इसे सर्दी हो गयी थी न। अब इसकी तबीयत कैसी है?"

"ज्यादा सुधरी नहीं है, तो बिगड़ी भी नहीं है। इसकी छाती पर 'बाम' मलती रहती हूं।"

जब कभी बच्ची की हालत जरा भी खराब हो जाती थी, कैंट को बड़ा गुस्सा आता था। उसने बच्ची के लिए एक नर्स रखी थी जिनका नाम मौली था, पर मौली पर उसे ज्यादा विश्वास नहीं था, यद्यपि वह एक खुशमिजाज महिला थी।

बच्ची कुछ हिली और अपनी आंखें खोलकर अपने पिता को देखने लगी। फिर उसने मुस्करा कर अपनी बांहें फैला दीं। वह अपने पिता की गोदी में जाना चाहती थी। पर एलिन ने उसे मना करते हुए कहा, "उसे उठाओ मत, डियर! उसे यह आदत ही पड़ जाएगी। जब भी तुम्हें देखेगी, गोदी में जाना चाहेगी।"

"सो जाओ, डार्लिंग!" कैंट ने उसका गाल थपथपाते हुए कहा।

अपने पिता की यह बात सुनकर बच्ची मुस्कराती हुई सोने की कोशिश करने लगी। वाकई, वह बड़ी प्यारी बच्ची थी!

एलिन ने बुदबुदाते हुए कहा, "आओ, बत्ती बुझा दें।"

वे बत्ती बुझाकर चुपचाप नर्सरी से अपने कमरे में आ गये।

पाइप सुलगाता हुआ कैन्ट सोच रहा था कि वह बात अब एलिन से कह देनी जरूरी है। उनके सुख के लिए यह जरूरी था कि उनके बच्चों को कुछ न हो।

"अपहरण की घटना वैसे ही घटती है, जैसे आकाश में बिजली चमक जाती है।" कैंट ने सहसा कहना आरंभ किया, "और जिस प्रकार लाखों लोगों में से एक पर बिजली गिरती है, उसी प्रकार लाखों में से किसी एक बच्चे का अपहरण होता है। अपहृत बच्चों के स्थान पर हमें उन बच्चों के बारे में सोचना चाहिए, जो घरों में सुरक्षित रहते हैं।"

"मेरी एक बात का ईमानदारी से जवाब दो, कैंट! किसी रात को, जब हम दोनों ऊपर सोये हों..."

"क्या फिजूल की बातें करती हो!" कैंट ने उसकी बात काटते हुए कहा, "मैं तुम्हें यही तो समझाने की कोशिश कर रहा हूं। जो तुम सोच रही हो, वह बिलकुल नहीं होता। इन कमबख्त अखबारों की वजह से अपहरण की एक मामूली-सी घटना के बारे में भी मामूली-से-मामूली आदमी को पता चल जाता है।"

"जेन कह रही थी कि अपहरण की तीन में से एक घटना ही अखबारों में छपती है।" एलिन ने कहा।



"वह खुद अखबार में काम करती है न! वह बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना जानती है।"

"पर उसने अपहरण के अनेक मामलों की रिपोर्टिंग की है। विदेश का मामला . . . ।"

एलिन के मन में छिपी चिन्ता उसके कांपते स्वर में व्यक्त हो रही थी। यही समय था, उससे साफ-साफ बातें करने का। बोलने से पहले कंट ने पत्नी का हाथ अपने हाथ में ले लिया और प्यार से सहलाने लगा। वह सोच रहा था कि बातें करते समय उसे यह याद रखना होगा कि बच्चों के अपहरण के भय से उसकी पत्नी बुरी तरह ग्रस्त है और तब से ग्रस्त है, जब ब्रूस का जन्म भी नहीं हुआ था। खुद उसने इस समस्या का सामना उस रात को किया था, जब एलिन ने उससे अंधेरे में पूछा था, "कंट, तब हम क्या करेंगे, जब . . ." पर, तब उसने एलिन की आशंका को नहीं समझा था।

"कब मैं क्या करूंगा?" उसने एलिन से पूछा था।

"अगर हमारे बच्चे का अपहरण हो जाए, तो तुम क्या करोगे?"

तब उसे जो जवाब सूझा था, वह उसने दे दिया था। वही जवाब जो आज भी सच था। उसने कहा था, "उस बात के बारे में क्यों चिन्ता करती हो, जो कभी नहीं होगी?"

लेकिन तब से अपहरण के हर मामले के बारे में वह अखबारों में बराबर पढ़ता रहा था।

उसने एलिन की हथेली को चूमते हुए कहा, "तुम्हारा डर मुझसे सहा नहीं जाता। गोकि यह डर बेकार है। इसकी छाया में तुम कब तक जीती रहोगी, डार्लिंग? अपने मन से इस डर को भगाने के लिए तुम्हें कोई विवेकपूर्ण समाधान सोचना ही होगा।"

"मैं भी इस डर को अपने मन से दूर करना चाहती हूं। पर, कैसे दूर करूं?"

"अधिकांश परिवारों में बच्चे मां-बाप के ऐसे डर के बिना ही बड़े हो जाते हैं।"

"मैं जितनी माताओं को जानती हूं, वे इस भय से ग्रस्त हैं। मैंने उनसे बातें की हैं और मैं जानती हूं कि वे भी मेरे समान डरी हुई रहती हैं।"

"मेरी राय है, तुम इस बारे में सोचना और बोलना ही बंद कर दो।"

"मैं हमेशा यही सोचती रहती हूं कि हम इस बारे में क्या कर सकते हैं।"

"आज हमें यही फैसला करना है, यह ध्यान में रखते हुए कि हम जिस आशंका के बारे में सोच रहे हैं, वह सदा एक संभावना ही रहेगी।"

"हम इस संभावना के बारे में क्या कर सकते हैं, मुझे यह बताओ!"

"बस, यह याद रखो कि यह इतनी दूरस्थ संभावना है, जितनी हमारे घर पर बमबारी होने की संभावना हो सकती है।"

एलिन ने कोई जवाब न दिया।

"मैंने तो तय कर लिया है कि यदि मेरे किसी बच्चे का अपहरण हुआ, तो मैं उसकी रिपोर्ट फौरन पुलिस को कर दूंगा।" कैन्ट ने पत्नी को खामोश पाकर कहा।

"किस पुलिस की बात कर रहे हो तुम? यह रिपोर्ट मिलते ही हमारा पुलिस चीफ माइक फौरन यह खबर अखबारवालों को दे देगा। लेकिन जेन का कहना है कि अपहरण के मामले की खबर अखबारवालों से दूर रखनी चाहिए।"

"हम उसकी रिपोर्ट स्थानीय पुलिस से नहीं, फेडरल पुलिस से करेंगे।"

"फेडरल पुलिस से कैसे सम्पर्क किया जाता है?" एलिन ने पूछा था।

कैन्ट ने यह स्वीकार करते हुए कि उसे खुद यह मालूम नहीं था, कहा, "पर मैं मालूम कर सकता हूं। सिद्धान्ततः हम यह मानते हैं कि हम ऐसा ही करेंगे और एक बार यह फैसला कर लेने के बाद अब हम इस डर को मन से निकाल सकते हैं। इसके अलावा, एक फैसला हम लोगों को और करना चाहिए कि अपहरण होने पर हम कोई फिरौती नहीं देंगे। अपहरण इसी लिए होते हैं क्योंकि लोग फिरौती देने को तैयार हो जाते हैं। हमें इतनी दृढ़ता तो दिखानी ही होगी। हमारी दृढ़ता को देखकर दूसरे लोगों को भी मार्गदर्शन मिलेगा।"

पर एलिन को अपने पति की बातों से कोई राहत मिली हो, ऐसा नहीं लगा। उसने बोलना शुरू किया, तो उसका स्वर धीमा और भयभीत था, "यह फैसला करना तो आसान है कि हम फिरौती नहीं देंगे, पर सवाल यह है कि मौका आने पर हम इस फैसले पर कब तक अड़े रह सकेंगे? मान लो, सर्दी का मौसम है और ब्रूस को ठण्ड लगी है और कोई उसे उसके बिस्तर में से उठा ले जाता है, और वह सिर्फ पाजामा पहने हुए है, तब क्या उसे वापस पाने के लिए हम कुछ भी देने को तैयार न हो जायेंगे? औरों के बच्चों से हमें क्या लेना-देना है? अगर ब्रूस का अपहरण हो गया, तो हम सिर्फ उसी के बारे में सोचेंगे, और उसे पाने के लिए कुछ भी दे देंगे।"

"अगर तुम इसी तरह बातें करती रहीं, तो फिर आगे बातें करने से क्या लाभ?"

"मैं बातें करना नहीं चाहती, डियर! मैं यह जानना चाहती हूं कि ऐसे मौके पर हम क्या करेंगे? मैं अपने डर से छुटकारा पाना चाहती हूं।"

कंट ने एलिन को कोच पर अपने पास खींचते हुए कहा, "मेरे पास आओ। तुम जानती हो, बच्चे मुझे भी उतने ही प्यारे हैं, जितने तुम्हें हैं।"

एलिन ने सिर हिलाकर पति के इस कथन का अनुमोदन किया।

"तब मुझ पर भरोसा रखो। ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति उत्पन्न होने पर मैं जो ठीक समझूंगा, जरूर करूंगा! यह तो तुम मानती हो न?"

"मानती हूं। पर, बात यह है कि हम यह नहीं जानते कि हम क्या करेंगे!"

कैन्ट ने गंभीर स्वर में कहा, "मैं तो, फिलहाल, इतना जानता हूं कि जब तक फिरौती का लेना-देना गैरकानूनी घोषित नहीं हो जाता, अपहरण होते ही रहेंगे और जब तक कोई फिरौती न देने की शुरुआत नहीं करता, उसे गैरकाननी घोषित नहीं किया जा सकेगा। सरकार को इस दिशा में बाध्य करने के लिए हम लोगों को कुछ करना होगा।"

"पर अपहरण-कर्ता कहें कि पुलिस को इत्तला न दो, तब क्या करोगे?"

कंट की समझ में नहीं आ रहा था कि अब वह क्या कहे? जो घटना घटी ही नहीं, उसके बारे में क्या अनुमान लगाया जा सकता है? उसने जरा चिढ़कर कहा, "इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि तुम उन शैतानों के आगे झुक जाती हो, या अपने सिद्धांतों पर अड़ी रहती हो।"

"हमारे अपने बच्चे का अपहरण होगा, तब भी क्या हम सिद्धांतों से चिपके रहेंगे? ईमानदारी से समस्या का सामना करो

केट! उससे कतराओ मत!"

"मैं पूरी ईमानदारी से ही समस्या का सामना करने की कोशिश कर रहा हूं, डियर!" केट ने आहिस्ते से कहा, "मेरा ख्याल है कि ऐसा मौका आने पर भी मैं अपने सिद्धांत पर ही अड़ा रहूंगा और साथ ही कोई और उपाय भी सोचूंगा . . ." कहते हुए एलिन की आंखों से आंखें मिलाकर वह रुक गया। एलिन की आंखों में अब भी विश्वास न था।

(२)

"अच्छी तरह याद करो कि क्या हुआ था?" केट उस बेवकूफ नर्स से चिल्लाता हुआ पूछ रहा था, "कहां छोड़ा उसे तुमने?"

एलिन इस वक्त तो खामोश खड़ी थी, पर आधा घंटा पहले, जब उसने फोन पर अपने पति को अपनी बच्ची के गायब हो जाने के बारे में सूचना दी थी, उस वक्त उसने चीखते हुए उसे बताया था, "केट, बच्ची न जाने कहां गायब हो गयी है!"

केट उस समय डायरेक्टरों के साथ की मीटिंग में था, पर एलिन का फोन पाते ही वह एकदम उठ खड़ा हुआ था। उसने तेज स्वर में अन्य डायरेक्टरों से कहा था, "मुझे अफसोस है, मुझे इसी वक्त जाना होगा।"

केट के पिता ने अपनी सफेद भौंहों को ऊपर उठाते हुए पूछा था, "क्या बात है?"

"कोई खास बात नहीं है," उसने जवाब दिया था, "कोई खास बात होगी, तो मैं आपको बता दूंगा।" उसने एलिन की बतायी बात नहीं बतायी थी।

वह फुर्ती से अपनी कार में सवार हुआ था और पागलों की तरह कार चलाता हुआ अपने घर पहुंचा था, जहां एलिन के पास रोती-सुबकती नर्स मौली खड़ी थी। उसने केट को देखकर अपने-आप बताना शुरू कर दिया था, "साब, मैं दरवाजे पर खड़ी बस के स्कूल से लौटने का इन्तजार कर रही थी, जैसा कि रोज ही करती हूं। बच्ची ने अपने हाथ खराब कर लिये थे और मैं उसे गोदी से उतारकर, काफी भारी है वह, उसके लिए एक रूमाल लेने अन्दर गयी। जब वापस आयी, तो बच्ची वहां नहीं थी। मैंने यहां-वहां, झाड़ियों के पास उसे ढूंढ़ा। पर जब वह कहीं दिखायी नहीं दी, तो मैं रोती-चिल्लाती मालकिन के पास आयी . . ."

एलिन ने फुसफुसाते हुए कहा, "मैंने सारा घर छान मारा है। वह कहीं नहीं है।"

"दरवाजा उस वक्त बंद था, या खुला हुआ था?" केट ने डांटते हुए पूछा।

"बंद था। मैं बंद करके गयी थी। इतनी समझ तो मुझे है।" मौली ने उत्तर दिया।

"तुम्हें घर के अन्दर कितनी देर लगी?" केट ने तेज स्वर में पूछा।

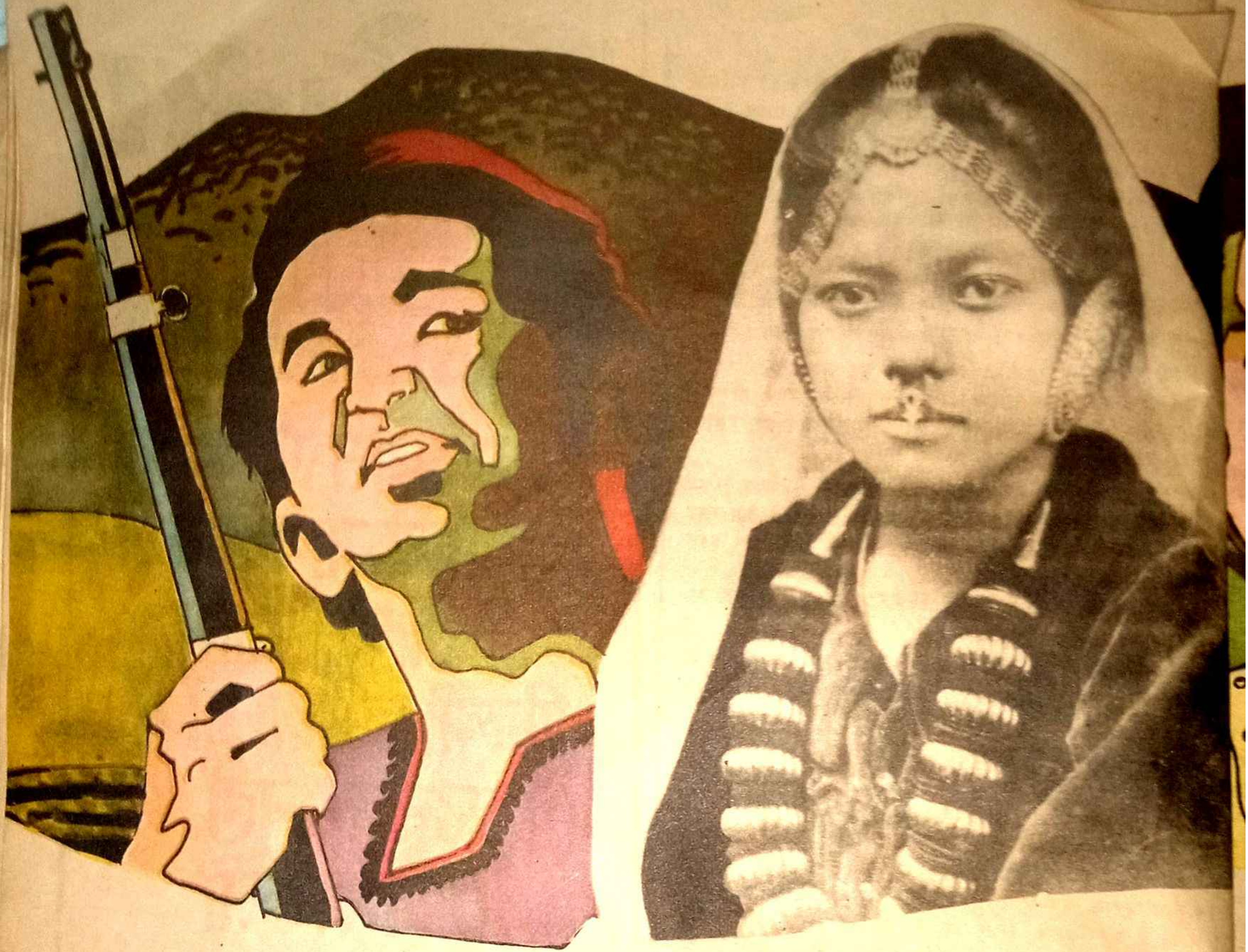
"एक मिनट भी नहीं लगा होगा," मौली ने सुबकते हुए कहा।

"बेटसी! बेटसी! इधर आओ! अपने डैडी के पास आओ!" केट घर में प्रवेश कर चिल्लाने लगा। फिर एक झाड़ के नीचे झुककर उसने एलिन से पूछा, "गैरेज में देखा था?"

"पीटर वहां दो बार देख चुका है।" एलिन ने जवाब दिया।

"मैं खुद वहां जाकर देखता हूं। तुम घर के अंदर फिर हर जगह खोज करो। हो सकता है, वह किसी तरह घर में घुस आयी हो।" कहकर केट जैसे ही गैरेज में घुसा, उसने पीटर को एक कार के नीचे से निकल कर कहते हुए सुना, "वह यहां भी नहीं है।"

(शेष पृष्ठ ८९ पर)



लबन (शिलांग) के उद्योगपति छुआंगा के सीने को पार कर तीर ने उसके शरीर को कुर्सी की पुश्त से जड़ दिया था और वह कुर्सी पर निष्प्राण होकर जैसा-का-तैसा बैठा रह गया था। खासी जाति के लोगों के तीर में इतनी शक्ति नहीं होती। फिर यह इतना शक्तिशाली तीर कैसा था? तीर की जांच कर लेखक ने जो रिपोर्ट दी, वह खुद छुआंगा की हत्या से कम रहस्यमय तथा आश्चर्यजनक न था।

बन्दूक से छूट
तीर

डा० एस० दत्त





असम प्रान्त एक रमणीय इलाका है, जो हर प्रकार के प्राकृतिक वैभव से परिपूर्ण और वनस्पति, जीव-जन्तु और खनिज पदार्थों से सम्पन्न है। भौगोलिक दृष्टि से यह गारो, खासी, जयन्तिया और मीजो (भूतपूर्व लुसाई) पहाड़ियों से बने एक विस्तृत पठारी तथा महानदी, ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों से सींचे जानेवाले मुलायम मिट्टी के लम्बे-संकरे मैदानों का प्रान्त है। पठारी इलाके का अधिकांश भाग घने, बरसाती जंगलों से ढंका रहता है। उनमें बाघ, तेंदुआ, अरना भैंसे, सांभर, गेंडा और हाथी जैसे बड़े-बड़े शिकार के जानवर भारी संख्या में भरे पड़े हैं।

असम की अपेक्षाकृत कम घनी आबादी मोटे तौर पर दो हिस्सों, मैदानों की आबादी और पहाड़ी इलाकों की आबादी में बंटी है। मैदानों में रहनेवाले लोगों की शारीरिक विशेषताओं, भाषा और संस्कृति पड़ोसी प्रदेश बंगाल के लोगों से मिलती-जुलती है। परन्तु पहाड़ियों पर रहनेवाले कई दृष्टियों से मैदानी लोगों से काफी भिन्न हैं। वे कद से छोटे, रंग से गोरे और शरीर से हट्टे-कट्टे हैं। उनमें कुछ मंगोली विशेषताएं भी पायी जाती हैं, जैसे पीला रंग, आड़ी-तिरछी आंखें, गाला की उभरी हड्डियां, सीधे और काले बाल, चपटी-सी नाक और छोटी ठुड्डी। उनकी अपनी प्राचीन संस्कृति है। शिक्षा के मामले में वे अब भी पिछड़े हुए हैं।

प्रस्तुत सत्यकथा असम की पहाड़ी जाति खासी के कुछ व्यक्तियों से सम्बन्धित है।

खासी एक श्रेष्ठ जाति है। खासी लोग शक्तिशाली और बहादुर होते हैं। वे देर-देर तक बहुत कठिन परिश्रम करते हैं। वे उच्च कोटि के शिकारी होते हैं। वे बड़े-बड़े जानवरों का शिकार भी धनुष-बाणों, बांस के भालों, कुल्हाड़ियों और एम० एल० बन्दूकों से कर लेते हैं। (एम० एल० बन्दूकों का प्रयोग आज से सौ साल पहले होता था। उनमें कारतूस की जगह बारूद भरी जाती थी।)

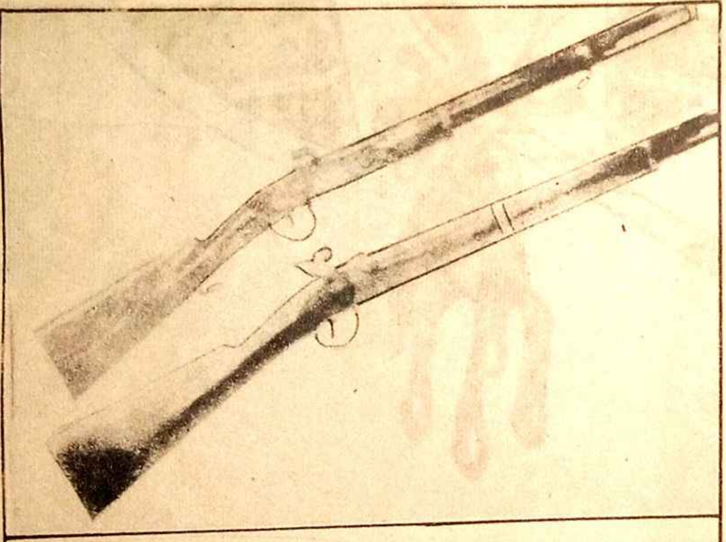
बहुत यूरोपीय मिशनरियों ने खासी स्त्रियों के साथ विवाह कर लिया था या उन्हें रखैल की तरह रख लिया था। इस प्रकार खासी रक्त तथा यूरोपीय रक्त मिलने से जो बच्चे पैदा हुए वे बहुत गोरे और खूबसूरत थे, उनकी बड़ी-बड़ी भूरी आंखें थीं, घुंघराले काले बाल थे और नयन-नक्श यूरोपियों-जैसे थे। इसी कारण कुछ खासी युवतियां

उत्कृष्ट सौन्दर्य की नमूना मानी जाती है। खासी लोगों की धरती पर स्त्रियां पुरुष से कहीं अधिक क्रियाशील होती हैं। वे घर-गृहस्थी का सारा काम करने के साथ ही बच्चों का पालन-पोषण तथा खेती और वनों के उत्पादनों के क्रय-विक्रय का काम भी करती हैं।

छुअंगा एक खासी नौजवान था। उसने गोहाटी के इंजीनियरिंग कालेज से मेकनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। उसने स्थानीय पी० डब्ल्यू० डी० में ५ वर्षों तक सिविल इंजीनियर की हैसियत से सेवा करने के बाद नौकरी से इस्तीफा देकर शिलांग में एक छोटा-सा इंजीनियरिंग कारखाना खोल लिया था। कुशाग्र बुद्धि और कठिन परिश्रम से उसका कारोबार चमक उठा और उसके इंजीनियरिंग कारखाने की शिलांग के प्रमुख और असम के बड़े-बड़े कारखानों में गिनती होने लगी। उसके कारखाने में सौ से भी अधिक लोग काम करते थे और वहां सामान्य प्रयोग में आनेवाली लोहे और स्टील की वस्तुओं का उत्पादन होता था।

छुअंगा ने ब्याह नहीं किया। वह शिलांग के उपनगर लबन में अपने खूबसूरत मकान में रहता था। उसके कारखाने का एक फोरमैन चलछुंगा उसका घनिष्ठ सहयोगी था। चलछुंगा लबन में छुअंगा के घर के निकट ही अपने मकान में रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी जतिंगा, ३ वर्ष की पुत्री मवोंग और ५ वर्ष की पुत्री लेबोंग थीं।

चलछुंगा का छोटा भाई बाबीछुंगा भी अपने भाई के साथ उसी मकान में रहता था। वह छुअंगा के इंजीनियरिंग कारखाने में मेकेनिक की हैसियत से काम करता था। वह अभी कुंआरा ही था। कारखाने में



मजल लोडिंग रायफल बन्दूक
ऊपर दर्शायी गयी बन्दूक ही इस कथा में प्रयोग की गयी थी।

उसकी गिनती कुशल कारीगरों में होती और इस माने में वह अपने भाई से भी बेहतर था। ये दोनों भाई बहुत अच्छे खिलाड़ी भी थे। चलछुंगा खासी लोगों के राष्ट्रीय खेल तीरंदाजी में बहुत श्रेष्ठ था और बाबीछुंगा बड़े जानवरों के शिकार में सबसे बढ़-चढ़ कर था। प्रायः वह अकेले ही साधारण देशी हथियारों से बाघों और तेंदुओं को मार गिराता था। चलछुंगा और बाबीछुंगा के बीच बड़ी सद्भावना थी। चलछुंगा की पत्नी जतिंगा का उन दोनों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार था। उनकी गृहस्थी की गाड़ी बड़े मजे में चल रही थी।

जतिंगा बहुत ही खूबसूरत और जिन्दादिल पहाड़ी स्त्री थी। उसका रंग आड़ू जैसा, गाल गुलाबी, होंठ लाल, आंखें बड़ी-बड़ी, काली और उत्सुकता से भरी हुई और बाल स्याह और घने थे। वह दरम्याने कद और शरीर से काफी हृष्ट-पुष्ट स्त्री थी। उसकी जिन्दादिली और सक्रियता उसकी उत्सुक आंखों की अलस मस्ती के बिल्कु विपरीत थी। उसके लचकदार जिस्म के हमेशा बल खाते उभारों उसकी खुशमिजाजी से पुरुष सहज ही उसकी ओर आकर्षित हो को बाध्य हो जाते थे। इसलिए वहां उसके दीवानों की संख्या ब अधिक थी। उन दीवानों में उसका देवर बाबीछुंगा और उसके प का मालिक और पड़ोसी छुअंगा भी थे।

१९३३ में एक दिन सुबह ही लबन में एक ऐसी दुखद घटना घ गयी, जैसी उस रमणीय इलाके में पहले कभी नहीं घटी थी। शिल का धनी-मानी नौजवान उद्योगपति छुअंगा अपने मकान में कत्ल कि गया पाया गया। एक तीर ने उसकी छाती को छेदकर, पीठ निकलकर उसे उस लकड़ी की कुर्सी के साथ जड़ दिया था, जिस प वह अपनी मृत्यु के पहले बैठा था। उसके घाव से बहा खून फर्श प फैला हुआ था। लगता था तीर के दिल में घुसते ही तत्क्षण उसक मौत हो गयी थी।

कातिल का कहीं कुछ पता नहीं था। पड़ोस में रहनेवालों से किसी को भी उस बात का कोई अनुमान न था कि हत्यारा कब औ कैसे अपने शिकार के पास पहुंचा था और वह खौफनाक हरकत कर वहां से फरार हो गया था।

शव-परीक्षण करनेवाले सिविल सर्जन ने पोस्ट-मार्टम की ज रिपोर्ट दी, उसे मैंने देखा। वह रिपोर्ट मेरे देखने में आयी, जो सभ रिपोर्टों से संक्षिप्त थी। उसमें कहा गया था कि श्री छुअंगा की मौ उस घाव से हुई थी, जो स्टील की सुई की तरह नोकवाले तीर लगने से हुआ था। तीर की बांस की डण्डी के सिरे पर पंख नहीं ल हैं।

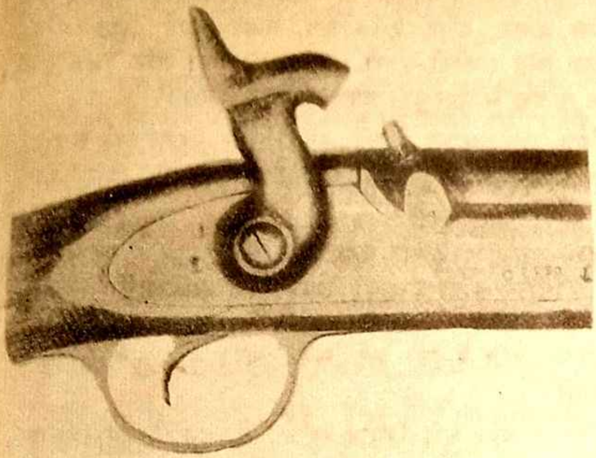
हत्या करने का हथियार याने तीर ही मात्र सुराग था, जिसके आधा पर पुलिस जांच की कार्यवाही कर सकती थी। तीर की नोक छुअंग के कारखाने में बनाये जानेवाले सामान्य नोकों की ही तरह थी। इ तरह की नोकवाले तीरों का प्रयोग खासी खिलाड़ी तीरंदाजी के अभ्यास और मुकाबिलों में बड़े पैमाने पर करते थे। वह नोक स्टील की औ बिलकुल सुई की तरह बनी थी, उसकी लम्बाई डेढ़ इंच और आधा का व्यास आधे इंच से कुछ अधिक था। उसकी डंडी गांठ-रहित बां के टुकड़े की थी, जिसकी लम्बाई ३२ इंच थी और उसे बड़ी बारीकी से छीलकर गोल बनाया गया था। इस प्रकार के तीर खेलों में दिलचस्पी रखनेवाले अधिकांश खासी लोगों के घरों में आम तौर पर पाये जा थे। चलछुंगा के पास भी ऐसे तीर थे, क्योंकि वह खेल के मैदान में सबसे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेता था। परन्तु ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं मिला, जिसके आधार पर ऐसे तीरवालों में से किसी का भी उस खौफनाक हत्या से सम्बन्ध जोड़ा जा सकता।

उस समय मैं शिलांग में गर्मी की छुट्टियां बिताने गया था। असम की सी० आई० डी० ने मेरे सामने भी यह प्रस्ताव रखा कि यदि सम्भव हो, तो मैं भी उस हत्या के रहस्य को सुलझाने की कोशिश करूं। उनके पास सुराग के रूप में केवल हत्या का हथियार याने तीर और पोस्टमार्टम की रिपोर्ट थी। सी० आई० डी० के पदाधिकारी उन दोनों चीजों को मेरे पास परीक्षण करने के लिए छोड़ गये।

पोस्टमार्टम की रिपोर्ट ऐसी संक्षिप्त और सपाट थी कि कुछ न पूछिए। उससे कोई काम की बात निकालना असम्भव था। यही बात कत्ल के हथियार तीर के बारे में भी कही जा सकती थी। देखने में वह एक आम किस्म का ही तीर था, जिसे हजारों खासी खिलाड़ी तीरंदाजी के अभ्यास और खेलों में प्रयोग करते थे। यह-सब देख-समझकर मैं लगभग इस नतीजे पर पहुंच चुका था कि इस समस्या का कोई हल नहीं निकल पाएगा। लेकिन फिर अनायास ही मेरा ध्यान उस तीर की अनोखी बनावट की ओर गया। यह तीर भी आम तीरों की तरह बांस का ही बना



१—ले इनफील्ड 'टावर' रायफल, माडल १८३५, मजल लोडिंग, टोपीदार घोड़ेवाली बन्दूक, बोर ०.५७७ इंच, नाल की लम्बाई ४२ इंच, रेमरांड जो कि मजल लोडिंग (गोली भरने के लिये) प्रयोग किया जाता है, नली के नीचे फंसा है।





२—बन्दूक की 'मार' प्रक्रिया।

घोड़ा उठायी हुई स्थिति में। उंगलियों से घोड़े को उठाया जाता है और लिबलिबी दबाने पर वह तीली पर सीधी चोट करता है और गोली छूट जाती है।

घोड़ा दबायी हुई स्थिति में

३—तीर के शरीर का भाग तराशे हुए बांस का बना है, व्यास ०.५८ इंच, लम्बाई ३५ इंच, तीर पर चूड़ियों के निशान उसके बन्दूक की नाल के बीच से तेजी के साथ गुजरने के कारण बनी है।



४—मजल लोडिंग रायफल बन्दूक

ऊपर दर्शायी गयी बन्दूक ही इस कथा में प्रयोग की गयी थी।

हुआ था, लेकिन बांस की गोलाई ऐसी निर्दोष थी कि उसे हाथ से बनाया ही नहीं जा सकता था। निश्चय ही उसे खराद पर चढ़ाकर बनाया गया था। मैंने ध्यान से देखा, तो बांस के दोनों सिरों पर खराद के चिह्न आसानी से दिखायी पड़ गये, जिससे लगता था कि बांस की डंडी को खराद की मशीन पर चढ़ाकर खरादा गया था। यह एक बहुत ही असाधारण बात थी, क्योंकि तीर की डंडियां या तो बांस की पतली कइनों से बनायी जाती हैं या मोटे बांस को हाथ से चीरकर बनायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त गौर से देखने पर यह भी पता चला कि तीर की डंडी पर नीचे से ऊपर तक चक्करदार खराद के चिह्न उभरे हुए थे। वैसे चिह्न हाथ से तराशने से बन नहीं सकते थे। घुमावदार उन चिह्नों का चक्कर करीब छः फुट में पूरा हुआ था। दूसरे शब्दों में तीर की डंडी के नीचे से ऊपर तक बने चिह्नों की घुमावदार रेखाओं की लम्बाई लगभग छः फुट थी। आखिर इन चिह्नों का तात्पर्य क्या था? क्या ये चिह्न डंडी की सजावट और खूबसूरती के लिए बनाये गये थे? नहीं, यह बात विश्वसनीय नहीं लगती थी। तीर की डंडी के दूसरे सिरे पर पंख भी नहीं थे, जो तीरों की उड़ान के समय उनका संतुलन बनाये रखते हैं। उस तीर पर पंखों का न होना भी एक असाधारण बात थी, क्योंकि सब तीरों के दूसरे सिरे पर संतुलन ठीक रखने के उद्देश्य से पंख जरूर लगाये जाते हैं। मैंने ध्यान से देखा, तो उस डंडी के दूसरे सिरे पर जहां पंख लगाये जाते हैं, थोड़ी-सी जगह झुलसी हुई थी। मैंने वह जगह सूंघी, तो एक अजीब-सी गंध आयी। वह गंध जले हुए बारूद की गंध से बहुत कुछ मिलती-जुलती थी।

उस जगह की रासायनिक जांच करने पर और खुर्दबीन से देखने पर यह बात सिद्ध हो गयी कि उसपर कुछ जले और अधजले बारूद के काले कण मौजूद थे। यह देखकर मेरे दिमाग में अचानक यह प्रश्न उठा कि क्या यह तीर कमान की बजाय किसी बन्दूक से चलाया गया था? यह अनुमान असलियत के कुछ अधिक नजदीक नजर आता था, क्योंकि पोस्टमार्टम की रिपोर्ट बताती थी कि तीर पसलियों की नर्म हड्डी, फेफड़े, हृदयावरण, दिल, फुफ्फुस, धमनी और मध्योरोस्थि के किनारे से होता हुआ जिस्म के पिछले हिस्से से बाहर निकला था और फिर कुर्सी की लकड़ी में करीब आधा इंच घुस गया था। पेचीदे गणित के हिसाब से लगता था कि आरम्भ में उस तीर में बारह सौ फुट पाउंड से भी कुछ अधिक आगे जाने की शक्ति रही होगी। तभी वह शरीर की इतनी कड़ी मांसपेशियों को चीरता हुआ पार हो गया था। बड़े-से-बड़े उस्ताद तीरंदाज की कड़ी-से-कड़ी कमान से निकले हुए तीरों के आरम्भ की शक्ति पन्द्रह या बीस फुट पाउण्ड से अधिक नहीं होती और यदि उसे निकट से भी किसी मनुष्य के शरीर पर चलाया जाए, तो वे जिस्म की कड़ी मांसपेशियों में डेढ़ या दो इंच से अधिक नहीं घुस सकते। ऐसे तीरों के लिए यह असम्भव था कि वे मनुष्य के जिस्म के इतने भागों में से गुजरकर भी इतनी शक्ति रखें कि वे लकड़ी के भीतर भी आधे इंच तक घुस जाएं।

सैद्धान्तिक तर्क के आधार पर अब यह लगभग निश्चित हो चुका था कि हत्या करनेवाला तीर कमान से नहीं, बल्कि बन्दूक से चलाया गया था। अब यह देखना था कि किस प्रकार की बन्दूक से वह तीर चलाया गया था। चूंकि बन्दूक में साधारण काला बारूद इस्तेमाल किया गया था, इसलिए लगता था कि वह एम० एल० बन्दूक ही थी, क्योंकि आजकल की बन्दूकों में बिना धुएंवाले बारूद का प्रयोग किया जाता है। परन्तु भारत में ऐसी एम० एल० बन्दूकों का प्रचलन बिलकुल नहीं था, जो १२ बोर से कम की हों और जो ०.७३ इंच व्यास वाली हो। चूंकि तीर की डण्डी का व्यास केवल ०.६ इंच था, इसलिए ०.७३ इंच व्यासवाली बन्दूक की नली में वह तीर कसकर नहीं बैठ सकता था और ढीला-ढाला रहने पर बन्दूक छोड़ने के बाद तीर अपनी मार्ग-रेखा पर सीधे न जाकर हिलता-डुलता जाता और अपनी बहुत शक्ति खो देता और शायद लक्ष्य-भ्रष्ट भी हो जाता। पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के अनुसार हत्या करनेवाला तीर शरीर को सीधा चीरकर निकला था, १२ बोरवाली बन्दूक से चलाये जाने पर ऐसा होना सम्भव ही नहीं था। तब क्या तीर राइफल से चलाया गया था? नहीं, इसका भी सवाल नहीं उठ सकता था, क्योंकि कोई भी आधुनिक राइफल ऐसी नहीं है, जिसकी बोर ०.६ इंच की हो और फिर उनमें काले बारूद का प्रयोग भी नहीं होता। इसके अलावा तीर पर बनी लकीरों के चिन्हों का गौर से मुआयना करने पर पता चला कि वे दरअसल ०.३ इंच चौड़े और .२ इंच गहरे खराद के दांतों के निशान थे, जो एम० एल बन्दूक की अन्दरूनी बनावट के कारण बन गये थे। उस तरह की बन्दूकें एक शताब्दी से भी अधिक समय से प्रचलन में न थीं। ऐसी एक बन्दूक एनफील्ड टावर राइफल भारत में १८५७ की क्रान्ति (प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम) के दौरान अन्तिम बार प्रयुक्त हुई थी।

एनफील्ड टावर राइफल के १८५० के माडेल का 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' में निम्नलिखित वर्णन दिया गया है—

'नली की लम्बाई ४२ इंच, पूरी लम्बाई ५५ इंच, बोर या कैलीबर ०.५७७ इंच, प्रकार : नली से बारूद भरी जानेवाली दाह प्रणाली टोपी, बारूद स्फोटक मात्र कागज की पोटलियों के रूप में ५७ ग्रेन डायमंड काला बारूद, बुलेट ५०० ग्रेन, वजन साढ़े आठ पौंड, भीतरी बनावट तीन लकीरों वाली, .३ इंच चौड़ी और .२० इंच गहरी, ६ फुट ६ इंच में एक पूरा चक्कर बनाने वाली।'

यद्यपि यह बात एकदम बेतुकी लगती थी। परन्तु मुझे लगभग पूरा विश्वास हो गया कि इस हत्या में चलाया गया तीर इसी प्रकार की बन्दूक से छोड़ा गया होगा।

परन्तु इस असाधारण दुःखद प्रसंग में सबसे मुख्य प्रश्न यह था कि तीर कैसे और किसके द्वारा चलाया गया? मैंने इन प्रश्नों का उत्तर देने का काम पुलिस पर छोड़ दिया, क्योंकि मेरा काम यह न था। मेरा जो काम था, उसे मैं पूरा कर चुका था। मैंने अपनी रिपोर्ट पुलिस को दे दी।

जब पुलिस के पास मेरी रिपोर्ट पहुंची, तो उन्होंने अपराधी का पता लगाने और उसे बन्दी बनाने की कोशिश तुरन्त आरम्भ कर दी। वह और कोई नहीं, चलछुंगा का छोटा भाई बाबीछुंगा था। उसके निवासस्थान की तलाशी लेने पर एक पुरानी एनफील्ड टॉवर राइफल बरामद हुई, जिसे भली भांति तेल लगाकर रखा गया था और जो अभी हर तरह से काम करने के लायक थी। राइफल के साथ ही बिलकुल वैसे ही सात तीर भी पाये गये, जैसे तीर से छुअंगा को मारा गया था।

मुल्जिम को मैजिस्ट्रेट की अदालत में पेश किया गया। मैजिस्ट्रेट ने प्रारंभिक कार्यवाही के बाद छुअंगा की हत्या का जुर्म आयद कर बाबीछुंगा को सेशन कोर्ट के हवाले कर दिया।

सेशन कोर्ट में बाबीछुंगा ने खुले दिल से पूरी घटना का इकबाल कर लिया और एक रहस्यमय हत्याकांड पर से पर्दा हटा।

उसने अपने बयान में कहा कि वह छुअंगा के कारखाने में मैकेनिक था, और अपने काम में काफी कुशल था। वह अपने भाई चलछुंगा के साथ पिछले दस वर्षों से रह रहा था। चलछुंगा की शादी और फिर उसके बच्चे उसके सामने ही हुए थे। उसकी भाभी नगर में अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध थी और कई लोग उसके पीछे पड़े हुए थे। उन लोगों में बहुत-से छुअंगा की भांति धनी भी थे। आरम्भ में उसकी भाभी बहुत आज्ञाकारिणी और एकदम घरेलू किस्म की औरत थी। वह अपने घर से बाहर झांकती भी नहीं थी। परन्तु जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती गयी, वह दिलेर होती गयी। कोई भी उसे शराब,

वस्त्रों, गहनों या वासना की तृप्ति का लोभ दिखाता, वह उसके साथ चली जाती।

बाबीछुंगा ने यह भी स्वीकार किया कि उसकी भाभी के साथ उसका भी अवैध सम्बन्ध था, परन्तु यह सम्बन्ध उसके भाई की जानकारी में और अनुमति से था। उसके भाई को इस बात पर कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि बहुत-सी खासी जातियों में बहुपति का रिवाज था।

बाद में जब जंतिगा बच्चे की मां बन गयी, वह वासना से लगभग पागल हो गयी। उसकी वासना इतनी उद्दाम हो गयी थी कि वह किसी तरह से भी सन्तुष्ट नहीं होती थी। इस स्थिति में उसने छुअंगा से अपना परिचय बढ़ाया। फिर वह लगभग प्रतिदिन उसके यहां जाने-आने लगी। कभी-कभी वह सारी रात भी वहीं रह जाती थी। इस बात को दोनों भाइयों ने बहुत बुरा माना। परन्तु चूंकि चलछुंगा छुअंगा का दाहिना हाथ था, और छुअंगा जंतिगा पर दिल खोलकर रुपये बहा रहा था, इसलिए उन्होंने इस पर प्रगट रूप से कोई आपत्ति नहीं की। यों भी वे कुछ कह नहीं सकते थे, क्योंकि इस समय किसी प्रकार के भी विरोध का मतलब था नौकरी के साथ ही जंतिगा से भी हाथ धो बैठना।

परन्तु बाबीछुंगा को यह बात लगातार खटकती रही। एक शाम उसने छुअंगा के घर जाकर इस बात को लेकर छुअंगा को जली-कटी सुनायी। लेकिन छुअंगा इस विषय में किसी की भी कोई बात सुनने को तैयार न था। उसने कहा कि जंतिगा उसके पास अपनी मर्जी से आती है और उसे ऐसा करने की पूरी आजादी है। उसने बाबीछुंगा को अपने घर से तुरन्त निकल जाने का आदेश दिया। उसने उसे मार डालने की धमकी भी दी।

जब बाबीछुंगा ने उसके आदेश का पालन करने में विलंब किया, तो छुअंगा ने सचमुच बन्दूक उठाकर उसपर गोली चला दी।

खास गोली तो बाबीछुंगा के निकट से होकर निकल गयी और वह मरने से बाल-बाल बच गया, लेकिन उड़ता हुआ एक छर्रा उसके दाहिने बाजू पर जा लगा और मांस में करीब एक इंच भीतर घुस गया। जख्म भरने में लगभग एक महीना लग गया। परन्तु उसने थाने में इस बात की रिपोर्ट नहीं की थी।

उसने अपना बयान रोककर अदालत को अपना बाजू दिखाया, जिसपर जख्म का निशान मौजूद था।

खासी चरित्र की प्रमुख विशेषताओं में एक यह भी है कि यदि उनसे किसी प्रकार की ज्यादती की जाती है, तो वे उसका बदला लिए बिना नहीं रहते, भले इसमें उनकी जान ही चली जाए। बाबीछुंगा बदला लेने की सोचता रहा और इस उद्देश्य के लिए वह कोई बन्दूक या राइफल प्राप्त करने में लगा रहा। लेकिन उसे कोई बन्दूक नहीं मिली। उसके पास इतना पैसा न था कि वह एक बन्दूक खरीद लेता। फिर उसे अजायबघर में रखी जाने लायक एक पुरानी बन्दूक की याद आयी, जिसे उसने कभी नगर के एक कबाड़ी के यहां देखी थी। उसने फौरन ही दीमक की खायी हुई वह पुरानी राइफल कौड़ियों के मोल खरीद ली और उसे कारखाने में ले जाकर, अच्छी तरह जांच-पड़ताल कर ठीक कर लिया। यह ०.५७७ बोर की टोपीवाली एनफील्ड टॉवर राइफल थी। राइफल सौ साल से भी अधिक पुरानी थी, परन्तु ग्रीस की मोटी तह के कारण उसकी नली और घोड़ा बहुत ही अच्छी हालत में थे। बाहर से देखने में वह बुरी तरह टूटी-फूटी बेकार लगती थी। उसके कुन्दे की लकड़ी को दीमकें खा चुकी थीं और वह एकदम जर्जर हालत में थी। बाबीछुंगा ने कारखाने में एक नया कुन्दा तैयार कर राइफल में फिट कर दिया। उस राइफल का बारूद भरने वाला डंडा भी न था। बाबीछुंगा ने बांस के एक टुकड़े को खरादकर एक नया डंडा बना लिया। उसके हाथ के बने काले बारूद, टोपी और कारखाने में ढाली हुई गोलियों के साथ वह पुरानी राइफल बहुत ही शक्तिशाली और प्रभावकारी बन गयी। इस पुरानी राइफल से उसने आसपास की पहाड़ियों में कई बड़े-बड़े जानवरों को मार गिराया। एक बार गलती से बारूद भरने वाले डण्डे को वह बाहर निकालना भूल गया और उसने शिकार का निशाना साधकर घोड़ा दबा दिया, तो यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसमें से डंडा निकला और बड़ी तेजी से हवा में उड़ता हुआ ठीक निशाने पर जा लगा। इस घटना से उसके मन में एक नयी कल्पना उभरी कि क्यों न वह अपनी राइफल को 'तीर मार-गन' की तरह इस्तेमाल करे। अब उसने वैसी कई डंडियां बना डालीं और उनके सिर पर कारखाने में बने तीर के फल फिट कर दिये। जब उसने इस प्रकार के तीर को राइफल की नली में डालकर उसे शिकार पर चलाया, तो उसे बड़ी सफलता प्राप्त हुई। उसे यह भी पता चला कि जितना बारूद वह एक बार में भरता था, अगर वह उसका आधा बारूद भी नली में भरे, तो घोड़ा दबाने पर जोर की आवाज न होकर हल्की-सी ठुस की आवाज निकलती है और तीर की तीव्र शक्ति में कोई कमी नहीं आती। घने जंगलों में शिकार खेलते समय ये तीर काफी प्रभावकारी सिद्ध हुए।

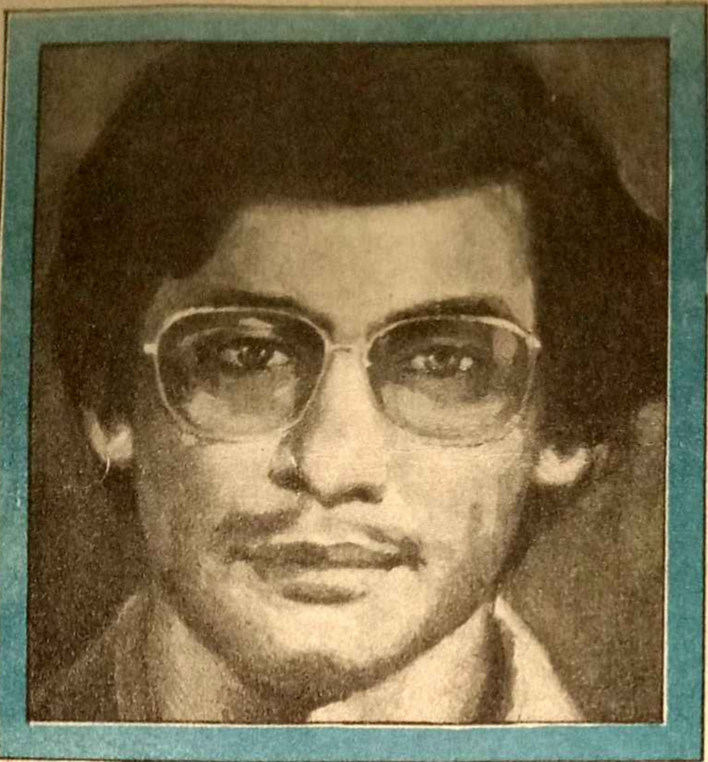
एक रात वह अपनी घातक राइफल बगल में दबाये हुए मन में दबे प्रतिशोध को पूरा करने के लिए छुअंगा के मकान पर पहुंचा। गर्मी का मौसम था। छुअंगा अपने सोने के कमरे में कुर्सी पर बैठा शराब का जाम पी रहा था। खिड़की पूरे तौर पर खुली हुई थी।

बाबीछुंगा दबे पांव खिड़की के निकट पहुंचा और बड़ी सावधानी से निशाना बांधकर उसने राइफल का घोड़ा दबा दिया और फौरन ही वहां से भाग निकला। उसने यह जानने की भी चिन्ता न की कि उसके तीर फेंकने का परिणाम क्या हुआ। उसे पूरा विश्वास था कि उसका निशाना चूक ही न सकता था।

केस की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सेशन जज ने बाबीछुंगा पर कत्ल की बजाय मानव-वध का जुर्म लगाया और उसे सिर्फ पांच वर्ष की कड़ी कैद की सजा दी।

हाईकोर्ट में अपील करने पर उसकी सजा केवल दो वर्ष हो गयी।

(छाया-चित्रों को छोड़कर शेष चित्र कल्पना के आधार पर चित्रकार के बनाये हुए हैं।)



चार्ल्स शोभराज

—हमारे प्रतिनिधि द्व

अन्तर्राष्ट्रीय ठगराज चार्ल्स शोभराज को अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस और कई देशों पुलिस खोज रही थी। उस पर २५ हत्याओं और अनगिनत चोरियों, लूटों डकैतियों के आरोप थे। दिल्ली में एक होटल के बेयरे की चालाकी पकड़ा गया, तो उसके मामले के प्रकाशन पर श्रीमती इन्दिरा गां सरकार ने रोक लगा दी। क्यों ?

जुलाई, १९७६ के दिनों की घटना है। दिल्ली के विक्रम होटल में लगभग ६० फ्रांसीसी पर्यटकों का एक दल ठहरा हुआ था। वे लोग भारत का भ्रमण करने आये थे। उस दल में महिलाओं तथा पुरुषों की संख्या लगभग बराबर-बराबर थी। युवा, प्रौढ़, वृद्ध, सभी आयु के लोग उस दल में थे। सभी सम्पन्न घरानों के सैलानी थे और कई देशों का भ्रमण करके भारत में आये हुए थे।

उस शाम दिल्ली में काफी गरमी पड़ रही थी। विदेशी यात्री गरमी के मारे परेशान थे, फिर भी उनकी मस्ती में कोई कमी नहीं आयी थी। उस शाम उनमें से कुछ कनाट प्लेस खरीददारी के लिए गए हुए थे, कुछ स्विमिंग पूल में जल-क्रीड़ा में मस्त थे और कुछ होटल की लान में बैठ बीयर की चुस्कियां ले रहे थे।

उस समय होटल की लान काफी गुलजार नजर आ रही थी। एक कोने की मेज पर फ्रांसीसी पर्यटक बैठे बीयर पी रहे थे। और गप्पें लड़ा रहे थे। फिर वे हीरे-जवाहरात के बारे में बातें करने लगे।

उसी दिन सुबह दो-तीन पर्यटकों ने दिल्ली में कुछ कीमती पत्थर खरीदे थे। वे अपने साथियों से उन्हीं पत्थरों के विषय में बातें कर रहे थे। वे फ्रांसीसी भाषा में बातचीत कर रहे थे। उनका ख्याल था कि उनके आस-पास बैठे अन्य लोग फ्रांसीसी न जानते होंगे।

मगर यह उनका भ्रम था। दायीं तरफ़ की मेज पर बैठे दो युवक उनकी बातचीत बड़े ध्यान से सुन रहे थे। कुछ देर बा से एक युवक उठा और उन फ्रांसीसी पर्यटकों की मेज के पास फ्रांसीसी भाषा में अपना परिचय देते हुए कहा, "मुझे अलन ग कहते हैं।"

विदेश में किसी अपरिचित से अपनी भाषा सुनकर कि सैलानी का प्रसन्न होना स्वाभाविक ही है। उन फ्रांसीसी पर्य अलन गोथियर का हार्दिक स्वागत किया और उसे कुर्सी खीं बैठने को कहा।

अलन गोथियर ने बैठते ही हीरे-जवाहरात की चर्चा छे उसने कहा, "मेरी बैंकाक में हीरे-जवाहरात की बहुत बड़ी दुक आप लोग हीरे-जवाहरात के विषय में जो बातें कर रहे थे, सुन अपने को न रोक सका। मेरा तो धंधा ही इन कीमती का है।"

अलन गोथियर के इन शब्दों ने फ्रांसीसियों पर जादू का किया। वे उससे हीरे-जवाहरत के सम्बन्ध में प्रश्न-पर-प्रश्न लगे और अलन बड़ी शान से एक विशेषज्ञ की भांति उनके प्र उत्तर देने लगा।

"क्या आप भी फ्रांसीसी हैं ?" एक पर्यटक ने अलन से पूछा

"हां," अलन ने उत्तर दिया, "आइए, मैं अपने एक अन्य फ्रांसीसी मित्र से भी आपको मिलवाऊं।" कहकर अलन ने अपने दूसरे साथी को इशारा किया, तो वह भी आकर उस महफिल में शरीक हो गया।

"यह है जीन ध्यूसिमी," अलन ने अपने साथी का परिचय कराया।

फिर तो अगले दो-तीन घंटे तक अलन गोथियर, जीन ध्यूसिमी और फ्रांसीसी पर्यटक वहां बैठे बातचीत करते रहे।

बातचीत के दौरान अलन को जब पता चला कि अगली सुबह फ्रांसीसियों का वह दल ताजमहल देखने आगरा जा रहा था, तो उसने ताज के विषय में उन्हें कितनी ही रंगीन किंवदन्तियां सुना डालीं। इससे प्रभावित होकर फ्रांसीसियों ने अलन से आग्रह किया कि वह भी उनके साथ आगरा चले।

अलन ने फौरन अपनी सहमति दे दी।

अगली सुबह होटल से फ्रांसीसियों को लिये हुए एक बस आगरा के लिए रवाना हुई। उसके पीछे-पीछे एक फ्रांसीसी सिट्रोन कार भी रवाना हुई जिसे जीन ध्यूसिमी चला रहा था और उसके पास अलन गोथियर बैठा था। वह कार जीन की ही थी, जिसे वह फ्रांस से भारत ले आया था।

आगरा में अलन और जीन फ्रांसीसियों से काफी घुल-मिल गये।

ताज की छाया में अलन ने फिर हीरे-जवाहरात की चर्चा छेड़ दी। उसने कहा, "यहां भारत में धोखाधड़ी होती है। हीरे-जवाहरात के नाम पर यहां के जौहरी ऊंचे दामों पर नकली चमकीले पत्थर बेच देते हैं। जब तक पत्थरों की पहचान न हो, उन्हें नहीं खरीदना चाहिए।"

अलन गोथियर के इन शब्दों ने फ्रांसीसी पर्यटकों को आशंकित कर दिया। वे अब तक अलन की जानकारी से काफी प्रभावित हो चुके थे। उनमें से कुछ ने उसे अपने-अपने कीमती पत्थर दिखाये।

अलन ने एक कुशल जौहरी की तरह उन पत्थरों का निरीक्षण किया। फिर एक ठंडी सांस भरते हुए उसने कहा, "अफसोस! आप लोग लुटे गये! ये सब तो नकली हैं! सिर्फ पत्थरों पर पालिश की हुई है। मैं पहले ही सोचता था कि आप लोग लूट लिये गये होंगे।"

अलन की इस बात से फ्रांसीसियों के मुंह लटक गये।

"आप लोग घबराइए नहीं! मैं किसी-न-किसी तरह इन्हें बिकवा कर आप लोगों को इनके बदले कुछ अन्य जेवर दिला दूंगा।" अलन ने उन्हें आश्वस्त करने का प्रयत्न किया।

वे लोग आगरा से वापस चलने लगे, तो अलन ने उन्हें समझाया कि भारत के पानी में काफी गंदगी होती है। यहां कोई सैलानी सावधानी न बरते, तो वह निश्चित रूप से बीमार पड़ सकता है।

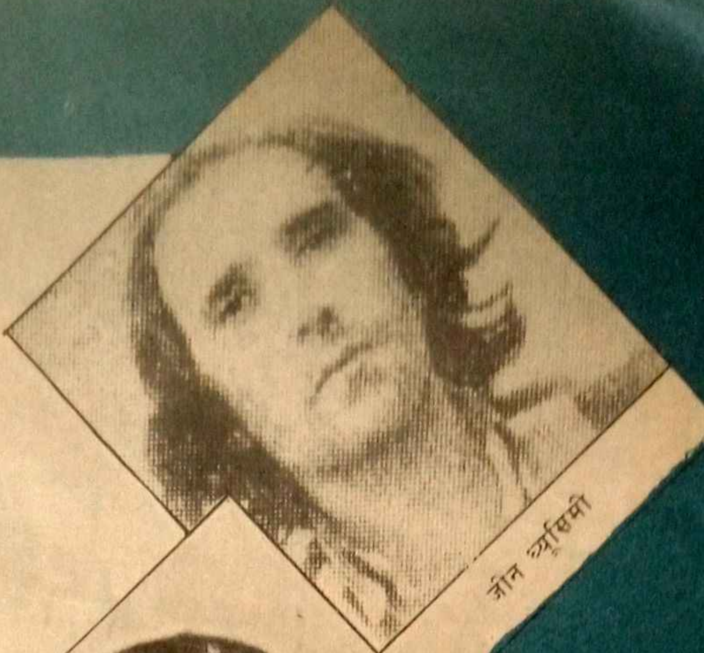
इस पर कई फ्रांसीसियों ने अलन को बताया कि पिछले कई दिनों से उनका पेट खराब चल रहा था।

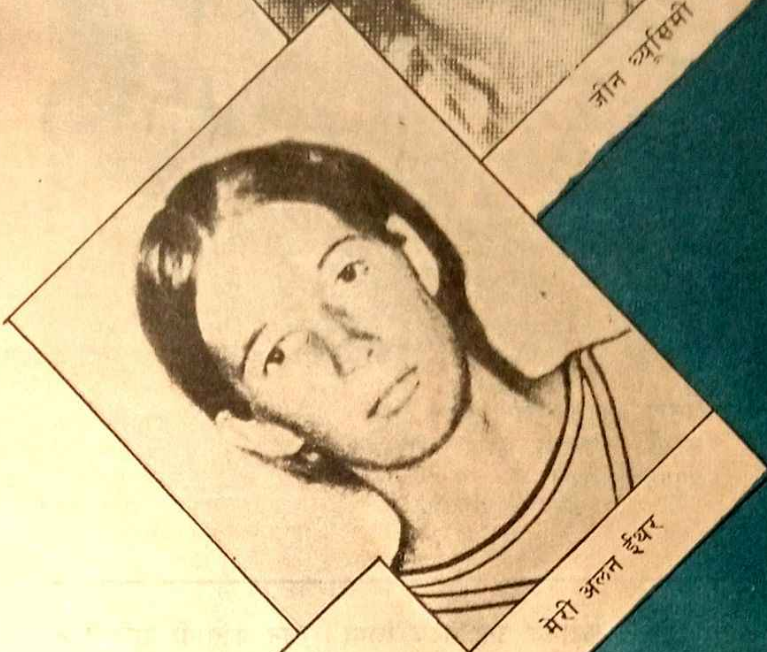
"आप लोग घबराइए नहीं। मेरे पास पेट की गोलियां हैं। आप लोग इन्हें खा लीजिए, तो एक माह तक किसी भी तरह के प्रदूषण से आप लोग मुक्त रहेंगे। इनके तीन डोज लेने चाहिए।"

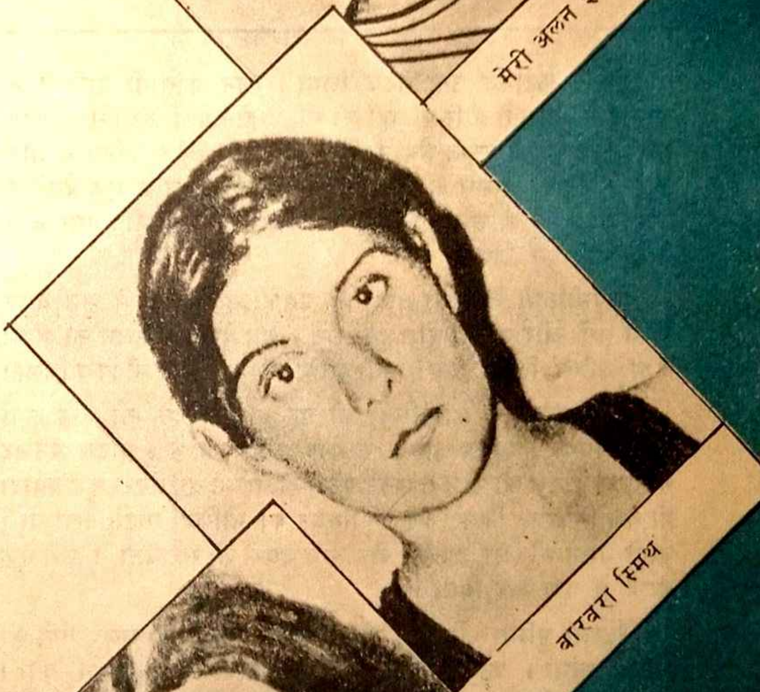
कहकर अलन ने अपनी जेब से कुछ सफेद रंग की गोलियां तथा गुलाबी और सफेद रंग के कैप्सूल निकाल कर उन्हें बांटे और कहा, "इन्हें आप खाना खाने से पूर्व लीजिएगा।"

उसी दिन, ५ जुलाई, १९७६ को दल दिल्ली वापस आ गया। अगली सुबह ६ जुलाई को उन्हें बैंकाक के लिए हवाई जहाज से रवाना होना था। वे लोग एक रात के लिए फिर उसी होटल में ठहर गये।

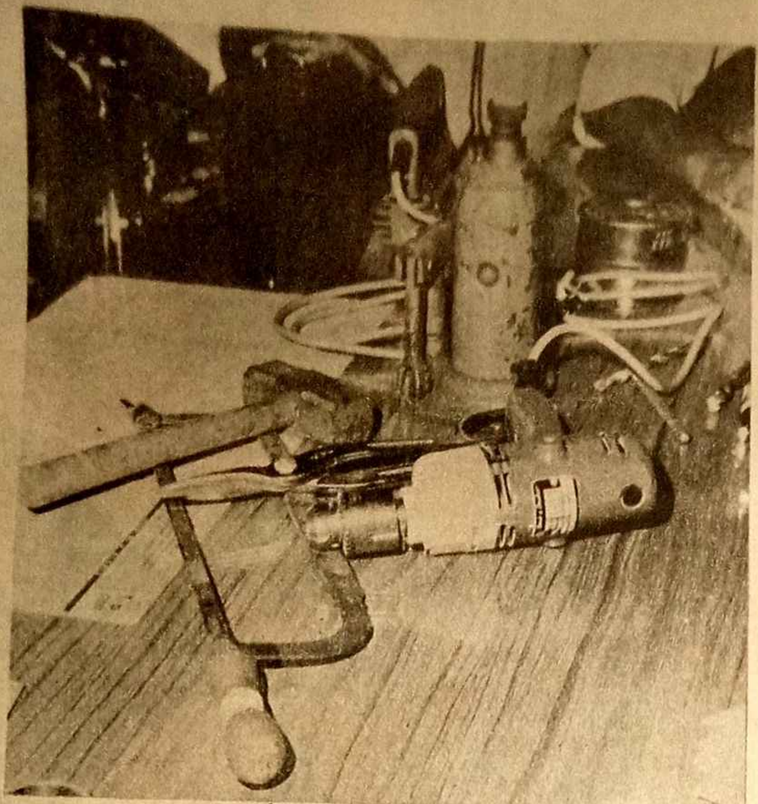
रात हुई, तो उन्होंने डिनर लेने की तैयारी की। खाना खाने से पूर्व उन्हें अलन द्वारा दी गयी गोलियों और कैप्सूलों की याद आयी,


जीन ध्यूसिमी


मेरी अलन ईथर


बारबरा स्मिथ


मेरी आन्द्रे



अशोक होटल चोरी कांड में चार्ल्स शोभराज दल द्वारा प्रयुक्त औजार।

तो उन्होंने फटाफट उन्हें गटक लिया। जिन फ्रांसीसी यात्रियों ने आगरा में अलन से गोलियां नहीं ली थीं, उन्होंने यहां अलन से गोलियां मांगीं तो अलन ने तुरन्त जेब में से गोलियां और कैप्सूल निकाले और उन्हें दे दिये। अलन को गोलियां बांटते हुए होटल के एक बेयरे ने देखा, तो अलन ने उस बेयरे को दो गोलियां देनी चाहीं, मगर बेयरे ने इनकार कर दिया।

फ्रांसीसियों ने डिनर लिया। उसके बाद उनमें से कुछ वमन करने लगे और कुछ बेहोश होने लगे। यह देख कर अलन का साथी जीन ध्यूसिमी खिसक गया। मगर अलन को भागने का मौका न मिला।

होटलवालों ने फ्रांसीसियों की यह हालत देखी, तो उन्हें लगा कि वे लोग 'फूड पायजिनिंग' के शिकार हो गये थे। होटल मैनेजर ने तुरन्त पुलिस को फोन से खबर की। होटल का वह बेयरा कुछ ज्यादा ही तेज निकला, जिसने अलन गोथियर को गोलियां बांटते देखा था। उसने अलन को धर दबोचा और अन्य बेयरों की सहायता से उसे एक कमरे में बन्द कर दिया।

दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा का एक दल खबर पाते ही होटल पहुंचा। फ्रांसीसियों को तुरन्त अस्पताल पहुंचाया गया। कुल २२ यात्रियों ने गोलियां और कैप्सूल खाए थे और वे सभी बीमार पड़ गये थे।

अगले दिन उपचार के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। सौभाग्यवश किसी के प्राण नहीं गये, गोकि अलन ने उन्हें मार डालने का ही इन्तजाम किया था।

अलन गोथियर एक कमरे में बन्द पड़ा था और चार बेयरे उस पर पहरा दे रहे थे। अलन बार-बार यही कह रहा था, "भला मैं उन्हें जहर क्यों दूंगा? वे लोग तो मेरे दोस्त हैं!..."

पुलिस-अधिकारी को जब यह बताया गया कि एक व्यक्ति को यात्रियों को गोलियां बांटते हुए दिखायी दिया था, उसे पकड़कर एक कमरे में बन्द कर रखा गया है, तो वो पुलिस-अधिकारी, जिनमें से एक दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा के डी० एस० पी० श्री नरेन्द्रनाथ तुली थे, वह कमरा खोलकर उसमें घुसे।

श्री तुली की नजर जैसे ही अलन पर पड़ी, वे चौंक उठे और उनके मुंह से अनायास निकल पड़ा, "हैलो, चार्ल्स शोभराज!"

अलन गोथियर ने इस पर ऐसा प्रकट किया, मानो वह चार्ल्स शोभराज का नाम पहली बार सुन रहा हो। मगर श्री तुली धोखा खानेवाले नहीं थे। वे कई बरसों से चार्ल्स शोभराज की तलाश में थे। शोभराज ने इस समय दाढ़ी बढ़ा रखी थी, फिर भी श्री तुली को उसे पहचानने में कोई दिक्कत नहीं हुई। उन्हें अपनी स्मरण-शक्ति पर पूरा भरोसा था। फिर भी उन्होंने उसे गिरफ्तार करने से पूर्व अपने को पूर्ण रूप से आश्वस्त कर लेना जरूरी समझा।

उन्होंने अलन गोथियर का कपड़ा उठाकर उसका पेट देखा, तो उस पर हर्निया के आपरेशन का चिन्ह था। फिर उन्होंने उसकी कलाई देखी, तो उस पर एक घाव का निशान था। इन दो निशानों से ही उन्हें विश्वास हो गया कि वह धूर्तराज चार्ल्स शोभराज ही था।

अलन गोथियर उर्फ चार्ल्स शोभराज से जब उसके अन्य साथियों के विषय में पूछताछ की गयी, तो उसने उनका पता बता दिया। उसके गिरोह के तीन सदस्य जीन ध्यूसिमी, (३० वर्ष) मेरी आन्द्रे लीक्लर्क (३० वर्ष) और मेरी एलन ईथर (२६ वर्ष) को कनाट प्लेस के एक होटल में दबोच लिया गया और एक अन्य सदस्या बारबरा केरिल स्मिथ (२२ वर्ष) को दिल्ली के एक डिस्कोथिक में किसी के साथ डांस करते हुए पकड़ा गया।

इस प्रकार चार्ल्स शोभराज के गिरोह के सभी सदस्य, जिनमें जीन ध्यूसिमी पुरुष था और शेष युवतियां थीं, पकड़ लिये गये।

चार्ल्स शोभराज कौन था?

चार्ल्स शोभराज (३३ वर्ष) का मूल पूरा नाम चार्ल्स गुरमुख शोभराज है। लेकिन इंटरपोल (अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस) तथा राष्ट्रीय पुलिस के रिकार्डों में उसके अलन गोथियर, डेविड अलन गोर, जो बेलामेंट, लारेंट कैरियोर आदि नाम दर्ज हैं।

चार्ल्स शोभराज के पिता श्री होतचन्द शोभराज एक भारती



दिल्ली पुलिस (अपराध शाखा) के डी० एस० पी० श्री नरेन्द्रनाथ तुली : अन्तर्राष्ट्रीय अपराध कांड का भंडाफोड़ किया।

सिन्धी थे। बहुत साल पहले वह बेंकाक में बस गये थे और वहां उन्होंने एक वियतनामी महिला जो फ्रांसीसी पिता और वियतनामी मां की सन्तान थी, के साथ विवाह कर लिया था। उसी मां के गर्भ से चार्ल्स शोभराज ने जन्म लिया था। पिता ने उसका नाम गुरमुख शोभराज रखा था, मगर उसकी मां के कहने पर इस नाम के पहले 'चार्ल्स' भी जोड़ दिया गया था।

चार्ल्स शोभराज के माता-पिता में जल्दी ही अनबन हो गयी थी। चार्ल्स शोभराज अभी बालक ही था कि उसके माता-पिता एक दूसरे से तलाक लेकर अलग हो गये थे। उसके बाद चार्ल्स की मां उसे अपने साथ लेकर फ्रांस चली गयी थी और वहां उसने एक सैनिक अधिकारी से विवाह कर लिया था।

जब चार्ल्स १६ वर्ष का हुआ था, तो वह अपने पिता होतचन्द शोभराज के पास बेंकाक चला गया था। मगर उसके पिता अपने बिगड़े हुए पुत्र को अपने पास ज्यादा दिनों तक न रख सके थे। एक दिन उन्होंने उसे घर से निकाल दिया था।

उसके बाद दस वर्ष तक चार्ल्स शोभराज तरह-तरह के छोटे-बड़े अपराधों में लिप्त रहा था। उसका मुख्य कार्य-क्षेत्र दक्षिण-पूर्व एशिया था। इस बीच वह कई बार फ्रांस भी हो आया था, और उसने एक फ्रांसीसी युवती के साथ विवाह कर लिया था।

अशोक होटल में चोरी

दिल्ली पुलिस की नजर पर चार्ल्स शोभराज कैसे चढ़ा, इसकी एक अत्यन्त रोमांचक कहानी है। बात १९७१ की है।

२८ अक्तूबर, १९७१ को शाम को दिल्ली के अशोक होटल में स्पेन की प्रसिद्ध नर्तकी ग्लोरिया मंडालिक का उत्तेजक नृत्य चल रहा था। दर्शकों के बीच एक मेज पर दो विदेशी भी बैठे हुए नृत्य का आनन्द ले रहे थे, जिनमें से एक का एक नाम चार्ल्स शोभराज था और दूसरे का पेरी आन्द्रे था।

नृत्य-समाप्ति के पश्चात् जब ग्लोरिया अपने कमरे में पहुंची, तो उसे एक पत्र मिला, जिसमें शोभराज ने उससे मिलने की इच्छा प्रकट की थी। ग्लोरिया अभी सोच ही रही थी कि क्या उत्तर दे कि अचानक चार्ल्स शोभराज उसके कमरे में आ गया।

चार्ल्स ने ग्लोरिया के नृत्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। ग्लोरिया को स्वभावतः यह बहुत अच्छा लगा।

"यदि तुम चाहो, तो मैं हांगकांग आदि में तुम्हारे नृत्य-प्रदर्शन की व्यवस्था करवा सकता हूं।" चार्ल्स ने कहा।

ग्लोरिया ने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। कहा जाता है कि जाते समय चार्ल्स ग्लोरिया के कुछ चित्र और अन्य विज्ञापन-सामग्री उससे मांग कर ले गया।

ग्लोरिया २० अक्तूबर को अशोक होटल में आकर ठहरी थी। वह नृत्य-प्रदर्शन के लिए अनुबन्धित की गयी थी। उसका कमरा होटल की प्रथम माला पर था। उसके कमरे के ठीक नीचे, निचली मंजिल पर, राजस्थान एम्पोरियम था।

अगले दिन चार्ल्स अपने मित्र आन्द्रे के साथ पुनः ग्लोरिया के कमरे में पहुंचा। उस समय शाम घिर आयी थी। ग्लोरिया ने उन दोनों का स्वागत किया।

मगर चार्ल्स ने उस शाम ग्लोरिया से नृत्य के कार्यक्रम के विषय में कोई चर्चा नहीं की। उसने उससे कहा, "हमारा उद्देश्य दरअसल तुम्हारे कमरे के नीचे वाले राजस्थान एम्पोरियम को लूटने का है। तुम हमारे इस अभियान में हमारे साथ सहयोग करो।... तुम सहयोग देने से इनकार करोगी, तो तुम्हारी खैर नहीं! हमारे पास हथियार हैं और पलक झपकते ही हम तुम्हें इस संसार से विदा कर देंगे!"

चार्ल्स की इस धमकी से ग्लोरिया घबरा गयी। वह चुपचाप सोफे पर बैठ गयी और उसने सहयोग करने का आश्वासन दे दिया।

तब चार्ल्स और आन्द्रे ने अपने बैग में से ड्रिलिंग मशीन, नायलोन का रस्सा, लोहा काटने की आरी आदि औजार निकाले।

ग्लोरिया चुपचाप, आंखें फाड़े देखती रही। चार्ल्स ने ड्रिलिंग मशीन को कमरे के फर्श पर फिट कर चालू कर दिया। उसके चालू होते ही बड़ी आवाज हुई, तो चार्ल्स को लगा कि यह आवाज कहीं बाहर वाले सुन न लें। इसलिए कुछ देर बाद ही उसने मशीन बन्द कर दी। जब उसने फिर उसे चालू किया, तो मशीन के सूजे की नोंक टूट गयी। तब विवश होकर चार्ल्स और उसके साथी आन्द्रे ने फर्श में सुराख करने का विचार त्याग दिया।

अब क्या किया जाए? चार्ल्स इतनी जल्दी हार मानने वाला न था। उसने सोचकर एक तरकीब निकाली। उसने ग्लोरिया से कहा, "तुम राजस्थान एम्पोरियम को फोन कर उनसे कुछ कीमती हीरे-जवाहरात के आभूषण देखने के लिए मांगो!"

ग्लोरिया ने ऐसा ही किया।

एम्पोरियम का मैनेजर ए० के० रकियन कुछ बहुमूल्य आभूषणों के साथ ग्लोरिया के कमरे में पहुंचा। ग्लोरिया ने उससे आन्द्रे का परिचय अपने सेक्रेटरी के रूप में कराया। चार्ल्स उस समय बाथ रूम में छिप गया था।

चार्ल्स की योजना के अनुसार ग्लोरिया ने उन आभूषणों को नापसन्द कर दिया और मैनेजर से कहा, "आप जाइए। अन्य नमूने देखने होंगे, तो मैं अपने सेक्रेटरी से कहलवा भेजूंगी।"

रकियन जाने लगा, तो आन्द्रे ने उससे एम्पोरियम के बन्द होने का समय पूछा। मैनेजर ने बता दिया, "साढ़े सात बजे।"

साढ़े सात बजे के करीब आन्द्रे एम्पोरियम में गया। उस समय रकियन दुकान बन्द कर रहा था। आन्द्रे ने उससे कहा, "आपको मिस ग्लोरिया ने बुलाया है।"

एम्पोरियम बन्द करने के पश्चात रकियन आन्द्रे के साथ ग्लोरिया के कमरे में पहुंचा।

जैसे ही रकियन ग्लोरिया के कमरे में घुसा, चार्ल्स और आन्द्रे ने मिलकर उसे दबोच लिया और उसके मुंह में कपड़ा ठूंसकर उसे रस्सी से बांध दिया।

उसके बाद उन दोनों ने ग्लोरिया के मुंह में भी कपड़ा ठूंसकर और उसे बांधकर सोफे पर डाल दिया।

रकियन इधर-उधर हाथ-पांव मार रहा था और मुंह से 'गों-गों' की आवाज भी निकाल रहा था। यह देखकर चार्ल्स ने उसके मुंह में कुछ तरल द्रव्य टपका दिया, जिसके परिणाम-स्वरूप कुछ मिनटों में ही रकियन बेहोश हो गया।

अब चार्ल्स ने रकियन की जेब से एम्पोरियम की चाबियां निकालीं और निचली मंजिल की ओर चल पड़ा। इधर आन्द्रे कमरे में ही चौकसी के लिए रुका रहा।

चार्ल्स ने एम्पोरियम खोलकर उसके अन्दर से लगभग करीब दो लाख मूल्य के हीरे-जवाहरात के आभूषण उठाये और फिर दरवाजा बन्द कर ग्लोरिया के कमरे में लौट आया। वहां चार्ल्स ने ग्लोरिया को चेतावनी दी, "तुम सुबह पांच बजे तक इसी तरह पड़ी रहो। इस बीच तुमने जरा भी चूं-चपड़ की, तो तुम्हारी खैर नहीं रहेगी।"

उसके बाद वे दोनों होटल से निकलकर गायब हो गये।

अगले दिन सुबह पुलिस को खबर दी गयी, तो जांच शुरू हुई। मगर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उस समय तक चार्ल्स और आन्द्रे कराची पहुंच चुके थे।

इसके बाद आन्द्रे का तो पता नहीं चला, मगर चार्ल्स करीब दस दिन बाद कार से पाकिस्तान की सीमा पर हुसैनीवाला से भारत में घुसा और बम्बई पहुंचा। वहीं कुछ दिन बाद दिल्ली-पुलिस ने उसे पकड़ लिया।

तफ्तीश के लिए चार्ल्स को दिल्ली लाया गया। वह पुलिस की हिरासत में ही था कि उसे हर्निया का दर्द होने लगा। तब उसे विलिंगडन अस्पताल में आपरेशन के लिए भर्ती कराया गया।

वे दिन भारत-पाक युद्ध के थे। दिल्ली में ब्लैक आउट चल रहा था। इसी अवसर का चार्ल्स ने लाभ उठाया।

उसका हर्निया का आपरेशन सफल हो गया था और वह पूर्णतया स्वस्थ हो चुका था। एक रात ब्लैक आउट के अंधकार का लाभ उठाकर चार्ल्स अस्पताल से भाग निकला। मगर वह स्टेशन पर फिर पकड़ लिया गया।

चार्ल्स की गिरफ्तारी की खबर पाकर उसकी फ्रांसीसी पत्नी हवाई जहाज से दिल्ली आयी और उसने अपने पति की जमानत की अर्जी दी, तो अर्जी मंजूर हो गयी।

चार्ल्स जमानत पर रिहा हुआ तो एक दिन वह बड़े रहस्यमय ढंग से भारत से गायब हो गया।

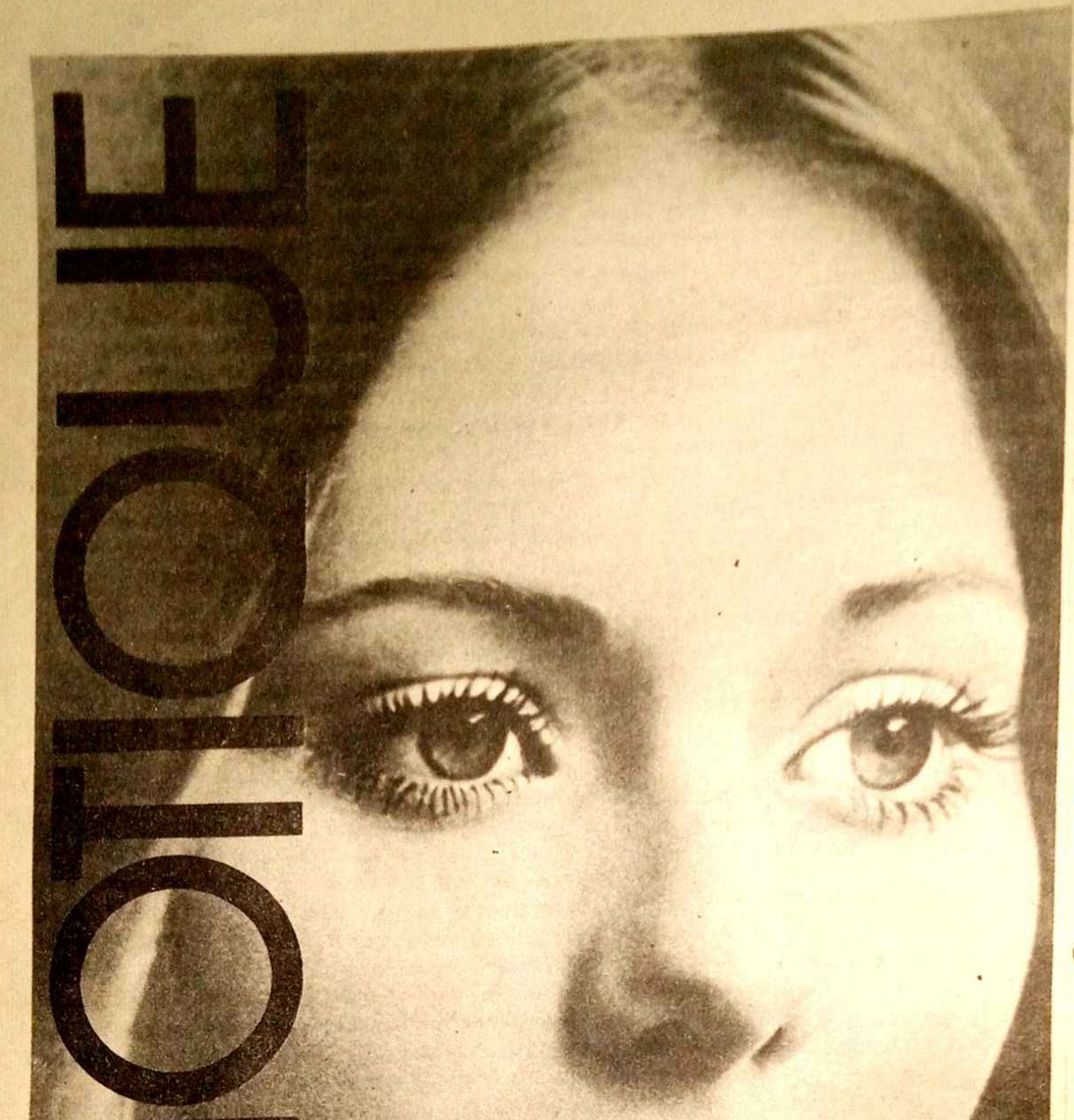
कहते हैं कि इस घटना के पश्चात उसकी फ्रांसीसी पत्नी ने उसका परित्याग कर दिया था।

विदेशों में

अगले कुछ वर्ष चार्ल्स शोभराज मुख्यतः दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में रहा। सैगोन, बैंकाक, हांगकांग, आदि शहरों में वह अपराध करता घूमता रहा।

३३ वर्षीय चार्ल्स शोभराज बड़े ही आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी है। वह आठ भाषाओं का ज्ञाता है। वह कुछ-कुछ चीनी भी जानता है। वह औरतों और तेज कारों का शौकीन है। वह वाकपटु है। पहली बातचीत में ही वह लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। युवतियों पर तो उसका व्यक्तित्व जादू का असर करता है।

वह शान-शौकत में रहता है, बड़े होटलों में टिकता है, कीमती कारें रखता है और हीरे-जवाहरात का जानकार होने का ढोंग करता है। उसके इन्हीं

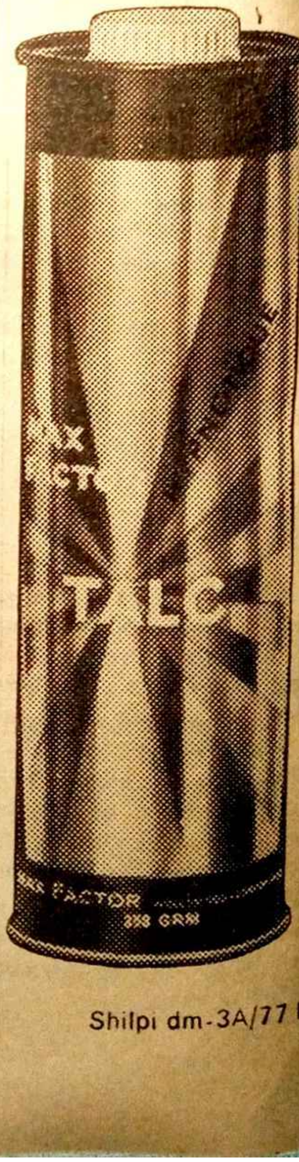


आराम आ-रा-म
आप नहाए हैं...
अब हिप्नोटीक
आ-रा-म
आप तरोताज़ा हैं...
हिप्नोटीक से
आप महसूस कर रहे हैं...
हिप्नोटीक
म-ह-सू-स कीजिए
फ्रेंच खुशबू...
हिप्नोटीक
महकती, मदमाती...
हिप्नोटीक
जा-गि-ए

आपके लिए मनमोहक ताज़गी

हिप्नोटीक टॅल्क

जगप्रसिद्ध सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माता मैक्स फ़ैक्टर की देन।
३५० ग्राम और १०० ग्राम पैक



Shilpi dm-3A/77 Hin

तौर-तरीकों से सैलानी उसकी ओर आकर्षित होकर उसके जाल में फंस जाते हैं। सैलानियों को फंसाने के लिए वह सुन्दर युवतियों का भी प्रयोग करता है।

अपराध करने का चार्ल्स का तरीका बड़ा ही अनोखा है। वह मुख्य रूप से सैलानियों को ही अपना शिकार बनाता है। पहले वह उनसे घुलमिल कर उनका विश्वास प्राप्त कर लेता है। फिर वह मौका देखकर शराब अथवा खाने में मादक द्रव्य मिलाकर उन्हें बेहोश कर देता है। उसके बाद उनका माल उड़ाकर वह उड़नछू हो जाता है। कई बार उसके शिकार अधिक मादक द्रव्य के कारण मर भी जाते हैं। इस तरह से मरे सैलानियों की लाशों को वह जला देता है। ताकि फिर कभी उनकी शिनाख्त न हो सके।

चार्ल्स किसी एक स्थान पर ज्यादा दिन तक नहीं टिकता। स्थान बदलना उसके लिए उतना ही जरूरी था, जितना कि नाम बदलना। हांगकांग में उसके बैंक लाकर को जब पुलिस ने तोड़ा था, तो उसमें से १८ चुराये हुए पासपोर्ट मिले थे। चार्ल्स अपने शिकारों का माल तो हड़पता ही था, उनका पासपोर्ट भी उड़ा लेता था। और उनके अनुसार अपना नाम बदल-बदल कर जाली पासपोर्ट पर विदेशों की सैर करता था और अपना करिश्मा दिखाता था।

चाकू फेंकने और पिस्तौल, बन्दूक, रिवाल्वर चलाने में वह माहिर था। कराते में भी उसे प्रवीणता प्राप्त थी। कहा जाता है कि जब वह कराते सीख रहा था, तो उसकी कलाई में एक घाव हो गया था। उस घाव का चिन्ह उसकी कलाई पर रह गया था।

इंटरपोल के अनुसार चार्ल्स शोभराज ने अन्य छोटे-मोटे कितने ही अपराधों के साथ विभिन्न देशों में कम-से-कम १५ हत्याएं की थीं। अकेले थाईलैंड में उसने पांच हत्याएं की थीं। बैंकाक में उसका अपना एक फ्लैट था, जहां वह हीरे-जवाहरात का व्यवसाय करता था। उन्हीं दिनों उसके हाथ एक अमेरिकी लड़की ऐनी थरेशा नोल्टन लग गयी। एक दिन चार्ल्स को उस लड़की के साथ समुद्र-किनारे जाते हुए देखा गया। अगले दिन उस लड़की की लाश बिकिनी में लिपटी समुद्र में तैरती मिली।

चार्ल्स की भेंट एक तुर्की-निवासी विताली हाकिम से हुई, जिसने चार्ल्स से लाखों रुपयों के आभूषण और कीमती पत्थर खरीदे। बाद में उन दोनों में दोस्ती हो गयी। एक दिन दोनों कार में जाते हुए देखे गये। लेकिन बाद में सिर्फ चार्ल्स लौटा। तुर्क की एक गर्ल फ्रेंड पूछते-पूछते चार्ल्स के पास आयी, तो चार्ल्स उस लड़की के साथ पटीया गोल्फ कोर्स की तरफ जाता हुआ दिखायी दिया। कुछ दिनों बाद विताली हाकिम का मृत शरीर पटीया गोल्फ कोर्स के निकट पाया गया और उसकी गर्ल फ्रेंड की लाश समुद्र में तैरती हुई पायी गयी।

इसके कुछ दिनों बाद चार्ल्स की भेंट मेरी आन्द्रे लीक्लर्क नामक एक कनाडियन लड़की से हुई। कहते हैं कि चार्ल्स उस लड़की के पीछे पड़ गया और वह अपराध-अभियानों में उसका साथ देने लगी। लीक्लर्क चार्ल्स पर इतनी मोहित हो गयी कि वह अपने पति का परित्याग कर उससे आ मिली। वह एक प्रशिक्षित नर्स थी।

चार्ल्स और लीक्लर्क ने मिलकर एक आस्ट्रेलियन दम्पति को लूटा। उन्होंने उन्हें दूध में मादक द्रव्य पिला दिया। जब वे बेहोश हो गये तो ये दोनों उनका कीमती सामान लेकर चम्पत हो गये।

जब चार्ल्स को लगने लगा कि बैंकाक पुलिस उसके पीछे बुरी तरह पड़ गयी थी, तो वह लीक्लर्क को साथ लेकर काठमांडू (नेपाल) चला आया। उस समय उसके साथ उसके गिरोह का एक अन्य सदस्य भी था, जिसका नाम अजय चौधरी था।

अजय चौधरी बम्बई के एक प्रसिद्ध उद्योगपति का बिगड़ा हुआ बेटा था। पैसे की अधिकता तथा विलासिता ने उसकी अपराध-वृत्ति को उभार दिया था। शुरू-शुरू में वह कारें चुराया करता था। एकाध बार वह पकड़ा भी गया था। फिर वह अफीम, चरस और गांजे का धन्धा करने लगा था। वह बहुत बड़े बाप का बेटा था, इसलिए वह पकड़ में न आता था। उसके मित्रों में कई राजनीतिक नेताओं, उद्योगपतियों तथा उच्च सरकारी अधिकारियों के पुत्र भी थे। उनकी सिफारिश से वह पुलिस के शिकंजे से बच जाता था।

अजय चौधरी की भेंट चार्ल्स शोभराज से हुई, तो वे शीघ्र ही मित्र बन गये। अजय ने चार्ल्स के साथ काम करना स्वीकार कर लिया। जब भारत से चार्ल्स भागा, तो अजय उससे बैंकाक में जा मिला। फिर वे दोनों साथ मिलकर विदेशों में अपना काम करने लगे।

चार्ल्स, लीक्लर्क और अजय चौधरी ने काठमांडू में एक कनेडियन युवक और उसकी अमेरिकी गर्ल फ्रेंड को फांस लिया। अजय चौधरी की सहायता से चार्ल्स ने उस युवक को मादक द्रव्य पिलाकर बेहोश कर दिया और फिर उसे कार में काठमांडू के बाहर ले जाकर, उसका गला घोंटकर उसकी लाश को जला दिया। बाद में उसकी अमेरिकी गर्ल फ्रेंड को भी काठमांडू से बाहर ले जाकर उन्होंने उसे चाकू मारकर, उसकी हत्या कर, लाश को जला दिया।

काठमांडू से वे तीनों वाराणसी आये। वहां चार्ल्स और लीक्लर्क श्री एवं श्रीमती पोलेंट चार्ल्स के नाम से एक होटल में ठहरे। होटल में उनकी मित्रता जेकब नामक एक इजराइली पर्यटक से हो गयी। चार्ल्स के आग्रह पर जेकब ने अजय को अपने कमरे में ही ठहरा लिया।

दो दिन पश्चात एक रात चार्ल्स और लीक्लर्क चुपचाप होटल से गायब हो गये। फिर थोड़ी देर बाद अजय चौधरी भी गायब हो गया। दूसरे दिन सुबह जेकब अपने कमरे में मृत पाया गया। किसी ने गला घोंट कर उसकी हत्या कर दी थी। पोस्टमार्टम से पता चला कि हत्या से पूर्व उसे मादक द्रव्य देकर बेहोश किया गया था।

जेकब का सारा माल गायब था।

वाराणसी से वे तीनों गोवा पहुंचे। वहां उनकी मुलाकात तीन फ्रांसीसी सैलानियों से हुई, जो मोटर लांच से श्रीलंका जा रहे थे। चार्ल्स ने उनके साथ चलने की इच्छा प्रकट की और उन्हें आश्वासन दिया कि रास्ते का आधा खर्चा वह उठाएगा। सैलानी उसकी बात मान गये।

रास्ते में कनारा के पास जब वे शराब पीने के लिए उतरे, तो चार्ल्स ने चुपके से उन तीनों के गिलासों में मादक द्रव्य डाल दिया। कुछ देर बाद तीनों सैलानी बेहोश होकर लुढ़क गये।

चार्ल्स और अजय चौधरी ने उन्हें लांच में डाला और अजय लांच चलाकर, उसका एक्सीलेटर जाम कर बाहर कूद गया। अगले ही क्षण लांच एक पेड़ से जा टकरायी।

चार्ल्स और अजय की योजना उस लांच को आग लगा देने की थी। मगर इसी बीच वहां कुछ लोग आ गये। तब वे तीनों वहां से भाग खड़े हुए। यह घटना जनवरी, १९७६ की है।

इसके बाद चार्ल्स, अजय और लीक्लर्क भारत से भाग गये। कहा जाता है कि भारत से भागकर वे बैंकाक गये। उसके बाद अजय चौधरी का कोई पता नहीं चला। मालूम नहीं कि वह जीता है या मर गया है। कहा तो यह जाता है कि बैंकाक में चार्ल्स ने ही अजय की हत्या कर दी थी, क्योंकि अजय चार्ल्स के बारे में सब कुछ जान गया था।

बाद में जब चार्ल्स फ्रांस गया, तो उसकी भेंट जीन ध्यूसिमी से हुई। चार्ल्स ने उसे अपने गिरोह का सदस्य बना लिया। जीन के पास सिट्रोन कार थी। उसी कार से वे लोग पाकिस्तान पहुंचे। पाकिस्तान में चार्ल्स की भेंट एक आवारा घूमती आस्ट्रेलियन लड़की मेरी एलन ईयर से हुई, तो चार्ल्स ने उसे भी अपने गिरोह में शामिल कर लिया।

इस प्रकार चार्ल्स, जीन ध्यूमिसी, मेरी एलन ईयर और मेरी आन्द्रे लीक्लर्क का एक गिरोह बन गया।

पाकिस्तान से ४ जून, १९७६ को वे कार से वाघा सीमा से भारत में प्रविष्ट हुए।

दिल्ली पहुंचकर उन्होंने अपना ध्यान वाई० एम० सी० ए० के होस्टल पर केन्द्रित किया। वहां चार्ल्स के जाल में तीन फ्रांसीसी सैलानी फंस गये, जिनमें एक युवती और दो युवक थे। लीक्लर्क और जीन ध्यूसिमी बाहर कार में बैठे रहे और चार्ल्स और मेरी एलन ईयर ने होस्टल में जाकर एक कमरा बुक कराया।

जब वे तीनों फ्रांसीसी सैलानी लाउंज में बैठे थे, तो एलन ईयर उनके पास गयी और उन्हें अपना परिचय दिया। बाद में ईयर ने जीन ध्यूसिमी, चार्ल्स और लीक्लर्क का भी उन सैलानियों से परिचय करा दिया।

बातचीत के दौरान कुमारी मेडीलोन नामक फ्रांसीसी सैलानी ने पेट के गड़बड़ की शिकायत की। चार्ल्स उसे अपने साथ दवा दिलवाने विलिंगडन अस्पताल ले गया और वहां एक डाक्टर से दिखवाकर दवा का पर्चा ले लिया। फिर मेडीलोन को होस्टल में छोड़कर वह दवा लेने बाहर चला गया।

जब वह लौटा, तो उसके पास कुछ गोलियां और कैप्सूल थे। एक गोली और एक कैप्सूल उसने मेडीलोन को खिला दिया। फिर उसने मेडीलोन के उन दोनों युवक साथियों को भी इस आग्रह के साथ एक-एक गोली और कैप्सूल खिला दिया कि उनके पेट भी रोग-मुक्त रहेंगे।

तीनों सैलानी अपने कमरे में पहुंचे, तो थोड़ी ही देर बाद बेहोश हो गये। चार्ल्स और उसके साथियों ने उनका करीब ५० हजार का माल उठाया और भाग खड़े हुए।

दिल्ली से वे चारों बम्बई पहुंचे। वहां उनकी भेंट बारबरा कैरिल स्मिथ नामक एक अंग्रेज लड़की से हुई। चार्ल्स ने उसे भी अपनी टोली में शामिल कर लिया और उसे हवाई जहाज का किराया देकर दिल्ली पहुंचकर प्रतीक्षा करने को कहा।

अब चार्ल्स लड़कियों को अपने गिरोह में भर्ती कर रहा था। वह जानता था कि लड़कियों के माध्यम से सैलानियों को फांसना अधिक सुगम होता है। वैसे भी उसकी तीनों साथिनें बहुत सुन्दर तेज और प्रबुद्ध थीं। वे कई

तौर-तरीकों से सैलानी उसकी ओर आकर्षित होकर उसके जाल में फंस जाते हैं। सैलानियों को फंसाने के लिए वह सुन्दर युवतियों का भी प्रयोग करता है।

अपराध करने का चार्ल्स का तरीका बड़ा ही अनोखा है। वह मुख्य रूप से सैलानियों को ही अपना शिकार बनाता है। पहले वह उनसे घुलमिल कर उनका विश्वास प्राप्त कर लेता है। फिर वह मौका देखकर शराब अथवा खाने में मादक द्रव्य मिलाकर उन्हें बेहोश कर देता है। उसके बाद उनका माल उड़ाकर वह उड़नछू हो जाता है। कई बार उसके शिकार अधिक मादक द्रव्य के कारण मर भी जाते हैं। इस तरह से मरे सैलानियों की लाशों को वह जला देता है। ताकि फिर कभी उनकी शिनाख्त न हो सके।

चार्ल्स किसी एक स्थान पर ज्यादा दिन तक नहीं टिकता। स्थान बदलना उसके लिए उतना ही जरूरी था, जितना कि नाम बदलना। हांगकांग में उसके बैंक लाकर को जब पुलिस ने तोड़ा था, तो उसमें से १८ चुराये हुए पासपोर्ट मिले थे। चार्ल्स अपने शिकारों का माल तो हड़पता ही था, उनका पासपोर्ट भी उड़ा लेता था। और उनके अनुसार अपना नाम बदल-बदल कर जाली पासपोर्ट पर विदेशों की सैर करता था और अपना करिश्मा दिखाता था।

चाकू फेंकने और पिस्तौल, बन्दूक, रिवाल्वर चलाने में वह माहिर था। कराते में भी उसे प्रवीणता प्राप्त थी। कहा जाता है कि जब वह कराते सीख रहा था, तो उसकी कलाई में एक घाव हो गया था। उस घाव का चिन्ह उसकी कलाई पर रह गया था।

इंटरपोल के अनुसार चार्ल्स शोभराज ने अन्य छोटे-मोटे कितने ही अपराधों के साथ विभिन्न देशों में कम-से-कम १५ हत्याएं की थीं। अकेले थाईलैंड में उसने पांच हत्याएं की थीं। बैंकाक में उसका अपना एक फ्लैट था, जहां वह हीरे-जवाहरात का व्यवसाय करता था। उन्हीं दिनों उसके हाथ एक अमेरिकी लड़की ऐनी थरेशा नोलटन लग गयी। एक दिन चार्ल्स को उस लड़की के साथ समुद्र-किनारे जाते हुए देखा गया। अगले दिन उस लड़की की लाश बिकिनी में लिपटी समुद्र में तैरती मिली।

चार्ल्स की भेंट एक तुर्की-निवासी विताली हाकिम से हुई, जिसने चार्ल्स से लाखों रुपयों के आभूषण और कीमती पत्थर खरीदे। बाद में उन दोनों में दोस्ती हो गयी। एक दिन दोनों कार में जाते हुए देखे गये। लेकिन बाद में सिर्फ चार्ल्स लौटा। तुर्क की एक गर्ल फ्रेंड पूछते-पूछते चार्ल्स के पास आयी, तो चार्ल्स उस लड़की के साथ पटाया गोल्फ कोर्स की तरफ जाता हुआ दिखायी दिया। कुछ दिनों बाद विताली हाकिम का मृत शरीर पटाया गोल्फ कोर्स के निकट पाया गया और उसकी गर्ल फ्रेंड की लाश समुद्र में तैरती हुई पायी गयी।

इसके कुछ दिनों बाद चार्ल्स की भेंट मेरी आन्द्रे लीक्लर्क नामक एक कनाडियन लड़की से हुई। कहते हैं कि चार्ल्स उस लड़की के पीछे पड़ गया और वह अपराध-अभियानों में उसका साथ देने लगी। लीक्लर्क चार्ल्स पर इतनी मोहित हो गयी कि वह अपने पति का परित्याग कर उससे आ मिली। वह एक प्रशिक्षित नर्स थी।

चार्ल्स और लीक्लर्क ने मिलकर एक आस्ट्रेलियन दम्पति को लूटा। उन्होंने उन्हें दूध में मादक द्रव्य पिला दिया। जब वे बेहोश हो गये तो ये दोनों उनका कीमती सामान लेकर चम्पत हो गये।

जब चार्ल्स को लगने लगा कि बैंकाक पुलिस उसके पीछे बुरी तरह पड़ गयी थी, तो वह लीक्लर्क को साथ लेकर काठमांडू (नेपाल) चला आया। उस समय उसके साथ उसके गिरोह का एक अन्य सदस्य भी था, जिसका नाम अजय चौधरी था।

अजय चौधरी बम्बई के एक प्रसिद्ध उद्योगपति का बिगड़ा हुआ बेटा था। पैसे की अधिकता तथा विलासिता ने उसकी अपराध-वृत्ति को उभार दिया था। शुरू-शुरू में वह कारें चुराया करता था। एकाध बार वह पकड़ा भी गया था। फिर वह अफीम, चरस और गांजे का धन्धा करने लगा था। वह बहुत बड़े बाप का बेटा था, इसलिए वह पकड़ में न आता था। उसके मित्रों में कई राजनीतिक नेताओं, उद्योगपतियों तथा उच्च सरकारी अधिकारियों के पुत्र भी थे। उनकी सिफारिश से वह पुलिस के शिकंजे से बच जाता था।

अजय चौधरी की भेंट चार्ल्स शोभराज से हुई, तो वे शीघ्र ही मित्र बन गये। अजय ने चार्ल्स के साथ काम करना स्वीकार कर लिया। जब भारत से चार्ल्स भागा, तो अजय उससे बैंकाक में जा मिला। फिर वे दोनों साथ मिलकर विदेशों में अपना काम करने लगे।

चार्ल्स, लीक्लर्क और अजय चौधरी ने काठमांडू में एक कनैडियन युवक और उसकी अमेरिकी गर्ल फ्रेंड को फांस लिया। अजय चौधरी की सहायता से चार्ल्स ने उस युवक को मादक द्रव्य पिलाकर बेहोश कर दिया और फिर उसे कार में काठमांडू के बाहर ले जाकर, उसका गला घोंटकर उसकी लाश को जला दिया। बाद में उसकी अमेरिकी गर्ल फ्रेंड को भी काठमांडू से बाहर ले जाकर उन्होंने उसे चाकू मारकर, उसकी हत्या कर, लाश को जला दिया।

काठमांडू से वे तीनों वाराणसी आये। वहां चार्ल्स और लीक्लर्क श्री एवं श्रीमती पोलेंट चार्ल्स के नाम से एक होटल में ठहरे। होटल में उनकी मित्रता जेकब नामक एक इजरायली पर्यटक से हो गयी। चार्ल्स के आग्रह पर जेकब ने अजय को अपने कमरे में ही ठहरा लिया।

दो दिन पश्चात एक रात चार्ल्स और लीक्लर्क चुपचाप होटल से गायब हो गये। फिर थोड़ी देर बाद अजय चौधरी भी गायब हो गया। दूसरे दिन सुबह जेकब अपने कमरे में मृत पाया गया। किसी ने गला घोंट कर उसकी हत्या कर दी थी। पोस्टमार्टम से पता चला कि हत्या से पूर्व उसे मादक द्रव्य देकर बेहोश किया गया था।

जेकब का सारा माल गायब था।

वाराणसी से वे तीनों गोवा पहुंचे। वहां उनकी मुलाकात तीन फ्रांसीसी सैलानियों से हुई, जो मोटर लांच से श्रीलंका जा रहे थे। चार्ल्स ने उनके साथ चलने की इच्छा प्रकट की और उन्हें आश्वासन दिया कि रास्ते का आधा खर्चा वह उठाएगा। सैलानी उसकी बात मान गये।

रास्ते में कनारा के पास जब वे शराब पीने के लिए उतरे, तो चार्ल्स ने चुपके से उन तीनों के गिलासों में मादक द्रव्य डाल दिया। कुछ देर बाद तीनों सैलानी बेहोश होकर लुढ़क गये।

चार्ल्स और अजय चौधरी ने उन्हें लांच में डाला और अजय लांच चलाकर, उसका एक्सीलेटर जाम कर बाहर कूद गया। अगले ही क्षण लांच एक पेड़ से जा टकरायी।

चार्ल्स और अजय की योजना उस लांच को आग लगा देने की थी। मगर इसी बीच वहां कुछ लोग आ गये। तब वे तीनों वहां से भाग खड़े हुए। यह घटना जनवरी, १९७६ की है।

इसके बाद चार्ल्स, अजय और लीक्लर्क भारत से भाग गये। कहा जाता है कि भारत से भागकर वे बैंकाक गये। उसके बाद अजय चौधरी का कोई पता नहीं चला। मालूम नहीं कि वह जीता है या मर गया है। कहा तो यह जाता है कि बैंकाक में चार्ल्स ने ही अजय की हत्या कर दी थी, क्योंकि अजय चार्ल्स के बारे में सब कुछ जान गया था।

बाद में जब चार्ल्स फ्रांस गया, तो उसकी भेंट जीन ध्यूसिमी से हुई। चार्ल्स ने उसे अपने गिरोह का सदस्य बना लिया। जीन के पास सिट्रोन कार थी। उसी कार से वे लोग पाकिस्तान पहुंचे। पाकिस्तान में चार्ल्स की भेंट एक आवारा घूमती आस्ट्रेलियन लड़की मेरी एलन ईयर से हुई, तो चार्ल्स ने उसे भी अपने गिरोह में शामिल कर लिया।

इस प्रकार चार्ल्स, जीन ध्यूमिसी, मेरी एलन ईयर और मेरी आन्द्रे लीक्लर्क का एक गिरोह बन गया।

पाकिस्तान से ४ जून, १९७६ को वे कार से वाघा सीमा से भारत में प्रविष्ट हुए।

दिल्ली पहुंचकर उन्होंने अपना ध्यान वाई० एम० सी० ए० के होस्टल पर केन्द्रित किया। वहां चार्ल्स के जाल में तीन फ्रांसीसी सैलानी फंस गये, जिनमें एक युवती और दो युवक थे। लीक्लर्क और जीन ध्यूसिमी बाहर कार में बैठे रहे और चार्ल्स और मेरी एलन ईयर ने होस्टल में जाकर एक कमरा बुक कराया।

जब वे तीनों फ्रांसीसी सैलानी लाउंज में बैठे थे, तो एलन ईयर उनके पास गयी और उन्हें अपना परिचय दिया। बाद में ईयर ने जीन ध्यूसिमी, चार्ल्स और लीक्लर्क का भी उन सैलानियों से परिचय करा दिया।

बातचीत के दौरान कुमारी मेडीलीन नामक फ्रांसीसी सैलानी ने पेट के गड़बड़ की शिकायत की। चार्ल्स उसे अपने साथ दवा दिलवाने विलिंगडन अस्पताल ले गया और वहां एक डाक्टर से दिखवाकर दवा का पर्चा ले लिया। फिर मेडीलीन को होस्टल में छोड़कर वह दवा लेने बाहर चला गया।

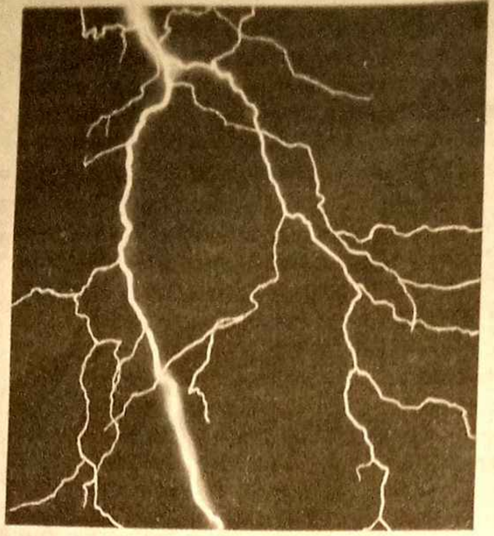
जब वह लौटा, तो उसके पास कुछ गोलियां और कैप्सूल थे। एक गोली और एक कैप्सूल उसने मेडीलीन को खिला दिया। फिर उसने मेडीलीन के उन दोनों युवक साथियों को भी इस आग्रह के साथ एक-एक गोली और कैप्सूल खिला दिया कि उनके पेट भी रोग-मुक्त रहें।

तीनों सैलानी अपने कमरे में पहुंचे, तो थोड़ी ही देर बाद बेहोश हो गये। चार्ल्स और उसके साथियों ने उनका करीब ५० हजार का माल उठाया और भाग खड़े हुए।

दिल्ली से वे चारों बम्बई पहुंचे। वहां उनकी भेंट बारबरा कैरिल स्मिथ नामक एक अंग्रेज लड़की से हुई। चार्ल्स ने उसे भी अपनी टोली में शामिल कर लिया और उसे हवाई जहाज का किराया देकर दिल्ली पहुंचकर प्रतीक्षा करने को कहा।

अब चार्ल्स लड़कियों को अपने गिरोह में भर्ती कर रहा था। वह जानता था कि लड़कियों के माध्यम से सैलानियों को फांसना अधिक सुगम होता है। वैसे भी उसकी तीनों साथिनें बहुत सुन्दर तेज और प्रबुद्ध थीं। वे कई

ELECTRIQUE





मैक्स फ़ैक्टर का नया

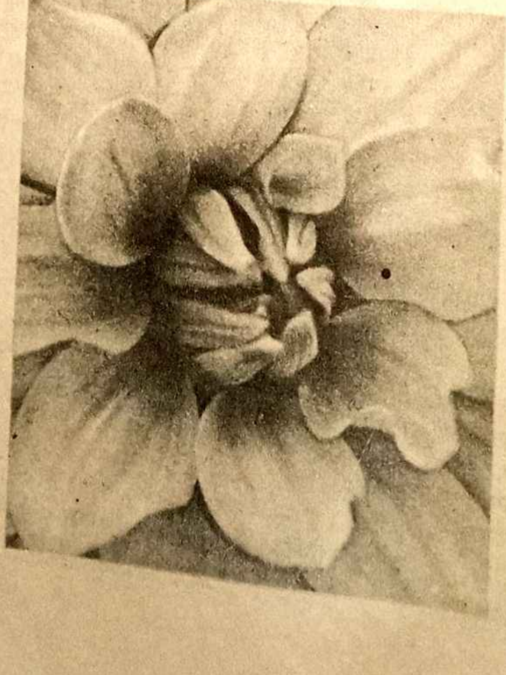
इलेक्ट्रीक टॅल्क

यानी दिनभर के लिए ताज़गी की सनसनाहट।

फ़ौरन महके
फ्रेंच खुशबू,
बिजली की
चमकार सी लाए
ताज़गी की
सनसनाहट

इलेक्ट्रीक टॅल्क

जगप्रसिद्ध सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माता मैक्स फ़ैक्टर की देन!





३५० ग्राम और/१०० ग्राम पैक

Shilpi-DM-4/77 Hin

भाषाएं जानती थी। चार्ल्स उनके माध्यम से सेक्स और अपराध के खेल खेल रहा था।

कुछ दिन बम्बई रहने के पश्चात चार्ल्स अपने गिरोह के साथ दिल्ली आ गया। अब वह दिल्ली में कोई बड़ा खेल खेलना चाहता था। यहां बारबरा स्मिथ भी उसमें आ मिली।

मादक द्रव्य से हत्या

२८ जून, १९७६ को चार्ल्स शोभराज, मेरी आन्द्रे लीक्लर्क, बारबरा स्मिथ और जीन ध्यासिमी ने रणजीत होटल में नकली नामों से दो कमरे बुक कराये। उन कमरों के नम्बर १२५ और ३१५ थे।

उसी शाम को वे चारों होटल के लाउंज में बैठे गपशप कर रहे थे। उनके शानदार कपड़े और चेहरे के भाव उनके आभिजात्य होने का परिचय दे रहे थे। तभी चार्ल्स शोभराज की नजर एक कोने में मेज पर अकेले बैठे एक विदेशी पर जा पड़ी।

कुछ देर बाद चार्ल्स ने लीक्लर्क और बारबरा को इशारा किया, तो अगले ही क्षण दोनों लड़कियां उस विदेशी की मेज के पास पहुंच गयीं और अपना परिचय देकर उनके पास बैठ गयीं। उस विदेशी ने उन्हें बताया कि वह फ्रांसीसी था और उसका नाम ल्यूक सोलोमन था। वह उस दिन रात ही वापस स्वदेश जा रहा था।

लीक्लर्क और बारबरा ने ल्यूक सोलोमन को थोड़ी ही देर में अपने रूपजाल में फंसा लिया। सोलोमन सोचने लगा कि यात्रा से पूर्व की रात मजे से बीतेगी।

कुछ देर बाद लीक्लर्क ने चार्ल्स शोभराज का परिचय ल्यूक सोलोमन से कराया। कुछ ही मिनटों में अपनी लुभावनी बातचीत में चार्ल्स ने सोलोमन का विश्वास अर्जित कर लिया। उसने कहा, "आप आज रात को तो जा ही रहे हैं। क्यों न आप अपना कमरा खाली करके हमारे कमरे १२५ में आ जाएं?"

चार्ल्स के इस प्रस्ताव का सोलोमन ने हार्दिक स्वागत किया और उसने ऐसा ही किया।

तत्पश्चात चार्ल्स ने सोलोमन को अपने साथ डिनर के लिए आमन्त्रित किया, तो कृतज्ञ सोलोमन तत्काल मान गया।

वे पांचों कनाट प्लेस के यूनाइटेड काफी हाउस में पहुंचे। चार्ल्स ने डिनर का आर्डर दिया। उसने चिकन करी मंगवाई। जब चीजें मेज पर लगा दी गयीं, तो चार्ल्स ने अपनी जेब से एक छोटी-सी शीशी निकाली जिसमें रंग-रहित एक सफेद-सा तरल पदार्थ था।

"यह क्या है?" सोलोमन ने पूछा।

"यहां के पानी के प्रदूषण को नष्ट करने की दवा," चार्ल्स ने बड़े ही सामान्य ढंग से उत्तर दिया।

सोलोमन ने भी दिल्ली के प्रदूषित जल के विषय में सुन रखा था। अतः उसने उस शीशी पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

जान ध्यासिमी सोलोमन को बातों में लगाये रहा। मौका देखकर सोलोमन की प्लेट में चार्ल्स ने शीशी में से चन्द बूंदें टपका दीं।

डिनर के बाद सभी लोग होटल लौट आये। उस समय तक सोलोमन पर किसी प्रकार का असर नजर नहीं आ रहा था।

चार्ल्स ने सोलोमन को सुझाव दिया, "आप बारबरा स्मिथ के साथ १२५ नम्बर के कमरे में सो जाइए। हम शेष लोग दूसरे कमरे ३१५ में सो जाएंगे।" बारबरा के सहवास के प्रलोभन में सोलोमन तत्काल मान गया।

इस प्रकार सोलोमन और बारबरा १२५ नम्बर के कमरे में सोने के लिए चले गये। थोड़ी देर बाद चार्ल्स वहां आया और उसने बारबरा को संकेत करते हुए कुछ सफेद गोलियां उसे थमा दीं।

सोलोमन और बारबरा एक ही बिस्तर पर लेट गये। बारबरा उसे सफेद गोली देना चाहती थी, मगर उसकी जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि अब पहले दिये गये तरल पदार्थ का असर सोलोमन पर होने लगा था। उसे चक्कर आ रहे थे।

अपनी तन्द्रा दूर करने के लिए सोलोमन बाथरूम में नहाने चला गया। जब वह तौलिया लपेटे बाहर निकला तो उसके कदम डगमगा रहे थे और आंखों में नशा छा रहा था।

कुछ मिनटों के पश्चात सोलोमन गिर पड़ा, तो बारबरा ने संकेत किया और चार्ल्स वहां तुरन्त आ गया।

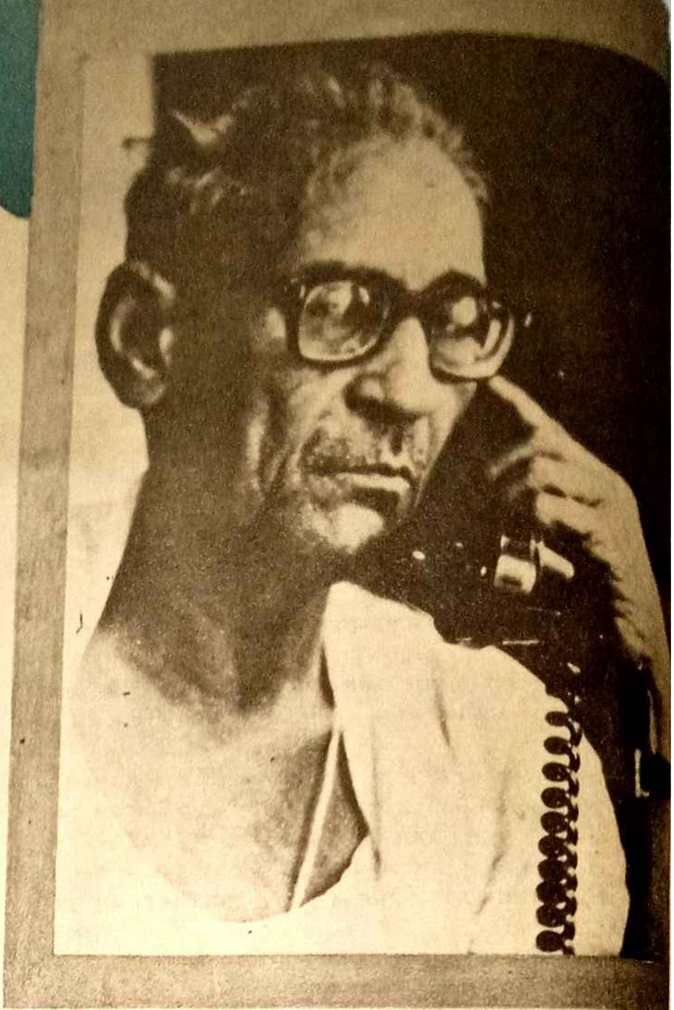
चार्ल्स ने सोलोमन को देखा, तो उसने जबरदस्ती एक सफेद गोली सोलोमन के मुंह में घुसेड़ दी। सोलोमन बेहोश हो गया, फिर चार्ल्स और बारबरा ने सोलोमन का सारा सामान उठाया और वे ३१५ नम्बर के कमरे में आ गये।

सोलोमन अपने कमरे में बेहोश पड़ा रहा। मौत की छाया उसपर मंडरा रही थी।

(शेष पृष्ठ १११ पर)

राजनीतिक नेताओं के तांत्रिक गुरु पी० एन० कपूर

अजय-अशोक



श्री पी० एन० कपूर।

क्या योग, तन्त्र, ज्योतिष या यज्ञ का राजनीति से कोई सम्बन्ध हो सकता है? क्या चुनाव जीतने या पद की रक्षा के लिए राजनीतिक नेताओं का तांत्रिकों से कोई अनुष्ठान कराना उचित है? हमारे समाज पर इसका कैसा प्रभाव पड़ेगा? जनता और राजनेता इन सवालों पर गम्भीतापूर्वक विचार करें, इसी उद्देश्य से हम लखनऊ के तथाकथित तांत्रिक पुरुषोत्तमनाथ कपूर की यह अन्तर्कथा प्रकाशित कर रहे हैं!

आपात स्थिति के दौरान जेल में श्री राजनारायण ने एक मनौती मानी थी कि जब तक श्रीमती गांधी सत्ता से नहीं हट जाएंगी, तब तक वे अपनी दाढ़ी नहीं मुड़वाएंगे।

मार्च १९७७ में लोकसभा का चुनाव हुआ। जनता पार्टी ने कांग्रेस का सफाया कर इन्दिरा गांधी की तानाशाही ख़त्म की और देश में लोकशाही को पुनः स्थापित किया। केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार गठित हुई, जिसमें श्री राजनारायण स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री बने। मंत्रिपद की शपथ लेने के बाद श्री राजनारायण विन्ध्याचल गये और वहां उन्होंने मुण्डन कराया। विन्ध्याचल से लौटकर वे २२ अप्रैल को लखनऊ आये और चौक मोहल्ले में रहनेवाले तांत्रिक श्री पुरुषोत्तमनाथ कपूर के यहां आशीर्वाद प्राप्त करने गये। तांत्रिक कपूर श्री राजनारायण के राजनीतिक गुरु हैं। जेल में रहते हुए श्री राजनारायण में एक बड़ा परिवर्तन हुआ। वे सन्तों के भक्त बन गये और तांत्रिक होने का दावा करने वाले पुरुषोत्तमनाथ कपूर के शिष्य बन गये। यों श्री कपूर के साथ उनका पुराना परिचय था और वे उनसे अक्सर मिलते-जुलते भी रहते थे, किन्तु बन्दी-काल में श्री कपूर के प्रति उनकी आस्था सुदृढ़ हो गयी।

जब श्री राजनारायण अपने गुरुजी का दर्शन करने चौक में पहुंचे, तो मोहल्ले के लोग उन्हें घेरकर नारे लगाने लगे। श्री राजनारायण ने चिल्लाकर भीड़ से पूछा, "यह शोर क्यों हो रहा है?"

दो-एक चमचों ने उत्तर दिया, "यह शराबी लोग हैं!"

इसी बीच एक महिला आगे निकल आयी और उसने श्री राजनारायण से कहा, "कपूर तांत्रिक ने मेरा घर गिरवा दिया है!"

यह सुनकर श्री राजनारायण बिना कोई जवाब दिये आगे बढ़ गये। जब वे श्री कपूर के यहां पहुंचे, तो जनता पार्टी के युवकों ने श्री कपूर के मकान का घेराव कर नारे लगाये और भारी रोष प्रकट किया।

यह अपने-आप में ही एक ऐसी असाधारण घटना थी, जो पूरे लखनऊ शहर में चर्चा का विषय बन गयी। 'नेताजी' (राजनारायणजी को उनके शिष्य 'नेताजी' कहते हैं।) के गुरुजी के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए एक दिन मैं उनके आलीशान बंगले पर गया।

गुरुजी से मिलकर मैंने अपना परिचय दिया और उनसे 'इंटरव्यू' के लिए समय मांगा।

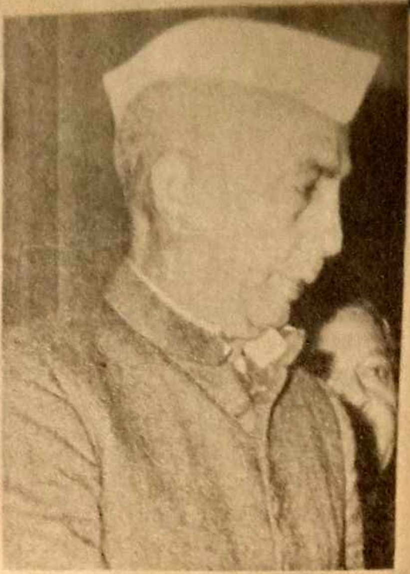
गुरुजी बोले, "भाई, इस समय मैं बहुत व्यस्त हूं। चौधरी चरण सिंह का बुलावा आया है। आज ही रात मैं दिल्ली जा रहा



श्रीमती इन्दिरा गांधी।



श्री राजनारायण।



श्री चरण सिंह।

हूं। उनके लिए कुछ जाप वगैरह करना है। दो-चार दिन वहीं रहूंगा। उसके बाद किसी भी दिन फोन करके आ जाइएगा।"

कहते हैं कि तांत्रिक कपूर ने अपने उस दिल्ली-प्रवास के दौरान चौधरी साहब से तुरन्त विधान सभाओं का चुनाव कराने के लिए कहा था और यह चेतावनी भी दी थी कि यह मन्तर चूक जाने पर जनता पार्टी के हाथ में विधान सभाएं नहीं आ पाएंगी। कहते हैं कि इसी सुझाव के कारण चौधरी साहब ने विधान सभाओं के चुनाव की कार्यवाही शुरू की।

चार दिन बीत जाने के बाद मैंने दो बार कपूर साहब को फोन किया, तो पता चला कि वे अभी दिल्ली में ही थे।

तब मैं उनके शिष्यों से मिला। उनसे गुरुजी के बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिश की।

एक शिष्य ने मुझे बताया कि एक दिन एक आयकर निरीक्षक गुरुजी से मिलने आये। वे उन दिनों काफी परेशान थे। जैसे ही वे गुरुजी के सामने आये गुरुजी ने उनसे कहा, "जाओ, तुम्हारी पदोन्नति होनेवाली है!"

यह सुनते ही वे सकपकाकर बोले, "गुरुजी, अभी तो मेरी पदोन्नति का कोई सवाल ही नहीं है मैं तो..."

उन्हें बीच में ही रोककर गुरुजी बोले, "भाई, हमें तो यही मालूम होता है।" इंसपेक्टर साहब जैसे ही अपने कार्यालय में पहुंचे, उन्हें पदोन्नति का आदेश मिल गया।

एक दूसरे शिष्य ने बताया कि १९७० में आयकर विभाग के एक बाबू ने इंसपेक्टर पद के लिए परीक्षा दी, तो चुने हुए परीक्षार्थियों के पैनल में उसे बारहवां स्थान मिला। पैनेल केवल दो साल के लिए बनता था। दो वर्ष बीतने को आ गये, मगर उसका नम्बर नहीं आया, तो वह परेशान हो उठा। एक सज्जन के माध्यम से वह गुरुजी के पास पहुंचा, तो गुरुजी ने कहा, "भाई, तुम्हारा प्रमोशन हो जाएगा, परन्तु अभी ४-५ महीने लगेंगे।"

"गुरुजी, अगले महीने तो पैनल रद्द हो जाएगा। फिर चार-पांच महीने में..."

"तुम जाओ", गुरुजी बोले, "मुझे जो कहना था मैंने बता दिया।"

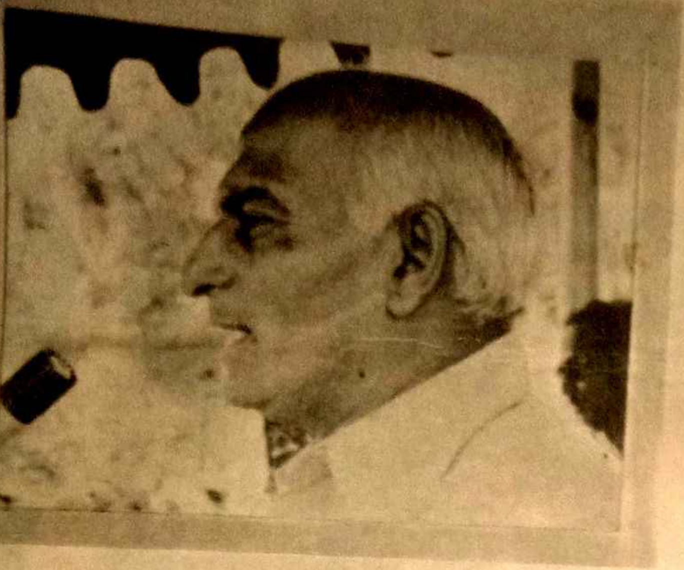
दिसम्बर में आदेश आ गया कि पैनल एक साल के लिए और बढ़ा दिया गया, तो बाबू चकित रह गया। मार्च, १९७३ में उसका प्रमोशन हो गया।

एक अन्य शिष्य का कहना है कि गुरुजी रोज उसे स्वप्न में दर्शन देते हैं।

गुरुजी के एक राजनीतिक शिष्य ने बताया कि जिस समय बहुगुणा मंत्रिमंडल में श्री राजमंगल पाण्डे परिवहन मंत्री थे, वे गुरुजी के पास अक्सर आया करते थे। उनके विरोधियों ने जिला परिषद अध्यक्ष के चुनाव में ही ब्रजराज सिंह को उनके उम्मीदवार के विरोध में खड़ा कर दिया, तो पाण्डेजी गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त करने आये। प्रारम्भ में गुरुजी ने आनाकानी करते हुए कहा, "भाई, यह मेरे वश की बात नहीं है। मैं कुछ नहीं कर सकूंगा।"

लेकिन श्री पाण्डे द्वारा बार-बार विनती करने पर गुरुजी ने उन्हें कुछ सामग्री दी। कहते हैं उसी के प्रताप से उनका उम्मीदवार कठिन संघर्ष के बावजूद विजयी रहा। बाद में गुरुजी को श्री पाण्डे ने एक फियेट कार का परमिट देने का प्रस्ताव किया, गुरुजी ने यह कहकर ठुकरा दिया, "तांत्रिक का काम लेना नहीं, देना है!"

श्री पुरुषोत्तमनाथ कपूर के पिता का नाम बाबू शिवनाथ कपूर था। वे लखनऊ के सरायमाली खां मोहल्ले में रहते थे और रेलवे में साधारण मुलाजिम थे। बचपन में पुरुषोत्तमनाथ कपूर काफी उद्दण्ड प्रकृति के थे। उन्होंने कालीचरण स्कूल से कक्षा आठ पास कर पिता से यह जिद्द की कि नवीं कक्षा में उनका दाखिला क्रिश्चियन कालेज में करा दिया जाए। क्रिश्चियन कालेज उस समय काफी महंगा कालेज था, इसलिए उनके पिता तैयार नहीं हुए। तब विवश होकर पुरुषोत्तमनाथ कालीचरण स्कूल में ही जाने लगे। लेकिन वहां उनके सहपाठियों ने जब यह कहकर उन्हें चिढ़ाना शुरू कर दिया कि 'लौट के बुद्धू घर को आये।' तो उन्होंने स्कूल जाना ही बन्द कर दिया। आगे फिर उनकी पढ़ाई न चल सकी।



श्री मधु दंडवते।

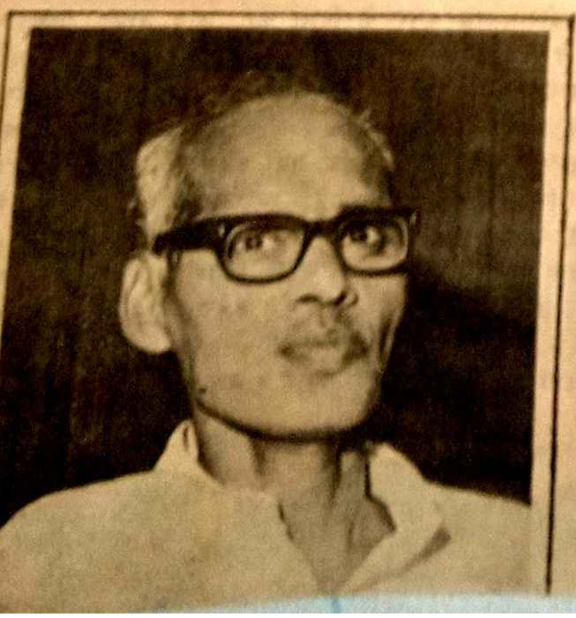
उसके बाद काफी दिनों तक पुरुषोत्तमनाथ इधर-उधर घूमते रहे। १४ वर्ष की अवस्था में वे दिल्ली गये और वहां उन्होंने जगत टाकीज में २५ रु० माहवार पर नौकरी कर ली। उनका काम फिल्म के डिब्बों को एक सिनेमा से दूसरे सिनेमा घर तक पहुंचाना था। लेकिन वे पांच महीने से अधिक वह नौकरी न कर सके। जगत टाकीज के प्रबन्धकों से झगड़ा हो जाने के कारण वे लखनऊ वापस आ गये।

इसके बाद वे दो-तीन वर्षों तक खानाबदोशों की तरह इधर-उधर घूमते रहे। १७ वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हो गया। उनकी पत्नी का नाम तारा है।

शादी के बाद पुरुषोत्तमनाथ ने एक विदेशी फर्म जेम्स एण्ड रादर फोर्ड में नौकरी कर ली। वह फर्म जुआ खेलाने का धन्धा करती थी। वह होटलों तथा सार्वजनिक स्थानों पर लकड़ी के ऐसे बक्से रखती थी, जिनमें लोग इकन्नी डालकर सीसे की दस गोलियां खानों में फेंकते थे। जिन खानों में गोलियां गिरती थीं, उनके नम्बरों के योग पर इनाम मिलता था।

फर्म ने पुरुषोत्तमनाथ की नियुक्ति आगरा में की थी। वहां उनका काम प्रति दिन शाम को उन स्थानों पर, जहां जुआ खेलने के बक्से रखे रहते थे, जाकर उनमें आयी रकम इकट्ठा करना था। बक्से से निकली रकम का ६० प्रतिशत भाग होटल मालिक को दे

श्री रामनरेश यादव।



दिया जाता था और शेष ४० प्रतिशत रकम फर्म की हो जाती थी।

पुरुषोत्तमनाथ ने लगभग एक वर्ष तक उस फर्म में नौकरी की। एक दिन फर्म के मालिक मिस्टर बर्न अपनी पत्नी के साथ आगरा पहुंचे, तो पुरुषोत्तमनाथ लगभग चार घण्टे तक मिस्टर और मिसेज बर्न के साथ उनकी सेवा-शुश्रूषा में लगे रहे। इस बीच उन्होंने कुछ खाया-पिया नहीं था। इसलिए उन्होंने मिस्टर बर्न से खाने का अवकाश मांगा। इसपर मिसेज बर्न ने कहा, "यदि तुम गाय का गोश्त खाओ, तो मैं अभी खिला सकती हूं।"

मिसेज बर्न की इसी बात पर कपूर को गुस्सा आ गया और उन्होंने नौकरी छोड़ दी।

वहां से लखनऊ वापस आकर पुरुषोत्तमनाथ ने अपने पिता से १६० रुपये लिये और दिल्ली चले गये। वहीं उन्होंने जुआ खेलाने वाले दो बक्से खरीदे और उन्हें दो स्थानों पर रखवा दिये। किन्तु उनका यह धन्धा नहीं चला।

इसी बीच उन्हें अपनी पत्नी की बीमारी का पत्र मिला, तो वे एक मित्र से ६ रुपये उधार लेकर लखनऊ लौट आये और उन्होंने अपनी पत्नी का इलाज कराया। वे इस समय तक एक पुत्री और एक पुत्र के पिता बन चुके थे।

पुरुषोत्तमनाथ के पिता ने कई बार उनसे कोई व्यवसाय करने को कहा, किन्तु जुआ खेलाने के अलावा उन्हें कोई दूसरा काम अच्छा न लगा।

पैसा हाथ आते ही उनकी शाहखर्ची बढ़ जाती थी। बढ़िया सिगरेट पीने का उन्हें शौक था। एक दिन उनके पिता ने उनकी इस शाहखर्ची पर काफी डाटा-डपटा।

एक दिन अचानक पुरुषोत्तमनाथ के दिमाग में एक नया काम करने की बात आ गयी। उन्होंने पांच रुपये लिये जिनमें से डेढ़ रुपये में उन्होंने 'डिस्टिल्ड वाटर' के लेबिल छपवाये, बारह आने की एक दर्जन खाली बोतलें खरीदीं और शेष पैसों से उन्होंने राजन, चपड़ा और गांठें लीं।

सारा सामान लेकर वे घर आये। उन्होंने पानी उबाला और उसमें गांठें डाल कर पानी छान लिया। फिर उस पानी को बोतलों में भरकर उनके मुंह चपड़े से बन्द कर उनपर 'डिस्टिल्ड वाटर' का लेबिल लगा दिया। इस प्रकार पुरुषोत्तमनाथ ने 'डिस्टिल्ड वाटर' की १२ बोतलें तैयार कर लीं। उन बोतलों को बाजार ले जाकर वे बेचने की सोच ही रहे थे कि उनके बीमार पिता ने दम तोड़ दिया।

दाह देने के कारण पुरुषोत्तमनाथ को घर में ही बैठना पड़ गया। बैठे-बैठे पुरुषोत्तमनाथ ऊब जाते। दो-तीन दिन बाद उनसे सिगरेट पीने की तलब रोकी न जा सकी। उन्होंने एक बच्चे से सिगरेट मंगवाकर पी ली। यह हरकत देखकर उनकी मां ने उन्हें काफी बुरा-भला कहा। पुरुषोत्तमनाथ को इससे बड़ी ग्लानि हुई।

क्रिया-कर्म समाप्त होने के बाद उन्होंने 'डिस्टिल्ड वाटर' की बोतलें उठायीं और उन्हें बाजार ले जाकर डेढ़ रुपये में बेच आये। फिर डेढ़ रुपये में उन्होंने दो दर्जन खाली बोतलें खरीदीं और उनमें पानी भरकर लेबिल लगाकर तीन रुपये में बेच आये।

अब यही क्रम चलने लगा। दो-तीन महीने में ही पुरुषोत्तमनाथ ने इस धन्धे से सात सौ रुपये इकट्ठे कर लिये। किन्तु दुर्भाग्य ने उनका साथ न छोड़ा। उनकी बड़ी लड़की बीमार पड़ गयी। उन्होंने काफी इलाज कराया। लेकिन बीमारी ने लड़की को छोड़ने का नाम



श्रीमती राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी।



श्री हेमवतीनंदन बहुगुणा।



श्रीमती टंडन।

नहीं लिया। लड़की मरणासन्न हो गयी और पुरुषोत्तमनाथ के पास केवल १४ रुपये बचे थे! तब उन्होंने भगवान के सामने बैठकर प्रार्थना की, "हे भगवान! या तो बच्ची को ठीक कर दे या उसे इस संसार से उठा ले।"

भगवान ने उनकी इच्छा पूरी कर दी। डेढ़ घण्टे बाद ही लड़की चल बसी, तो लड़की के दाह-संस्कार में उन्होंने ११ रुपये खर्च कर दिये। शेष तीन रुपये से उन्होंने 'डिस्टिल्ड वाटर' वाला धन्धा फिर शुरू कर दिया।

लेकिन इस बार उनका यह धन्धा अधिक समय तक नहीं चल सका। एक महीने बाद ही सन् १९३८ में उन्होंने पेट्रोल डीलर एसोसियेशन के कार्यालय में १५ रुपये मासिक पर चपरासी की नौकरी कर ली। एसोसियेशन के सचिव श्री गौरीशंकर तथा कोषाध्यक्ष श्री देवीप्रसाद हलवासिया (अब स्वर्गीय) ने पुरुषोत्तमनाथ के कार्य से प्रसन्न होकर उन्हें चपरासी से क्लर्क बना दिया और उनकी तनख्वाह बढ़ाकर २५ रुपये कर दी। लेकिन अपना कोई धंधा शुरू करने की धुन में लगे पुरुषोत्तमनाथ ने दो वर्ष बाद ही १९४० में नौकरी से इस्तीफा देकर तेजाब का व्यापार शुरू कर दिया।

कुछ ही दिनों में उन्हें एक विदेशी मिस्टर पैकउड की कृपा से कानपुर केमिकल वर्क्स की एजेंसी मिल गयी। एजेंसी मिलते ही उनका व्यापार तेजी से चलने लगा। तीन-चार वर्षों के अन्दर ही उन्हें पूरे प्रदेश की एजेंसी मिल गयी। फिर तो उन्हें प्रति महीने हजारों रुपये कमीशन के रूप में मिलने लगे। सन् १९५० में उन्हें देहली क्लाथ मिल की भी एजेंसी मिल गयी। यही नहीं, मिल ने उन्हें उत्तर प्रदेश तथा बिहार का भी एजेंट नियुक्त कर दिया। लेकिन १९५६ में अचानक उनकी दोनों एजेंसियां समाप्त हो गयीं।

व्यापार में पुरुषोत्तमनाथ के एक हिस्सेदार जगदीश प्रसाद सोनी थे। जो उद्योग विभाग में काम करते थे। कहते हैं कि पुरुषोत्तमनाथ ने एक कागज पर जगदीश प्रसाद से जबरदस्ती हस्ताक्षर करा लिये और उन्हें हिस्सेदारी से हटा दिया। जगदीश प्रसाद पुलिस के पास गये, मगर कोई लाभ न हुआ।

कहते हैं कि पुरुषोत्तमनाथ ने कभी कर अदा नहीं किया और व्यापार में नैतिकता भी नहीं बरती। कर के बारे में कई बार जांच हुई। मगर उच्चस्तरीय नेताओं के हस्तक्षेप से वे बराबर बचते रहे। यह भी कहा जाता है कि करों से बचने के लिए ही वे तांत्रिक बने। प्रारम्भ में उन्होंने उद्योग विभाग के अधिकारियों पर अपनी तंत्र-विद्या का रोब गालिब कर स्टील का एक परमिट हासिल कर लिया और वे काले बाजार में स्टील बेचने लगे।

इसके बाद वे अपने छोटे भाई विश्वनाथ कपूर के साथ व्यवसाय करने दिल्ली चले गये। परिवार लखनऊ में था, इसलिए पुरुषोत्तमनाथ हर सप्ताह नियमित रूप से एक दिन के लिए लखनऊ आते थे। एक दिन उनकी छोटी लड़की अचानक बीमार हो गयी और बेहोशी की हालत में अंट-शंट बकने लगी। यह देखकर पुरुषोत्तमनाथ की पत्नी परेशान हो उठी। संयोग से उसी समय पुरुषोत्तमनाथ के एक पुराने शिक्षक श्री ब्रजमोहन सिंह 'निडर' उनके घर आये। बच्ची की हालत देखकर श्री निडर ने पुरुषोत्तमनाथ की पत्नी से कहा, "तुम्हें चिन्तित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। बच्ची को मैं ठीक कर दूंगा।"

कहकर उन्होंने बच्ची पर कोई मंत्र पढ़कर फूंक मारी। मंत्र के प्रभाव से बच्ची कुछ ही देर में पूर्ण स्वस्थ हो गयी।

अगले दिन पुरुषोत्तमनाथ दिल्ली से आये और उन्हें उस बात का पता चला, तो वे भागे हुए अपने शिक्षक श्री निडर के पास गये। श्री निडर से उन्होंने आग्रह किया कि वे उन्हें भी कोई मंत्र सिखा दें। कहते हैं कि काफी आग्रह करने पर श्री निडर ने उन्हें एक मंत्र सिखाया और मां दुर्गा के सामने उसका नियमित रूप से जाप करने को कहा। पुरुषोत्तमनाथ ने वह जाप शुरू कर दिया।

श्मशान घाट पर एक दिन उनकी एक औघड़ से भेंट हो गयी और वे उस औघड़ से इतने प्रभावित हुए कि दिल्ली जाना छोड़कर वे उसी के साथ लग गये। उसके साथ रहकर उन्होंने धीरे-धीरे कई तांत्रिक क्रियाएं सीख लीं।

पुरुषोत्तमनाथ मुण्डासन, चिता-साधना, शव-साधना करने लगे। कई साधनाओं में उन्होंने सिद्धि भी प्राप्त कर ली। इस कठिन साधना से उनकी दोनों आंखों की रोशनी कम हो गयी और उनकी आंखों में मोतियाबिन्द हो गया।

श्री कपूर का कहना है कि उन्होंने गृहस्थ जीवन में रहकर ही सारी साधनाएं की हैं। साधनाओं के साथ ही वे तेजाब का व्यवसाय भी

(शेष पृष्ठ १०४ पर)

स्त्रियां गहनों पर जान देती हैं। लेकिन कलावती क्या इसी कारण अपने पति के संकट में उसे गहने न देना चाहती थी? नहीं, इतनी ही बात होती, तो यह दूसरी हत्या की दुर्घटना बचा न सकती। अचानक शिवराज टूटन के जिस बिन्दु पर पहुंच गया था, उसके लिए दूसरा चारा ही क्या था?

[illegible]

[illegible]

हंसुआ और हंसुली

जगदीश जगेश



करते थे। रामनारायण कभी-कभी मछली मारने भी आया करता था। शिवराम का विवाह पन्द्रह-सोलह साल की उम्र में ही हो गया था। ससुराल कोई पांच-छह मील पर थी। वहां से बराबर खर-समाचार मिलते रहते थे। शिवराम जब अठारह-उन्नीस साल का हुआ, तो उसके गौने की तैयारी होने लगी। उसकी बहू देवरजिया कई वर्ष पूर्व ही सयानी हो चुकी थी और वह दूसरों के खेतों में काम करके दो पैसा घर लाती थी।

देवरजिया के पिता मर चुके थे। घर में मां थी। गरीबी के कारण वे दोनों लोग मजदूरी करते थे। परिवार के दूसरे लोग आसपास ही रहते थे। एक बार गांव में मजदूरी मिलनी बन्द हो गयी, तो निकट के ही एक गांव में रहनेवाली मौसी देवरजिया को अपने यहां ले गयी। मौसी खेतों में ईख रोपने जाती थी। वह अपने साथ देवरजिया को भी ले जाने लगी। देवरजिया गरीब थी। लेकिन उसका शरीर नये-नये खिले हुए फूल की तरह था। उसकी खनखनाती खिलखिलाहट, बांसुरी की तरह मन को खींचनेवाली आवाज और मिट्टी से सना चीथड़ों में लिपटा आमंत्रण-सा देता हुआ उसका गदराया हुआ शरीर अंधेरी रात में जूही की मादक सुगंध की तरह आकर्षित करता था। वह बेझिझक सबसे बात कर लेती थी और घुल-मिल जाती थी।

जिस खेत में उन दिनों देवरजिया और उसकी मौसी काम करती थीं, उसके स्वामी गजोधर सिंह बूढ़े थे। वे





हलवाहों और कारिन्दों से अपना काम कराते थे। उन्हें अदालती कामों से फुरसत न मिलती थी। उनका बड़ा लड़का बच्चा सिंह जिद्दी, कामुक तथा आरामतलब था। वह घर बैठे हुकुम चलाया करता था और खेतों पर काम देखने नहीं जाता था। परन्तु एक दिन वह खेत पर गया और उसने देवरजिया को देख लिया, तो वह बराबर खेत पर जाने लगा। खेत की मेड़ पर बैठकर वह मजदूरिनों से यों ही रिश्ता जोड़कर हंसी-मजाक किया करता और देवरजिया को घूरता रहता। देवरजिया उसकी इस हरकत पर सहमकर लजा जाती थी। युवती की लज्जा आक्रामक पुरुष के लिए सबसे बड़ा आमंत्रण होता है। देवरजिया के प्रति बच्चा सिंह का आकर्षण एक नशा का रूप धारण करने लगा। जीवन के इस नूतन अनुभव पर देवरजिया भी निहाल हो रही थी। वहां घर का कोई देखनेवाला न था, निम्न वर्ग का वातावरण था और देवरजिया अपनी मौसी के घर मेहमान बनकर आयी थी। बच्चा सिंह जानता था कि देवरजिया के समाज में सम्बन्धों के बंधन ढीले होते हैं। बच्चा सिंह यह खेल पहले भी खेल चुका था और काफी बदनाम हो गया था। उसके पिता उस पर निगरानी रखते थे। फिर भी बच्चा सिंह ने उपाय निकाल ही लिया। उसे एक ऐसी जगह चाहिए थी, जहां वह देवरजिया से गुप्त रूप से मिल सके।

बच्चा सिंह के खेतों के पास से एक सरकारी नहर निकाली जा रही थी। रामजियावन सिंह उसका ठेकेदार था। सैकड़ों मजदूर काम करने लगे थे। रामजियावन मिट्टी के ऊंचे ढेरों पर खड़े होकर आस-पास के खेतों में काम करनेवाली औरतों को ताका करता था।

रामजियावन सिंह और बच्चा सिंह में सहज ही दोस्ती हो गयी। बच्चा सिंह ने अपने बाप से कहा कि ठेकेदारी में बड़ा लाभ है। वह रामजियावन सिंह से यह काम सीख रहा है। रामजियावन सिंह ने नहर के पास एक ईंटों का अस्थायी कमरा बना लिया था, जिसमें मजदूर अपने औजार रखते थे। शाम को जब काम बन्द हो जाता था और मजदूर चले जाते, बच्चा सिंह देवरजिया को उसी कमरे में बुलाने लगा और रामजियावन के साथ मिलकर उसे पटाने लगा।

दो-तीन महीने तक यही क्रम चलता रहा। फिर एक दिन भंडा फूट गया, तो खतरे का आभास पाते ही रामजियावन अपना ईंटों का अस्थायी कमरा उठाकर काफी दूर चला गया। बच्चा सिंह ने सारी बातें रामजियावन सिंह पर डाल दीं। देवरजिया की मौसी को उसे तुरन्त उसकी मां के पास छोड़ आने को कहा। देवरजिया गर्भवती हो गयी थी।

देवरजिया की मौसी ने अपनी बहन से पूरी बात नहीं बतलायी। उसने इतना ही कहा कि लड़की के लच्छन अच्छे नहीं हैं। जल्दी इसका गौना करा दो।

देवरजिया की मौसी अपनी बहन के साथ फुसफुसाकर बातें कर रही थी कि देवरजिया की चाची आ गयी और उन्होंने बातें करनी बन्द कर दीं। देवरजिया गर्भवती है, यह जानकर उसकी मां घबरा गयी।

देवरजिया की बड़ी बहन ससुराल से मायके आयी, तो उससे उसकी मां ने देवरजिया के गौने के बारे में कहा। देवरजिया की बड़ी बहन ने ससुराल जाकर सास से कहा, तो उसने शिवराम के पिता के पास संदेशा कहलाया कि आप लोग देवरजिया को विदा करा ले जायं, वर्ना उसका ब्याह कहीं और कर दिया जायगा।

संदेशा पाकर शिवराम का बाप रामनारायण बहुत घबराया। शिवराम पिछले आठ-दस महीने से कलकत्ता गया था। गांव में कोई काम न रहने पर वह भाग गया था। कलकत्ता में उसकी तरफ के कई लोग हुगली नदी में नाव चलाया करते थे। उसने घर पर पैसा भेजा था और अपनी आमदनी के बारे में भी लिखा था। रामनारायण ने उसे कई तार और चिट्ठियां भेजीं। गौने का दिन निश्चित कर दिया गया था। दो दिन पहले शिवराम गांव आ गया। गौना कराने लोग देवरजिया के घर पहुंचे, तो पता चला कि देवरजिया की मां उसे छोड़कर अपने मायके चली गयी थी। कई घंटे तक शिवराम के घर के लोग चुपचाप बैठे रहे। फिर देवरजिया की चाची ने उन्हें दाना-पानी कराया। फिर उसने शिवराम के भाई को बुलाकर उसके सामने देवरजिया का कच्चा चिट्ठा खोल दिया। शिवराम के घरवाले यह जानकर सन्न रह गये। फिर उन्होंने सारी स्थिति पर विचार किया। शादी में काफी पैसा खर्च हो चुका था। उन लोगों ने शिवराम से पूछे बिना ही विदा कराने की ठान ली।

देवरजिया अपनी ससुराल आ गयी। शिवराम अपनी दुल्हिन को देखकर खुश था। कई दिन तक वह कलकत्ते से लाये पैसे देवरजिया की खुशी के लिए खर्च करता रहा। लेकिन देवरजिया अनमनी-सी थी। शिवराम ने उससे वादा किया कि वह देवरजिया को कलकत्ता ले जाएगा और वहां आराम से रखेगा।

दो सप्ताह आराम से कट गये। फिर किसी से शिवराम को मालूम हो गया कि देवरजिया के पांव भारी थे। यह जानते ही उसपर खून सवार हो गया। उसने देवरजिया से पूछकर उसे कई थप्पड़ मारे। देवरजिया मार खाकर मुंह ढंक कर रोने लगी। शोर-गुल सुनकर शिवराम के मां-बाप आ गये। उन्होंने शिवराम को अलग ले जाकर शांत किया और समझाया कि जो होना था, हो गया। अब घर की इज्जत का ढिंढोरा नहीं पीटना चाहिए। अगर यह चली गयी, तो दूसरी शादी बहुत मुश्किल से होगी।

ये बातें शिवराम के गले के नीचे न उतरीं। मगर मां-बाप की इज्जत का खयाल कर वह खामोश हो गया।

कई दिन इसी तरह बीत गये। शिवराम से देवरजिया बोलती थी और शिवराम उसे देखकर खून का घूंट पीकर रह जाता था।

गर्मी की दोपहरी थी। लू चल रही थी। शिवराम मछली मा- कर घर लौटा। घर के दरवाजे खुले थे। कमरे में उसकी मां औ- देवरजिया लेटी थीं। सबेरे जब वह नदी गया था, उसे कुछ खाने मिला न था। शिवराम ने देवरजिया को जगाया और उससे खा- बनाने को कहा। देवरजिया अनमनी-सी उठी और बिना कुछ बो- या शिवराम की ओर देखे, काम करने लगी। शिवराम मछली का- लगा। खाना बनने तक कोई बात देवरजिया ने न की। शिवराम ने बाप को जगाया और सबने खाना खाया। शिवराम का बाप खा- खाकर बाहर लेटने चला गया। शिवराम की मां भी एक ओर गयी। शिवराम बदन में तेल मलने लगा। देवरजिया खाने ल- शिवराम ने सारे बदन में तेल लगा लिया, लेकिन पीठ में वह न ल- पा रहा था। पानी में देर तक रहने से बदन में खुजली हो रही शिवराम ने देवरजिया से पीठ में तेल लगाने के लिए कहा, तो वह न कह कर चूल्हे की राख निकालने लगी। शिवराम ने फिर कहा, भी देवरजिया ने कोई जवाब न दिया, न शिवराम की ओर देखा वह चुपचाप मछली के कांटे बीनती रही। तब शिवराम ने खीझकर बार फिर पीठ में तेल मलने को कहा, तो देवरजिया बर्तन उठा- बाहर जाने लगी। अब शिवराम से बर्दाश्त न हुआ। उसने छीन लिये और दांत पीसते हुए देवरजिया का झोंटा पकड़कर गिराकर उस पर तड़ातड़ थप्पड़-घूंसे बरसाने लगा। देवर- पिटती रही और सुबकती रही। मारपीट की आवाज सुनकर शिव- की मां जाग गयी। उसने शिवराम को पकड़ लिया और बोली, " मारोगे, तो गऊ का मांस खाओगे!"

शिवराम रुक गया और चुपचाप बाहर चला गया।

दो-तीन दिन शिवराम घर के बाहर-ही-बाहर रहा। वह देवरजिया के सामने न गया। फिर वह अचानक कलकत्ता चला गया।

घर से शिवराम की तबियत एकदम उचाट हो गयी थी। बाद में उसे पता चला था कि देवरजिया एक हफ्ता और रहकर अपने गांव भाग गयी थी। फिर उसने सुना कि उसकी दूसरी सगाई हो गयी थी। देवरजिया की बदचलनी से शिवराम का दिल टूट गया था। उसने अपने घर-बार को एकदम बिसरा दिया। घर पर चिट्ठी भी लिखवाना बन्द कर दिया। मन मारकर वह कलकत्ता में काम करने लगा। नीमतल्ला, पल्किया, बांधा घाट, बेलूर, श्रीरामपुर, कटुआ आदि घाटों पर नाव में आया-जाया करता था। उसके गांव के पास के एक बिरादर की नाव थी, जिसमें कई मल्लाह नौकरी करते थे। उसे सौ रुपये महीना वेतन मिलता था। वे माल ढोया करते थे। नाव में ही खाना-पीना, सोना-बैठना, सब होता था। नाव ही घर था। चिट्ठी-पत्री गद्दियों के पते पर आती थी। रुपया-पैसा भी गद्दियों में ही जमा रहता था। वे नदी के किनारे की जमीन किराये पर लेकर उसमें ककड़ी बो देते थे। इससे भी दो पैसा मिल जाता था। शिवराम का धरती से पुराना रिश्ता था।

इसी प्रकार बारह वर्ष बीत गये। इस बीच शिवराम के पास कुछ पैसा इकट्ठा हो गया था। उसके साथी उसे सलाह देते थे कि घर जाओ और फिर से घर बसाओ। किन्तु शिवराम इसमें से किसी बात के लिए तैयार न था।

शिवराम मल्लाहों के समुदाय में दस-बारह बरस रहकर काफी हिल-मिल गया था। सभी उसकी स्थिति से परिचित थे। वे उससे एक औरत से शादी करने को कहने लगे। औरत विधवा थी। उसके दो बच्चे थे। बड़ी लड़की भागीरथी दस साल की थी और छोटा लड़का दूधनाथ सात साल का था। उसके पति को मरे चार-पांच साल हो गये थे। वह कटुआ में ही मेहनत-मजदूरी करके किसी तरह बच्चों का पालन-पोषण कर रही थी। उसके जेठ और देवर भी वहीं रहते थे, मगर वे उसकी मदद न करते थे।

मगर शिवराम ने इस बात पर कान न दिया। तब एक दिन कई बुजुर्गों के साथ उस औरत के जेठ लोग शिवराम को मनाने आये और वे शिवराम को उस औरत के पास ले गये।

औरत की आयु कोई अट्ठाइस-तीस साल की थी। उसका नाम मनराजी था। वह जिला फैजाबाद की रहनेवाली थी।

सब लोग बार-बार शिवराम से पूछते, "औरत तुम्हें पसन्द आयी? सच-सच बोलो!"

शिवराम कुछ बोल न सका। सिर्फ चुपचाप मुस्कुराता रहा। इसे उसकी स्वीकृति समझकर सबने कहा, "इन बच्चों और औरत का उद्धार करो।"

शिवराम और मनराजी एक हो गये और सबने बताशे मंगाकर पानी पिया।

शिवराम मनराजी के कमरे में ही रह गया। उसने बच्चों को भी बताशे दिये। औरत ने रोटी लाकर शिवराम के सामने रखी। बहुत दिन बाद किसी औरत के हाथ की बनी रोटी शिवराम को मिली थी। शिवराम को भोजन कराकर मनराजी ने अपने विगत जीवन की बहुत-सी बातें बतलायीं और हाथ जोड़कर अपनी और अपने बच्चों की नैया पार लगाने की बिनती की। उसी दिन से शिवराम की गृहस्थी बस गयी।

शिवराम और मनराजी के दिन प्रेम से बीतने लगे और तीन-साढ़े तीन साल गुजर गये। शिवराम से मनराजी को इस बीच दो बच्चे हुए, लड़के का नाम उन्होंने रामराज रखा था और लड़की का शारदा। इस बीच शिवराम ने घर पत्र भेज दिया था कि उसने घर बसा लिया था और मजे में था। घर से जवाब भी आया। बूढ़े मां-बाप सकुशल थे। उन्होंने लिखा कि एक बार वह बहू को लेकर घर आये।

मनराजी और सभी बच्चों को साथ लेकर शिवराम अपने गांव आया। बूढ़े मां-बाप, भाई-भौजाई सभी बरसों बाद सुखी शिवराम को पाकर फूले नहीं समाये। मनराजी और उसके बच्चे जल्दी ही सबसे घुल-मिल गये। शिवराम यह सोचकर आया था कि कुछ दिन रहकर लौट आएगा। मगर घरवाले मनराजी को वापस भेजने को तैयार न हुए। मनराजी भी ससुराल कुछ दिन रहना चाहती थी। शिवराम उसे घर पर छोड़ने पर तैयार हो गया। उसके पास नौ थान गहने और दो-ढाई हजार रुपये थे। उसने अपने परिवार के लिए एक घर छवाया। थोड़ी-सी जमीन भी खरीदी। फिर वह अकेले कलकत्ता लौट गया।

तीन-चार माह बाद ही उसे गांव से एक तार मिला। रामराज बहुत बीमार था। शिवराम गांव पहुंचा। रामराज कुछ दिन बाद ही चल बसा। कई दिन सब दुख में पड़े रहे। फिर शिवराम अपने काम पर वापस चला गया। लेकिन अकेले उसकी तबीयत नहीं लगती थी। कोई छः माह बाद वह फिर गांव लौट गया। मनराजी और बच्चे ठीक थे। लेकिन शिवराम के बाप की तबीयत खराब थी। वह चल-फिर नहीं पाता था। शिवराम ने उसे कुछ रुपये दिये और फिर कलकत्ता लौट आया। इसी तरह दो बार वह छः माह के अंतराल से गांव आया-गया। फिर तार मिला कि पिता की हालत खराब है। शिवराम के गांव पहुंचने के दूसरे दिन ही उसके बाप चल बसे। शिवराम ने क्रिया-कर्म किया। उसके एक हफ्ते बाद ही भाइयों का बंटवारा हो गया। अपने हिस्से की जमीन पाकर मनराजी के कहने पर शिवराम ने थोड़ी और जमीन खरीदी। वह गांव में ही रहने के लिए राजी हो गया।

टोले का विश्वनाथ मल्लाह भी कलकत्ता में ही काम करता था। शिवराम उसे काका कहा करता था। विश्वनाथ का एक लड़का राममूरत था। वह कोई पच्चीस-छब्बीस बरस का था। खेती-बारी करता था। वह शिवराम के घर में आता-जाता था। उसका घर में बेझिझक आना और देर-देर तक बैठे रहना शिवराम को अखरता था। राममूरत अधिकार-पूर्वक मुस्कराकर मनराजी से बात करता और उसे 'भाभी' कहता। मनराजी भी उससे सलाह लिये बिना कोई काम नहीं करती थी। यहां तक कि कभी-कभी वह शिवराम की बात न मानकर राममूरत की बात मानती थी। शिवराम को राममूरत पर कुछ शक होता था, किन्तु वह पुराना संबंध होने के कारण उसे अपने घर आने से रोक नहीं सकता था। राममूरत के पिता विश्वनाथ मल्लाहों में सबसे अधिक सम्पन्न और बुजुर्ग थे। शिवराम ने सोचा कि शायद राममूरत की नजर भागीरथी पर लगी हो। अतः वह भागीरथी का विवाह जल्द कर देने की कोशिश में लग गया। उसने पास-पड़ोस में चर्चा चलायी और आनन-फानन जोगियापुर में लड़की का विवाह कर दिया।

विवाह के लिए उसने अपनी जमीन रखकर कुछ कर्ज लिया था। अपने हाथ से उसने पहली शादी की थी, इसलिए उसने सामर्थ्य से अधिक खर्च कर दिया था। थोड़े दिन बाद ही ऋण देनेवालों के तकाजे शुरू हो गये, तो शिवराम फिर कुछ दिनों के लिए कलकत्ता जाने की सोचने लगा। लेकिन घर में राममूरत की घुस-पैठ देखकर वह सशंकित हो उठा था। इसीलिए कलकत्ता जाने को वह तैयार न हुआ। उसने मनराजी के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वे-सब फिर कलकत्ता चलें। किन्तु मनराजी इसके लिए तैयार न हुई। उसने कहा कि कलकत्ता में मकान मिलेगा नहीं और नवविवाहिता सयानी पुत्री को लेकर कहीं जाना ठीक नहीं।

(शेष पृष्ठ ७९ पर)

क्या प्रेम का धन्धा हो सकता है; क्या प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं को बेंच सकता है ? क्या पति अपनी पत्नी को बेच सकता है ? ये सवाल कितने अजीब लगते हैं ! लेकिन हमारे समाज में वीरभद्र-जैसे प्रेमी और पति भी हैं 'जो प्रेम और विवाह जैसे पवित्र' आत्मिक तथा सामाजिक सम्बन्धों को कलंकित करते हैं और लड़कियों का जीवन नरक बनाते हैं। क्या लड़कियां भावनाओं में न बहकर ऐसे शैतानों से सावधान रहेंगी ?

एक अभागिन लड़की की कहानी

श्रीकांत सिनकर

जहां फोरास रोड और सुकलाजी स्ट्रीट मिलती है, वहां एक पान-
बीड़ी की दुकान थी। दुकान का मालिक मुहम्मद कादिर अपने
हाथ में एक चिट्ठी लिये उसे बार-बार मन-ही-मन पढ़ रहा था। वह
चिट्ठी जब से उसके हाथ में आयी थी, वह उसे मन-ही-मन पढ़कर
कुछ गुन रहा था। वह चिट्ठी किसी कागज पर सुंदर अक्षरों से
लिखी हुई न थी। सिगरेट के पैकेट के एक फटे हुए टुकड़े पर केवल
दो सतरों का मजमून लिखा था। वह मजमून मलयालम भाषा में
था। मुहम्मद कादिर मलयालमी था। वह उस मजमून को पढ़कर
बेचैन हो गया था।

पान-बीड़ी का धंधा करनेवाले कादिर ने अपनी दुकान में एक
नौकर रखा था। उस नौकर का नाम पी० हुसैन था। वह भी मलया-
लमी ही था। दिनांक २० मई, १९७५ की शाम के सात बजे के
करीब हुसैन का एक दोस्त मुहम्मद कादिर की दुकान पर आया था।
उसका नाम अब्दुल रहमान था। उसी ने यह पत्र लाकर पहले हुसैन
को दिया था। वह मलयालमी नहीं था। उसे मलयालम भाषा नहीं
आती थी और वह उसे समझ भी नहीं सकता था। उस चिट्ठी को
पढ़ते ही हुसैन के मन में आश्चर्य और खुशी की लहरें उमड़ने लगी
थीं। तभी मुहम्मद कादिर दुकान पर आ गया था और हुसैन ने
अपने हाथ की चिट्ठी उसे दे दी थी।



रहमान अब भी दुकान के पास ही खड़ा था। कादिर और हुसैन के मन में कौन-से विचार आ-जा रहे थे, रहमान को क्या मालूम? कादिर बार-बार चिट्ठी पढ़ रहा था। उस चिट्ठी में मलयालम भाषा में लिखा था, 'एंगेने आयदूम एन्ने इवडग्न विडिकुगा।' (किसी भी तरह मुझे यहां से मुक्त करो।) उस चिट्ठी को पढ़कर कादिर और हुसैन का आश्चर्यचकित हो जाना स्वाभाविक ही था। आश्चर्य की बात यह थी कि चिट्ठी भेजनेवाला व्यक्ति कादिर अथवा हुसैन का परिचित नहीं था।

हुआ यह था चिट्ठी लानेवाला रहमान एक बेकार युवक था। वह परले नंबर का बदमाश भी था। सारे दिन जुआ खेलना, शराब पीना और किसी वेश्या के कोठे पर चढ़ना ही उसका काम था। दिनांक १८ मई की दोपहर को वह एक वेश्या के कोठे पर गया था। वहां वह पहले भी अनेक बार जा चुका था। परंतु १८ तारीख की दोपहर को जब वह वहां गया था, तब उसे वहां एक नयी लड़की दिखायी दी थी।

उस वेश्यालय की मालकिन लीला थी। लीला ने अपने वेश्यालय में सात-आठ लड़कियां रखी थीं। उन-सब लड़कियों के साथ रहमान अपनी शारीरिक भूख मिटा चुका था। उस वेश्यालय की सभी लड़कियां उसे पहचानती थीं। लीला तो उसे पहचानती ही थी।

लीला के वेश्यालय में उस दिन एक नयी लड़की को देखकर रहमान उसकी ओर देखता ही रह गया। वह लड़की भी सहमी हुई रहमान की ओर देख रही थी। करीब इक्कीस वर्ष की वह जवान लड़की थी और वह विवाहिता लगती थी। फोरास रोड पर खुल्लम-खुल्ला देह बेचने का धंधा करनेवाली अनेक विवाहिताओं की तरह वह भी लगती थी। उसका नाम सरोजनी था।

सरोजनी सांवले रंग की और शरीर से काफी हृष्ट-पुष्ट थी। वह लोगों का ध्यान बरबस अपनी ओर खींच सकती थी। रहमान उसकी ओर वासना की नजर से ही देख रहा था।

रहमान ने लीला की ओर देखकर धीरे-से पूछा, "यह लड़की नयी है क्या?"

"हां," लीला उत्साह से बोली, "हाल ही में धंधे से लगी है। तुम चाहो, तो आज रात इसके साथ रहो।"

रहमान ने पुनः सरोज की ओर देखा और वह लीला से फिर "ठीक है। बोलो कितना लोगी?"

"बारह रुपये!" लीला बोली।

रहमान ने अपनी पेंट की जेब से दस रुपये का एक नोट और एक-एक रुपये के दो नोट बाहर निकालकर लीला को थमा दिये और सरोज के पास जाकर उसके कन्धे पर हाथ रखता हुआ वह बोला, "चलो अन्दर।"

सरोज दीनता से लीला की ओर देखने लगी, तो लीला ने आंखें फाड़कर उसकी ओर देखा और उसे इशारे से भीतर के कमरे में जाने के लिए कहा।

रहमान सरोज को भीतर के कमरे में ले जा रहा था कि उसके कानों में लीला के ये शब्द पड़े, "तुम इसके साथ बातें मत करना। यह लड़की हिन्दी नहीं समझती!"

रहमान सरोज को लेकर भीतर के कमरे में गया और सहसा ही उसने सरोज को कसकर बाहों में भर लिया और उस पर चुम्बनों की वर्षा कर दी। फिर उसका मजबूत और खुरदुरा हाथ सरोज के नाजुक शरीर पर घूमने लगा। सरोज कोई प्रतिकार नहीं कर सकती थी। अपनी आंखों में दीनता के भाव लाकर वह



रहमान की ओर देख रही थी। परंतु उस नजर की रहमान पर कुछ भी प्रभाव पड़ने की संभावना न थी। वासना से उत्तेजित कोई भी पुरुष किसी स्त्री की असहायता अथवा दीनता पर कहां विचार करता है? रहमान जल्दी-जल्दी सरोज के वस्त्र उतारने लगा। सरोज जैसे-जैसे विवस्त्र हो रही थी, रहमान की उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। उसने थोड़ी ही देर में उस असहाय युवती के शरीर को नोंचना शुरू कर दिया।

अजगर जिस तरह सहज ही किसी मेमने को निगल लेता है, उसी तरह रहमान सरोज को निगल रहा था। भूखा घड़ियाल जिस तरह अपने विकराल जबड़े में अपना भक्ष्य मजबूती से पकड़ लेता है, उसी तरह रहमान ने अपना भक्ष्य अपने खुरदुरे और मजबूत हाथों में पकड़ रखा था। सरोज सुन्न पड़ी हुई थी। बलात्कार क्या और कैसा होता है, सरोज अच्छी तरह जानती थी। लीला के वेश्यालय में आने के बाद पहले ही दिन उसे एक विलक्षण अग्नि-परीक्षा से गुजरना पड़ा था। उस-बलात्कार की पीड़ा आज भी कम नहीं हुई थी।

शोला जिस तरह भड़ककर बुझ जाता है, उसी तरह रहमान भी शांत हो गया और हांफता हुआ उठकर अपने कपड़े पहनने लगा। अपने शरीर पर का भारी बोझ दूर होते ही सरोज भी पलंग पर से उठी और उसने अपनी विवस्त्र देह को साड़ी से ढंक लिया। एक ऐसे पुरुष के सामने, जो एकदम ही अपरिचित हो, विवस्त्र होने की यातनाएं क्या होती हैं यह लज्जास्पद अनुभव भी सरोज को लीला के वेश्यालय में ही हुआ था।

दुनिया के प्रत्येक वेश्यालय में आनेवाली प्रत्येक स्त्री को लज्जा, शर्म, संकोच और भय ताक पर रख देना पड़ता है। उसे अपनी आंखों के आंसुओं का सागर सुखाकर ग्राहकों की पाशवी वासनाओं को शान्त करना पड़ता है। परन्तु उस स्त्री की स्थिति भिन्न होती है, जिसे बहकाकर अथवा कोई प्रलोभन देकर वेश्यालय में लाया जाता है। सरोज को भी वहां बहकाकर लाया गया था और उस वेश्यालय में बेच दिया गया था! इसी कारण स्वतः शरीर का धन्धा स्वीकार करनेवाली औरतों से उसके मन की दशा भिन्न थी।

रहमान पलंग पर बैठा हुआ सिगरेट के कश ले रहा था। सरोज उसकी ओर अजीब तरह से देख रही थी। देखते-देखते उसकी आंखें पानी से भर उठीं। यह देखकर रहमान एकदम चकित हो हो उठा। उसने पूछा, "क्या हुआ?"

लेकिन तुरंत ही उसके ध्यान में आया कि सरोज तो हिन्दी समझती ही नहीं। तब उसने इशारे से पूछा, 'क्या हुआ?'

सरोज ने रोते-रोते ही उससे कुछ मलयालम भाषा में कहा। परंतु जिस तरह सरोज हिन्दी भाषा नहीं समझती थी, उसी तरह रहमान भी मलयालम भाषा नहीं समझता था। तब सरोज ने इशारा से अपना आशय समझाने की कोशिश की। उन इशारों का अर्थ यह था, 'मुझे यहां से छुड़ाओ!'

रहमान कुछ न बोला। सरोज की ओर हंसकर देखता हुआ वह कमरे से बाहर निकला और लीला से बिदा लेकर वेश्यालय से बाहर निकल गया।

रहमान बदमाश था, गुंडा प्रवृत्ति का था। सरोज के शरीर की दुर्दशा करते समय उसके दिमाग में शैतान घुस पड़ा था। यह सच था। परंतु उस इमारत की सीढ़ियां उतरते समय वह तनिक बेचैन हो गया। सरोज की भाषा वह नहीं समझ पाया था, परन्तु उसके इशारों का मतलब वह समझ गया था। सरोज संकट में थी, शायद उसे यहां भगाकर लाया गया था, ऐसा उसके मन में आया।

दूसरे दिन रात को रहमान पुनः उस वेश्यालय में गया। उसका सरोज से परिचय हो ही गया था। आधी रात तक वह सरोज के साथ रहा। मजबूरी से ही क्यों न हो, सरोज ने उसकी इच्छ पूरी की। वह सब काम हो जाने के बाद सरोज फिर पिछले दि की तरह रोने लगी। और फिर वही बात इशारे से कहने लगी रहमान फिर बेचैन हो गया। सहज ही उसके मन में खयाल उठा कि क्या सरोज को सचमुच ही वहां भगाकर लाया गया था? क्या इ विषय में वह लीला से कुछ पूछे? पर लीला क्या उसे वह स बताएगी? इस विचार के मन में आते ही उसने लीला से कुछ पूछ की बात अपने दिल से निकाल दी।

रहमान जब कमरे से जाने लगा, तब सरोज सिसकियां ले र थी। उसकी सिसकियां लीला को सुनाई न पड़ें, इतनी सावधानी व बरत रही थी। वह भी रहमान के साथ ही बाहर निकलने को हुई रहमान असमंजस में पड़ गया था। उसकी भाषा समझ में न आ के कारण वह कुछ परेशानी अनुभव कर रहा था। उसने इशारे से सरोज को 'कल आऊंगा' कह दिया। सरोज उसके इशारे को समझ गयी। पर वह कल तक ठहरने को तैयार नहीं थी। लेकिन रहमा किसी तरह उसे समझा कर कमरे से निकल पड़ा।

वेश्यालय से बाहर निकलकर रहमान ने अपने मन में निश्च कर लिया कि सरोज के लिए कुछ जरूर करना चाहिए। परंतु व क्या करे, यह वह समझ नहीं पा रहा था।

दूसरे दिन दिनांक २० मई को शाम के छः बजे रहमान फिर लील के चकले में पहुंचा। वह लगातार तीन दिन से सरोज के पास आ रह था। इससे लीला खुश थी।

उस रात भी सरोज रहमान के सामने रोने लगी और इशा से ही यह भी कहा, 'लीला मुझे मारती है।'

रहमान पहले अपनी इच्छा पूरी कर पलंग पर बैठकर सिगरे पीने लगा। उसी समय एक घटना घट गयी। रहमान ने जब सिगरे का पैकेट निकाला, उस समय पैकेट में एक ही सिगरेट था रहमान ने वह खाली पैकेट कमरे में ही फेंक दिया। उस पैकेट क ओर देखते ही सरोज के मन में अचानक एक विचार कौंधा और उसने वह पैकेट झट-से उठा लिया।

खाली पैकेट के अन्दर का कागज निकालकर सरोज ने रहमान की शर्ट की जेब से फाऊंटेनपेन निकाला। रहमान चुपचाप देखत रहा। सरोज ने एक क्षण के लिए मन में विचार किया और उसने मलयालम भाषा में उस कागज पर लिखा, एंगेने आयट्म एन्ने इवड विडिकुगा।' और उस कागज को रहमान के आगे बढ़ा दिया रहमान बेवकूफ की तरह कभी उस कागज की ओर और कभी सरोज के मुंह की ओर देखने लगा। उसने कागज पर क्या लिखा था, उसके लिए समझ पाना संभव ही नहीं था।

रहमान ने वह कागज सरोज को दिखाते हुए इशारे से पूछ 'इस कागज का मैं क्या करूं?'

सरोज ने वह कागज फिर अपने हाथ में लिया और उस काग पर अपनी अंगुली फेरते हुए इशारा किया, 'यह कागज किसी से पढ़वा लेना।'

रहमान ने उस इशारे का मतलब ठीक-ठीक नहीं समझा। फिर भी उसने गर्दन हिलाकर वह कागज अपनी पैंट की जेब में रख लिया और वहां से चल पड़ा।

रहमान चलते-चलते फोरास रोड और सुखलाजी स्ट्रीट के जंक्शन पर पहुंचा। उस जंक्शन पर महम्मद कादिर की पान-बीड़ी की दुकान थी। उस समय दुकान में कादिर का नौकर हुसेन बैठा था। हुसेन से रहमान का परिचय था।

रहमान दुकान के पास आकर खड़ा हो गया और गप्पें लगाते लगाते उसने सरोज की चिट्ठी हुसेन को दिखायी। हुसेन को

मलयालम भाषा आती थी। जब हुसैन चिट्ठी पढ़ चुका, तो रहमान ने पूछा, "क्या लिखा है ?"

हुसैन सावधान हो गया। उसने एक बार रहमान की ओर देखा और अत्यंत शांति से वह उससे बोला, "उसे रुपयों की जरूरत है। वह कुछ रुपये उधार मांगती है।"

हुसैन की बात सुनकर रहमान ने कहा, 'धत्तेरे की!' और मुंह बनाकर सिगरेट पीने लगा।

उसी समय दुकान का मालिक मुहम्मद कादिर आ गया, तो हुसैन ने तुरंत कादिर के हाथ में वह चिट्ठी दे दी।

एक मलयालमी लड़की किसी वेश्यालय में आयी है और वहां से मुक्त होना चाहती है, यह मालूम होते ही कादिर का विचार-चक्र वेग से घूमने लगा।

उसके मन में क्या विचार चल रहे थे, रहमान कोई अन्दाज नहीं लगा सकता था। कादिर और हुसैन आपस में मलयालम भाषा में बातें कर रहे थे। वे बातें रहमान नहीं समझ पा रहा था। वह उन दोनों के मुंह की ओर ताकता हुआ वहां खड़ा रहा। आखिर उससे न रहा गया और उसने कादिर से पूछा, "चिट्ठी में क्या लिखा है ?"

"वह कुछ रुपये उधार चाहती है," मुंह बनाकर कादिर ने कह दिया।

हुसैन से मलयालम में कुछ कहकर कादिर ने रहमान को अपने साथ लिया और लीला के वेश्यालय की ओर चल पड़ा।

रहमान की समझ न आ रहा था कि कादिर वहां क्यों जा रहा था ? परंतु उसने कादिर से कुछ पूछने की हिम्मत नहीं की। कादिर केवल पान-बीड़ी की दुकान का मालिक ही नहीं था, उसकी उस क्षेत्र में बड़ी धाक थी। इसीलिए रहमान मुहम्मद के साथ चुपचाप चल रहा था। रहमान ने कादिर को लीला का वेश्यालय दिखा दिया, तो कादिर ने रहमान को यह कहकर कि, "मैं उस लड़की को रुपये उधार दूंगा।" जाने के लिए कहा।

रहमान के चले जाने के बाद कादिर अपनी दुकान पर लौट आया।

उसी दिन रात में ९ बजे कादिर और हुसैन लीला के वेश्यालय में पहुंचे। कादिर को अपने यहां देखते ही लीला का कलेजा धड़क उठा। कादिर से वह डरती थी।

कादिर तुरन्त लीला से सरोज के विषय में बातें करने लगा। सरोज लीला के पास ही सहमी हुई बैठी थी। उन दोनों के बीच हिन्दी में कुछ बातें हो रही थीं, ऐसा उसे लग रहा था।

कादिर पेंट की जेब से दस-दस रुपये के पांच नोट निकालकर लीला के हाथ में रखकर सरोज की ओर देखने लगा।

लीला सरोज से मलयालम में बोली, "जाओ इन लोगों के साथ।"

लीला को मलयालम भाषा आती थी।

तभी कादिर ने भी मलयालम में सरोज से कहा, "चलो।"

यह सुनकर सरोज चकित हो गयी। पहले ही उन दोनों को देखकर वह बहुत घबरा गयी थी। अब यह सोचकर कि ये दोनों उसे कहीं ले जा रहे थे, वह व्याकुल हो उठी। लेकिन वह क्या कर सकती थी ? वह कादिर और हुसैन के साथ उस भयानक नरक से बाहर निकली। उस समय उसके मन में कई सवाल उठ रहे थे। ये दोनों कौन थे ? वे उसे कहां ले जा रहे थे और वे उसके साथ क्या करेंगे ? ऐसे कई प्रश्न उसके मन में उठ रहे थे।

उस समय रात के दस बजे थे। वेश्याओं के उस क्षेत्र में बहार आ गयी थी। सरोज अपना मैला झोला सीने से लगाये, सहमी-सहमी कादिर और हुसैन के साथ चल रही थी। वह बीच-बीच में भयभीत नजरों से उन दोनों की ओर देख लेती थी। उसकी यह स्थिति समझकर कादिर उसके साथ मलयालम भाषा में बातें करने लगा। कादिर की बातें सुनकर सरोज को अब दूसरी ही तरह का आश्चर्य हुआ। उसे लगा कि कादिर और हुसैन उसे मुक्त कराने ही आये थे।

कादिर ने उससे मलयालम भाषा में कहा, "तुम कोई चिंता मत करो। मैं तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा दूंगा।"

कादिर और हुसैन सरोज के साथ एक पुरानी चाल में घुसे और पहली मंजिल के एक कमरे में पहुंचे। कादिर वहीं रहता था। सरोज के मन में अब तक कादिर के प्रति विश्वास पैदा हो गया था, फिर भी वह उस कमरे में आते ही घबरा गयी। तब कादिर ने उसे दिलासा दिया और उसके लिए खाना मंगवाया।

सरोज जब खाना खाने लगी, कादिर और हुसैन कमरे के बाहर चले गये। बाहर जाकर कादिर ने कमरे में बाहर से ताला लगा दिया था।

कादिर और हुसैन आध-पौन घंटे बाद कमरे पर लौटे। उस समय वे दोनों शराब के नशे में थे। उन दोनों को उस हालत में देखकर सरोज का कलेजा फिर धड़क उठा। पर कादिर बार-बार उससे कह रहा था—"तुम बिलकुल मत घबराओ। हम तुम्हारे साथ कुछ नहीं करेंगे।"

कादिर और हुसैन एक खाट पर बैठ गये। कादिर ने कागज में लिपटी हुई एक शराब की बोतल निकाली। फिर वे दोनों शराब पीते हुए सरोज की कहानी सुनने लगे।

सरोज कमरे के एक कोने में अंग समेटे बैठी हुई थी और धीमी आवाज में कादिर और हुसैन को अपनी आपबीती सुना रही थी।—

सरोज केरल के पत्रंगटनूर नामक गांव की रहनेवाली थी। उसका बाप गांव में ही नारियल और सुपारी के पेड़ों से नारियल और सुपारी तोड़ने का काम करता था। सरोज के तीन छोटे भाई और पांच छोटी बहनें थीं। वह अपने मां-बाप की सबसे बड़ी संतान थी। उसी गांव में वीरभद्र नामक एक युवक रहता था। उसकी दो बहनें थीं, जिनके विवाह हो चुके थे। वीरभद्र का बाप भी नारियल और सुपारी तोड़ने का काम करता था। वीरभद्र बेकार था। वह आलसी भी कम न था। इधर-उधर भटकने के सिवा वह कोई काम न करता था। वह अपने बाप के लिए एक बड़ा प्रश्न बना हुआ था। वह किसी ठीक राह पर लग जाए, उसके बाप को यही चिन्ता थी। पर वीरभद्र राह पर लगता ही न था। तब वीरभद्र के बाप ने सोचा कि वीरभद्र का विवाह हो जाए, तो शायद वह सुधर जाए। यही सोचकर उसने वीरभद्र का ब्याह सरोज के साथ कर दिया।

सरोज के बाप के सामने अपनी लड़की के विवाह का प्रश्न था। वीरभद्र के बाप ने प्रस्ताव रखा, तो उसने तुरन्त स्वीकार कर लिया और उसके सिर से एक भार उतर गया।

दरअसल वीरभद्र और सरोज का बहुत पहले से ही चोरी-चोरी प्रेम चल रहा था। वे दोनों प्रेम-पाश में बंध गये थे। इसलिए विवाह हो जाने से उन दोनों को बहुत खुशी हुई। आगे क्या होनेवाला था, अभागिनी सरोज को क्या पता था ?

विवाह के बाद कुछ महीने सरोज और वीरभद्र की गृहस्थी ठीक-ठीक चलती रही। परंतु सरोज को एक दुख था कि उसका पति बेकार था। वह कोई उद्योग-धंधा नहीं करता था। उसने यह बात वीरभद्र से कई बार कही थी, परंतु वीरभद्र उसकी बातों पर कोई ध्यान नहीं देता था।

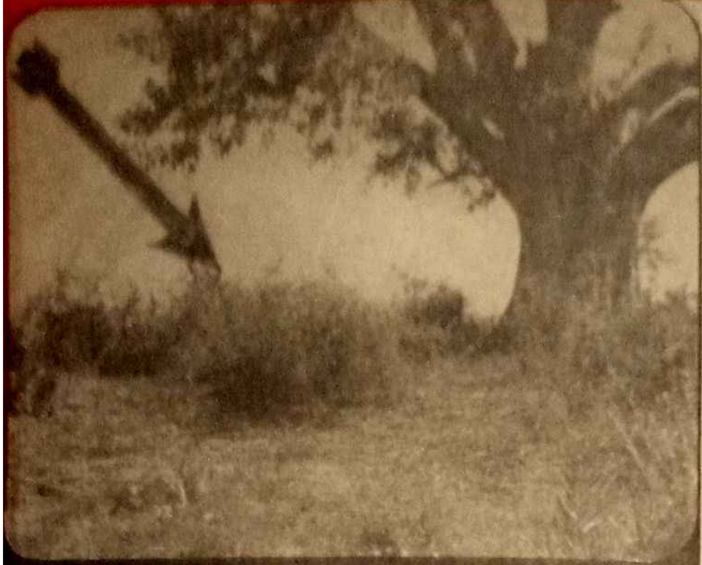
करीब दस महीने यही स्थिति बनी रही। अब भी वीरभद्र बेकार

(शेष पृष्ठ ८५ पर)

राहज़न का अंत

• अशोक शर्मा





वह पेड़ जिसके नीचे अभियुक्तों ने पहले राजाराम को गांजा पिलाया फिर हत्या करके लाश छिपा दी

यह २८ नवम्बर, १९७६ की घटना है।

दूसरे दिन २९ नवम्बर को भी नित्य की भांति तुलसीराम सुबह सात बजे अपने खेतों पर जाने के लिए घर से निकला। आज भी रास्ते में उसे वही दुर्गन्ध मिली। दुर्गन्ध आज और भी तेज हो गयी थी। तुलसीराम ने रुककर चारों ओर देखा। कहीं कोई चील-कौआ उड़ता दिखायी न दिया, तो उसे आश्चर्य हुआ। कोई जानवर मरा पड़ा होता, तो उसे खाने चील-कौआ जरूर आते। फिर क्या बात है?

वह गमछा नाक पर लगाकर उस ओर बढ़ा, जिस ओर से दुर्गन्ध आ रही थी। कुछ आगे बढ़कर उसने बेरी की झाड़ियों की ओर देखा, तो उसके होश उड़ गये और वह उलटे पांव गांव की तरफ ऐसे भागा, जैसे उसे किसी खूंख्वार जंगली पशु ने दौड़ाया हो।

गांव पहुंचते ही उसे पाटन के उप-सरपंच श्री सुरेश जैन दिखायी पड़े। वे मोटर साइकिल से पाटन की तरफ जा रहे थे।

"मालिक! मालिक!" तुलसीराम ने घबराहट-भरे स्वर में चिल्लाकर पुकारा।

श्री जैन ने मोटर साइकिल रोक दी और तुलसीराम को आश्चर्य से देखने लगे। तुलसीराम उनके पास पहुंचकर हांफता हुआ बोला, "लाश! . . . मालिक लाश!"

"कैसी लाश? किसकी लाश?"

"मालिक खेतों की ओर बेरी की झाड़ियों में एक आदमी की लाश पड़ी सड़ रही है।"

श्री जैन ने तुलसीराम के भयग्रस्त चेहरे को एक पल के लिए घूरा। फिर बोले, "चलो, दिखाओ!"

तुलसीराम श्री जैन की मोटर साइकिल के पीछे बैठ गया। श्री सुरेश जैन पाटन के उप-सरपंच होने के साथ ही एक पत्रकार भी हैं। उनका उत्सुक होना स्वाभाविक ही था।

पगडंडी तक जाने के बाद उन्होंने मोटर साइकिल खड़ी कर दी और खेतों में होकर तुलसीराम के पीछे-पीछे चलने लगे। चन्द कदम चलने पर उनको भी नाक पर रूमाल रख लेना पड़ा। दुर्गन्ध बहुत तेज थी। बेरी की झाड़ियों के पास पहुंचकर तुलसीराम ने श्री जैन को लाश दिखायी।

लाश को एक नजर देखकर श्री जैन ने तुलसीराम से कहा, "चलो! चलो!"

वास्तव में लाश से उठनेवाली दुर्गन्ध ने उन्हें भी परेशान कर दिया था। रूमाल से छन कर भी दुर्गन्ध नाक में पहुंच रही थी।

श्री जैन ने तुलसीराम को फिर अपनी मोटर साइकिल के पीछे बैठाया और सीधे पाटन थाने पहुंचे। उस समय सुबह के आठ बज रहे थे और थाना प्रभारी श्री जी० एस० चीना थाने के पास के ही अपने क्वार्टर में थाने आने की तैयारी कर रहे थे। किसी मोटर साइकिल के आने और रुकने की आवाज सुन वे झपट कर थाने पहुंचे और श्री जैन को देखते ही बोले, "अरे जैन साहब, आप! कहिये, सुबह-सुबह ही आपने कैसे कष्ट किया? कुशल तो है न?"

"कुशल हो, तो कोई थाने क्यों आए?" श्री जैन ने कहा, "आपको एक सूचना देने आया हूं।"

"कहिये! कहिये!"

"गाड़ाघाट गांव के एक खेत में एक लाश पड़ी है।"

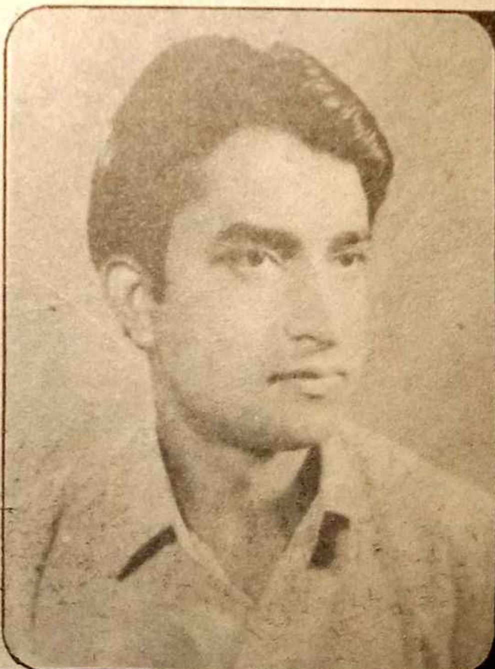
"लाश? किसकी लाश?" चीना साहब चौंक कर बोले।

"पता नहीं किसकी लाश है। सड़कर बुरी तरह दुर्गन्ध दे रही है।"

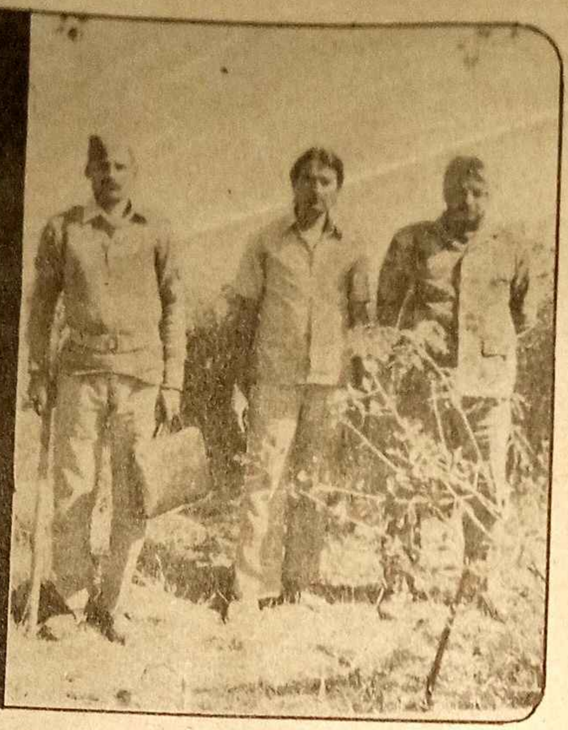
श्री चीना ने तुरन्त अपने साथ एक हवलदार को लिया और श्री जैन के साथ घटनास्थल की ओर चल पड़े।

पगडंडी से उतरते ही उन्हें भी किसी सड़ी हुई लाश की दुर्गन्ध का आभास हुआ। उन्होंने भी नाक बन्द कर ली। आठ-दस आदमी और भी उनके साथ हो लिये थे।

श्री चीना ने देखा, बेरी की झाड़ियों के पास बांस के टट्टर के ऊपर एक लाश पड़ी थी और उसके दोनों ओर सूखे पत्तों के ढेर थे। ऐसा लगता था कि लाश को पत्तों से ढंककर छिपाने की कोशिश की गयी थी। श्री चीना ने पत्ते हटवाये। लाश सड़कर फूल गयी थी और उसे पहचानना मुश्किल था। लाश मर्द की थी। उसके शरीर पर केवल एक पायजामा था। उसके गले में एक कुर्ता लिपटा हुआ



पाटन के उप-सरपंच श्री सुरेश जैन, जिन्हें तुलसीराम ने अपने खेत में लाश पाये जाने की सूचना दी



घटना स्थल पर श्री जी० एस० चीना, श्री सुरेश जैन तथा तुलसीराम

था। उसके हाथ, पैर और गले में घावों के निशान थे। दाहिने हाथ और गले के घाव काफी गहरे थे।

श्री चीना ने घटनास्थल पर प्रारंभिक जांच शुरू की। एकत्रित भीड़ में से एक व्यक्ति ने जब बताया कि यह लाश राजाराम पंडित की मालूम होती है तो श्री चीना ने राजाराम पंडित के भाई भागवत को तुरन्त बुलवाया।

राजाराम के भाई ने लाश देखते ही बताया कि वह उसके भाई राजाराम की ही थी।

घटना-स्थल की छानबीन की गयी। जहां लाश पड़ी थी, उससे कुछ हटकर एक स्थान पर जमे हुए खून के कुछ धब्बे दिखायी दिये। पुलिस ने वहां की मिट्टी अपने कब्जे में की।

लाश का पंचनामा बनाकर पोस्टमार्टम के लिए शासकीय अस्पताल, जबलपुर भिजवा दिया गया।

लाश की शिनाख्त तो हो गयी, लेकिन गांव में काफी पूछ-ताछ करने के बाद भी यह पता न लगा कि राजाराम की हत्या किसने की। लोगों ने बताया कि राजाराम बड़ा ही दुष्ट आदमी था, उसकी हत्या कोई भी कर सकता था। उसके सम्बन्ध में श्री चीना खुद भी पहले से ही काफी कुछ जानते थे। न केवल गाड़ाघाट, बल्कि पिपरिया, तेंदुखेड़ा, पाटन और आस-पास के अधिकांश ग्रामवासी उससे आतंकित थे। उसके दुश्मनों की संख्या बहुत बड़ी थी।

चार-पांच घन्टे सिर खपाने के बाद उस दिन श्री चीना हवलदार के साथ थाने लौट आये।

दूसरे दिन राजाराम के शव की पोस्टमार्टम-रिपोर्ट प्राप्त हो गयी, जिससे ज्ञात हुआ कि गले पर किसी तेज धारवाले हथियार के प्रहार से श्वास नलिका कट जाने के कारण उसकी मृत्यु हुई थी और उसको मरे हुए आठ-नौ दिन हो गये थे।

श्री चीना ने इस हत्याकाण्ड की सूचना सर्किल इंसपेक्टर श्री यू० पी० सिंह को दी। दूसरे दिन श्री सिंह के साथ श्री चीना ने गाड़ाघाट जाकर फिर पूछ-ताछ की। लेकिन कोई सुराग हाथ न लगा।

श्री चीना एक योग्य और अनुभवी पुलिस अधिकारी हैं। वे समझ गये कि यह काफी पेचीदा मामला है और इसे सुलझाना आसान नहीं है। उन्होंने पूछताछ का रास्ता छोड़कर गुप्त रूप से छानबीन शुरू कर दी। उन्होंने एक-एक कर गाड़ाघाट, तेंदुखेड़ा, पिपरिया आदि ग्रामों में कई लोगों से सम्पर्क किया। इसी सम्पर्क के दौरान लगभग डेढ़ सप्ताह बाद एक व्यक्ति से उन्हें मालूम हुआ कि अन्तिम बार २१ नवम्बर, १९७६ की शाम को राजाराम, मद्दी वल्द जोरावल, मुल्लू वल्द गौरीशंकर और सीताराम वल्द भजनलाल, के साथ पहाड़ी की ओर जाता हुआ देखा गया था।

श्री चीना को यह जानकारी बहुत महत्वपूर्ण लगी। उन्होंने राजाराम की हत्या के सन्देह में मद्दी, मुल्लू और सीताराम को हिरासत में ले लिया और उन तीनों से अलग-अलग पूछ-ताछ की। मद्दी और सीताराम ने तो साफ-साफ इनकार कर दिया कि उन्होंने राजाराम की हत्या नहीं की थी। उन्होंने यह भी कहा कि वे नहीं जानते कि हत्या किसने की। लेकिन मुल्लू जल्दी ही टूट गया। उसने अपराध स्वीकार कर लिया। उसने बताया कि २१ नवम्बर की रात में मद्दी, सीताराम और उसने मिलकर राजाराम की हत्या की थी।

मुल्लू के अपराध स्वीकार कर लेने के बाद मद्दी और सीताराम ने भी स्वीकार कर लिया कि उन तीनों ने मिलकर राजाराम की हत्या की थी।

श्री चीना ने भारतीय दण्ड विधान की धारा ३०२ के अन्तर्गत तीनों अभियुक्तों के विरुद्ध आरोप-पत्र तैयार कर मुकद्दमा २२ फरवरी १९७६ को अदालत को सौंप दिया। मुकद्दमे के दौरान राजाराम की हत्या के बारे में बड़े ही अजीब-गरीब तथ्य सामने आये।

कहा जाता है कि संगत से ही आदमी में गुण और दोष आते हैं। बुरे-से-बुरा आदमी अच्छी संगत से सुधर जाता है और अच्छे-से-अच्छे आदमी को भी बुरी संगत बिगाड़ देती है। राजाराम बुरे संसर्ग के दोषों का ही शिकार होकर एक दिन काल के गाल में समा गया था।

राजाराम अपने माता-पिता का सबसे छोटा बेटा था। वह बचपन में बड़े लाड़-प्यार में पला था और उसने अपने दोनों बड़े भाइयों की अपेक्षा शिक्षा भी अधिक प्राप्त की थी। उसका बड़ा भाई राधेश्याम पाटन तहसील में चपरासी था और मंझला भाई भागवत गाड़ाघाट



हत्याकांड की विवेचना करनेवाले सब-इंस्पेक्टर श्री जी० एस० चीना.

में प्राइमरी स्कूल में शिक्षक था। भागवत ने राजराम के दो साल लगातार इंटर में फेल होने के बाद दौड़-धूपकर उसे एक गांव के प्रायमरी स्कूल में शिक्षक के पद पर नियुक्त करवा दिया था।

राजाराम बहुत ही सीधा-सादा युवक था। वह पहली बार घर से बाहर नौकरी करने जा रहा था, इसलिए उसके भोजन की व्यवस्था करने के लिए स्वयं उसकी मां उसके साथ गयी।

एक वर्ष बाद राजाराम का पाटन के प्रायमरी स्कूल में तबादला हो गया। इस बीच उसके माता-पिता ने राजाराम का विवाह कर दिया था। राजाराम रोज साइकिल से पाटन जाता-आता था।

राजाराम का सद्व्यवहार और सच्चरित्रता के कारण गांव में बड़ा मान था। लोगों का कहना है कि उन्होंने राजाराम को कभी किसी से तेज आवाज में बोलते भी नहीं सुना था। वह स्वभाव से उदार और परोपकारी था।

तीनों भाइयों में बड़ी एकता थी। माता के परलोकवासी होने के बाद भी तीनों भाई सपरिवार एक साथ ही रहते थे। और बड़े सुख से जीवन-यापन कर रहे थे।

एक दिन जब पहली तारीख को राजाराम वेतन लेकर स्कूल से गांव जा रहा था, तो रास्ते में किसी ने उसे आवाज दी। राजाराम ने मुड़कर देखा और साइकिल से उतर पड़ा। उसे पुकारनेवाला उसका बचपन का दोस्त और सहपाठी सन्तराम था।

"अरे सन्तराम, तुम?" राजाराम बोला, "आज कल कहां रहते हो? गांव में दिखायी नहीं देते।"

"मैं कुछ दिनों के लिए बाहर चला गया था," सन्तराम ने बताया।

"चलो, गांव चल रहे हो?"

सन्तराम ने कहा, "गांव तो चलूंगा, मगर थोड़ी देर से। तुम्हें देर न हो रही हो, तो मेरे साथ चलो।"

"कहां?"

"अरे, यार, यहीं! कोई कलकत्ता-बम्बई थोड़े जाना है। बस, थोड़ी देर रुकेंगे।"

राजाराम उसके अनुरोध को टाल न सका और सन्तराम के साथ चल पड़ा।

कुछ दूर जाने के बाद दोनों एक मकान में प्रविष्ट हुए, जहां एक कमरे में जुआ हो रहा था।

"यहां तो जुआ हो रहा है।" राजाराम ने कहा।

"हां, लोग अपना मुकद्दर आजमा रहे हैं। जरा मैं भी दो-चार हाथ खेलकर आजमा लूं।" सन्तराम ने हंसकर कहा।

राजाराम चौंक उठा। उसे यह पता नहीं था कि सन्तराम जुआ खेलता है। फिर भी संकोचवश उसने सन्तराम को कुछ न कहा।

सन्तराम बावन पत्तों के जुए में शामिल हो गया और राजाराम एक तरफ बैठकर देखने लगा।

लोग जेबों से रुपये निकाल रहे थे और दाव पर रख रहे थे। कभी सबके रुपये एक की जेब में चले जाते और कभी दूसरे की जेब में। कुछ देर बाद राजाराम ने सन्तराम के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "यार सन्तू, अब चलो, भई! देर हो रही है।"

"बस, दोस्त, दस-पन्द्रह मिनट और रुक जाओ।"

राजाराम फिर बैठ गया।

मुश्किल से दस मिनट बीते थे कि सन्तराम ने राजाराम से कहा, "यार रज्जू, जरा बीस रुपये तो देना। मैं पचास रुपये हार चुका हूं। खाली हाथ लौटना अच्छा नहीं लगता।"

राजाराम इनकार न कर सका। उसने उसे बीस रुपये दे दिये। उसके बाद सन्तराम जमकर बैठ गया। राजाराम जब भी उसे उठाना चाहता, वह "अभी चलते हैं," कहकर फिर खेल में जुट जाता।

अब सन्तराम की जेब में रुपये भरते जा रहे थे। वह बराबर जीत रहा था। राजाराम ने फिर उससे उठने को कहा, तो वह उठ खड़ा हुआ।

"अच्छा मित्रो! अब फिर मिलेंगे। काफी देर हो गयी है।" सन्तराम ने अपने जुआड़ी साथियों से कहा और राजाराम के साथ बाहर आ गया।

उस समय रात के साढ़े दस बजे थे। सन्तराम ने राजाराम को बीस रुपये लौटाते हुए कहा, "यार, तुम्हारे बीस रुपयों ने मेरी किस्मत पलट दी। मैं अपने पूरे पचास रुपये हार चुका था। लेकिन अब मेरे पास पूरे एक सौ अस्सी रुपये हैं।"

दोनों गांव की ओर चल पड़े।

कुछ दिनों के बाद एक दिन अचानक राजाराम को फिर सन्तराम मिल गया। उस दिन राजाराम कुछ परेशान था। उसे कुछ पैसों की जरूरत थी। अकस्मात सन्तराम को पाकर वह भगवान को लाख-लाख धन्यवाद देने लगा। उसने सन्तराम से कहा, "दोस्त, तुम बड़े अच्छे मौके पर मिल गये! मैं तुम्हें याद ही कर रहा था।"

"क्या बात है, बोलो?" सन्तराम ने पूछा।

राजाराम ने कुछ संकोच के साथ कहा, "मैं एक उलझन में पड़ गया हूं। मुझे पचास रुपये की जरूरत है।"

"अरे, यार, रज्जू! तुम भी कैसी बातें करते हो? बस इतनी-सी बात के लिए परेशान हो? चलो, अभी पैसों का इन्तजाम करता हूं।" सन्तराम ने चलते हुए कहा, "मैं तो उधर ही जा रहा हूं।"

"कहां?" राजाराम ने अनजान बनकर पूछा।

"अरे वहीं, जहां एक के चार बनते हैं।"

लगभग तीन घंटे बाद वे दोनों जुए के अड्डे से बाहर निकले। आज फिर भाग्य ने सन्तराम का साथ दिया था। सन्तराम ने राजाराम को पचास की जगह सौ रुपये दिये और कहा, "यार, तुम मेरे साथ रहते हो, तो मेरी तकदीर खुल जाती है। आज फिर मैंने दो सौ तीस रुपये जीते हैं। मेरी सलाह मानो, तो कभी तुम भी अपनी किस्मत आजमा कर देखो!"

"यार, मैं तो पत्ते खेलना जानता ही नहीं।"

"तुम उसकी चिन्ता मत करो।"

उस दिन के बाद राजाराम प्रायः सन्तराम के साथ जुए के अड्डे पर जाने लगा और धीरे-धीरे वह भी जुआ खेलना सीख गया। जुए के साथ-साथ वह वहां न केवल बीड़ी-सिग्रेट, बल्कि गांजा-शराब भी पीने लगा। इस चक्कर में वह कभी-कभी दो-दो दिन तक स्कूल भी न जाता था और समय पर घर भी न पहुंचता था।

एक दिन उसकी इन करतूतों की भनक उसके बड़े भाई राधेश्याम को मिली, तो उसने उसे खूब फटकारा। लेकिन राजाराम अपनी भूल पर लज्जित होने की जगह उससे बहस करने लगा। फलस्वरूप इसका परिणाम यह हुआ कि राजाराम अपने भाइयों से अलग होकर पाटन ही में रहने लगा।

अब वह और भी बेफिक्र और निरंकुश हो गया था। न उसे नौकरी की चिन्ता थी, न घर की। कुछ दिनों से उसकी आर्थिक स्थिति भी बिगड़ गयी थी। उस पर सन्तराम और कई दूसरे

[illegible] का असली कारण यह नशा था। इसी बीच नियमित रूप से ड्यूटी न आने के कारण उसकी नौकरी भी छूट गयी थी।

राजाराम अब बुरी तरह बिगड़ चुका था। वह शराब लेकर घर आता और जब उसकी पत्नी उससे कभी कहासुनी, तो वह उसे मारने-पीटने लगता। आखिर परेशान होकर उसकी पत्नी अपने मायके चली गयी और वहीं रहने लगी।

अब राजाराम को पूरी आजादी मिल गयी। लेकिन कर्ज देने-वालों के तकाजों से वह बेहद परेशान था। उसके पास पैसा बिल्कुल न था। कल्याणराम से भी पैसे को लेकर कहा-सुनी हो गयी थी। वह उदास होकर सोचने लगा कि पैसा कहां से आये? सोचते-सोचते आखिर उसे एक उपाय सूझ गया और उसकी आंखों में चमक आ गयी।

उस दिन चाइबासा में हाट का दिन था। हाट में आस-पास के गांवों के लोग भी क्रय-विक्रय के लिए आते थे। राजाराम सांझ होते ही रास्ते में एक पहाड़ी के पीछे छुप गया। सूरज डूब चुका था और अन्धकार ने अपने डैने फैलाने शुरू कर दिये थे। चाइबासा की ओर से एक आदमी अकेले आता दिखायी पड़ा, तो राजाराम पहाड़ी की ओट से निकलकर बाहर आया और जरा दूर से ही उस आदमी को पुकार कर बोला, "क्यों बे, कहां जा रहा है?"

राहगीर उसे देखकर एकदम घबरा गया। उसके मुंह से सहसा कोई बात न निकली।

राजाराम ने आंखें तरेर कर कठोर स्वर में कहा, "स्साले! जो कुछ भी तेरे पास हो, सीधे से निकाल दे, नहीं तो ..."

"भैया मेरे पास कुछ नहीं है," राहगीर, जो एक अधेड़ व्यक्ति था, गिड़गिड़ाकर बोला।

राहगीर का यह कहना था कि उसके गाल पर ऐसे जोर का तमाचा पड़ा कि उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। वह लड़खड़ाकर गिरने ही वाला था कि राजाराम ने उसकी गर्दन दबोच ली और कहा, "जान की खैर चाहता है, तो निकाल, तेरे पास जितने पैसे हैं!"

आदमी को जान से ज्यादा प्यारी कोई दूसरी चीज नहीं होती। राहगीर आततायी से कमजोर था। सुनसान स्थान पर उसकी पुकार सुनकर कोई मदद करने भी न आ सकता था। इसलिए उसने "अच्छा" कहकर अपनी गर्दन छुड़ायी और कोट तथा बंडी की जेबों से सारी रकम निकाल कर राजाराम को दे दी।

राजाराम ने पैसे लेकर राहगीर को एक लात जमाकर कहा, "अब सीधी तरह चला जा! किसी से कहा, तो तेरे घर-भर की जान ले लूंगा!"

राहगीर चला गया, तो राजाराम ने रकम गिनी। कुल एक सौ बत्तीस रुपये थे।

उस दिन से राजाराम राहजनी करने लगा। पहाड़ी के ऊपर जोबनलाल गड़रिया की एक झोंपड़ी थी। राजाराम ने उसी को अपना अड्डा बना लिया। जोबनलाल भी उससे डरता था।

थोड़े ही दिनों में लूट-पाट करने से राजाराम की हालत सुधर गयी। इस बीच उसके विरुद्ध पुलिस में कई नामजद रिपोर्टें लिखायी गयीं, लेकिन पुलिस उसे न पकड़ सकी।

११ मार्च, १९७४ को पहली बार राजाराम पुलिस के पंजे में फंसा। उसने एक व्यापारी के डेढ़ हजार रुपये लूट लिये थे। व्यापारी ने चाटन पुलिस थाने में जाकर रिपोर्ट लिखायी। पुलिस तो पहले ही से राजाराम की तलाश में थी। इस बार घात लगाकर पुलिस ने राजाराम को गिरफ्तार कर लिया।

राजाराम पर मुकदमा चला और उसे तीन महीने की सजा हो गयी।

सजा काट कर जेल से छूटने के बाद राजाराम ने पहला काम यह किया कि उसने उस व्यापारी को पकड़कर उसकी बुरी तरह पिटाई कर दी।

कुछ दिनों के बाद राजाराम फिर पकड़ा गया और उस पर फिर राहजनी का केस चला। लेकिन इस बार उसके आतंक के कारण किसी ने उसके खिलाफ गवाही नहीं दी। फलस्वरूप अदालत ने उसे चेतावनी देकर छोड़ दिया।

इस बात से राजाराम का हौसला इतना बढ़ गया कि उसने एक-के-बाद-एक कई अपराध कर डाले। उसने अपने कई पुराने साथियों को भी नहीं छोड़ा। अब उसके लिए हर आदमी, जिसके पास पैसे थे, लूटे जाने के लिए था।

राजाराम के कथित हत्यारे बद्री, कल्लू और सीताराम सब एक वर्ष से उसके साथी और सहयोगी थे और उसके साथ मिलकर राहजनी करते थे। लेकिन राजाराम को अब घमण्ड हो गया था। उसने अपने साथियों को भी आतंकित करना शुरू कर दिया था। परिणाम-स्वरूप उसके तीनों साथी एक-एक कर उसका साथ छोड़कर चले गये और उसकी जान के गाहक बन गये।

राजाराम की सबसे पहले सीताराम से दुश्मनी हुई थी। एक बार राजाराम और सीताराम ने मिलकर एक व्यक्ति को लूटा। लूट के माल के बंटवारे के दौरान दोनों में वाद-विवाद हो गया। सीताराम ने डेढ़ सौ रुपये ज्यादा ले लिये थे। उस समय तो राजाराम मान गया, लेकिन बाद में वह सीताराम से डेढ़ सौ रुपये की मांग करने लगा। एक दिन सीताराम ने राजाराम से साफ-साफ कह दिया कि अब वह उसे एक पैसा भी नहीं देगा, तो राजाराम को गुस्सा आ गया और उसने सीताराम की जमकर पिटाई कर दी। सीताराम ताकत में राजाराम से कम था। वह जहर के घूंट पीकर रह गया। उसके दिल में प्रतिशोध की आग सुलगने लगी।

कल्लू से राजाराम की दुश्मनी का दूसरा कारण था। राजाराम कल्लू के घर आता-जाता था। कल्लू की पत्नी जवान और काफी सुन्दर थी। उस पर राजाराम की नीयत खराब हो गयी। औरत बड़ी जल्दी मर्द की नजर पहचान लेती है। कल्लू की पत्नी ने देखा कि राजाराम अक्सर उसी समय आया करता था, जब कल्लू घर पर न होता था और अकारण ही बैठा रहता था। एक दिन कल्लू की पत्नी ने कल्लू से राजाराम की शिकायत की और कहा कि वह अपने दोस्त को घर पर आने से मना कर दे।

कल्लू भी राजाराम से कमजोर था। वह राजाराम की निष्ठुरता से भी परिचित था। उसने स्पष्ट शब्दों में तो राजाराम से कुछ न कहा, लेकिन एक दिन इशारों में ही उसने यह बात कह दी।

राजाराम पर इसका उलटा ही असर हुआ। उसने सोचा कि कल्लू उससे डरा हुआ है, इसी कारण वह उससे साफ-साफ कुछ कहने का साहस नहीं कर पा रहा है। वह कल्लू के घर अब और भी अधिक जाने लगा और उसकी पत्नी को छेड़ने भी लगा।

एक दिन राजाराम ने कल्लू की पत्नी को छेड़ा, उसने राजाराम से कहा, "मुझे तुम कोई ऐसी-वैसी औरत न समझना। अब फिर कभी तुम हमारे घर न आना!"

राजाराम ने इसे अपना अपमान समझा। उसने पूछा, "क्यों?"

"बस, मैंने कह दिया। याद रहे, तब भी तुम मेरे घर के दरवाजे पर कदम न रखना।" कल्लू की पत्नी ने बड़ी बेरुखी से कहा।

राजाराम को यह बात बहुत बुरी लगी। वह उसे गाली देने लगा। फिर दोनों में तू-तू मैं-मैं होने लगी, तो कल्लू की पत्नी की ओर से उसकी भाभी भी बोलने लगी। इस पर राजाराम आपे से बाहर हो गया और उसने दोनों औरतों को पीटना शुरू कर दिया। उसकी

आकर्षक खिलौने

पॉइंट

प्रत्येक १००० ग्रा. के पैक पर

कागज़ की

टीना

आप स्वयं सजाइये



तीन जोड़ी कपड़े इस पैक के अंदर

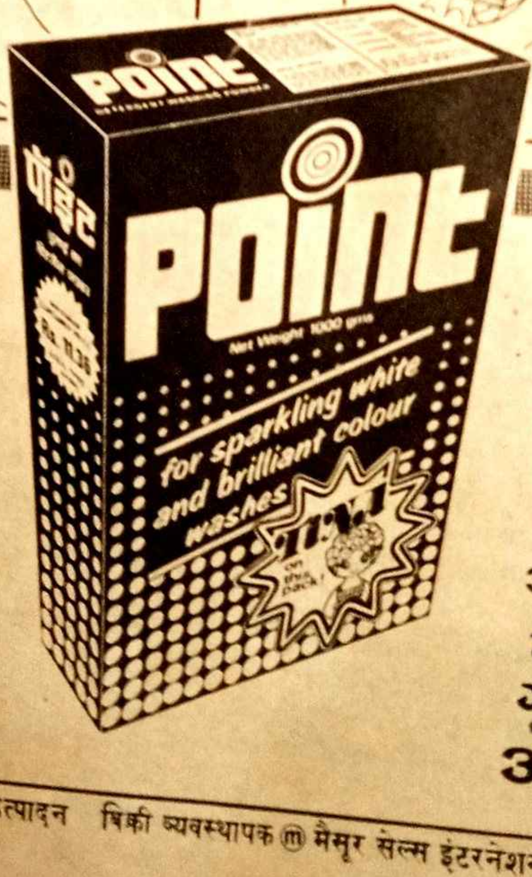
कागज़ की

बस

आप स्वयं बनाइये



अब आपको जरूरत है सिर्फ कैंची व गोंद की।



प्रीमियम क्वालिटी और इसके अलावा !

अब ! अपने पैसे से और अधिक लाभ उठाइये । आज ही पॉइंट खरीद कर देखिए । हर १००० ग्राम पॉइंट के पैक पर आपके बच्चों के लिए कुछ आकर्षक खिलौने हैं, जो पैक को काटकर बनाये जा सकते है । इस सिलसिले के पहले खिलौने — एक डबल डेकर बस और गुडिया टीना हैं, जो आपको किसी भी दुकान पर मिल सकते है। आपने आनेवाले पैकों पर अनेक आकर्षक खिलौने की प्रतिक्षा कीजिए ।

बिना अधिक दाम के

ये खिलौने पैक पर ही छापे गये हैं। पैक को आप काटकर टीना व डबल डेकर बस बना सकते है । इस प्रकार आप पैक को फेंकने के बजाय अपने बच्चों के लिए आकर्षक खिलौने बना सकते है, न बरबादी न पैसा खर्च ।

आज ही अपने दुकानदारो से पूछिये

मूल्य की तुलना कीजिये
गुणवत्ता की जाँच कीजिये
आप स्वयं आज़माइये

गवर्नमेंट सोप फैक्टरी, बंगलौर का एक उत्कृष्ट उत्पादन   बिक्री व्यवस्थापक मैसूर सेल्स इंटरनॅशनल लिमिटेड, बंगलौर

MCA/PD

चीख-पुकार सुनकर पास-पड़ोस के लोगों ने आकर बीच-बचाव किया। लोग राजाराम से भी डरते थे। अतः उन्होंने उसकी चिरौरी विनती कर औरतों को क्षमा करने के लिए कहा।

मुल्लू ने फिर भी राजाराम से खुलकर कुछ न कहा। लेकिन उसने राजाराम से मिलना छोड़ दिया और उससे बदला लेने की तरकीब सोचने लगा।

मट्टी से भी औरत के कारण ही दुश्मनी हुई थी। मट्टी स्वयं भी अय्याश तबीयत का आदमी था। उसने एक औरत को रख लिया था। राजाराम यह बात जानता था। जब मुल्लू के घर उसकी दाल न गली, तो उसका ध्यान मट्टी की रखैल की ओर गया। वह औरत काफी सुन्दर और तरहदार थी। पहले वह वेश्या थी, परन्तु मट्टी उसे भा गया था और अब वह मट्टी के घर एक वफादार बीबी की तरह रहती थी, और खुश थी। वह राजाराम के हंसी-मजाक का बुरा न मानती थी और कभी-कभी उसे देवर समझकर खुद मजाक कर लेती थी। परन्तु इसके आगे वह राजाराम को बढ़ने न देती थी।

एक दिन राजाराम ने मट्टी से कहा, "क्यों, यार मट्टी, अपन जब लूट के माल में साझेदारी करते हैं, तो क्या दूसरे माल में साझेदारी नहीं कर सकते ?"

"क्या मतलब ?" मट्टी ने उसकी बात न समझकर पूछा।

"मतलब साफ है। कभी-कभी तुम्हारी तारा मेरी भी सेवा कर दिया करे तो . . ."

मट्टी उसकी पूरी बात न सुन सका और आंखें तरेर कर बोला, "देख, रज्जू ! तारा बाई कोई लूट का माल नहीं है। वह मेरी है। उस पर केवल मेरा अधिकार है !"

"अरे कौन वह तेरी ब्याहता पत्नी है, जो तू इस तरह की बातें कर रहा है ? वह न जाने कितनों के पहलू गरम कर चुकी है। मैं भी उसे पैसे दूंगा।"

मट्टी से यह सहन न हो सका। वह बिगड़कर बोला, "देख, रज्जू, तू हद से आगे बढ़ा जा रहा है !"

राजाराम अब ढिठाई से बोला, "अच्छा, मेरी यह बात तुझे बुरी लगती है, तो मेरे साथ एक समझौता कर ले।"

मट्टी ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसे देखा।

राजाराम बोला, "भाई, तू मुझे तीन सौ रुपये महीना दे दिया कर, तो मैं तारा बाई का खयाल छोड़ दूंगा।"

यह सुनकर मट्टी भड़क उठा, "तीन सौ रुपये क्या हराम के आते हैं ? मुझे तेरी यह शर्त मंजूर नहीं ! मैं तुझसे कहे देता हूं कि अगर तूने तारा पर ऐसी-वैसी नजर डाली, तो मुझसे बुरा कोई न होगा !"

मट्टी ताकत में राजाराम से कम न था। फिर भी राजाराम गुस्से में पागल हो गया। वह बोला, "अच्छा, तेरी यह मजाल ! बेटा, राजाराम से रंगदारी झाड़ना बड़ा महंगा पड़ेगा ! तुझे यह मालूम होना चाहिए कि राजाराम जो चाहता है, पाकर दम लेता है।"

"जा-जा ! बड़ा रुस्तम बना फिरता है ! मैं दोस्ती का खयाल कर कुछ नहीं कहता तो इसका मतलब यह नहीं कि तू मुझे भी सीताराम और मुल्लू की तरह दबाने की कोशिश करे !"

"ठीक है। यह तो वक्त बताएगा कि कौन कितने पानी में है।" राजाराम कहता हुआ चला गया।

उस दिन के बाद से मट्टी और राजाराम में भी बोलचाल बन्द हो गयी।

जब सीताराम और मुल्लू को पता चला कि मट्टी से भी राजाराम की अनबन हो गयी है, तब वे दोनों मट्टी से जाकर मिले। फिर तीनों ने विचार-विमर्ष कर यह निश्चय किया कि राजाराम को खतम कर दिया जाए। उसके जीवित रहते उन्हें चैन नहीं मिलने का।

अपनी योजना के अनुसार एक दिन वे तीनों एक ही साथ राजाराम के पास पहुंचे और उससे कहा, "हम स्वयं ही आपस में लड़कर अपना नुकसान कर रहे हैं। हमें फिर पहले ही की तरह मिल-जुलकर रहना और अपना काम करना चाहिए।"

राजाराम उनकी बातें सुन फूलकर कुप्पा हो गया। उसने सोचा कि तीनों उससे दब गये हैं और उससे फिर दोस्ती करना चाहते हैं। उसने उनको गले लगा लिया।

उसके बाद दो-तीन बार चारों ने मिलकर कुछ छोटी-मोटी राहजनियां कीं और राजाराम को लूट के माल में से अधिक हिस्सा मिला। राजाराम अब शेर हो गया था।

अब मट्टी, सीताराम और मुल्लू ने अपनी योजना कार्यान्वित करने का दिन निश्चित कर लिया।

२१ नवम्बर, १९७६ की शाम को मट्टी, मुल्लू और सीताराम एक साथ ही राजाराम से मिले और उससे कहा, "आज हमने एक मालदार असामी के घर पर डाका डालने की योजना बनायी है। हमने सब पता लगा लिया है। घर का मालिक शिकार पर गया हुआ है। वहां काफी माल मिलने की आशा है।"

राजाराम ने सुना, तो उसकी बाछें खिल गयीं। वह झट तैयार हो गया। लगभग साढ़े सात बजे वे चारों राजाराम के पहाड़ी अड्डे से नीचे उतरे और गाड़ाघाट गांव की तरफ चलने लगे। रास्ते में मट्टी ने कहा, "दम लगा लें तो कैसा ? अभी तो बहुत समय है।"

"हां-हां, क्यों नहीं ?" सीताराम ने समर्थन किया।

राजाराम को गांजा सबसे अधिक पसन्द था। वह खुशी से तैयार हो गया।

चारों पगडंडी से उतरकर खेतों में होते हुए एक बड़े पेड़ के नीचे जाकर बैठ गये। मुल्लू ने चिलम और गांजा निकाला। सीताराम ने गांजा तैयार कर चिलम भरी और राजाराम की ओर बढ़ा दी। राजाराम "बमभोले" का नारा लगाकर दम लगाने लगा।

राजाराम ने दम लगाकर चिलम मट्टी की ओर बढ़ा दी। मट्टी ने हलका दम लगाकर चिलम सीताराम की ओर बढ़ा दी। इस तरह एक चक्कर पूरा कर चिलम फिर राजाराम के पास पहुंच गयी। राजाराम ने फिर दम लगाया।

थोड़ी देर में राजाराम की आंखें नशे में चढ़ गयीं और पलकें बोझिल होने लगीं। मट्टी लघुशंका करने के बहाने उठकर कुछ दूर गया और लौटकर पीछे से उसने राजाराम की गर्दन पर कुल्हाड़ी से एक भरपूर वार कर दिया। राजाराम जमीन पर लुढ़क गया। उसके गिरते ही सीताराम ने उसके दाहिने हाथ पर अपनी 'गड़िया' से वार किया। मुल्लू ने भी उसके सिर और छाती पर लाठी से कई वार किये। आखिर राजाराम कुछ देर तड़पकर शांत हो गया।

मुल्लू पास के खेत में बने मचान के नीचे से बांस का टट्टा उठा लाया और उन तीनों ने मिलकर राजाराम का शव उठाकर टट्टर पर रख दिया। फिर सीताराम ने राजाराम के शरीर का कुर्ता निकालकर उसकी गर्दन में लपेटकर उसका मुंह ढंक दिया। फिर पेड़ के पत्ते तोड़कर उनसे लाश ढंककर उसे उठाकर बेरी की झाड़ियों में रख दिया।

लाश बेरी की झाड़ियों में रखी गयी थी और उसे पत्तों से ढंक दिया गया था, इसलिए कई दिन तक किसी को कुछ पता न चला। लेकिन जब पत्ते सूखकर हवा में उड़ने लगे और लाश सड़कर दुर्गन्ध देने लगी, तब तुलसीराम का ध्यान उसकी ओर गया। यों भी पगडंडी से वह जगह दूर थी। और राजाराम की खोज-खबर लेनेवाला भी कोई न था, इसलिए किसी को कुछ पता न चल सका।

इस प्रकार राहजन राजाराम का अन्त हो गया। उसके तीनों साथी हत्या के अभियोग में गिरफ्तार कर रिमाण्ड पर लिये गये।

अब गाड़ाघाट, पिपरिया, तेंदूखेड़ा आदि गांवों के लोग भयमुक्त और निश्चित होकर रास्ता चलते हैं।

देमार टोनहिन काण्ड

स्वर्ण सिंह किरात

गांवों में टोनहिनें बड़ी बदनाम होती हैं। कभी-कभी गांव-वाले उनका बहिष्कार भी करते हैं। लेकिन लुदूराम ने नववधू राजिम बाई और गंगा बाई को टोनहिनें कहकर जो भयंकर यातनाएं दी, उसकी तो कोई कल्पना ही नहीं कर सकता! आश्चर्य है कि गांववालों ने भी क्रूर शैतान लुदूराम का वह नंगा नृत्य देखा और कोई विरोध नहीं किया।

सन् १९५८ के दिनों में थाना पाटन (जिला दुर्ग) के अंतर्गत आनेवाले एक ग्राम देमार में हैजे का भयानक प्रकोप हुआ था। प्रतिदिन ५-७ लोगों का मर जाना मामूली बात हो गयी थी। सारा गांव आतंकित हो उठा था। हर घर में हाहाकार मचा हुआ था। मरनेवालों की संख्या रोज-रोज बढ़ती जा रही थी। हैजा मासूम बच्चों, असहाय बूढ़े-बूढ़ियों, युवकों-युवतियों सबको निगलता जा रहा था।

छत्तीसगढ़ अंचल में जादू-टोने का बड़ा प्रभाव है। ग्रामीणों का विश्वास है कि गांवों में जब भी किसी महामारी का प्रकोप होता है, उसके पीछे टोनहिनों का हाथ होता है।

महामारी पर विचार करने के लिए गांव की चौपाल में पंचायत बैठी, तो हर आदमी ने यही कहा कि इस महामारी के पीछे किसी-न-किसी टोनहिन का हाथ है। कइयों ने तो इस सिलसिले में युवती राजिम का भी नाम लिया। राजिम देखने में एक अल्हड़ और मासूम युवती थी, जो हाल ही में ब्याह कर अपनी ससुराल आयी थी।

रामलाल ने पंचायत में कहा, "मेरे प्यारे पुत्र घनश्याम को भी राजिम टोनहिन खा गयी थी। जब घनश्याम एक माह तक पीले बुखार में पड़ा रहा, तो मैंने डाक्टरी इलाज रोककर गांव के बैगे (ओझा) को दिखाया। बैगे ने घनश्याम को देखते ही कहा कि इस पर



किसी प्रेत की छाया है । फिर उसने पूजा कर प्रेत का आह्वान किया, तो प्रेत घनश्याम पर आकर बोला कि उसे राजिम बाई ने भेजा है ।"

बैगा भी पंचायत में मौजूद था । उसने पंचायत में रामलाल की बात की पुष्टि की ।

डेरहा ने बताया, "आज से करीब पांच माह पहले की बात है । एक बार आधी रात में मुझे हाजत महसूस हुई । मैं मैदान की ओर गया, तो मैंने अचानक राजिम बाई को नग्न अवस्था में श्मशान घाट की ओर जाते हुए देखा। उस समय उसके पैर जमीन से लगभग एक फुट ऊपर थे ।"

चमरू साहू ने कसम खाकर पंचायत को बताया, "मैंने भी एक रात राजिम बाई को नग्नावस्था में श्मशान घाट की ओर हवा में उड़ते हुए जाते देखा था ।"

राजिम के विषय में इसी प्रकार और भी कई बातें लोगों ने पंचायत को बतायीं। पंचों ने विचार किया और फैसले के रूप में सरपंच ने यह घोषणा की, "इस भीषण महामारी के प्रकोप के पीछे राजिम बाई टोनहिन का ही हाथ मालूम देता है। अगर वह महामारी को समाप्त नहीं करती, तो गांव की ओर से उसे माकूल सजा दी जाएगी !"

ग्राम के नौजवानों ने यह फैसला सुना, तो वे क्रोध से चीखने-चिल्लाने लगे । पंचायत भंग हो गयी । नौजवान अपने नेता लुदूराम के साथ हो-हल्ला करते हुए उसी समय राजिम बाई के घर की ओर चल पड़े । उनके हाथों में लाठियां, भाले, फरसे और कुल्हाड़ियां थीं । यह देखकर ग्रामीणों को यह समझते देर न लगी कि अब राजिम बाई की खैर नहीं ।

लुदूराम का गांव में बड़ा दबदबा था। उसकी लाठी के आगे लोगों के सिर अपने आप झुक जाते थे। आस-पास के गांवों में भी उसकी धाक थी। लोग उसके नाम से भी डरते थे। वह अपने साथियों के साथ सरे आम मनमानी करता रहता था। उसके विरुद्ध थाने-कचहरी जाने की कोई हिम्मत न करता था । उसके इशारे पर गांव में कई कत्ल हो चुके थे ।

पंचायत में राजिम बाई पर सबसे पहले लुदूराम ने ही टोनहिन होने का आरोप लगाया था । फिर उसके कई साथियों ने उसकी बातों की पुष्टि की थी। अंधविश्वासी लोगों ने हैजे का कारण राजिम बाई को ही मान लिया। लुदूराम और उसके साथियों ने राजिम बाई के विरुद्ध हो-हल्ला कर ग्रामीणों को उत्तेजित कर दिया था । वे भी नौजवानों के पीछे-पीछे राजिम बाई के घर की ओर चल पड़े थे ।

राजिम बाई पंचायत के फैसले से बेखबर थी । उसके विरुद्ध कैसे भयंकर षडयंत्र की रचना हो गयी थी, उसे कुछ पता न था ।

लुदूराम अपने हाथ की लाठी फटकारता हुआ अपने साथियों के साथ राजिम बाई के दरवाजे पर जा धमका। उसके इशारे पर उसके साथियों ने राजिम बाई के मकान का बन्द दरवाजा तोड़ दिया और आंधी की तरह मकान में घुस गये । राजिम बाई कुछ न समझकर एक कोने में खड़ी थर-थर कांप रही थी। लुदूराम के रौद्र रूप को देखकर वह भय से चीख पड़ी और उसकी आंखें फैल गयीं ।

"राजिम !" लुदूराम दहाड़ा ।

राजिम बाई बिलबिला उठी ।

"इस हरामजादी को घसीटकर ले चलो !" लुदूराम ने चीखकर अपने साथियों को आदेश दिया ।

लुदूराम के साथी असहाय राजिम को निर्दयतापूर्वक बालों से पकड़कर घसीटते हुए बाहर गली में ले गये। बाहर लोगों की भीड़ खड़ी थी । राजिम बाई चीख-चिल्ला रही थी, लेकिन उसकी मदद करनेवाला कोई भी नहीं था। उसका पति उस समय खेतों पर गया था। ग्रामीणों के दिलों में राजिम के लिए घृणा तथा रोष व्याप्त था। सब उसे कोस रहे थे और मार रहे थे।

राजिम बाई का पति हो-हल्ला सुनकर भागा-भागा आया, तो उसको कुछ नवयुवकों ने पकड़कर चौपाल में ले जाकर पटक दिया और उसके हाथ-पांव बांध दिये । फिर उसे लात-घूंसों से मारा और भद्दी-भद्दी गालियां दीं ।

लुदूराम और उसके साथी राजिम बाई को एक जानवर की भांति घसीटते हुए चौपाल पर ले गये और उसे मारने-पीटने और गालियां देने लगे।

फिर उन्होंने राजिम बाई को नंगा कर उसे एक पेड़ की डाल से उलटा लटका दिया। राजिम बाई बुरी तरह जख्मी हो गयी थी। जख्मों से रक्त बहकर जमीन पर टपक रहा था। वह रो-रोकर अपनी जान की भीख मांग रही थी।





राजिम बाई और गंगा बाई को इसी विशाल वृक्ष के तने से बांध कर जिंदा जला दिए जाने की योजना भी बनायी गयी थी।

लेकिन उसकी गिड़गिड़ाहट सुननेवाला वाला वहां कोई भी न था।

यातनाओं का यह दौर बहुत देर तक चलता रहा। राजिम बाई को कितने ही प्रकार की नारकीय यातनाओं में से गुजरना पड़ा। वह कई बार बहोश हुई थी। वह होश में आने पर बार-बार यही कहती थी, "मैं बेकसूर हूं . . . मुझे छोड़ दो।"

'"इस कमीनी औरत को भुतहे कुएं में डाल दिया जाए!" लूदूराम ने गरजते हुए अपने साथियों को आदेश दिया।

लुदूराम के साथियों ने लहू-लुहान राजिम बाई को पेड़ से उतारा और उसे घसीटते हुए भुतहे कुएं की ओर जाने लगे।

भुतहा कुआं गांव के बाहर था। लगभग २० वर्ष पूर्व उस कुएं में एक गर्भवती स्त्री ने कूदकर आत्म-हत्या कर ली थी। उसके बाद वह कुआं भुतहा मान लिया गया। उस कुएं का पानी कोई भी उपयोग में नहीं लाता था। कहा जाता है कि रात को उस कुएं में किसी स्त्री के चीखने और कूदने की आवाजें आती थीं। अब उस कुएं

क्रुद्ध ग्रामीणों ने राजिम बाई को इसी कुएँ में ढकेल दिया था। लेकिन राजिम बाई लगातार ८ घंटे कुएं के पानी में तैरती रही



का जीर्णोद्धार कर उसको उपयोग के लायक बना दिया गया और गांव के लोग उसका पानी पीते हैं। कहा जाता है कि कुएं के प्रेत को किसी बैगे ने अपने वश में कर लिया था। अब गांव का नक्शा बदल गया है और वह कुआं बस्ती के अन्दर आ गया है।

भुतहे कुएं में डाल देने की बात सुनकर राजिम बाई के रोंगटे खड़े हो गये। उस भयानक कुएं के बारे में वह कितनी ही डरावनी कहानियां सुन चुकी थी। उसे अब साक्षात मौत नजर आने लगी। वह चीख-चीखकर छुटकारे के लिए विनती कर रही थी। लेकिन उसकी बात किसी ने नहीं सुनी। उन्होंने उसे उस भयानक कुएं में ढकेल दिया। राजिम बाई के कंठ से एक हृदय-विदारक चीख निकलकर आसमान का सीना चीर गयी।

कुएं का पानी काफी गहरा था। राजिम बाई उसमें कुछ इस तरह गिरी कि उसे कोई विशेष चोट न आयी। आत्म-रक्षार्थ वह चीखती चिल्लाती पानी पर तैरने लगी। अभागी राजिम बाई की चीख-पुकार के उत्तर में लुदूराम और उसके साथियों के अट्टहास आसमान में गूंज रहे। वे जानते थे कि राजिम बाई अब जल्दी ही मर जाएगी।

वे लोग हो-हल्ला करते, विजय की किलकारियां भरते चौपाल पर आ गये और काफी रात तक वहीं बैठकर मदिरापान करते रहे। वे समझ रहे थे कि कुएं की प्रेतनी ने कब का राजिम बाई को मार डाला होगा अथवा वह खुद ही पानी में डूबकर मर चुकी होगी।

लेकिन राजिम बाई मरी नहीं थी। जीवन और मौत के बीच संघर्ष करती हुई वह रात में करीब २ बजे तक निरंतर तैरती रही। उसने आखिरी सांस तक मौत के साथ संघर्ष करने की ठान रखी थी। इस संघर्ष में शायद कोई दैवी शक्ति उसकी मदद कर रही थी। तभी तो वह पूरे ८ घंटे तक लगातार उस संकरे कुएं में बिना सहारा लिये तैरती हुई अपनी प्राण-रक्षा करती रही।

आठ घंटे बाद अचानक कुएं पर कोई आहट हुई, तो अपने जीवन की रक्षा के लिए राजिम बाई ने अपनी सांसें समेटकर पुकारा।

अगले ही क्षण एक छोटी रस्सी कुएं की दीवार के सहारे फिसलती हुई छपाक की आवाज के साथ पानी में गिरी। राजिम बाई ने अपने शरीर की बची-खुची ताकत समेटी और रस्सी पकड़ ली।

राजिम रस्सी के सहारे धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगी। इस प्रयास में उसके हाथ कई जगह छिल गये। आखिर वह कुएं के बाहर आ गयी। बाहर आकर उसने आंखें फाड़-फाड़कर देखा। लेकिन कहीं कोई भी उसे दिखायी न दिया। तभी उसे चक्कर आया और वह जमीन पर ढेर हो गयी। वह बेहोश हो गयी थी। जिस आदमी ने गुप्त रूप से राजिम बाई की मदद की थी, वह चुपचाप कुएं में रस्सी लटकाकर, उसका ऊपर का सिरा चरखी के साथ बांधकर खिसक गया था।

राजिम बाई थोड़ी देर में फिर होश में आ गयी और वह वहां से उठकर अपनी नग्नता छिपाने के लिए कोई जगह ढूंढने लगी। तभी लुदूराम के एक साथी की निगाह उस पर पड़ गयी, जो उसी ओर से शराब के नशे में धुत होकर गुजर रहा था। उसने जब राजिम को देखा, तो उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। उसने उसको राजिम बाई की प्रेतिनी समझा और वह चीखता हुआ चौपाल की ओर भागा। उसने चौपाल में जाकर यह बात अपने साथियों को बतायी, तो वे बौखला गये और नशा हिरन हो गया।

दिन निकलते ही अपने साथियों को लेकर लुदूराम कुएं पर पहुंचा और उसने झांककर कुएं के अन्दर देखा। कुएं के पानी पर राजिम बाई की लाश दिखायी नहीं दी, तो उसका माथा ठनका। उसी समय कुएं में लटकी हुई रस्सी पर उसकी नजर पड़ गयी और उसे यह समझते देर न लगी कि गांव के किसी व्यक्ति ने राजिम बाई की

मदद की होगी। उसने अपने साथियों से आस-पास "क्या बकते -को खोजने का आदेश दिया। राजिम बाई एक झाड़ी "क कर ती हुई पड़ी मिल गयी।

अब लुदूराम राजिम बाई से एक ही प्रश्न बार-बार पूछने लगा, "बता, कुएं में रस्सी किसने लटकायी थी ?"

राजिम बाई जानती, तब तो बताती। उसे लुदूराम और उसके साथियों ने फिर मारा-पीटा और अंत में निराश होकर गांव में उस आदमी की तलाश करने लगे, जिसने कुएं में रस्सी डालकर राजिम बाई की मदद की थी।

दिन निकलते-निकलते लुदूराम और उसके साथियों ने गांव की एक और युवती को, जो हाल ही में ब्याह कर लायी गयी थी, उसके घर से बाहर निकाला और उसको सरेआम बालों से पकड़कर घसीटते हुए चौपाल में राजिम बाई के समीप ले गये। चौपाल पर उन्होंने उस युवती को भी, जिसका नाम गंगा बाई था, बड़ी यातनाएं दीं। लेकिन गंगा बाई ने यह स्वीकार न किया कि राजिम बाई की मदद की थी। दोपहर होते-होते लुदूराम और उसके साथियों ने गंगा बाई को भी टोनहिन घोषित कर दिया और उसे भी नंगाकर, उसके हाथ-पांव बांधकर राजिम बाई की बगल में डाल दिया।

गंगा बाई के पति को भी राजिम बाई के पति की ही भांति पकड़कर बेरहमी से मारा-पीटा गया और उसके हाथ-पांव बांधकर चौपाल में डाल दिया गया। "राजिम!" लुदूराम का कठोर स्वर गूंजा, "भुतहे कुएं से बचकर तुमने समझ लिया होगा कि तुम्हारी मौत टल गयी! लेकिन तुम मेरे हाथ से बच नहीं सकती! मैं तुम्हें ऐसी भयानक मौत दूंगा कि देखकर यमराज भी कांप उठेगा।"

यही बात उसने गंगा बाई से भी कही और फिर अपने साथियों को आदेश दिया, "इन दोनों को ले चलो और गलियों में घुमाओ।"

नग्न अवस्था में ही राजिम बाई और गंगा बाई को गांव की गली-गली में घुमाया गया। फिर लुदूराम के आदेश से उन्हें पीपल के वृक्ष से बांध दिया गया। लुदूराम ने चीखकर कहा, "अब यहीं इन दोनों को जिन्दा जला दिया जाएगा।"

राजिम बाई और गंगा बाई यह सुनकर चीख उठीं और लुदूराम से दया की भीख मांगने लगीं। लेकिन दया के बदले उन्हें गालियां और ठोकरें मिलीं।

गांव में आतंक का यह दूसरा दिन था। भयंकर यातनाओं से गुजर कर राजिम बाई एकदम लस्त हो चुकी थी। रह-रहकर उसकी आंखों के सामने अंधकार छा जाता था। गंगा बाई की स्थिति उससे कुछ बेहतर थी। लेकिन वह भी टूट चुकी थी। उन दोनों के सिर पर मौत नाच रही थी। उनके होश-हवास गुम थे।

लुदूराम ने लाठी के बल पर गांव की दुकानों से एक टीन मिट्टी का तेल लिया और पीपल के पेड़ की ओर चल पड़ा। जंगल की आग की भांति सारे गांव में यह खबर फैल गयी कि पीपल के पेड़ के नीचे राजिम बाई और गंगा बाई को जिंदा जलाया जाएगा। उस दृश्य को देखने के लिए लोगों की भीड़ एकत्रित हो गयी। लोग सहमे-सहमे डरे-डरे-से राजिम बाई तथा गंगा बाई की ओर देख रहे थे। लुदूराम और उसके साथी शराब के नशे में धुत होकर किलकारियां भर रहे थे। उनके अट्टहासों से आसमान कांप रहा था।

लुदूराम ने गंगा बाई और राजिम बाई पर मिट्टी के तेल का पूरा टीन उंडेल दिया। तेल से नहाकर वे दोनों जार-जार रो रही थीं। मौत और जिंदगी के बीच अब एक माचिस की काड़ी जलने की देर रह गयी थी।

गांव के सरपंच का मकान पेड़ के समीप ही था। उसने यह दृश्य देखा, तो उससे रहा न गया। वह दौड़कर आया और डरता-डरता हाथ जोड़कर लुदूराम के सामने खड़ा हो गया।

लुदूराम ने उसकी ओर जलती निगाहों से देखा और फिर गुर्राकर बोला, "क्या बात है ?"

"भय्या लुदूराम, टोनहिन गांव के लिए कलंक होती है। उसको दंड मिलना ही चाहिए। लेकिन जो दंड तुम दे रहे हो, उससे गांव इस बला से छुटकारा नहीं पाएगा, उलटे और परेशान हो जाएगा।"



जलते हुए भूसे के ढेर में से बदहवास-सी निकल कर राजिम बाई और गंगा बाई अपने शरीर में लगी आग को बुझाने की खातिर इसी तालाब में कूद गयी थी।

लुदूराम : कथा का मुख्य पात्र



"क्या बकती हो ? क्या तुम्हारी भी मौत आ गयी है ?" लुटुराम ने कड़क कर कहा।

सरपंच कांप कर बोला, "भइया, बात दरअसल यह है कि तुम अगर इन दोनों को इस पेड़ के साथ बांध कर जलाओगे, तो ये इस पेड़ पर डंकिनियां बनकर रहने लगेंगी और फिर सारे गांव को तंग करेंगी।"

यह बात लुटुराम को ठीक लगी। उसने तुरंत उन दोनों को खोल देने का आदेश दिया। फिर उसने ऐलान किया, "इनको श्मशान घाट में जलाया जाएगा।"

मौत कुछ देर के लिए टल गयी। उन लोगों ने उन दोनों को फिर चौपाल में लाकर बैठा दिया। इस बार उन्होंने उन्हें बांधा नहीं था।

लुटुराम, उसके साथी एक ओर बैठकर मदिरा पीने लगे। थोड़ी देर बाद लुटुराम उठकर वहां से चला गया और उसके साथी शराब पीकर, नशे में धुत जहां-के-तहां लुढ़क गये। राजिम बाई और गंगा बाई ने यह स्थिति देखी, तो उन्होंने इस मौके का फायदा उठाने का फैसला किया। उन्होंने आंखों-ही-आंखों में संकेत किया और वे उठ कर भाग खड़ी हुईं।

गांव के किसी आदमी से भी उन्हें सहायता की कोई उम्मीद नहीं थी। वे गांव के बाहर भागती रहीं।

लुटुराम लौटकर चौपाल में आया, तो राजिम बाई और गंगा बाई को वहां से गायब देखकर परेशान हो उठा। वह तुरंत कई आदमियों को अपने साथ लेकर उन्हें खोजने निकल पड़ा।

अपने पीछे कदमों की आवाजें सुनकर राजिम बाई और गंगा बाई घबरा उठीं। छिपने की और कोई जगह न पाकर वे एक खलिहान में पैरे के ढेर में घुस गयीं। उनका पीछा करने वाले भटक गये और दूसरी ओर चले गये।

राजिम बाई और गंगा बाई के गायब हो जाने से लुटुराम की आंखों में खून उतर आया। वह उत्तेजित होकर चीखने-चिल्लाने लगा। गांव का चप्पा-चप्पा छान मारा गया था और एक-एक मकान की दुबारा-तिबारा तलाशी ली गयी थी, लेकिन राजिम बाई तथा गंगा बाई का कोई पता न चला।

तलाशी लेते-लेते वे एक बार फिर खलिहान में पहुंचे और पैरे के ढेरों में भाला घुसेड़-घुसेड़कर देखने लगे। एक भाले की नोक सीधे गंगा बाई की बायीं जांघ में जा घुसी और उसके मुंह से एक चीख निकलकर वातावरण में गूंज उठी।

"पैरे में आग लगा दो!" लुटुराम चीखकर बोला।

एक व्यक्ति ने झट जेब से माचिस निकालकर पैरे में आग लगा दी। पैरा धूप में सूखा हुआ था। वह धू-धू कर जलने लगा।

पैरे में आग लगते ही राजिम बाई तथा गंगा बाई हड़बड़ाकर बाहर निकलीं। उन दोनों के शरीर पहले से ही मिट्टी के तेल से भीगे हुए थे, अतः क्षण-भर में ही उन दोनों के शरीरों में आग लग गयी। वे दोनों अपने शरीर में लगी आग देखकर चीखने-चिल्लाने और उछलने-कूदने लगीं। इस भयानक दृश्य को देखकर लुटुराम जैसा क्रूर व्यक्ति भी एक बार सिहर उठा। कुछ लोग तो वह दृश्य देखकर, आंख मूंदकर वहां से दूर हट गये।

खलिहान के बाजू में ही एक तालाब था। आग से जलती हुई राजिम बाई और गंगा बाई तालाब की ओर भागीं और उसमें कूदीं। आग तो बुझ गयी, लेकिन वे आग से जले अंगों की असहनीय जलन बर्दाश्त न कर पाने के कारण बिन-पानी की मछली की भांति तड़पने लगीं।

तब लुटुराम ने उन पर पत्थर बरसाने का आदेश दिया।

गंगा बाई की जांघ में जिस स्थान पर भाला घुसा था, वहां से काफी खून निकल रहा था, जिससे उसके आसपास का पानी लाल हो रहा था।

फिर भी वे दोनों न मरीं, तो लुटुराम के आदेश से उन्हें तालाब के अंदर से खींचकर बाहर निकाला गया। फिर वे लोग उन दोनों को घसीटते हुए श्मशान घाट की ओर ले गये।

राजिम बाई के पति महंगाराम तथा गंगा बाई के पति जयलाल को भी चौपाल से श्मशान घाट लाया गया और उनके हाथों में एक-एक कुदाली थमा दी गयी। लुटुराम का इरादा गंगा बाई और राजिम बाई को जीवित गाड़ देने का था और उनकी कब्र उनके पतियों से ही खोदवाने का था

लुटुराम श्मशान में जयलाल तथा महंगाराम से एक-एक कब्र खोदवाने लगा। वे दोनों बेचारे आंसू बहाते हुए अपनी-अपनी जीवित पत्नी के लिए कब्र खोद रहे थे। वे लोग जरा देर भी दम लेने के लिए रुकते, तो उन पर लात-घूंसों की बारिश होने लगती थी।

गंगा बाई तथा राजिम बाई का शरीर आग से जल जाने के कारण काला हो गया था। उनके सिर के बाल भी जल गये थे और वे बड़ी भयंकर दिखायी दे रही थीं। उनके शरीरों पर जख्मों से रक्त बह रहा था और उन पर मक्खियां भिनभिना रही थीं। वे पीड़ा और जलन से बुरी तरह तड़प रही थीं।

"राजिम!" लुटुराम ने भयानक स्वर में कहा, "अब तो तुम्हें पता चल गया होगा कि लुटुराम कितना खतरनाक इन्सान है!"

राजिम बाई ने कोई उत्तर न दिया। उसे उत्तर देने का होश ही कहां था।

"गंगा! देखा तूने, लुटुराम को नाराज करने का कैसा भयानक दण्ड मिलता है! ये गड्ढे जो तुम लोगों के पति खोद रहे हैं, तुम्हीं लोगों को गाड़ने के लिए हैं।"

१८ जून, १९५८ को सुबह उन लोगों ने गंगा बाई तथा राजिम बाई को लात मार-मार कर गड्ढे के अंदर गिरा दिया और गड्ढों को मिट्टी से भर दिया। राजिम बाई और गंगा बाई अंतिम सांस तक अपने प्राणों की भीख मांगती रहीं, लेकिन किसी को भी उनपर दया न आयी।

लेकिन राजिम बाई तथा गंगा बाई के करुण बलिदान के पश्चात भी हैजा नहीं गया। जिस दिन उन दोनों को जीवित दफनाया गया था, उस दिन गांव में हैजे से मरनेवालों की संख्या में काफी वृद्धि हो गयी थी। सरकार को जब हैजे की खबर लगी, तो डाक्टरों का एक दल ग्राम देमार पहुंचा। डाक्टरों का कैम्प लगभग एक माह तक गांव में लगा रहा और धीरे-धीरे उन्होंने हैजे पर काबू पा लिया। इस बीच गांव का कोई भी आदमी गांव के बाहर न निकला था। राजिम बाई तथा गंगा बाई की नृशंस हत्याओं की वारदात की खबर गांव से बाहर न गयी। राजिम बाई के पति महंगाराम तथा गंगा बाई के पति जयलाल को लुटुराम ने एक-एक कोठरी में बंद कर रखा था।

बाद में पता चला कि लुटुराम की निगाह राजिम बाई पर गड़ी हुई थी। एक बार उसने राजिम बाई को खेत में घेरा था, तो राजिम बाई ने उसके मुंह पर थूक दिया था। तभी से वह उसपर दांत गाड़े बैठा था। गंगा बाई के साथ भी कुछ इसी प्रकार की घटना घटी थी। राजिम बाई पर लुटुराम ने जो टोनहिन होने का आरोप लगाया था, वह निराधार था। राजिम बाई के विरुद्ध जितनी कहानियां पंचायत में सुनायी गयी थीं, सब-की-सब लुटुराम की गढ़ी हुई थीं।



अंग अंग
ताज़गी की
तरंग
Liril
THE FRESHNESS SOAP
Liril

उसने अपने अपमान का ऐसा भयानक बदला उन दोनों से लिया, जैसा पहले कभी न सुना गया था।

डेढ़ माह पश्चात, ३ अगस्त १९५८ की सुबह महंगाराम लुदूराम की कैद से छूट कर पाटन थाने पहुंचा। उन दिनों पाटन थाने के थानेदार श्री बसक थे। दुख और आतंक से जर्जर महंगाराम ने थानेदार श्री बसक के चरण पकड़ लिये। श्री बसक हड़बड़ा कर रह गये। महंगाराम ने थानेदार श्री बसक को सारी कहानी सुनाकर कहा, "सरकार! मुझे जेल में बंद कर दीजिए। . . .मैं अब अपने गांव वापस नहीं जाऊंगा! . . .वे लोग मुझे जान से मार देंगे। मेरी रक्षा करें, माई-बाप!"

श्री बसक ने तुरंत पुलिस अधीक्षक, दुर्ग को खबर भेजी। पुलिस अधीक्षक ने तुरंत कदम उठाया और दो ट्रक हथियारबंद जवानों को थाना पाटन रवाना कर स्वयं भी वहां पहुंच गये। उनके निर्देश पर श्री बसक ने महंगाराम की रिपोर्ट दर्ज की। ३ अगस्त, १९५८ के करीब १२ बजे पुलिस ने ग्राम देमार को घेर लिया।

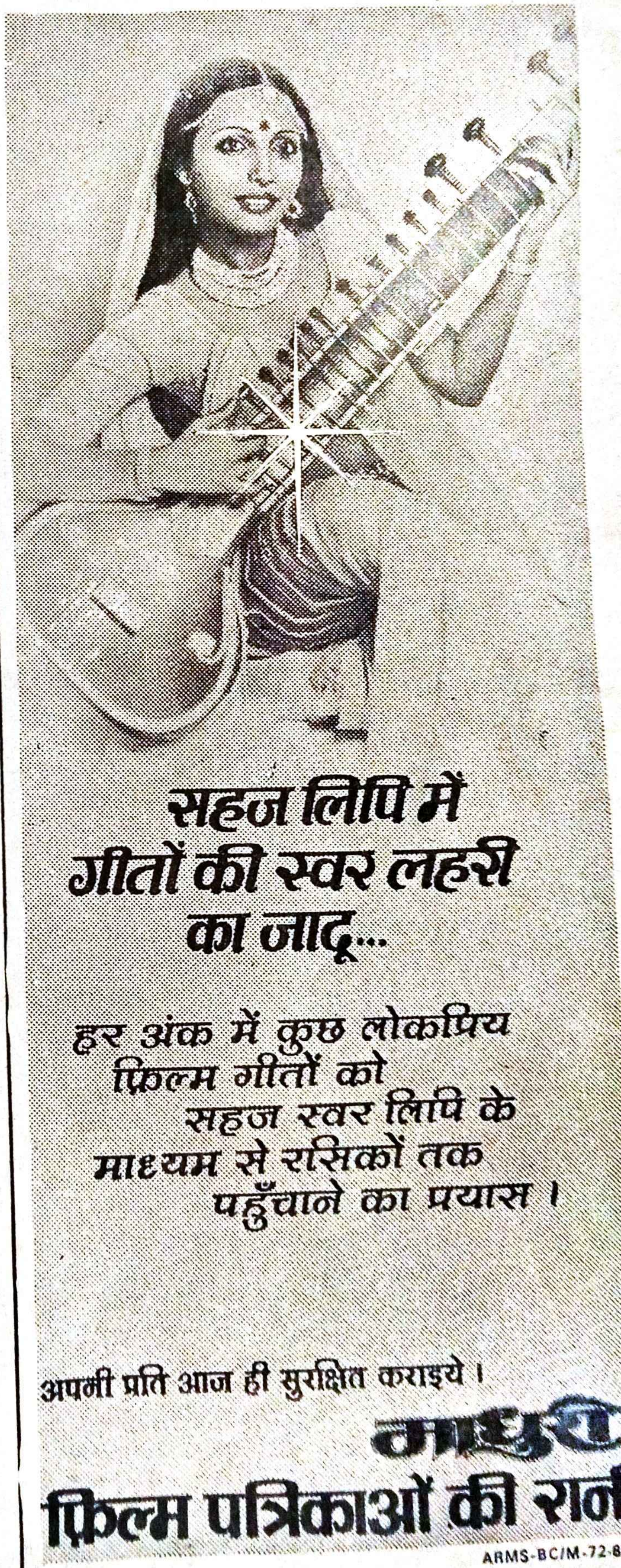
जिस स्थान पर राजिम बाई और गंगा बाई को दफनाया गया था, वहां खुदायी करने पर पुलिस को दो कंकाल प्राप्त हुए।

पुलिस ने गांव के १९ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। उनके नाम ये हैं—(१) लुदूराम वल्द दीनदयाल नाई, (२) विष्णू वल्द लच्छन गोंड़, (३) पतिराम वल्द फगुआ कुर्मी, (३) मायाराम वल्द मनबोध तेली, (५) समर दास वल्द गणेश पनका, (६) आशाराम वल्द जयलाल गोंड़, (७) दयाराम वल्द झरियार गोड़, (८) बल्लू वल्द डोमार गोड़, (९) जक्तू वल्द मुंशी गोंड़, (१०) दुलाल राम वल्द हिंसा राम बैरागी, (११) रामरतन वल्द भुनेश्वर दास नाई (१२) पनका वल्द करिया गोड़, (१३) मोतीराम वल्द कुंवर सिंह गोड़, (१४) दुकालू वल्द शिवचरण तेली, (१५) पतिराम वल्द पनवार तेली, (१६) हृदय वल्द शिवलाल कुर्मी, (१७) हरदू वल्द नरेश गोंड़, (१८) भुखऊ वल्द चिताराम कुर्मी और (१९) भागीरथी वल्द ललतू गोंड़।

इन १९ अभियुक्तों पर धारा ६०-५८-३०२-३४-१२० भारतीय दंड विधान के अंतर्गत दुर्ग न्यायालय में मुकद्दमा चलाया गया। पुलिस का साथ किसी भी ग्रामीण ने अपनी इच्छा से न दिया था। अदालत में सारे गवाह बदल गये। इतना ही नहीं, राजिम बाई और गंगा बाई के पति महंगाराम और जयलाल ने भी अदालत में अपना बयान बदलकर पुलिस को हैरान कर दिया। फिर भी मामला दो साल तक चलता रहा और अंत में साक्ष्य के अभाव में सारे मुजरिम बरी हो गये।

इस घटना का प्रभाव आज भी देमार गांव में मौजूद है। लोग आज भी उस घटना का जिक्र करते हुए घबराते हैं। आततायियों में से अधिकांश अब मर चुके हैं। जो जीवित हैं, वे अब इस स्थिति में नहीं हैं कि उनसे भय खाया जाए। वे भीख मांगकर गुजारा कर रहे हैं।

लुदूराम का दिमाग खराब हो गया है। उसके पीछे बच्चों की भीड़ लगी रहती है। वह गांव में भटकता फिरता है और अक्सर आसमान की ओर सिर उठाकर दहाड़ें मार-मार कर रोता है। वह गांव के उन स्थानों पर घंटों बैठकर दहाड़ें मार-मार कर रोता है, जिन स्थानों पर उसने आज से १९ वर्ष पूर्व दो निर्दोष युवतियों, राजिम बाई और गंगा बाई, को वैसी क्रूर यातनाएं दी थीं। वह शायद पश्चाताप की अग्नि में झुलस रहा है। मनुष्य की अदालत से वह बरी हो गया था, लेकिन भगवान की अदालत से वह न बच सका।



ज़हरीले ख़त

शिवप्रिया

शुरू जवानी में किससे
भूल नहीं होती
और किसके पांव नहीं
डगमगाते ? लेकिन
ब्याह होने के बाद शान्ता
संभल गयी थी
और अपने पति रामदास
के साथ पूर्ण रूप से
सन्तुष्ट थी।
उसे क्या मालूम था
कि पत्रों के रूप में
वह जो स्मृति संजोये हुए
थी, वह भी एक दिन
उसके दुख और
मौत का कारण बन
सकती थी ?

"शान्ता, स्कूल जा रही हो क्या ?"

"हां, आज देर हो गयी। क्या करूं ?"

"करना क्या है ? आओ, मेरी साइकिल पर बैठ जाओ। अभी मैं तुरन्त पहुंचाये देता हूं। मैं भी उधर ही जा रहा था।"

छोटेलाल कोई अपरिचित न था। वह शान्ता का पड़ोसी था। इसलिए शान्ता निस्संकोच उसके पास चली आयी, और उसकी साइकिल के पीछे बैठ गयी। छोटेलाल ने उसे स्कूल पहुंचा दिया।

उसके बाद छोटेलाल अक्सर शान्ता को रास्ते में मिलने लगा था और शान्ता के स्कूल पैदल जाने की मुसीबत दूर हो गयी। वह छोटेलाल के साथ उसकी सायकिल के पीछे बैठकर स्कूल जाने में कोई हर्ज न समझती थी।

एक दिन स्कूल से लौटते समय छोटेलाल ने शान्ता से कहा, "क्यों न हम पास के होटल में एक-एक चाय पी लें ? मुझे इच्छा हो रही है।"

"नहीं, देर हो जाएगी। फिर घर वाले डांटेंगे।" शान्ता ने कहा।

"चाय पीने में भला कितना समय लगेगा ? कोई घर थोड़े ही है कि चाय बनाने के लिए चूल्हा सुलगाना पड़ेगा। यहां तो आर्डर दिया और चाय हाजिर। आओ चलो, मुश्किल से पांच मिनट लगेंगे।"

दोनों होटल में एक केबिन में जा बैठे। छोटेलाल ने दो प्याले चाय का आर्डर दिया। चाय आ गयी, तो वे पीने लगे। चाय पीते-पीते अचानक छोटेलाल के पैर का अंगूठा शान्ता के पैरों से जा लगा। शान्ता ने अपना पैर पीछे कर लिया।

चाय पीकर शान्ता ने प्याला रख दिया। फिर बोली, 'अब चलें। वर्ना देर हो जाएगी।"

"हां, चलते हैं। मैं तो तुम्हें कुछ खिलाना भी चाहता था। लेकिन तुम्हें देर हो जाएगी। कल, न हो, तुम स्कूल से एक घण्टा पहले ही आ जाना।"

"अच्छा, कोशिश करूंगी।"

"कोशिश नहीं, जरूर। मैं उसी जगह इन्तजार करूंगा।"

"मैं इन्तजार करने के लिए नहीं कहती। मैं न आऊं, तो तुम चले जाना। मैं पैदल चली जाऊंगी।"

"तुम तो, मालूम होता है, नाराज हो गयी, शान्ता ! दो मिनट मेरे साथ बैठकर चाय पी लोगी, तो तुम्हारा क्या बिगड़ जायगा ? मैं तुम्हें कहीं घूमने के लिए थोड़े ही कह रहा हूं ?" कहते-कहते छोटेलाल ने याचना भरी आंखों से शान्ता की ओर देखा।

"अच्छा, बाबा, आ जाऊंगी ! अब चलो।"

दोनों होटल से घर की ओर चल पड़े। शान्ता के घर के काफी इधर ही छोटेलाल ने उसे उतार दिया और दूसरी ओर चला गया।



दूसरे दिन छोटेलाल निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर उसका इन्तजार कर रहा था। उसे विश्वास था कि चिड़िया जरूर आएगी। लेकिन शान्ता समय पर नहीं आयी। फिर भी छोटेलाल प्रतीक्षा करता रहा। थोड़ी देर में शान्ता आ गयी, तो छोटेलाल फिर उसे उसी होटल में ले गया और उसने चाय के साथ कुछ खाने को भी मंगाया।

"शान्ता, अगर तुम बुरा न मानो, तो कभी हम मैटिनी शो देखने चलें?"

"तुम तो उंगली पकड़ कर पहुंचा पकड़ लेना चाहते हो?" मुस्कराती हुई शान्ता बोली।

"क्या करूं, शान्ता? अगर तुम बुरा न मानो तो एक बात कहूं?"

"कह डालो। मैं बुरा क्यों मानूंगी?"

"तुम्हें क्या बताऊं, मैंने जब तुम्हें पहली बार देखा था, तभी से मेरा मन मेरे वश में नहीं है। इच्छा होती है कि मैं तुम्हें बरः देखा करूं। इसी लिए तुम्हारे स्कूल जाते और लौटते समय मैं अपने दरवाजे पर आकर खड़ा हो जाता था।"

"इसीलिए तुम मुझे स्कूल और स्कूल से घर पहुंचाने लगे। ठीक है न?"

"हां, शानो! मेरा मन कहता था कि मैं ज्यादे से ज्यादा देर तुम्हारे साथ रहूं और तुमसे बातें करूं।"

"पर मेरा मन तो नहीं करता।"

"फिर तो तुम्हारी मेहरबानी ही है, कि तुम मेरे साथ थोड़ी देर रह लेती हो। यही मेरे जीने का सहारा हो जाता है।" कहते हुए छोटेलाल ने शान्ता की कोमल हथेली अपने हाथों में ले ली।

"देखो! हाथ-वाथ पकड़ोगे तो मैं कल से तुम्हारी सायकिल पर भी न बैठूंगी। मैं पैदल ही जाया-आया करूंगी।"

"अच्छा, बाबा! लो मैं कान पकड़ता हूं! अब तो खुश हो?"

"चलो, माफ किया।" शान्ता ने कह दिया।

"एक बार मेरे साथ सिनेमा देखने चलोगी न?"

"मैं वादा नहीं करती, कोशिश करूंगी।"

"कोशिश करोगी तो जरूर चलोगी! कुछ समय के लिए मेरे तड़पते दिल को शान्ति मिल जाए। मुझे बता देना कि कब चलोगी।"

"बता दूंगी," शान्ता ने कह दिया।

छोटेलाल ने उसे घर पहुंचा दिया।

शान्ता को इस तरह ठाठ से होटल में चाय पीना अच्छा लगा था। होटलों को देखकर, उसका मन ललचाता था। वह सोचती कि शादी होने के बाद वह अपने 'उनके' साथ होटलों में जाएगी,



सिनेमा देखेगी और खूब घूमे-फिरेगी। शादी होने के पहले ही छोटेलाल उसे होटल ले गया और सिनेमा दिखाने के लिए कहा, तो उसे यह अच्छा ही लगा। छोटेलाल के प्रेम-प्रदर्शन से तो उसके मन में गुदगुदी भी हुई।

शान्ता विश्वनाथ पर्घे की बेटी थी। वह उठती उम्र की एक सुन्दर लड़की थी। उसका रंग चम्पई, होठ मूंगे-जैसे लाल-लाल, और आंखें हरिनी-जैसी थीं! वह हंसती तो लगता जैसे गुलाब की कली खिल गयी हो। उस लावण्य-लता को देखते ही छोटेलाल लट्टू हो गया था। वह पहले तो उसे छिप-छिप कर देखा करता था। फिर एक दिन उसने साहस कर उसे स्कूल पहुंचाने की बात कह दी थी।

शान्ता छोटेलाल के साथ सिनेमा जाने के लिये भी राजी हो गयी। दोनों ने सिनेमा देखा, गोलगप्पे भी खाये। उस दिन वह स्कूल जाने के लिए निकली थी, पर स्कूल नहीं गयी थी। सिनेमा के प्रेम-प्रसंगों को देखते हुए छोटेलाल ने उसका हाथ दबाया था और उसकी रानों पर भी हाथ रख दिया था। शान्ता कुछ न बोली थी। उसे यह सब अच्छा ही लगा था।

लौटते समय रिक्शे में बैठे, तो छोटेलाल ने अपना हाथ उसकी पीठ के पीछे कर लिया और एकाध बार पीठ सहलाते-सहलाते उसकी बगल में उंगली भी गड़ा दी। शान्ता ख़ामोश बनी रही। सिनेमा के प्रेम के दृश्य उसकी आंखों में घूम रहे थे। छोटेलाल का साहस अब बढ़ गया था। उसने कई बार उसकी पीठ सहलायी और एक-दो बार तो उसके वक्ष से सट भी गया।

इस तरह दोनों की निकटता बढ़ती गयी। शान्ता उसके घर आने-जाने भी लगी। एक दिन जब छोटेलाल के यहां कोई न था, उसने शान्ता को आने को इशारा किया। वह आयी, तो छोटेलाल ने अचानक उसे अपनी बाहों में बांध लिया। उसके गालों, पलकों, और बिखरी जुल्फों को चूमने लगा। शान्ता भी आपा खोकर उससे लिपट गयी थी। उसी अवसर पर छोटेलाल ने शान्ता को किशोरी से युवती बना दिया। शान्ता उस यौवन के सुख से परिचित हो गयी और छोटेलाल के साथ पुनः-पुनः सहवास के लिए मचलने लगी।

दोनों अब छिप-छिप कर मजा लूटने लगे। जब भी मौका मिलता, शान्ता छोटेलाल के घर चली आती। छोटेलाल उसे सिनेमा ले जाता और घुमाता-फिराता। उसका कमरा उनका मिलन-स्थल हो गया। छोटेलाल उसे छोटे-मोटे उपहार भी देता रहता। वह अक्सर स्कूल जाने के लिए निकलती और रास्ते से छोटेलाल के साथ कहीं चल देती।

दोनों अधिक-से-अधिक एक-दूसरे के साथ रहना चाहते थे। पर यह कैसे हो सकता था?

एक दिन छोटेलाल ने कहा, "शान्ता, रात मुझे नींद बिलकुल नहीं आयी। सारी रात तुम्हारा ही मुखड़ा मेरी आंखों के आगे नाचता रहा। आखिर बेचैन होकर मैं तुम्हें खत लिखने बैठ गया। यह लो, जवाब जरूर देना। जब तुम मेरे पास न रहोगी, मैं तुम्हारा खत पढ़ूंगा और तुम्हें खत लिखूंगा। इसमें मेरे तड़पते दिल को राहत मिलेगी।"

"मेरे दिल की भी यही हालत है। क्या करूं?" शान्ता ने खत अपनी चोली में घुसेड़ते हुए कहा।

छोटेलाल ने वह खत बड़े मूड में लिखा था। दोस्तों से पूछ-पूछ कर, इधर-उधर के शेर और सिनेमा की लाइनें उसमें भरी थीं। एकान्त में बैठी शान्ता किताब के बीच में रखकर उस खत को बार-बार पढ़ती रही। फिर वह जवाब लिखने लगी।

दोनों प्रेमी मिलते रहे। उनके खतों का सिलसिला चलता रहा। वे अलग-अलग जाति के थे। इसलिए उनका विवाह नहीं हो सकता था। यों भी समाज का विरोध कर छोटेलाल उसके साथ विवाह करने का साहस न कर सकता था। वह शान्ता के साथ मजे करने के आगे कुछ सोच ही न रहा था।

शान्ता की मां देख रही थी कि इन दिनों शान्ता साज-शृंगार में जरूरत से कहीं ज्यादा रुचि लेने लगी थी। लेकिन शौक-फैशन की बात सोचकर उस ओर कोई विशेष ध्यान न देती। पर जब उसे शान्ता के पैरों में नयी चप्पलें, कानों में झलमलाते रोल्ड गोल्ड के झुमके, खूबसूरत रूमाल आदि दिखाई देने लगे, तो उसका माथा ठनका। पूछने पर शान्ता ने बताया कि उसकी एक सहेली ने यह सब दिया था।

इसी बीच स्कूल से शान्ता के गायब रहने की रिपोर्ट मिली। मोहल्ले की औरतों में छोटेलाल और शान्ता के बारे में खुसुर-फुसुर होने लगी। एक-दो व्यक्तियों ने शान्ता को कनाटप्लेस तथा चांदनी चौक में छोटेलाल के साथ घूमते भी देख लिया।

शान्ता की मां ने ये बातें अपने पति को बतायीं, तो विश्वनाथ पर्घे को चिन्ता हुई। उन्होंने शान्ता के घर से बाहर निकलने पर रोक लगा दी। उसे उन्होंने मारा-पीटा भी। इसके साथ ही उन्होंने सोचा कि उसकी शादी जल्दी कर दी जाय। इस बीच उन्होंने शान्ता को कहीं भेज देने का निश्चय किया।

शान्ता के पिता ने शान्ता को अपने भाई महादेव के पास पिम्पल-खोटा भेज देने का निर्णय लेकर भाई को तार देकर बुलाया। शान्ता के बारे में सारा हाल जानकर, महादेव शान्ता को अपने साथ ले गये। दोनों भाइयों ने मिलकर यह निर्णय भी लिया था कि पिम्पलखोटा से ही शान्ता की शादी कर दी जाएगी।

शान्ता चाचा-चाची के साथ रहने लगी। उसकी चाची ने उसे बहुत समझाया और रामायण पढ़ने के लिए प्रेरित किया। वे उसे सिलाई-कढ़ाई सिखाने के अलावा घर के काम भी सिखाने लगीं। उसे हर वक्त अपनी आंखों के आगे ही रखतीं। शान्ता को छोटेलाल को पत्र लिखने का भी मौका न मिल पाता था।

मई, १९७२ में शान्ता की शादी धूमधाम से महाराष्ट्र के अचलपुर गांव के रामदास के साथ हो गयी। शादी पिम्पलखोटा से ही हुई। शान्ता के पिता ने शादी के अवसर पर दिल्ली से किसी को भी नहीं बुलाया था। विदा के समय शान्ता की चाची ने उसे समझाया, "देख! नारी का पति ही भगवान होता है। शादी से पहले जो हुआ, उसे भूल जा। किसी पर-पुरुष के बारे में सोचना पाप होगा!"

शान्ता ने वादा किया। वह देर तक अपनी चाची के कन्धे से लगी रोती रही।

शान्ता ससुराल आ गयी। ससुराल में उसका यथोचित स्वागत-सत्कार हुआ। उसके रूप ने उसके पति को मुग्ध कर लिया और उसके गुणों ने सास-ससुर को मोहित कर लिया। लगता था कि उसका वैवाहिक जीवन बड़े सुख से बीतेगा।

कुछ दिन बाद शान्ता के चाचा आकर उसे विदा करा ले गये।

पर अब नैहर में न तो शान्ता का मन लग रहा था, न उसका पति ही उसे छोड़ने को तैयार था। रामदास जल्दी ही आकर शान्ता को विदा करा ले गया।

शान्ता के दिन सुख से बीत रहे थे। अपनी सेवा और मेहनत से उसने ससुराल वालों को मुग्ध कर लिया था। उसका पति तो उसके रूप-यौवन पर मुग्ध था ही।

पर एक दिन उस सुख में आग लग गयी। उस दिन रामदास ने शान्ता की अटैची पैसे निकालने के लिए खोली। शान्ता सो रही थी। उसे जगाना उसने ठीक न समझा। उसे अचानक अटैची में कपड़ों के नीचे रुमाल में बंधी हुई कोई चीज दिखायी दी। उसने टटोल कर देखा,

तो लगा कि उसमें कागज थे। वह उस पोटली को चुपके से ले गया और एकान्त में बैठकर उसने खोला, तो उसमें पत्र देखकर हैरत में पड़ गया। वह एक-एक पत्र पढ़ने लगा।

पढ़ते-पढ़ते उसकी देह मानो क्षोभ की आग से जलने लगी। वे पत्र किसी छोटेलाल के लिखे हुए थे। उनमें उसने हृदय के सारे प्रेमोद्गार उंडेल दिये थे।

पत्रों में एक पत्र शान्ता के हाथ का लिखा हुआ भी था। उसमें शान्ता ने लिखा था, 'अब मेरी शादी हो गयी है। अब तुम मुझे भूल जाओ। मुझे फिर कभी कोई खत न लिखना।'

शान्ता से यह कितनी भारी भूल हो गयी थी! वह न जाने क्या सोचकर उन प्रेम-पत्रों को ससुराल में अपने साथ ले आयी थी। उन पत्रों में उसने उसकी तरुणाई की मधुरतम स्मृतियां थीं, शायद इसी कारण वह उन्हें जला न पायी थी। पहली बार ससुराल आने पर उसने एक पत्र यह सोचकर छोटेलाल को लिखा था कि कहीं वह उसे पत्र न लिख दे। लेकिन वह उस पत्र को लेटर बाक्स में छोड़ने का अवसर न पा सकी थी और उसे भी उसी पोटली में रख दिया था।

रामदास सारे पत्र पढ़ गया और मर्माहत होकर सोचने लगा कि अब क्या जाए? कोई भी पति, चाहे वह खुद व्यभिचारी हो, यह सहन नहीं करता कि उसकी पत्नी पर किसी पर-पुरुष की छाया भी पड़े। शुरू जवानी में कोई विरला ही ऐसा होगा, जिसके पांव न फिसलें हों। लेकिन पुरुष अपनी फिसलन को तो भूल जाता है, पर अपनी पत्नी की फिसलन को बर्दाश्त नहीं करता।

रामदास का रोम-रोम क्रोध से सुलग रहा था। उसके मन में आया कि वह अभी जाकर शान्ता की गर्दन काट दे। शान्ता के पिता और चाचा पर भी उसे कम क्रोध न आ रहा था, जिन्होंने उसके साथ दगाबाजी की थी और अपनी बदचलन लड़की को उसके गले मढ़ दी थी।

रामदास दांत पीसता हुआ उठा और सोयी हुई शान्ता के पास जाकर चीख पड़ा, "छोटेलाल कौन था?"

शान्ता गहरी नींद में थी। उसे कुछ सुनायी न दिया।

"उठ और बता, कौन था छोटेलाल?" रामदास शान्ता की बांह पकड़कर फिर जोर से चीखा।

शान्ता की नींद खुल गयी। वह चौंककर उठ बैठी और आंखें मलती पति के रौद्र रूप को देखने लगी।

"बताती क्यों नहीं, हरामजादी? छोटेलाल कौन था?"

"कौन छोटेलाल? मैं तो नहीं जानती किसी छोटेलाल को!"

"हूं। नहीं जानती छोटेलाल को? दिखाऊं उसके खतों को? वे खत क्या तेरे बाप के लिखे हुए हैं?" कहते हुए उसने सारे खत उसके सामने पटक दिये।

शान्ता की रूह फना हो गयी।

"बताती क्यों नहीं, यह छोटेलाल कौन था? वह कहां रहता है?"

"दिल्ली में, मेरा पड़ोसी था।"

"जब तुमने उसे अपना खसम बना लिया था, तो मेरे साथ क्यों शादी रचायी?"

"उसने मुझे फुसला लिया था। मैंने उसका साथ बहुत पहले ही छोड़ दिया था। आप सच मानिए। मैं उस समय नासमझ थी।"

"नासमझ थी!" मुंह बनाकर रामदास बोला, "जब नासमझी में तूने वैसे कुकर्म किये हैं, तो समझदारी में कैसे-कैसे कुकर्म तू करेगी?"

"जी, मैंने तो उसे लिख दिया था कि अब मेरी शादी हो गयी है, अब वह मुझे पत्र न लिखे।"

"वह पत्र लिखता, तब तो तू पकड़ ही ली जाती! तेरे कमीने बाप को तेरा नापाक पल्लू बांधने को क्या मैं ही मिला था?"

"देखिए, मेरे बाप को कुछ न कहिए। जो कहना हो, मुझे ही कहिए। उन्हें तो कुछ भी मालूम न था।"

"कुछ भी उसे मालूम नहीं था, तो उसने तेरी शादी तेरे चाचा के यहां से क्यों की? हरामजादी, तू भी मुझे उसी तरह बेवकूफ बनाना चाहती है, जिस तरह तेरे हरामजादे बाप ने मुझे बनाया?"

"देखिये, आप पिताजी को कुछ न कहिये!" सूखे कंठ से शान्ता बोली।

"पिताजी को कुछ न कहिए?" रामदास जीभ ऐंठ कर चिल्लाया, "साली! मैं अभी तेरे बाप के पास खत लिख देता हूं कि आकर अपनी सावित्री को ले जाए और अपने गले में माला बनाकर पहने।"

रामदास ने महादेव पर्घे को पत्र लिख दिया कि वे तुरन्त आकर अपनी बदचलन भतीजी को ले जाएं। वर्ना वह उसे घर से निकाल देगा।

उस पत्र का महादेव ने कोई जवाब नहीं दिया। वे भाई से मिलकर बात करने दिल्ली चले गये। तय हुआ कि अभी कुछ करने की जरूरत नहीं है।

दस दिन बाद, याने १२ अगस्त, १९७२ को महादेव को फिर रामदास का एक कार्ड उसी आशय का मिला। उस पत्र का भी महादेव ने कुछ उत्तर न दिया, तो २४ अगस्त को रामदास के पिता ने एक अध्यापक के हाथ महादेव पर्घे के पास एक लम्बा पत्र भेजा। उस पत्र में लिखा था कि चूंकि शान्ता के पहले ही छोटेलाल नामक व्यक्ति के साथ नाजायाज ताल्लुक थे, इसलिए अच्छा होगा वे उसे ले जाएं।

महादेव अचलपुर पहुंचे। उन्हें देखते ही रामदास ने बहुत बावेला मचाया। उसने कहा, "अपनी बदचलन लड़की को तुम वापस ले जाओ! इसे तुमने हमारे सिर क्यों मढ़ा था? इसे ले जाओ और अपने ही घर में रखो। उसी छोटेलाल को सौंप दो।"

महादेव ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की। उन्होंने कहा कि जो हुआ था, वह लड़कपन की भूल थी। उसकी भूल को क्षमा कर उसे एक मौका दें।

पर उनकी कोई भी बात सुनने को कोई राजी न हुआ। तब महादेव ने कहा, "देखिए मैं लड़की का बाप नहीं हूं। मैं अपनी मर्जी से उसे नहीं ले जा सकता। आप थोड़ा ठहर जाइए। मैं भैया से बात करने के बाद कुछ करूंगा।"

"मैं एक क्षण भी रुकने को तैयार नहीं। इसे न ले जाओगे तो हम इसे निकाल देंगे, या जान से मार देंगे!" रामदास ने गुस्से में कहा।

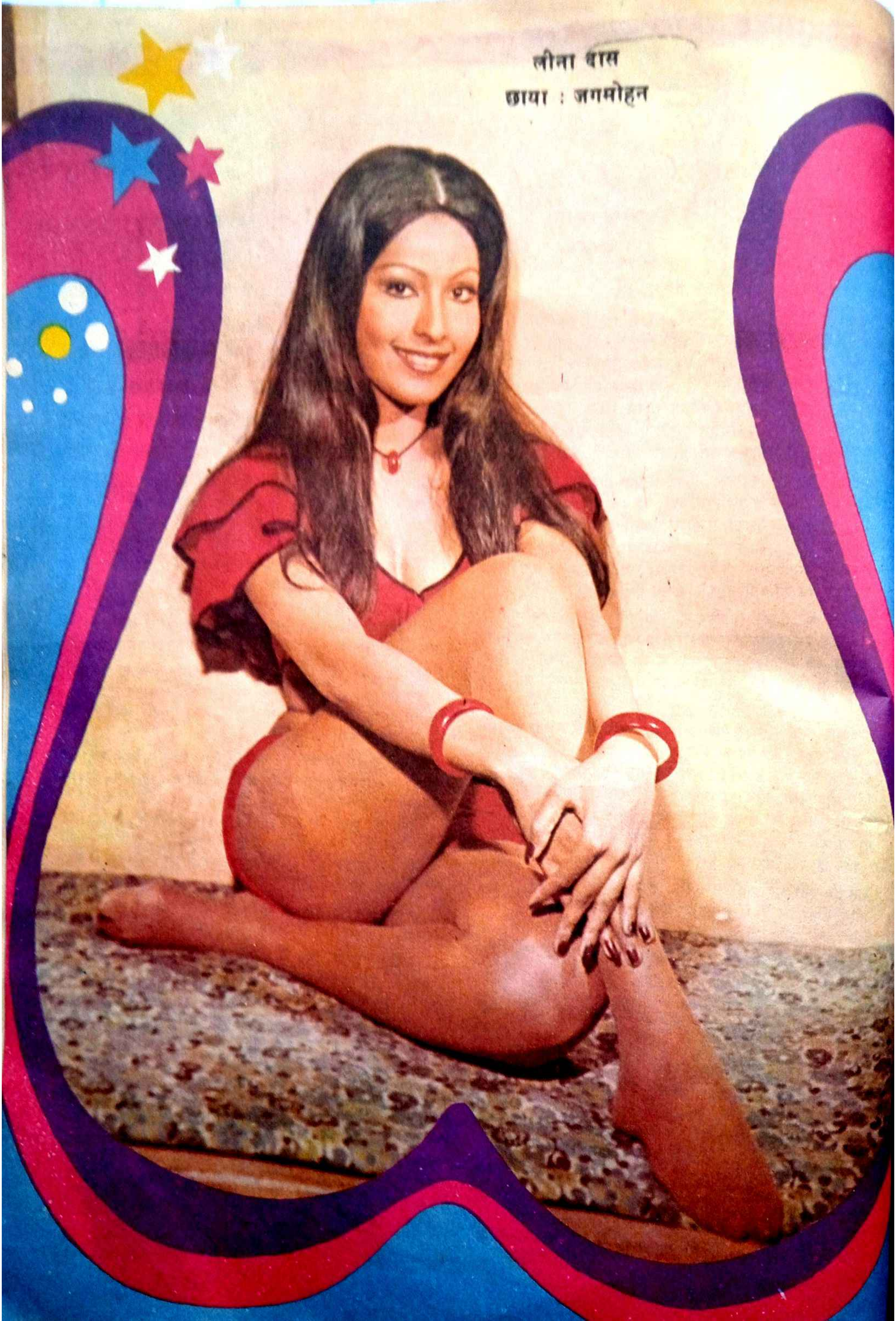
"लड़की आपकी शरण में है। चाहे उसे मार दीजिए, या काट दीजिए। मैं तो यही निवेदन करता हूं कि आप ठण्डे दिमाग से विचार कर उसे क्षमा करें! लड़कपन में भूल किससे नहीं होती?"

लेकिन वहां कोई भी उनकी बात सुननेवाला न था। तब महादेव चले आये। उन्होंने अपने भाई विश्वनाथ पर्घे को एक विस्तृत पत्र लिखकर सारी बातों की सूचना दे दी।

१२, सितम्बर, १९७२ को रामदास ने शान्ता को बहुत मारा-पीटा और उससे घर से निकल जाने को कहा। शान्ता रोती रही। वह क्या कर सकती थी। दो बजे उसकी तबीयत अचनाक खराब हो गयी। उसे कै होने लगी, तो रामदास ने उसे अचलपुर के सरकारी अस्पताल में ले गाया। वहां डाक्टर ने उसकी चिकित्सा की। पर वह बच न सकी। तीसरे पहर ही शान्ता का देहान्त हो गया।

डाक्टर को कोई सन्देह हुआ। उसने पुलिस को सूचना दी।

(शेष पृष्ठ ७५ पर)

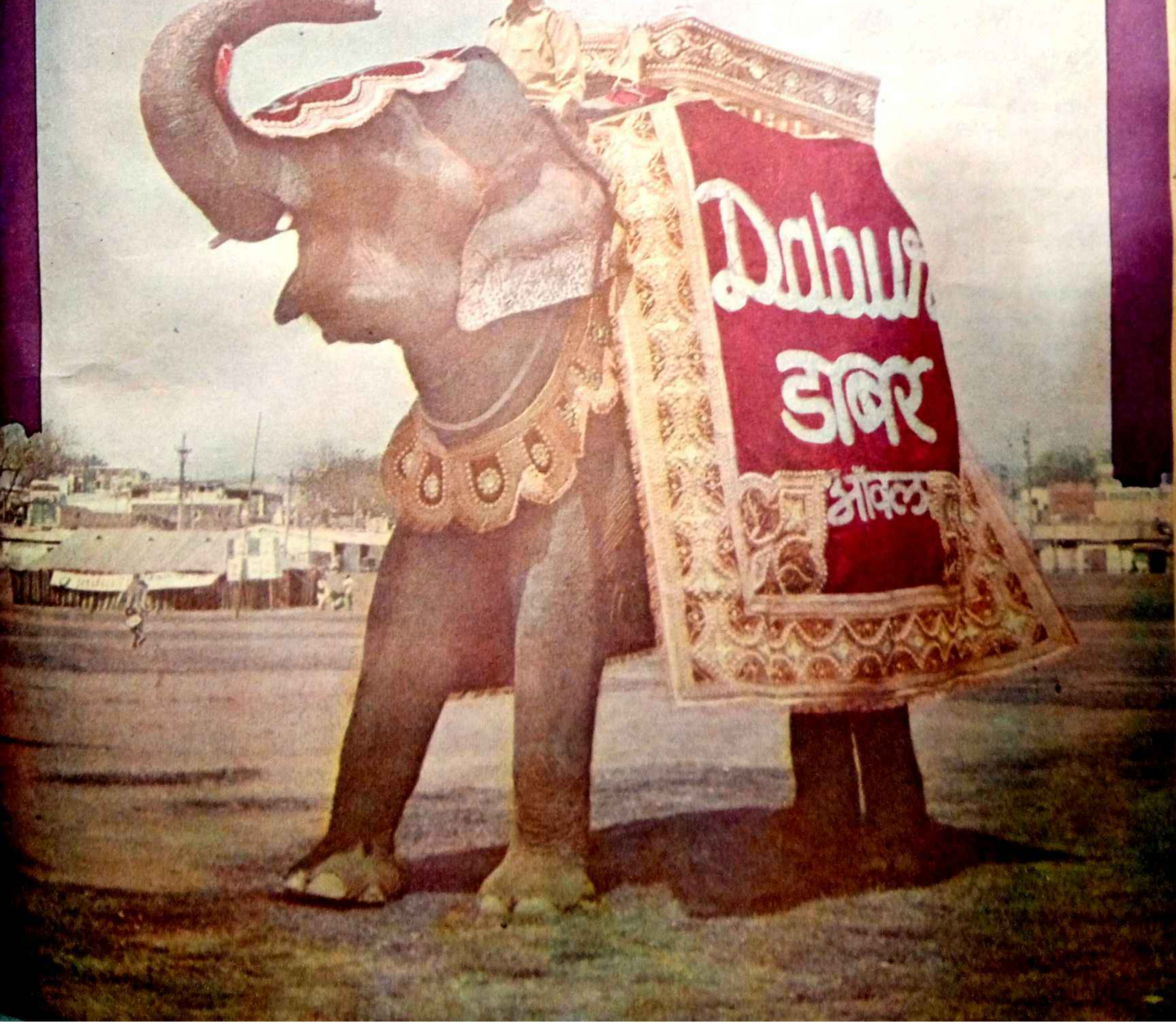


लीना दास
छाया : जगमोहन

सुन्दरकली : का आपरेशन

सुशील कापूर

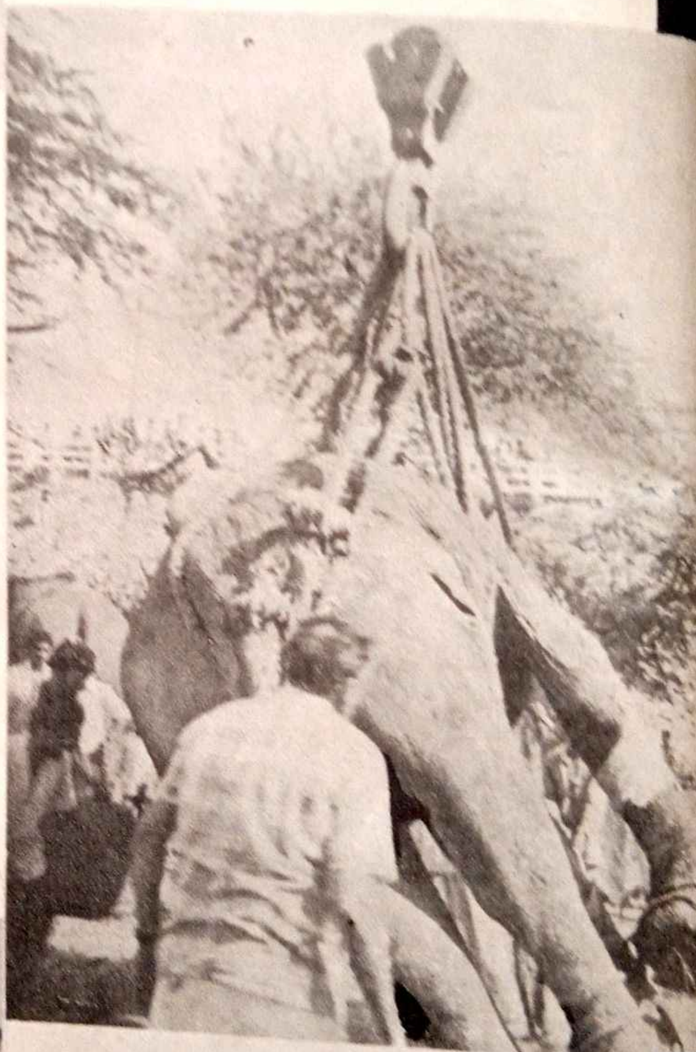
सुन्दरकली के पांव की टूटी हड्डी जोड़ने के लिए उसका आपरेशन करने की बात शेखचिल्ली ही सोच सकते थे, लेकिन हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के डाकटर के० एम० निगम ने बड़े विश्वास के साथ सुन्दरकली का आपरेशन किया और उसे उठाकर खड़ा भी कर दिया। लेकिन...





सुन्दरकली : डाक्टरों द्वारा परीक्षण

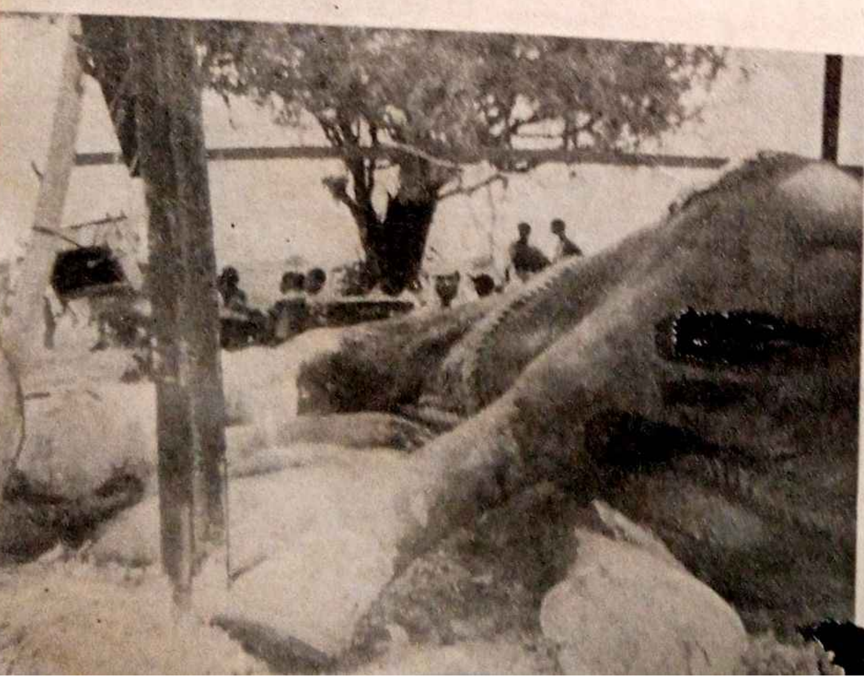
आपरेशन के बाद सुन्दरकली को क्रेन से खड़ा किया जा रहा है



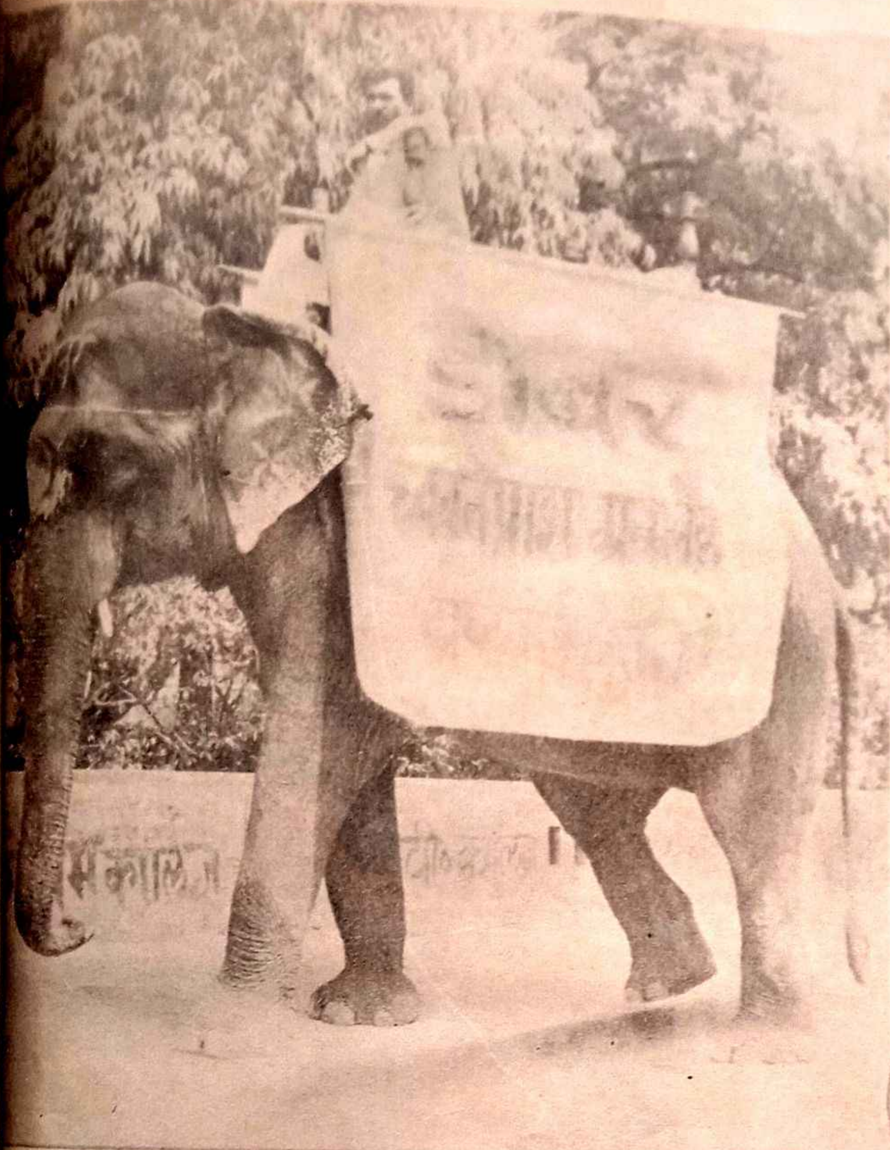
उसका नाम सुंदरकली था। वह बहुत सुंदर थी। वह मद-भरी चाल से जहां भी जाती, उसकी तारीफ होती। उसे बच्चों के साथ खेलने और उन्हें रिझाने का बहुत शौक था। वह जहां जाती, बच्चे उसे घेर लेते।

एक जगह सुन्दरकली बच्चों के साथ खेल रही थी और बच्चे उसके साथ खेल रहे थे। सुंदरकली को अचानक लगा कि समय काफी हो गया, अब चलना चाहिए। वह तुरन्त तेज चाल बे चल पड़ी। तेजी से चलते हुए सुंदरकली से एक भारी चूक हो गयी। उसका दाहिना पांव अचानक खुले मैनहोल के अंदर चला गया और वह आगे को झुक गयी। उसे मैनहोल में फंसे पैर को निकालने के लिए बड़ा संघर्ष करना पड़ा। बड़ी कठिनाई से उसने अपना पैर मैनहोल से निकाला और लंगड़ाती हुई वह किसी तरह अपने अड्डे पर पहुंची।

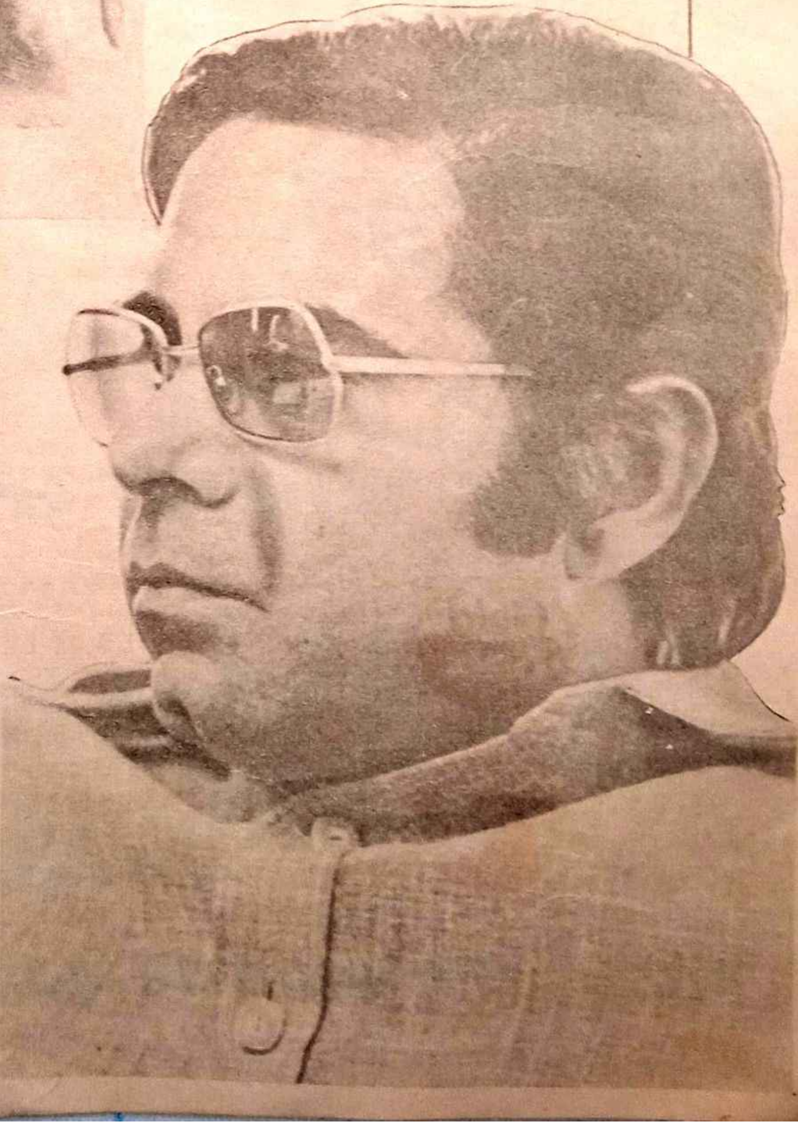
महावत शहाबुद्दीन को सुन्दरकली को उस तरह चलते देखकर शक हो गया कि कहीं उसके पैर में चोट न लग गयी हो। उसने डाक्टर को बुलाया। डाक्टर ने बारीकी से जांच की और इस नतीजे पर पहुंचा कि सुन्दरकली के पैर में थोड़ी चोट जरूर आयी है, लेकिन



सुन्दरकली : दुखद मृत्यु



सुन्दरकली : विज्ञापन में उपयोग



श्री विवेक वर्मन : सुन्दरकली के मालिक

हड्डी सही-सलामत है। उसने नुस्खा लिख दिया, जिसमें एक इंजेक्शन और कुछ मालिश की दवाएं थीं। महावत ने बाजार से ला कर इंजेक्शन लगवाया और मरहम से सुन्दरकली के चुटीले पांव की मालिश की, सुन्दरकली को राहत मिली। दर्द से उसकी छोटी-छोटी आंखों में जो उदासी आ गयी थी वह जाती रही।

सुंदरकली चार-पांच दिन में ही ठीक हो गयी और ठीक से चलने-फिरने लगी। फिर भी उसकी चाल में पहले की वह मस्ती दिखायी न देती थी।

कहते हैं जब बुरा वक्त आता है, तो अपने साथ कई मुसीबतें लाता है। एक दिन अचानक सुंदरकली एक गड्ढे में गिर पड़ी और उसे गहरी चोट आयी। डाक्टर ने जांच की, तो पता चला कि सुन्दरकली के आगे के दायें पैर की हड्डी टूट गयी थी।

सुन्दरकली पैर की हड्डी टूट जाने से लाचार हो गयी। इंद्रप्रस्थ पुल के पास उसके लिए शामियाना लगा दिया गया। वह वहां दर्द से कराहती पड़ी रहती और उसकी आंखों से आंसू बहते रहे।

उन दिनों सुंदरकली आयुर्वेदिक दवाइयों के निर्माता 'डाबर' की सेवा में थी। कंपनी की ओर से उसके उपचार के लिए प्रयत्न शुरू किये गये। डाक्टरों और महावतों ने बहुत कोशिश की कि उसे कुछ आराम पहुंचे। पर उसकी हालत दिन-दिन खराब होती गयीं।



‘चुस्की भरी, तबीयत हरी!

Gold Spot

THE TASTE GOES TO YOUR SMILE

गर्मी की दौड़ धूप का ठंडे दिल से मुक़ाबला कीजिए। भला कैसे ?

बर्फ़ के रंगीन गोल : किसी भी साधारण पेय को नारंगी जैसे, वर्फ़ के रंगीन गोलों से सजाइए। यह अद्भुत पेय देखते ही आपके मेहमानों के मुंह में पानी आ जाएगा

विधि : गोल या वर्गाकार आइस-ट्रे के अलग अलग हिस्सों में, बिना बीज के अंगूर और पुदीने के पत्ते रखिए। अब गोल्ड स्पॉट की एक बोटल इन पर उंडेल दीजिए। अब फ्रीज़र में रख कर इसे जमने दीजिए और ज़रूरत पर निकालिए।

घर में हमेशा गोल्ड स्पॉट रखिए, कोई कब मिलने आ जाए क्या मालूम ?



गोल्ड स्पॉट-स्वाद की गवाही, मुस्कुराहट बन के आ

उसका खाना-पीना भी धीरे-धीरे कम होता गया और वह लगातार कमजोर होती जा रही थी।

'डाबर' के निदेशक श्री विवेक बर्मन ने एक घोषणा जारी की कि देश में अगर कोई चिकित्सक या पशु-विशेषज्ञ सुन्दरकली के पांव की टूटी हड्डी जोड़कर उसकी जान बचा सकता है, तो वह आए और चिकित्सा करे। उसे पूरा खर्च और पुरस्कार दिया जाएगा।

श्री विवेक बर्मन ही नहीं, सुन्दरकली से सहानुभूति रखनेवाले और भी कई लोग थे। उसकी हालत के बारे में सुनकर दिल्ली चिड़ियाघर के अवैतनिक सलाहकार डा० एस० डी० शर्मा ने बहुत दिलचस्पी ली। उन्होंने राय दी कि अगर प्रयास किये जाएं, तो सुन्दरकली का इलाज हो सकता है। इसके लिए उन्होंने सेना से एक क्रेन तथा अन्य सामान मंगवाने का परामर्श दिया, ताकि सुन्दरकली के भारी-भरकम शरीर को उठाकर उसकी स्थिति बदली जा सके और जरूरत पड़ने पर उसे वहां से कहीं और ले जाकर उसका इलाज किया जा सके।

अखबारों में सुन्दरकली की दुर्दशा के बारे में जानकर हिसार से चार विशेषज्ञों का एक दल दिल्ली आया। हरियाणा कृषि-विश्वविद्यालय के इन विशेषज्ञों के दल ने सुन्दरकली का मुआयना किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि उसकी टूटी टांग का तुरंत आपरेशन किया जाना चाहिए। शल्यचिकित्सा और रेडियोलाजी विभाग के अध्यक्ष डा० जे० एम० निगम और उनके सहयोगी डा० रामकुमार, डा० के० एल० गेड़ा और डा० पी० के० पेशिन पूरी तत्परता के साथ अपने काम में जुट गये।

दर्द से छटपटाती हुई सुन्दरकली को कुछ राहत देने के लिए इन डाक्टरों ने उसे दर्द-नाशक दवा की एक बहुत बड़ी खुराक दी। सबसे पहले इसी की जरूरत थी। उसके बाद पैर में घाव होने के कारण सुन्दरकली के शरीर में जो विकार आ गया था, उसे दूर करने के लिए कीटाणु-रोधक दवा की भी एक बड़ी खुराक सुई से उसके शरीर में पहुंचा दी गयी। इसके साथ ही घाव को अच्छी तरह साफ करके उसमें दवा भर दी गयी और बाकायदा मरहम-पट्टी कर दी गयी।

इन आवश्यक प्रारंभिक उपचारों के बाद सुन्दरकली के पैर का आपरेशन करने की तैयारियां की गयीं। यह एक अभूतपूर्व बात थी। विश्व में इससे पहले किसी हाथी का आधुनिक ढंग से आपरेशन नहीं किया गया था। डाक्टरों ने यह जरूर समझा कि आपरेशन से पहले 'मरीजा' की शारीरिक दशा सुधारी जाए। इसके लिए सुन्दरकली को भारी मात्रा में ग्लूकोज दिया गया। इसके अलावा उसकी खुराक का भी ख्याल रखा गया। उसकी कमजोरी को देखते हुए उसे काफी मात्रा में गन्ना, दस किलो गुड़ और पांच किलो देशी घी प्रति दिन दिया जाने लगा।

सुन्दरकली को आपरेशन के लिए आवश्यक स्थिति में लिटाने के लिए सेना से एक विशेष क्रेन मंगवायी गयी। फिर काफी मात्रा में गरम पानी में मैगनीशियम सल्फेट मिला कर तीन घंटे तक रगड़-रगड़ कर उसके शरीर को धोया गया। इससे सुन्दरकली के शरीर की सूजन बहुत कम हो गयी। फिर उसके शरीर में काफी मात्रा में ग्लूकोज चढ़ाया गया। फिर उसे २०० मिलीग्राम ट्रैंक्विलाइजर (उत्तेजना शांत करने की दवा) दिया गया।

इस चिकित्सा से सुन्दरकली को बहुत लाभ हुआ। उसका बुखार १०५ डिग्री फारेनहीट से उतर कर ९८ डिग्री हो गया, जो कि हाथी का सामान्य तापमान होता है।

अब एक बड़ी समस्या यह सामने आयी कि टूटी हुई टांग को सीधा कैसे किया जाए? टूटी हड्डी को यथास्थान जोड़ने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक था। इसके लिए सुन्दरकली की टूटी टांग में एक रस्सा बांधा गया और उसे एक मोटर गाड़ी के पीछे बांधकर गाड़ी को धीरे चलाया गया। इससे रस्से में बंधी 'मरीजा' की टांग धीरे-धीरे सीधी हो गयी। इससे पहले 'मरीजा' को आवश्यक स्थिति में लिटाने के लिए उसके शरीर को मोटे-मोटे रस्सों में बांधकर क्रेन की मदद ली गयी थी।

जब सब तैयारी पूरी हो गयी, तो डाक्टरों ने अपने-अपने औजार संभाल लिये और आपरेशन शुरू हो गया। इतनी बड़ी मरीजा का आपरेशन करना अपने-आप में एक अनोखा काम था। उसमें काफी समय लगा। हड्डी के टूटे दोनों टुकड़ों को जोड़कर उस स्थिति में रखना कोई मामूली काम न था। फिर जोड़ बहुत मजबूत करना भी जरूरी था, क्योंकि हाथी की टांगों को उसके भारी शरीर का बोझ संभालना पड़ता है। इसलिए जोड़ के एक फुट लंबे स्टेनलेस स्टील के छः विशेष कांटे मंगाये गये। उन कांटों से टूटी हड्डी के टुकड़ों को जोड़ने के लिए उनमें बिजली के बरमे से छेद किये गये। फिर उन छेदों में कांटे लगा कर हड्डी के दोनों ओर स्टेनलेस की पटिटयां वेल्डिंग करके जोड़ी गयीं। फिर उसे और मजबूत करने के लिए तरों से बांधा गया। यह सब करने के बाद टांग पर प्लास्टर कर दिया गया। और फिर उतने अधिक प्लास्टर को जल्दी से सुखाने के लिए हीटरों का इस्तेमाल किया गया।

इतना सारा काम करते-कराते काफी रात हो गयी। अन्त में विशेषज्ञों ने राय दी कि अब 'मरीजा' को आराम करने दिया जाए। सुबह होने पर इसकी हालत का जायजा लिया जाएगा और इसे अपने पैरों पर खड़ा करने की कोशिश की जाएगी।

फिर वह ऐतिहासिक सुबह आई। लोहे के ढांचे और क्रेन की मदद से कोई ५०० दर्शकों की भीड़ की भारी हर्षध्वनि के बीच सुन्दरकली को रस्सियों से बांधकर खड़ा किया गया। इसके पहले उसके बीमार पैर की डेढ़ घंटे तक मालिश की गयी थी ताकि उसमें खून दौड़ सके। खड़े होने की स्थिति में आकर सुन्दरकली ने अपने पैरों को सीधा करने और अपना संतुलन ठीक करने की कोशिश की। भीड़ने एक बार फिर तालियां बजायीं। पर सुन्दरकली की टांगें अधिक देर तक उसके शरीर के भारी बोझ को न संभाल सकीं। वह लड़खड़ाई और एकाएक ढेर हो गयी। डाक्टरों ने लपककर उसकी जांच की, तो चेहरा उतर गया। सुन्दरकली इतना भारी परिश्रम और कौशल व्यर्थ कर यह दुनिया छोड़ चुकी थी।

यह एक असामयिक मौत थी। ३२ साल की उम्र में जवानी, के आलम में सुन्दरकली अपने शुभेच्छु विशेषज्ञ की पूरी कोशिश के बावजूद दुनिया से कूच कर गयी। विशेषज्ञों का कहना है कि सुन्दरकली इतने मानसिक और शारीरिक दबावों को सह न सकी और गिरते ही उसकी हृदय-गति रुक गयी थी।

हाथी १०० साल तक जीते हैं। लेकिन एक छोटी-सी दुर्घटना ने सुंदरकली की जिंदगी को काट कर छोटा कर दिया था।

सुन्दरकली के महावत शहाबुद्दीन ने बताया कि सुन्दरकली सोनपुर के मेले से आयी थी। पहले भारत सरकार के परिवार-नियोजन मंत्रालय के अन्तर्गत रहकर इसने परिवार-नियोजन का प्रचार किया था और बाद में 'डाबर' कंपनी में रहकर आयुर्वेदिक दवाइयों का प्रचार किया था। सुन्दरकली बहुत समझदार थी और इसे जो कुछ सिखाया जाता वह आसानी से सीख जाती थी। लोगों को नमस्कार करना, पैरों को उठाकर करतब दिखाना आदि साधारण काम तो उसने बहुत आसानी से सीख लिये थे। इसके अलावा मेलों में वह प्रचार के लिए छपवाये गये पर्चे भी बांटती थी। उसके करतब देखने के लिए मेलों में लोगों की भीड़ लग जाती थी।

'डाबर' ने उसकी सजावट के लिए मखमल की एक बढ़िया झूल बनवायी थी, जिस पर जरी का काम किया गया था। ३००० रुपये की यह झूल पहनकर सुंदरकली बहुत जंचती थी। शादी-ब्याह के दिनों में सुन्दरकली की मांग बहुत बढ़ जाती थी। महावत ने बताया कि सुन्दरकली के किसी शादी में जाने के लिए 'डाबर' शुल्क न लेते थे। पर जो लोग सुन्दरकली को ले जाते वे बड़े प्यार से इसे खिलाते-पिलाते थे। २६ जनवरी और १५ अगस्त के राष्ट्रीय त्योहारों पर भी सुन्दरकली जुलूस की शोभा बढ़ाती थी।

सुन्दरकली बहुत सीधे स्वभाव की थी। बच्चे उसे बहुत चाहते थे। कई बार शरारत में बच्चे उसे परेशान भी करते थे, पर वह कभी चिढ़ती न थी। उसने कभी किसी बच्चे को चोट नहीं पहुंचायी।

हथिनी के मालिक 'डाबर' के निदेशक श्री विवेक बर्मन ने भारत सरकार के परिवार-नियोजन विभाग से सुन्दरकली के उनके यहां आने की कहानी इस तरह सुनायी—"परिवार-नियोजन विभाग के तत्कालीन अधिकारी श्री त्यागी के देहांत के बाद सुन्दरकली अनाथ हो गयी। कोई उसकी देख-भाल करने या उसका खर्च उठाने को तैयार न था। तब हमने सोचा कि इतनी सुंदर सुन्दरकली को क्यों न हमीं पाल लें। उस समय हमारे मन में सुन्दरकली का पालन-पोषण करने का ही भाव अधिक था। उसका अपने प्रचार के लिए उपयोग करने की बात बाद में दिमाग में आयी। अनुभव से ही हमें पता चला कि सुन्दरकली का प्रचार के लिए उपयोग किया जा सकता है। हमारी आयुर्वेदिक औषधियों के प्रचार के लिए सुन्दरकली बहुत ही अच्छा और मनोरंजक साधन सिद्ध हुई। इसके अलावा सुन्दरकली का एक सामाजिक महत्व भी था। हमारे इष्ट-मित्रों तथा अन्य परिचित लोगों के यहां शादी-विवाह आदि के अवसर पर भी वह जाती थी। इससे उनके यहां शोभा होती और वे बहुत खुश होते हमें भी इस बात की खुशी होती कि हमारी सुन्दरकली की कितनी मांग है। हमारे अपने परिवार में भी यह बहुत प्रिय थी। बच्चों के जन्म-दिन पर यह हमेशा घर आती। बच्चे इसे देखकर बहुत खुश होते। वह इस पर सवारी करते और इसे कुछ न कुछ खिलाते-पिलाते।

सुंदरकली को इतने भगीरथ प्रयत्नों के बावजूद बचाया न जा सका। पर उसकी स्मृति को जीवित रखने का उपाय किया गया है। 'डाबर' ने उसकी खाल प्राकृतिक संग्रहालय को भेंट कर दी है, जहां उसकी 'ममी' बनायी जाएगी, ताकि दर्शक उसे देख सकें।

●


पोंड्स वैनिशिंग क्रीम
आपके रूप-रंग के ज़्यादा निखार और
निर्मल सौन्दर्य के लिये
जी चाहे
फ़ेस पाउडर के
साथ प्रयोग करें
(एक आदर्श पाउडर बेस जैसा)
या वैसे ही...
(एक स्वयं-सम्पूर्ण मेक-अप् जैसा)
पोंड्स वैनिशिंग क्रीम एक आदर्श पाउडर बेस है—इसके प्रयोग से चेहरे पर पाउडर सरलता और समानता से लगेगा और आपका मेक-अप घंटों... पहरों तक बना रहेगा। यह एक स्वयं-सम्पूर्ण मेक-अप् भी है ताकि आप इसे वैसे ही प्रयोग कर सकें। सारे दिन आपकी त्वचा की नमी सुरक्षित रहेगी और आपका मुखड़ा मोती की तरह चमकता रहेगा।
आपका रूप-रंग, आपका सौन्दर्य...और उज्ज्वल बना रहे!
PONDS
VANISHING CREAM
CP 1500
पोंड्स वैनिशिंग क्रीम
आपके दिन भर के सौन्दर्य का रहस्य
Pond's

—जहरीले खत—

(पृष्ठ ६७ से आगे)

पुलिस ने डाक्टर की रिपोर्ट दर्ज की और जांच-अधिकारी रामदास के घर पूछ-ताछ करने गये। वहां उन्होंने शान्ता के कमरे की जांच भी की। लेकिन वहां कोई सन्देहास्पद चीज नहीं मिली।

शान्ता की लाश पोस्टमार्टम के लिए भेज दी गयी। पोस्टमार्टम हो जाने के बाद शान्ता की लाश अन्तिम संस्कार के लिए रामदास को सौंप दी गयी। अन्तिम संस्कार हो जाने के बाद शान्ता के पिता को उसकी मृत्यु की खबर कर दी गयी।

शान्ता के पिता और चाचा वहां पहुंचे और रामदास या उसके पिता से कोई बात न कर सीधे पुलिस थाने पहुंचे। वहां महादेव ने थाना प्रभारी को बताया कि रामदास ने धमकी दी थी कि वे शान्ता को ले जाएंगे, तो वह उसे मार डालेगा। इस सूचना के आधार पर थाना प्रभारी ने फिर पूछ-ताछ शुरू की। मोहल्ले के एक आदमी से ज्ञात हुआ कि कुछ दिन पहले रामदास ने चूहों के मारने की दवा 'पार्थियन' लाखोड़ा से खरीदी थी। थाना प्रभारी ने लाखोड़ा से पूछ-ताछ की, तो उसने बताया कि उसने एक चम्मच चूहों को मारनेवाली दवा रामदास को दी थी।

इसके बाद लाखोड़ा को अपने साथ लेकर जांच-अधिकारी रामदास के यहां पहुंचे। लाखोड़ा को देखते ही रामदास का चेहरा फक हो गया। जांच-अधिकारी ने उससे पूछा, "वह दवा कहां है? मुझे दिखाओ! वर्ना मैं अभी तुम्हें बंद कर दूंगा।"

रामदास ने जमीन खोदकर एक डिबिया निकालकर जांच-अधिकारी को दी। डिबिया खाली देखकर जांच-अधिकारी ने पूछा, "वह दवा क्या हुई?"

रामदास की घिग्घी बंध गयी। वह कोई जवाब न दे सका।

तब जांच-अधिकारी ने रामदास को थाने भेजा और उसके घर की तलाशी ली। आंगन के कोने में एक गन्दा कपड़ा देखकर उन्होंने रामदास के पिता से पूछा, "यह कैसा कपड़ा है?"

रामदास के पिता ने बताया, "शान्ता ने अस्पताल जाने के पहले कै की थी। उसे इसी कपड़े से पोंछा गया था।"

जांच-अधिकारी ने उस चीथड़े को जब्त किया और उसे तुरन्त जांच के लिए विशेषज्ञ के पास भेज दिया।

पूछ-ताछ से यह भी मालूम हुआ कि जिस समय शान्ता की तबीयत खराब हुई थी, घर में केवल शान्ता और रामदास थे। रामदास के पिता ने यह बताया कि जब से शान्ता की बदचलनी के बारे में मालूम हुआ था, रामदास शान्ता और उसके बाप को बहुत गालियां देता था और शान्ता को मारता भी था।

पोस्टमार्टम की रिपोर्ट से मालूम हुआ कि शान्ता की अंतड़ियों में 'पार्थियन' के कण मिले थे। उसकी मौत उसी विष से हुई थी।

तब तक विशेषज्ञ की रिपोर्ट आ गयी। उसमें लिखा गया था कि कै में 'पार्थियन' के कण पाये गये।

कार्यवाही पूरी कर जांच-अधिकारी ने रामदास के विरुद्ध आरोप-पत्र अदालत में पेश कर दिया। उस पर ताजीरात हिन्द की दफा ३०२ के अन्तर्गत शान्ता की हत्या का आरोप लगाया गया।

अदालत में रामदास ने अपने को निर्दोष बताया। उसका कहना था कि उसे केवल सन्देह में फंसाया गया है। उसने अपनी पत्नी की हत्या नहीं की थी। हो सकता है कि शान्ता ने स्वयं विष खा लिया होगा।

मामला सेशन कोर्ट में पहुंचा और काफी दिनों तक चलता रहा। अन्त में सेशन जज महोदय ने सन्देह का लाभ देकर रामदास को बरी कर दिया।

सेशन जज के फैसले के विरुद्ध महाराष्ट्र सरकार ने बम्बई हाईकोर्ट में अपील की।

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बहसें सुनने के बाद सेशन जज के फैसले से सहमत न हुए। उनका मत था कि शान्ता की मौत 'पैरा-थियन' नामक जहर से हुई, यह एकदम सिद्ध है। यह जहर रामदास ने शान्ता की मौत के दस दिन पहले ही प्राप्त कर लिया था। उस दिन मौका पाकर रामदास ने जबर्दस्ती शान्ता को वह जहर खिला दिया होगा। परिस्थितियों से भी साफ पता चलता है कि रामदास ने ही उसकी हत्या की है।

उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों ने २८ जुलाई, १९७५ को फैसला सुनाते हुए रामदास को शान्ता को जहर देकर मार डालने के अपराध के लिए आजीवन कारावास की सजा दी।

१९७६ में रामदास ने इस फैसले के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय में अपील की। सुप्रीम कोर्ट के माननीय न्यायाधीशों, श्री पी० एन० भगवती, तथा श्री मुर्तजा फजल अली की अदालत में मामले की सुनवायी हुई।

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों ने दोनों अदालतों के फैसलों और दोनों पक्षों की गवाहियों और बहसों पर विचार किया और इस निर्णय पर पहुंचे कि उच्च न्यायालय ने इस मामले पर उचित ढंग से विचार नहीं किया। जहां परिस्थितियों के कारण दो समान निष्कर्षों की गुंजाइश हो, वहां अदालत को वादी के पक्ष में न जाकर प्रतिवादी अभियुक्त का पक्ष लेना चाहिए।

परिस्थितियों पर विचार करते हुए सबसे पहले सर्वोच्च न्यायालय ने हत्या के उद्देश्य पर विचार किया। इस्तगासे के अनुसार अगस्त, १९७२ में रामदास के हाथ में शान्ता के पत्र पड़े, जिन्हें पढ़कर उसको शान्ता के चरित्र पर शक हुआ। फलस्वरूप उसने दो कार्ड अपने चचिया ससुर को लिखे। रामदास तथा उसके पिता के पत्रों में लिखा गया था कि वे आकर शान्ता को ले जाएं। वर्ना वे उसे घर से निकाल देंगे। इससे अधिक उन पत्रों में कुछ नहीं है। उन पत्रों से शान्ता की हत्या करने की कोई बात नहीं लिखी है।

हाईकोर्ट ने महादेव के बयान पर बल दिया था। रामदास ने महादेव से शान्ता को मार डालने की बात कही थी। लेकिन महादेव ने अपने बयान में यह भी कहा है कि रामदास ने क्रोध में आकर ही यह बात धमकी के रूप में कही थी। महादेव का यह भी कहना है कि उसने शान्ता की हत्या करने की धमकी वाली बात अपने भाई विश्वनाथ को भी लिखी थी। मगर विश्वनाथ ने तो पुलिस के सामने अपने दिये गये बयान में यह बात नहीं कही है। उलटे विश्वनाथ ने जिरह के दौरान यह स्वीकार किया है कि उसे अपने भाई महादेव से जो खत मिला था, उसमें कहीं भी रामदास की शान्ता की हत्या कर देने की धमकी का जिक्र नहीं था। विश्वनाथ ने यह भी कहा है कि उसने वह खत पुलिस को दे दिया था। लेकिन पुलिस ने बचाव-पक्ष के वकील के मांग करने पर भी वह खत अदालत में पेश नहीं किया। पत्र में हत्या करने की धमकी की बात हो, या न हो, उसे अदालत में जरूर पेश करना चाहिए था। उसे पेश न करने से यही लगता है उसमें हत्या की धमकी की बात न लिखी होगी। इन कारणों से उच्च न्यायालय का महादेव के बयान पर विश्वास करना उचित नहीं लगता।

अभियोग-पक्ष का दूसरा महत्वपूर्ण साक्ष्य जहर प्राप्त करने के बारे में है। उसका कहना है कि रामदास ने ८-१० दिन पहले ही लाखोड़ा से इस खयाल से 'पार्थियन' नामक जहर लिया था कि मौका पाते ही वह उसे खिलाकर शान्ता को मार डालेगा। यह सच है कि रामदास ने लाखोड़ा से जहर लिया। किन्तु इसी से यह तो नहीं कहा जा सकता कि रामदास ने शान्ता को वह जहर खिलाकर मार डाला था। अभियुक्त अचलपुर के नामदारगंज मोहल्ले में रहता है। गवाहों ने यह स्वीकार किया है कि वहां घरों में चूहों का भयंकर उपद्रव है। इसलिए यह हो सकता है कि रामदास ने चूहों को मारने के लिए ही दवा ली हो।

हाईकोर्ट ने जांच-अधिकारी नारायणराव के बयान पर भी जोर दिया है। नारायणराव का कहना है रामदास के घर में चूहों का कोई बिल दिखायी नहीं दिया था। पर यह कोई जरूरी नहीं कि चूहे केवल बिलों में ही रहें। पक्के घरों में बिल नहीं होने पर भी चूहे रहते हैं। लाखोड़ा का कहना है कि उसने कई बार 'पाथियन' देने से इनकार किया था। पर जब रामदास ने चूहों का उपद्रव बहुत बढ़ जाने की बात कही थी, तो उसने उसे दे दिया था। इस कारण केवल चूहों का विष लेने के आधार पर रामदास को दोषी ठहराना उचित नहीं है।

उच्च न्यायालय का कहना था कि रामदास अपनी पत्नी शान्ता को तत्काल अस्पताल ले गया, क्योंकि वह अपने अपराध को छिपाना चाहता था। सर्वोच्च न्यायालय का मत इससे भिन्न था। उसका कहना यह था कि यदि रामदास ने अपनी पत्नी को विष दिया होता, तो वह उसे हर्गिज अस्पताल न ले जाता, क्योंकि अस्पताल में अगर शान्ता ठीक हो जाती, या उसके खिलाफ बयान दे देती, तो वह एकदम फंस सकता था। इसलिए उसका अपनी पत्नी को अस्पताल ले जाना उसकी निर्दोषिता ही सिद्ध करता है। इस स्थिति में यह सोचना गलत नहीं लगता कि जैसे ही रामदास को पता लगा कि उसकी पत्नी ने जहर खा लिया था, वह उसे अस्पताल ले गया, ताकि वह बच सके।

अभियुक्त के विरुद्ध उच्च न्यायालय का यह तर्क भी था कि उसने शान्ता के मरने की खबर अपने ससुर को नहीं दी। इससे लगता है कि वह अपराध पर पर्दा डालना चाहता था। पर बात तो यह है कि उसका ससुर बहुत दूर दिल्ली में रहता था। अन्तिम संस्कार के लिए उसके आने का इन्तजार नहीं किया जा सकता था। इस कारण उसने उन्हें तुरन्त खबर नहीं दी।

हाईकोर्ट ने उस छड़ी की बात का भी जिक्र किया है, जिससे १२ सितंबर, १९७२ को रामदास ने शान्ता पर प्रहार किया था। किन्तु छड़ी पर कोई खून का दाग नहीं मिला। मृतक शान्ता के शरीर पर प्रहार के हलके निशान जरूर थे, लेकिन इससे यही जाहिर होता है कि रामदास ने शान्ता को छड़ी से मारा जरूर था, पर वे चोटें प्राण-घातक न थीं। उच्च न्यायालय का यह भी कहना था कि रामदास ने छड़ी से मार कर शान्ता को जबर्दस्ती विष खिलाया था। पर इस बात का कोई प्रमाण या गवाह नहीं है।

परिस्थितियों से लगता है कि शान्ता के खुद जहर खा लेने की सम्भावना अधिक है। उसका पति रामदास उसे उसके पिता के घर भेज देना चाहता था। वह उसके चरित्र पर सन्देह करता था और उसे छोड़ देना चाहता था। छोटेलाल से शान्ता के सम्बन्ध की बात उसने उसके रिश्तेदारों में प्रचारित कर दी थी। उसे मारता-पीटता भी था। शान्ता ने अपने पति को खो दिया था, इज्जत खो दी थी, वह दुनिया में मुंह दिखाने के काबिल नहीं रह गयी थी। इन्हीं वजहों से उसने जहर खा कर जान दे देने की बात सोची होगी।

हाई कोर्ट ने चिथड़े में वमन के दाग और उसमें जहर का अंश मिलने की बात को भी बहुत महत्व दिया था। सर्वोच्च न्यायालय का इस पर भिन्न मत था। वह चिथड़ा २१ सितम्बर १९७२ को बरामद किया गया था। क्या इस बीच रामदास उस चिथड़े को जला न सकता था। उसके मन में कोई खोट या डर होता, तो वह उस चीथड़े को इतने दिन अपने घर में पड़े न रहने देता।

सर्वोच्च न्यायालय का यह भी कथन था कि यदि अभियुक्त ने शान्ता को जबर्दस्ती जहर देने की कोशिश की होती, तो उसकी देह पर संघर्ष के निशान पाये जाते। पर उसकी लाश पर केवल छड़ी से प्रहार के चिन्ह पाये गये। फिर शान्ता जबर्दस्ती जहर दिये जाने पर जरूर चिल्लाती। पर ऐसा उसने न किया! उसकी चीख या पुकार किसी पड़ोसी ने न सुनी। शान्ता का खामोश रहना साबित करता है कि रामदास ने उसे जहर नहीं दिया था, बल्कि शान्ता ने ही आत्महत्या करने के लिए जहर खा लिया था।

उच्च न्यायालय के अनुसार इसका कोई प्रमाण नहीं था कि रामदास ने लाखोड़ा से लिये गये जहर का इस्तेमाल चूहों को मारने के लिए किया था। उसने वह जहर अपनी बीवी को मारने के लिए ही लिया था और उसने वह काम पूरा भी कर दिखाया था। सर्वोच्च न्यायालय के मत से उच्च न्यायालय का यह तर्क केवल कल्पना पर आधारित था।

उच्च न्यायालय ने इस बात पर भी जोर दिया था कि रामदास ने जहर की खाली डिबिया जमीन के अन्दर गाड़कर छिपा दी थी, क्योंकि उसे डर था कि पुलिस उसे बरामद कर लेगी, तो वह फंस जाएगा। इसके बारे में सर्वोच्च न्यायालय का मत था कि जब पुलिस शान्ता की मृत्यु की जांच करने लगी, तो अभियुक्त का डर जाना स्वाभाविक ही था। बहुत सम्भव है कि हत्या के अपराध में पकड़ लिये जाने के डर से रामदास ने वह डिब्बी जमीन के अन्दर छिपा दी हो। इसलिए छिपाने की बात कोई खास महत्व नहीं रखती। वह चाहता, तो वह उसे कहीं बाहर फेंक भी सकता था।

इन सब बातों के आधार पर सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों ने १४ फरवरी, १९७७ को इस रहस्य-भरे मामले का फैसला सुना दिया। उन्होंने रामदास को हत्या के अपराध से मुक्त कर दिया।

●


ज़िन्दगी की सुहानी चीज़ों की तरह
हमेशा ताज़ा, हमेशा सजीव
पॉण्ड्स ड्रीमफ़्लावर टाल्क
जिसकी सुगंध आपको
हमेशा से
पसन्द है
Pond's
Dreamflower talc
Pond's
CP-1543



टाइमस्टार
३५ सुंदर तरीक़े
समय बताने के... सही सही !

OBM/7263. HN

देवियो और सज्जनो, हम पेश करते हैं··· **टाइमस्टार** अनोखी शानदार कारीगरी वाले ३५ माडलों में.

स्टेनलेस स्टील में स्टाइल किए हुए, या क्रोम में, या रोल्ड गोल्ड, मनभावन सफ़ेद काले या हल्के गुलाबी डायल, पतली लुभावनी लीजिए या आजकल चलने वाली भारी.

हर **टाइमस्टार** समय की पूरीपूरी पाबंद है. इसके ९५% पुर्ज़े हाई प्रिसीज़न आटोमैटिक स्विस मशीनों द्वारा अपने देश में निर्मित किए जाते हैं.

भारत और विदेश में प्रशिक्षित कुशल तकनीशियन उत्पादन की देखरेख और इसका नियंत्रण करते हैं.

और आपकी **टाइमस्टार** पर पूरे एक साल की गारण्टी—निर्माण-दोषों के विरुद्ध.

बिक्री-बाद-सेवा और असली पुर्ज़ों के लिए आप **टाइमस्टार** के ५० सेवाकेंद्रों या पूरे देश में २००० डीलरों पर भरोसा कर सकते हैं.

आंखें बंद कर **टाइमस्टार** चुनिए—इसे शान से पहनिए.

TIMESTAR

टाइमस्टार: भारत की शानदार घड़ियां

इन्डो-फ्रेन्च टाइम इन्डस्ट्रीज लिमिटेड १२, उद्योगनगर, एस.वी. रोड, गोरेगांव (पश्चिम) बम्बई-४०० ०६२.

—हँसुआ और हँसुली—

(पृष्ठ ५३ से आगे)

यह सुनकर शिवराम को सन्देह हुआ कि मनराजी राममूरत के कारण ही कलकत्ता जाना नहीं चाहती। अब शिवराम गांव में ही किसी प्रकार गृहस्थी की स्थिति संभालने की कोशिश करने लगा। मछली मारकर अधिक आय नहीं की जा सकती थी। लोगों की राय से उसे बैलों के खरीद-फरोख्त का व्यवसाय ठीक लगा। इसके लिए दो-ढाई हजार रुपयों की जरूरत थी। शिवराम के पास उस समय नौ थान गहने और डेढ़ हजार रुपये की पूंजी थी, जिसे उसने मनराजी को दे रखा था। उसने मनराजी से मांगा तो मनराजी ने सोचा कि उसका आदमी गहने गिरवी रखकर किसी से रुपये लेगा और फिर उन्हें छुड़ाना मुश्किल होगा। औसत भारतीय स्त्री गहने पर जान देती है। मनराजी ने साफ इनकार कर दिया। तब शिवराम और मनराजी में रोज लड़ाई होने लगी। गुस्से में शिवराम मनराजी को दो हाथ भी जड़ देता। पहला हाथ पड़ते ही मनराजी इस प्रकार लस्त होकर गिर पड़ती और बिलखने लगती, जैसे उसे जान से मारा जा रहा हो। कई दिन के लड़ाई-झगड़े के बाद पंच लोग शिवराम को समझाने लगे। उन लोगों ने मनराजी को भी समझाया। पंचों ने फैसला दिया कि जब शिवराम ने गहने मनराजी को दिये थे, तो उसे मनराजी से मांगना नहीं चाहिए। गहने पर मनराजी का ही हक है। हां, मनराजी को रुपये शिवराम को दे देना चाहिए।

डेढ़ हजार रुपये से उसने बैलों को खरीदने और फरोख्त करने का धन्धा शुरू कर दिया। पहली खेप में उसे दो सौ रुपयों का लाभ हुआ। दूसरी बार में एक बैल बीमार होकर मर गया और उसे घाटा लगा। तीसरी बार भी उसे घाटा लगा। शिवराम की लेई-पूंजी तीन ही सौदों में आधी हो गई। फिर चौथी बार बैल लाने की उसकी हिम्मत न पड़ी। तब मनराजी ने ताना मारा, धन्धा कोई नाव नहीं है कि चार डांड जल्दी-जल्दी मारकर किनारे पहुंचा दोगे। व्यापार में लाभ-हानि दोनों होता है। बगैर जाने-बूझे काम करोगे, तो नुकसान ही उठाओगे। अब जो पैसा हाथ में है, उससे भागीरथी का गौना कर दो। नहीं तो वह भी हाथ से निकल जाएगा, तो लड़की का उद्धार कैसे करोगे?"

आहत मन से शिवराम किसी तरह घाटा पूरा करने का प्रयास करना चाहता था। किन्तु मनराजी की जिद ने उसके मंसूबों पर पानी फेर दिया। इसका अर्थ टेंट के पैसे गौने में खर्च कर पैसे-पैसे के लिए मोहताज हो जाना। पैसा इतना कम हो गया था कि बैल का व्यापार अब हो नहीं सकता था। पैसे की कमी के कारण शिवराम परेशान था। किन्तु यह देखकर उसका दिल दो टूक हो जाता था कि मां-बेटी की दिन-चर्या पर उसका कोई असर न था। वे वैसे ही निश्चिन्त भाव से राममूरत से गपशप करतीं और खाती-पीती रहती थीं। शिवराम से वे आप होकर कुछ नहीं कहती थीं।

शिवराम ने एक बार मनराजी से गहने मांगे, ताकि वह फिर धन्धा शुरू करे। लेकिन मनराजी ने फिर एकदम इनकार कर दिया और फैसला दिया कि रोजगार उसके बस का रोग नहीं है। इस पर शिवराम ने कहा कि गांव में अब कुछ रहा नहीं, क्यों न वे आसाम चलें। वहां मकान भी मिल जायगा और काम भी। वहां जल्दी काम मिलने की गुंजाइश है। इस पर मनराजी ने पूछा, "भागीरथी को अपने साथ कैसे ले जाओगे? गौने के लिए क्या फिर उसे यहां ले आओगे?"

शिवराम ने उत्तर दिया, "जरा शांति से सोचो। लड़की के दूसरे विवाह में क्या मुश्किल होगी? वहीं कोई दूसरा लड़का देखेंगे और लड़की का विवाह कर देंगे। वहां आराम से कमाएंगे और मजे से रहेंगे।"

लेकिन मनराजी ने दृढ़ता से इनकार कर दिया। इसके बाद वह जोर देकर जल्दी भागीरथी का गौना करा देने की जिद करने लगी। गांव के चार लोगों से भी वह लड़की के गौने के लिए शिवराम को कहलाने लगी। तब शिवराम के मन में यह बात बिजली की तरह कौंधी कि कहीं भागीरथी को उसके ससुराल भेजकर वह खुद राममूरत के साथ मौज न करना चाहती हो। परन्तु शिवराम कह क्या सकता था? वह कुढ़ता रहा।

भागीरथी की शादी का एक साल बीत चुका था। सबके अनुरोध पर शिवराम को उसके गौने की तैयारी करनी पड़ी। उसने निश्चय कर लिया कि गौना होते ही वह मनराजी को लेकर आसाम चला जायेगा। गौने की तैयारी में ही पास के रुपये चुक गये। गौने के समय पैसों की कमी पड़ गयी। शिवराम ने फिर गहने मांगे, तो मनराजी ने फिर आंखें तरेरकर साफ इनकार कर दिया। काम-काज के घर में वह लड़ाई-झगड़ा कैसे करता? जमीन गिरवी रखकर उसे फिर काम चलाना पड़ा।

भागीरथी का गौना हो गया।

गौने के बाद शिवराम ने मनराजी से आसाम चलने के लिए तैयारी करने को कहा, तो मनराजी ने जवाब दिया, "तुम चाहे जहां जाकर मरो! मैं अपना घर-बार छोड़कर अब कहीं नहीं जाऊंगी!" कहकर वह आंसू ढुरकाकर रोने लगी।

शिवराम को जैसे सांप सूंघ गया। जिस घर को उसने पन्द्रह साल तक हुगली नदी में नावों में मशक्कत करके बनाया था, वही मनराजी का अपना घर हो गया और शिवराम इतना पराया हो गया कि वह चाहे मरे या जीये मनराजी को कोई मतलब नहीं। उसे लगा कि मनराजी राममूरत को छोड़कर जाना नहीं चाहती। शिवराम गुस्से से बोला, "ठीक है, इस घर की तुम मालकिन हो, रहो। मगर मैं जाने के पहले सारे कर्ज चुका देना चाहता हूं। मेरे राह खर्च के लिए भी रुपये चाहिए। तुम मुझे गहने दे दो। मैं सब ले-देकर फिर तुम्हें मुंह भी नहीं दिखाऊंगा!"

मनराजी ने अंगूठा दिखाकर कहा, "गहने तुम बार-बार क्यों मांगते हो? मैं उन्हें नहीं दूंगी! नहीं दूंगी!"

कातर शिवराम बोला, "मनराजी, अब कोई उधार भी न देगा। परदेस में कमाकर मैं रुपये भेजूंगा। तुम फिर गहने बनवा लेना।"

मनराजी ने तब उसके सामने से हटते हुए कहा, "मैं गहने नहीं दूंगी! तुम्हें जो करते बने करो!"

शिवराम को यह बर्दाश्त न हुआ। उसने तड़ातड़ दो हाथ लगा दिये। मार खाते ही मनराजी रोने लगी, तो पड़ोसी जुट आये। सबने शिवराम को समझाकर अलग किया।

शिवराम खून का घूंट पीकर रह गया।

चार दिन बाद दुखनाथ गया और अपनी बहन भागीरथी को ससुराल से लिवा आया। पहली बार लड़की ससुराल में ज्यादा छोड़ना ठीक न समझा गया।

कई दिन तक घर में बड़ी चहल-पहल रही। भागीरथी उत्साह से अपनी ससुराल की बातें बतला रही थी। मनराजी सबसे उत्साह से वही बातें कहती फिरती थी। कई दिन से खर्चे से शिवराम परेशान था। गांव की जमीन में आधी गिरवी थी। नकद पैसे चुक गये थे। अब इसके सिवाय कोई चारा न था कि शिवराम आसाम जाकर दो पैसे कमाये। किराये और खर्च के लिए भी कोई एक दमड़ी देनेवाला न था। एक ही उपाय बच रहा था कि शिवराम को कुछ गहने मिल जाएं।

शिवराम ने फिर मनराजी से गहनों के बारे में कहा, तो मनराजी ने उसे कोई जवाब न दिया और वह राममूरत के पास जाकर बतियाने लगी। इस प्रकार मनराजी के अनसुनी कर देने से शिवराम तिलमिला उठा। सांझ होते ही शिवराम ने मनराजी से सख्त होकर फिर गहने मांगे, तो मनराजी ने फिर इनकार कर दिया। इस पर शिवराम ने उसे फिर पीटा। वह रोती हुई बाहर निकल गयी।

रोज-रोज के उन दोनों के झगड़े से लोग तंग आ गये थे। उस समय कोई बीच-बचाव करने नहीं आया। गुस्से में शिवराम ने कमरे की कच्ची जमीन कई जगह से खोदी कि कहीं जेवर गड़े न पड़े हों। परन्तु कहीं कुछ न मिला। खोदते-खोदते शिवराम हैरान हो गया मगर कहीं भी गहनों का सुराग न मिला। उसने मनराजी से फिर पूछा, तो उठकर वह अपनी जिठानी के यहां चल दी। भागीरथी से पूछा, वह भी मुकर गई।

शिवराम को अब पक्का विश्वास हो गया कि गहने घर से हटा दिये हैं। उसने सब जगह तलाशी ले ली थी। उसे लगा कि मनराजी ने कहीं गहने अपने



"इतने खिलौने रहते यह सिर्फ इसी को लेकर खेलता रहता है। डर लगता है। संजय के भी यही लक्षण थे!"



"हम बच्चों के लिए था... कॉट्सवूल का इस्तेमाल
गठीले हठीले छोटे नवाब
बसकीली नीली शर्ट में बाजी
मार गए. शर्ट में मेल खाती
पैंट, कफ़ और पॉकेट.
अब बड़ों को भी आ गया इसका ख़्याल!"
जानेमन, तुम्हारी मुस्कराहट
खिलाए कई कई छवियों में ये
पीला रंग। मिडी-लंबाई वाली
पूरे निखार की स्कर्ट कमर से
लगे खूबसूरत टॉप के साथ,
जिसके नीचे लहराती झालर.
फूलों में फूली न समाती
बहारों में बहा ले जाती स्कर्ट
और ऊपर ये झालरदार
अंगोला शाल···उस पर भी
टंके फूल···देखने वाले बेहाल.
सजधज की शानदार
चेक! बढ़िया लाल और
पीली टार्टान शर्ट, बेल्ट
लगी. साइड से कटी कटी
बिन्नी
कॉट्सवूल
रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क
ऊन की गर्मी समेटे
सूत की कोमलता
मुफ़्त!
कोट्सवूल में सर्दियों के फैशन शान और सजधज से आपको गर्माए।
मुफ्त डिजाइन फोल्डर के लिए लिखिए :
"विंटर फैशन्स", बिन्नी लि. पो. बा. २३०१,
अग्रहारम रोड, बंगलोर ५६० ०२३.
OBM 3664 2 HIN

चहेते राममूरत को न दे दिये हों। उसने इसके बारे में मनराजी से पूछा, तो वह घायल शेरनी की तरह हमला करने पर आमादा हो गयी।

शिवराम ने उसे नरमी से समझाना चाहा, तो वह गाली बकने लगी।

दूसरे दिन शिवराम ने सीधे राममूरत से गहनों की बाबत दरियाफ्त किया, तो उसने न केवल इनकार कर दिया, बल्कि वह शिवराम से उलझ गया और मनराजी भी उसकी मदद में आ गयी। इस आक्रमण से शिवराम सहम गया। वह पूरी स्थिति पर फिर से सोचने लगा। कई दिन तक वह टोह लेता रहा, मगर गहनों का कुछ पता नहीं चला।

शाम का वक्त था। शिवराम खेत से काम करके लौटा। गर्मी आरम्भ हो गई थी। थका शिवराम घर के दरवाजे पर आया तो घर के अन्दर का दृश्य देखकर वह सन्न रह गया। मनराजी और राममूरत एक ही चारपाई पर सटकर बैठे थे और भागीरथी पास में बैठी गुड़ का शर्बत बना रही थी। मनराजी और राममूरत की आंखें शर्बती होकर एक दूसरे को निहार रही थीं। शिवराम के तन-बदन में आग लग गयी। मालूम होता था कि साला राममूरत अपने खेत से सीधे वहां आया था। जब पराया घर ही अपना है, तो वह अपने घर क्यों जाता?

शिवराम घर में घुस गया। मुस्कुराती भागीरथी और हंसती मनराजी चुप हो गयीं। राममूरत ने कहा, "लाओ, लाओ, थोड़ा-सा शरबत भइया को भी दे दो।" राममूरत ऐसे बोल रहा था, जैसे अपनी कमाई से मेहमानी कर रहा हो।

शिवराम ने सख्त होकर कहा, "तुम अपने घर जाओ!"

इस पर मनराजी ने कहा, "यह तुम्हारा छोटा भाई है, यह उसका घर नहीं है क्या?"

जीते जुआड़ी की तरह राममूरत हंसकर बोला, "जब तुम मेरे भइया हो, तो यह घर भी मेरा ही है।"

शिवराम के तन-मन में आग लग गयी। उसने बांह पकड़कर झटके से राममूरत को उठा दिया और बाहर करते हुए कहा, "यहां तुम्हारा कोई नहीं है! फिर कभी यहां मत आना!"

आग्नेय नेत्रों से घूरती हुई मनराजी और भागीरथी राममूरत को छुड़ाने के लिए आगे बढ़ीं। लेकिन बाहर होते ही राममूरत खुद नहीं रुका। हें-हें करता हुआ वह चला गया।

शिवराम भी बाहर ही चुपचाप बैठ गया। भीतर भागीरथी और मनराजी फुस-फुस कुछ बतिया रही थीं। फिर वे कुछ करने लगीं।

कोई एक घंटा बीत गया। शिवराम भीतर घुसा, तो भागीरथी उठी और ढिबरी जलाने लगी। शिवराम ने कड़े शब्दों से पूछा, "गहने कहां हैं, बतला दो। अब तुम लोग यहां राज करना। मैं चला जाऊंगा। मैं फिर कभी यहां नहीं आऊंगा।"

मनराजी ने मुंह फेरकर कहा, "तुम्हारा तो घर-दुआर है। तुम राज करो। हमी लोग चले जाएंगे।"

शिवराम ने पूछा, "गहने कहां हैं, बतलाओ! वर्ना मुझसे बुरा कोई न होगा।"

मनराजी फिर साफ मुकर गई तो दोनों में देर तक लड़ाई-झगड़ा होता रहा।

गहनों का भेद न मिलने से शिवराम निराश हो गया। अचानक उसकी निगाह मनराजी के गले में पड़ी चांदी की हंसुली पर जा पड़ी, जो ढिबरी की मंद रोशनी में चमक रही थी। शिवराम ने लपककर हंसुली पकड़ ली और कहा, "यही मुझे दे दो!"

घायल सिंहनी की तरह गुर्राती हुई मनराजी ने अपने बलिष्ठ हाथ के एक झटके से अपनी हंसुली छुड़ा ली और दांत पीसती हुई बोली, "निर्लज्ज! तू मेरे तन का भी गहना ले लेगा?"

शिवराम क्षुब्ध होकर मनराजी पर टूट पड़ा। उसने मनराजी पर लात-घूंसा बरसाना शुरू किया। पहले तो मनराजी मार खाती रही, लेकिन फिर वह भी प्रतिघात करने लगी। अब दोनों एक-दूसरे पर हाथ-पैर चलाने लगे। इसी धमा-चौकड़ी में ढिबरी गिरी और बुझ गयी। भागीरथी कमरे के बाहर चली गयी। लड़ने की आवाज बाहर जा रही थी, मगर कोई छुड़ाने न आया, क्योंकि सभी जानते थे कि शिवराम और उसकी मेहरिया में अक्सर गहने को लेकर रार मची रहती है। एक-दो बार भागीरथी ने उन्हें छुड़ाने की कोशिश की। मगर वर्षों से एक दूसरे के प्रति उन दोनों के मन में जो घृणा संचित हो रही थी, आज वह कुछ कर गुजरने पर आमादा हो गयी थी।

जाने कितनी देर तक वे दोनों जूझते रहे। फिर मनराजी को जमीन पर पटककर शिवराम ने उसे कूटना शुरू किया, तो मनराजी दोनों हाथों से शिवराम की जांघ पकड़कर दांत काटने को हुई। शिवराम कूदकर पीछे हटा। तब मनराजी लपकी और उसने कोने में पड़ा हुआ हंसुआ उठा लिया।

मनराजी अब एक हाथ में हंसुआ उठाये घात करने के लिए चण्डी की तरह शिवराम के सामने खड़ी हो गयी। उसके गले की हंसुली और हाथ में तना हंसुआ समान रूप से चमक रहे थे। सब पकाया शिवराम घात लगाकर मनराजी को गिराने के लिए उसके ऊपर कूदा, तो मनराजी गिर पड़ी। शिवराम उस पर टूट पड़ा। हुंकारती हुई मनराजी हंसुआ चला रही थी। हंसुआ का एक वार शिवराम के घुटने पर लग गया और 'कट्ट' से आवाज हुई। शिवराम तिलमिला उठा। उसने मनराजी को फिर मारा। मनराजी चिल्ला रही थी। तभी बाहर से लोगों की आवाज आयी। लोग पूछ रहे थे, "क्या हुआ?"

शिवराम कुछ नहीं बोला। उसके घुटने से लहू बह रहा था। वह चुपचाप नदी की ओर चला गया।

उसका मन क्रोध के ज्वार से फट रहा था। नदी की लहरें जैसे आहत होकर हौले-हौले क्रन्दन कर तड़प रही थीं। हवा जैसे सिसक रही थी। पीला चांद सूखे फूल की तरह आकाश की डाली पर लटक रहा था। न जाने कब तक शिवराम गुमसुम बैठा रहा। चारों तरफ मौत का सन्नाटा था। आधी रात बीत गयी, तो वह घर की ओर पगडण्डी पर चल पड़ा। उसने अपने मन में एक खौफनाक निर्णय ले लिया था।

शिवराम घर पहुंचा तो सभी बेसुध सो रहे थे। दबे पांव वह कमरे में घुसा और कोने में पड़ा गड़ांसा उठा लिया। कमरे में अन्धकार छाया था। शिवराम ने सोचा, मनराजी चारपाई पर सो रही होगी। उसने गड़ांसा उठाया और गर्दन पर वार कर दिया। एक बार चूड़ियां खनखनायीं और फिर खून का फव्वारा छूट पड़ा। दूसरा वार करने के लिए उसने हाथ उठाया, तो चूड़ियों की खनखनाहट से वह चौंक पड़ा। चूड़ियां तो भागीरथी पहने हुए थी। मनराजी के तो एक ही हाथ में एक चूड़ी थी और दूसरे हाथ में डोरा बंधा था। शिवराम समझ गया वार भागीरथी पर पड़ गया। उसने ध्यान से देखा, तो मनराजी फर्श पर सोयी पड़ी थी। शिवराम ने दुख और क्रोध से पागल होकर दांत पीसकर रक्तरंजित गड़ांसा मनराजी की गर्दन पर चला दिया। मनराजी की आधी गरदन कट गयी और सारा शरीर छिपकली की कटी दुम की तरह छटपटाने लगा। शिवराम लगातार वार करता गया। उसने आठ वार किये। दोनों औरतों के शरीर धीरे-धीरे शान्त हो गये। फिर गड़ांसा वहीं छोड़कर मनराजी के गले से खून में डूबी हंसुली निकालकर वह दालान में आया, जहां दूसरे बच्चे सो रहे थे।

हत्या कर लेने के बाद उसे बड़ा भय और शोक हुआ। भय पुलिस का था और शोक भागीरथी के मारे जाने का था। जिस परायी लड़की को उसने अपनी लड़की की तरह पालकर बड़ा किया था और फिर उसका विवाह

५०० साड़ियां जीतने का अवसर!



जीतिए-

लक्ष्मी-विष्णु की १३५ रु. कीमत की १००% टेरीन साड़ी!

भाग लें **ग्लैक्सोज़-डी**®

"आपका व्यस्त दिन" प्रतियोगिता में

प्रतियोगिता की अंतिम तिथि ३०, सितम्बर-१९७७

महिलाओं— नीचे प्रवेश कूपन में ५ घरेलू काम दिये गये हैं। आपको सिर्फ इतना करना है कि आप प्रत्येक काम को उस क्रम में रखिये, जिसके लिए आपके ख्याल से हर घंटे सबसे अधिक शक्ति खर्च होती है। उदाहरण के तौर पर अगर आप समझती हैं कि धुलाई में सबसे अधिक शक्ति खर्च होती है तो उसके बगल के खाने में (१) लिखिये और इसी प्रकार (५) की संख्या पर पहुंचने तक लिखते जाइये। उसके बाद वाक्य पूरा कीजिए और प्रत्येक प्रवेश कूपन के साथ ४०० ग्राम के ग्लैक्सोज़-डी पेक के बिल्कुल ऊपर का फ्लैप तथा कैश मेमो नत्थी करके डाक द्वारा भेजिए। आप जितने चाहे उतने दाखिले भेजिये।

पुरस्कार जीतने वाले क्रम के बारे में निष्पक्ष निर्णायकों द्वारा निर्णय किया जायगा जिनका निर्णय अंतिम व बंधनकारी होगा।

यह बहुत ही आसान है और आपके लिए ५०० साड़ियों में से एक या अधिक साड़ियां जीतने का सुनहला मौका है।

आप तो जानती ही हैं कि घरेलू काम में आपकी थकान का कारण आपके शरीर में ग्लुकोज का ह्रास है—जो आपके लिए शक्ति का मुख्य स्रोत है।

ग्लैक्सोज़-डी आपको फौरन शक्ति देता है।

नियम व शर्तें

१. प्रवेशपत्र बिना काट-कूट के साफ़-साफ़ भरे होने चाहिए, नहीं तो उन्हें अयोग्य करार दिया जायगा।
२. निर्णायकों का निर्णय अंतिम और हर हालत में बंधनकारी होगा। इस संबंध में कोई पत्र व्यवहार नहीं किया जा सकेगा।
३. प्रवेश पत्र प्राप्त होने में विलंब होने, बिल्कुल ही प्राप्त न होने अथवा खो जाने की कोई जिम्मेदारी स्वीकार नहीं की जाएगी।
४. ग्लैक्सो लेबोरेटरीज (इंडिया) लिमिटेड तथा दाकुन्हा एसोसिएट्स प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक और कर्मचारी अथवा इन निदेशकों और कर्मचारीयों के संबंधी इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते।
५. हरेक प्रवेश पत्र के साथ ४०० ग्राम ग्लैक्सोज़-डी पैक के बिल्कुल ऊपर का फ्लैप तथा कैश मेमो भेजना जरूरी है।
६. प्रवेश पत्र केवल अंग्रेजी, हिन्दी, बंगाली, तामिल, तेलगु, मलयालम, गुंजराती, मराठी, तथा कन्नड भाषाओं में ही लिखे जाने चाहिए।
७. प्रतियोगिता की अंतिम तारीख ३०, सितम्बर, १९७७ है।

अपने प्रवेश पत्र शीघ्र भेजिए



ग्लैक्सोज़-डी®
तुरंत शक्ति के लिए!

प्रवेशपत्र

MK.

ग्लैक्सोज़-डी®
"आपका व्यस्त दिन" प्रतियोगिता



निम्नलिखित कामों को १ से ५ तक उस क्रम में रखिये जिस काम में हर घंटे अधिक शक्ति खर्च होती है।

☐ धुलाई ☐ खाना पकाना ☐ सिलाई ☐ फर्श धोना ☐ घर की सफाई

नाम : श्रीमती/कुमारी ....

पता : ....

....

मैं इस प्रतियोगिता के नियमों का पालन करने का वचन देती हूं। ....

—हस्ताक्षर

इस वाक्य को पूरा कीजिए जो १५ शब्दों से अधिक न हो:
जब मुझे शक्ति की ज़रूरत होती है, ग्लैक्सोज़ डी, ...

....

....

"आपका व्यस्त दिन" प्रतियोगिता के प्रवेशपत्र, पोस्ट बैग नं. १००२६, बम्बई-४०० ००१ इस पते पर भेजिए।

dCA/GL/45 E Hin.

किया था, उसकी हत्या उसने कर दी थी। वह शूल बनकर उसके हृदय में चुभने लगा। जिन हाथों ने कन्यादान किया था, उन्हीं हाथों ने कन्या का गला काट दिया था। वह सिर पकड़कर दालान में ही बैठ गया। घंटे भर बेसुध बैठे रहने के बाद वह उठा और उसने शारदा और दूधनाथ को एक नजर देखा। फिर वह तेजी से जनशून्य पगडण्डी पर चल पड़ा।

सबेरे वह गांव से सोलह-सत्रह मील दूर वाराणसी पहुंच गया। और वहां राजघाट पर रेलवे पुल के नीचे गंगा के किनारे वह गुमसुम दिन भर बैठा रहा। न उसने कुछ खाया न पिया। शाम को वह उठा और स्टेशन जाकर कलकत्ता जानेवाली गाड़ी पर चढ़ गया।

लेकिन शिवराम कलकत्ता न गया। उसे वहां पकड़े जाने का भय था। फिर वहां लोग उससे मनराजी और बच्चों के बारे में पूछते। वह मालदा चला गया और वहां एक ट्रक पर नौकरी करने लगा।

डेढ़-दो महीने बीत गये। शिवराम काम कर रहा था, मगर उसकी तबीयत न लगती थी। वह अपने बच्चों के बारे में बहुत परेशान था। पुलिस ने कहीं उन्हीं को पकड़कर बन्द न कर दिया हो। आखिर उसने एक कार्ड अपने टेलरमास्टर दोस्त मुहम्मद से लिखाकर घर भेज दिया।

जब सबेरे दूधनाथ उठा था, तो चारों तरफ सन्नाटा छाया था। मां को देखने वह कमरे में घुसा, तो वहां का दृश्य देखकर चीख उठा। उसकी चीत्कार सुनकर लोग वहां आ गये। पुलिस को सूचना दी गयी, तो वह तुरन्त आ गयी। पुलिस ने लाशें पोस्टमार्टम के लिए भेज दीं। फिर दूधनाथ से पूछ-ताछ हुई। शिवराम की खोज हुई, परन्तु उसका कहीं पता न चला।

जब गांव में शिवराम का पोस्टकार्ड पहुंचा, तो पुलिस को उसका पता चल गया।

कार्ड में शिवराम ने लड़कों की कुशलता पूछी थी और अपने गिरवी खेतों के बारे में पता लगाने को लिखा था। उसने यह भी पूछा था कि अगर पुलिस का डर न हो, तो वह बच्चों के लिए रुपया भेजे या उन्हें लिवा लाने के लिए आए।

पुलिस ने तुरंत जवाब में शिवराम को लिखवाया कि सब कुछ शान्त है। खेत छुड़ाने के लिए वह पैसा भेज दे। बच्चे मजे में हैं।

उत्तर लिखाने के बाद दारोगा ने उच्च अधिकारियों से अनुमति ली और मालदा पहुंच गये और वहां की स्थानीय पुलिस की सहायता से उन्होंने शिवराम को धर दबोचा। फिर शिवराम को एक स्थानीय मजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत किया गया, तो उसने अपना अपराध तुरन्त स्वीकार कर लिया। मजिस्ट्रेट ने उसे पुनः जेल भेज दिया और दूसरे दिन उसे फिर बुलाया। शिवराम ने फिर अपराध स्वीकार करते हुए बयान दिया।

शिवराम को पुलिस जौनपुर ले आयी। अदालत में मुकद्दमा शुरू हुआ, तो शिवराम ने बयान दिया कि पुलिस की मार से उसने विवश होकर परदेस में अपराध स्वीकार कर लिया था। लेकिन जिरह के दौरान वह टूट कर हकलाने लगा।

शिवराम के भाई, भावज और कई गांववालों ने उसके विरुद्ध गवाही दी।

१० नवम्बर, १९६४ को सत्र न्यायाधीश ने शिवराम को फांसी की सजा दी। हाई कोर्ट से भी सजा बहाल हो गई। फांसी से बचाने के लिए राज्यपाल से दया-याचना की गयी तो वह भी अस्वीकार हो गयी। फिर राष्ट्रपति से याचना की गयी। राष्ट्रपति ने सन् १९६६ में शिवराम को जीवन-दान दे दिया। उसकी सजा आजीवन कारावास में बदल गयी।

कोई सात-आठ साल जेल काटने के बाद स्वतन्त्रता की रजत जयन्ती के अवसर पर शिवराम जेल से छूट गया।

वह गांव पहुंचा, तो रो भी रहा था और हंस भी रहा था। इस बीच भाइयों ने दूधनाथ का विवाह शिवराम के एक भाई की लड़की करा दिया था। और दूधनाथ के एक बच्चा भी हो चुका था और वह बंगाल में हुगली में नाव चलाने चला गया था। जो थोड़ी-सी जमीन बची थी, उसी को जोत-बोकर शिवराम विरक्त-सा दूधनाथ के बच्चे को खिलाने लगा।

दो-ढाई साल इसी प्रकार गुजर गये। शारदा अब बड़ी हो गयी थी। जिस दिन प्रोबेशन रैली में शिवराम आया था, शारदा बीमार पड़ी थी। सबके जाने के बाद एकांत में अपनी कहानी सुनाकर उसने घर जाने की आज्ञा मांगी। मैंने शारदा के इलाज के बारे में पूछा, तो सिर झुकाकर शिवराम ने कहा कि गरीबी के कारण वह कोई दवा खरीदकर न ला सका। तुलसी की पत्ती पीस कर पिलाता है। प्रोबेशन अधिकारियों के पास कैदियों की तात्का-लिक सहायता के लिए कोई कोष नहीं होता, तो भी मैंने अपने पास से एक पांच रुपये का नोट उसकी मुट्ठी में थमा दिया। लेकिन उसने नोट लौटा दिया और मेरे पैर पकड़कर बोला, "साहब, दुआ करो कि लड़की अच्छी हो जाए।"

मैंने पूछा, "मनराजी के पास जो गहने थे, उनका क्या हुआ?"

"कौन जाने वे गहने, जिनके लिए यह-सब हुआ, कहां चले गये?" कहकर शिवराम चला गया।

(इस कथा के चित्र कल्पना के आधार पर चित्रकार ने बनाये हैं।—सं०)

एक अभागिन लड़की की कहानी

(पृष्ठ ४७ से आगे)

ही था। अब सरोज को वीरभद्र पर गुस्सा आने लगा था। कभी-कभी दोनों में इस बात को लेकर झगड़े भी हो जाते थे। अन्त में वीरभद्र ने एक दिन सरोज से कहा, "चलो, हम दोनों बंबई चलें। वहां हम कोई काम करेंगे।"

वीरभद्र सरोज को साथ लेकर १० मई, १९७५ को बंबई पहुंचा और अंधेरी के एक साऊथ इंडियन गेस्ट हाऊस में ठहर गया।

शाम को वीरभद्र ने सरोज से कहा, "मैं कहीं कोई काम ढूंढ़ने जा रहा हूं। तुम यहीं रहो।"

वीरभद्र रात में काफी देर से गेस्ट हाऊस लौटकर आया और दूसरे दिन वह फिर काम ढूंढ़ने की बात कहकर चला गया।

दोपहर को वीरभद्र लौटा और उसने सरोज से कहा, "अंधेरी में एक नारियल की दुकान में हम दोनों के लिए काम मिल गया है।"

यह बात सुनते ही सरोज की खुशी का ठिकाना न रहा। वह अब अपनी सुखी गृहस्थी के स्वप्न देखने लगी।

वीरभद्र उसी समय सरोज को अपने साथ लेकर गेस्ट हाऊस से निकल पड़ा और सीधे फोरास रोड पर लीला के वेश्यालय में पहुंच गया। उस समय लीला घर में ही थी। सरोज को ठीक से देखकर लीला ने वीरभद्र को पचास रुपये दिये। रुपये पेंट की जेब में रखते हुए वीरभद्र सरोज से बोला, "मैंने इनसे पेशगी ले ली है। तुम्हें यहां रहकर इनके घर का काम करना पड़ेगा। मैं दो-चार दिन बाद फिर आ जाऊंगा। अभी अपने काम पर जा रहा हूं।"

वीरभद्र इतना कहकर तुरन्त चला गया। उसके बाहर निकलते ही क्रूर नियति सरोज के सामने खड़ी हो गयी। सरोज की समझ में जल्दी यह बात आ गयी कि वह कहां आ गयी थी और अब उसे वहां क्या करना पड़ेगा। भय से उसका कलेजा कांप उठा और सीने में धड़कन शुरू हो गयी। वह भयभीत नजर से लीला की ओर देखने लगी। उस कमरे में और भी कुछ जवान लड़कियां आ गयी थीं। वे भी एक खास नजर से सरोज की ओर देख रही थीं। सरोज उन सब की ओर देखकर मन-मन ही अब अपने पति के पुरखों का उद्धार कर रही थी।

वहां जो अन्य लड़कियां थीं, उनके नाम सुनीता, शोभा रंगा, रिटा और शांता थे। वे चारों यौवन के प्रांगण में प्रवेश कर चुकी थीं। वे कोई अल्प वय की लड़कियां नहीं थीं। शोभा और शान्ता जरा अधिक मंजी हुई लगती थीं।

लीला ने सरोज से स्पष्ट शब्दों में कहा, "तुझे अब हमारे यहां शरीर का धंधा करना पड़ेगा।"

उसकी यह बात सुनकर सरोज की क्या अवस्था हुई, इसकी कल्पना पाठक स्वयं कर लें। स्वयं एक पति ने अपनी विवाहिता पत्नी को बाजार में लाकर बेंच दिया था।

सरोज इस गंदे धंधे के लिए राजी नहीं थी। यह देखकर लीला भड़क उठी और उसने सरोज को मारना-पीटना शुरू कर दिया। बेचारी मासूम सरोज! लीला एक जहरीली नागिन की तरह उसे डसने लगी। शोभा और शांता सरोज को धंधा करने के लिए समझाने लगीं।

लीला ने उस रात सरोज को भूखे रखा। वेश्यालय में बहकाकर लायी गयी कोई स्त्री जब धंधा करने से इनकार करती है, तो उसे तरह-तरह की यातनाएं दी जाती हैं। वे सारी यातनाएं सरोज को भी भोगनी पड़ रही थीं। अन्त में वे यातनाएं बरदाश्त न कर पाने के कारण सरोज गंदा धंधा करने के लिए विवश हो गयी।

सरोज बहुत दुखी थी। उस नरक से उसे कब और किस तरह छुटकारा होगा, वह सोच ही न पा रही थी। ग्राहकों के साथ जबरदस्ती सोने और लीला की धौंस सहने के सिवा अभागिनी सरोज का और कोई काम न था।

वेश्यालय में भिन्न-भिन्न जाति और धर्म के लोग आते थे। कभी कोई मलयालमी भी आएगा, तो सरोज उसे अपनी दुर्दशा की कहानी सुनाएगी और उससे अपने को मुक्त कराने के लिए कहेगी सरोज इसी आशा पर रहने लगी। परंतु उसका दुर्भाग्य यह था कि मलयालम भाषा समझनेवाला एक भी ग्राहक उसके पास नहीं आ रहा था। उसके साथ आनंद उठाकर ग्राहक चल देता था। आखिर रहमान आया और उसने सरोज के प्रति थोड़ी सहानुभूति दिखायी।

कादिर और हुसैन ने सरोज की कहानी सुनी। उसकी वह करुण कहानी सुनकर किसी को भी उसके प्रति सहानुभूति हो सकती थी। लेकिन कादिर ने सिर्फ यह कहा, "ठीक है। कल सुबह देखेंगे। तुम अब सो जाओ।"

दूसरे दिन, २१ मई की सुबह आठ बजे कादिर सरोज को साथ लेकर नागपाडा पुलिस स्टेशन पर पहुंचा और पुलिस-अधिकारियों को उसने सरोज की कहानी सुनायी। परंतु इस तरह के मामले पुलिस स्टेशन के कार्य-क्षेत्र में नहीं आते। ऐसे मामलों को निपटाने के लिए पुलिस की एक अलग शाखा विजिलेंस ब्रांच है। नागपाड़ा के पुलिस-अधिकारी ने कादिर से सरोज को विजिलेंस ब्रांच में ले जाने को कहा।

कादिर उसी दिन दोपहर को करीब बारह बजे विजिलेंस ब्रांच में जाकर असिस्टेंट पुलिस इंसपेक्टर श्री के० के० नागरे के सामने पहुंचा और उसने उन्हें सरोज की सारी कहानी सुनायी।

नागरे तुरंत सरोज को अपने बड़े अधिकारी असिस्टेंट पुलिस कमिश्नर श्री भेसाडिया के सामने ले गये। वहां सरोज का विधिवत बयान लिया गया।

यह ज्ञात होते ही कि एक पति ने अपनी पत्नी को चकले में बेचा था, भेसाडिया को बड़ा क्षोभ हुआ। उन्होंने नागरे को तुरंत लीला के वेश्यालय पर छापा मारने का आदेश दिया।

विजिलेंस ब्रांच के इंसपेक्टर राजध्यक्ष, असिस्टेंट इंसपेक्टर नागरे, सब-इंसपेक्टर मुणकर, कुछ सिपाही, दो पंच और स्वयं भेसाडिया उसी दिन दोपहर को चार बजे लीला के वेश्यालय में जा धमके। उनके साथ सरोज भी थी।

वेश्यालय में उस समय लीला नहीं थी। परंतु अन्य लड़कियां मौजूद थीं। घर में सरोज के साथ पुलिस पार्टी को देखकर उन लड़कियों के छक्के छूट गये और वे सब एकदम भयभीत हो उठीं। पिछली रात कादिर के साथ बाहर गयी हुई सरोज पुलिस तक किस तरह पहुंच गयी, यह उनके लिए एक पहेली थी।

अभी तलाशी लेने का इन्तजाम हो रहा था कि अचानक लीला वहां आ गयी। उसके साथ एक और भी व्यक्ति था। पुलिस को देखते ही लीला और उस व्यक्ति के होश उड़ गये। इधर उस व्यक्ति को देखते ही सरोज जोर-जोर से चिल्लाने लगी। सरोज क्यों उस तरह जोर-जोर से चिल्ला रही थी, यह पुलिस-पार्टी समझ नहीं पा रही थी। परंतु पुलिस-पार्टी को अधिक देर तक असमंजस में न रहना पड़ा। लीला के साथ जो व्यक्ति आया था, वह सरोज का पति वीरभद्र था।

पुलिस ने तुरंत लीला और वीरभद्र को अपने कब्जे में ले लिया और तलाशी शुरू कर दी।

वीरभद्र ने लीला से जो पचास रुपये की रकम ली थी, वह सौदे की पूरी रकम नहीं थी। वह पेशगी थी। वीरभद्र ने अपनी पत्नी को तीन हजार रुपये में बेचा था। वह रकम वीरभद्र को लीला से किस्तों में मिलनी थी। दूसरी किस्त लेने वीरभद्र इक्कीस तारीख को लीला के वेश्यालय में आया था।

तरक्की, यानी समय का सदुपयोग ! एक एक मिनट एक एक क्षण कीमती है। जितना काम करोगे, देश तरक्की की राह में उतना ही आगे बढ़ेगा। जाहिर है, एक सेकेंड भी बरबाद नहीं होना चाहिए।

यह तभी हो सकता है जब हर मेहनतकश के पास समय जानने के लिये घड़ी हो, इसीलिए, एशिया में घड़ी बनाने के सबसे बड़े केंद्र श्रीशैला में स्विटजरलैंड और हिंदुस्तान की कारीगरों के संगम से, मजबूत सही समय देने वाली लेकिन फिर भी कम दाम की घड़ियां बनायी जाने लगीं।

जुएल चाहे १ या १७, काली या नीली डायल, क्रोम प्लेटेड ॲन्टीमेगनेटिक स्टेनलेस स्टील केस, वॉटर-प्रोटेक्टिड पॅराशॉक, इलेक्ट्रॉनिक ढंगसे मिलाया हुआ।

श्रीशैला घड़ियां
हर मेहनती हाथ की शान।

अधिक जानकारी के लिये लिखिये
'हेगडे एण्ड गोले लिमिटेड'
१०,'ए'इन्द्रा पैलेस एनेक्सी
'हेच' ब्लाक, कनाट सरकस
नई दिल्ली-११०००१



श्रीशैला

श्रीशैला घड़ियाँ उन हाथों के लिए जो मेहनत करते हैं



Hegde & Golay Ltd.
Committed to time and technology
at the Shreeshyla Watch Complex
"Shreeshyla", Bangalore 560 011

Branches: Bombay New Delhi Ghaziabad Calcutta Madras

वीरभद्र को देखते ही लीला परेशान हो गयी थी, क्योंकि सरोज को कादिर ने अभी तक वापस पहुंचाया नहीं था। उसने वीरभद्र को यह बात बतायी, तो वीरभद्र आपे से बाहर हो गया। वह तुरन्त लीला के साथ सरोज को कादिर के यहां से लिवा लाने के लिए चल पड़ा। लीला को कादिर की पान-बीड़ी की दुकान मालूम थी। वह वीरभद्र को साथ लेकर दुकान पर पहुंची। परंतु कादिर और हुसैन दुकान में नहीं थे। कोई और नौकर दुकान पर बैठा था। लीला ने उससे कादिर के बारे में पूछा। परंतु कादिर कहां गया था, इसकी कोई जानकारी उस नौकर को न थी। तब लीला और वीरभद्र निराश होकर वेश्यालय में पहुंचे और वहां पुलिस-पार्टी की गिरफ्त में आ गये।

पंचनामा का काम खत्म होने के बाद श्री भेसाड़िया ने लीला, वीरभद्र, शांता और शोभा को हिरासत में ले लिया और सरोज को चेम्बूर के सुरक्षा-गृह में भेज दिया।

इसके बाद सब-इंसपेक्टर मुणकूर ने आवश्यक सबूत एकत्र किये और सभी अपराधियों के खिलाफ अदालत में आरोप-पत्र दाखिल किये। इस मुकद्दमे में सरोज की गवाही अत्यंत महत्वपूर्ण थी। उसकी गवाही और अन्य संबंधित सबूतों को ग्राह्य मानकर विद्वान न्यायाधीश ने लीला को दोषी करार दिया और उसे वेश्यालय चलाने के जुर्म में एक वर्ष की कैद और पांच सौ रुपये जुर्माने की सजा दी। जुर्माना अदा न करने पर उसे तीन महीने कैद की और सजा काटनी थी। साथ ही सरोज को धंधे में लगाकर उसकी कमाई पर अपना निर्वाह करने के जुर्म में उसे तीन महीने की कैद और जुर्माने की सजा मिली। जुर्माना अदा न करने पर उसे तीन महीने कैद की और सजा काटनी थी।

वीरभद्र को अपनी पत्नी को अनैतिक धंधे के लिए बेचने के अपराध के लिए एक वर्ष की कैद और दो सौ रुपये जुर्माने की सजा मिली। जुर्माना न देने पर उसे एक महीने की और सजा काटनी थी। शांता और शोभा को सबूत के अभाव में निर्दोष छोड़ दिया गया।

मुकद्दमे की तफ्तीश के दौरान वीरभद्र के बारे में काफी जानकारियां प्राप्त हुई थीं। वीरभद्र एक नंबर का बदमाश था। गांव की गरीब किन्तु शरीर से सुन्दर लड़कियों से वह प्रेम का झूठा नाटक करता और उनके साथ विवाह करने का वादा कर वह उन्हें बंबई ले आता और वहां वेश्यालयों में बेच देता था। इस तरह उसने कितनी मासूम लड़कियों को केरल से बंबई लाकर वासना के बाजार में बेच दिया था।

एक महत्वपूर्ण जानकारी और प्राप्त हुई थी। कादिर ने सरोज को अपनी जेब से पचास रुपये देकर छुड़ाया था। ऐसा करने में उसका क्या उद्देश्य था? क्या वह कोई समाज-सेवक था? नहीं। सरोज को लीला के पंजे से छुड़ाकर बाहर लाने में कादिर का एक स्वार्थ था। सरोज से उसकी सारी कहानी सुनने के बाद कादिर ने उससे शांतिपूर्वक कहा था, "ठीक है। कल सुबह देखेंगे। अब तुम सो जाओ।"

सरोज की दर्दनाक कहानी सुनकर किसी का भी अन्तःकरण द्रवित हो उठता। परंतु सरोज से 'अब तुम सो जाओ' कहनेवाले कादिर ने पूरी रात सरोज को सोने नहीं दिया था। उस दुःखद स्थिति में भी सारी रात कादिर और हुसैन सरोज के साथ बलात्कार-पर-बलात्कार करते रहे थे। उन्होंने सरोज को जबरदस्ती शराब भी पिलायी थी।

दूसरे दिन सुबह सरोज ठीक से खड़ी भी नहीं हो पा रही थी। बेचारी जैसे खाई से निकलकर कुएं में गिर पड़ी थी। लेकिन उसके सौभाग्य से न जाने कादिर के मन में क्या आया कि वह उसे लेकर सी० आई० डी० आफिस में जा पहुंचा।

इस मुकद्दमे में शांता और शोभा निर्दोष छूट गयी थीं। यह कैसे हुआ था? अभी वह मुकद्दमा चल ही रहा था, कि सरोज चेम्बूर के सुरक्षा-गृह से वहां की कुछ लड़कियों के साथ भाग निकली थी। जब शांता और शोभा के बारे में अदालत में सुनवाई शुरू हुई, तो गवाही देने के लिए सरोज को अदालत में हाजिर किया न जा सका। इसी कारण वे दोनों निर्दोष घोषित कर दी गयी थीं। दुर्भाग्य की बात यह थी कि वे लड़कियां, जिनके साथ सरोज भागी थी, वेश्याएं ही थीं, उन्हें भिन्न-भिन्न वेश्यालयों से पकड़कर पुलिस ने वहां रखा था। पता नहीं, इस समय सरोज कहां है और क्या कर रही है।

[इस कथा के चित्र चित्रकार-द्वारा कल्पना के आधार पर बनाये गये हैं।]

—फिरौती—

(पृष्ठ २१ आगे)

फिर भी केंट ने गैरेज का कोना-कोना खूब देखा। पीटर एक कुत्ते की भांति उसके पीछे-पीछे देखता चल रहा था।

केंट को बार-बार 'नेशनल ७११७' नम्बर याद आ रहा था। उस शाम, एलिन के साथ हुई बातचीत के बाद, उसने यह नम्बर मालूम कर लिया था। पर अभी इस नम्बर पर फोन करना ठीक नहीं था, कहीं कोई गलतफहमी न हुई हो।

दरवाजा खुलने की आवाज सुनायी दी, तो केंट तेजी से भागा। पर यह बूस आया था। उसने अपने डैडी को देखकर पूछा, "क्या हुआ, डैडी? क्या बात है?"

जबान पर आये शब्दों को निगलते हुए केंट ने उससे पूछा, "तुमने घर लौटते समय किसी को देखा था क्या?"

"नहीं, मैंने किसी को नहीं देखा। मेरे साथ, बस, माइक था।"

"अरे, यह क्या है?" पीटर एक पत्थर के नीचे रखे कागज की ओर इशारा कर बोल पड़ा।

केंट फौरन समझ गया कि कागज में क्या लिखा होगा। समाचार-पत्रों में अपहरण के जो मामले छपते रहते थे, उन्हें पढ़-पढ़कर वह जान गया था कि फिरौती की रकम मांगनेवाले इन कागजों में क्या लिखा करते हैं? उसने झुककर उस कागज को उठाया।

कागज पर किसी कम पढ़े आदमी ने घसीटे हुए अक्षरों में लिखा था, 'हम इस मौके के ही इन्तजार में थे। बच्ची को लौटाने की कीमत पचास हजार डालर हैं। तुम्हारे पास यह रकम नहीं होगी, तो तुम्हारे डैडी के पास तो जरूर होगी! रकम कहां लानी है, यह तुम्हें बाद में बताया जाएगा। पुलिस के पास गये, तो हम बच्ची को मार डालेंगे।'

"डैडी, यह क्या है?" बूस ने पूछा।

लेकिन केंट ने उसकी ओर ध्यान न देकर पीटर को हुक्म दिया, "बूस को अन्दर ले जाओ!"

केंट एलिन को ढूंढने लगा। उसने एलिन से वायदा किया था कि अगर उसके किसी बच्चे का अपहरण हुआ, तो वह कोई फिरौती नहीं देगा। उसे फेडरल पुलिस का नम्बर याद था। मगर...

"एलिन!" वह जोर से चिल्लाया।

एलिन के नीचे आने की आवाज आयी। उसके आने पर केंट ने हांफते हुए कहा, "एलिन..." आगे उससे कुछ न कहा गया।

बेचारी एलिन दहशत के मारे पीली पड़ गयी थी। उसे देखकर रहम-सा आता था। वैसे रहम के काबिल तो खुद केंट की भी हालत थी। उसे भी किसी के सहारे की, किसी के दिलासे की जरूरत थी। अपहरणकर्ताओं और बदमाशों से उसका पहले कभी पाला नहीं पड़ा था।

उसने एलिन से कहा, "मैं फोन करने जा रहा हूं, नेशनल ७११७ नम्बर पर।"

"नहीं, केंट, कुछ देर और इन्तजार करो।" एलिन ने चिल्ला-कर कहा।

"नहीं, मुझे फोन करना ही है।" और इसके पहले कि एलिन उसे रोक सके, उसने फोन के पास आकर, रिसीवर उठाकर कहा, "मुझे नेशनल ७११७ नम्बर चाहिए।"

एलिन का चेहरा सफेद फक पड़ गया था। केंट ने वह मुड़ा-तुड़ा कागज उसके सामने कर दिया। एलिन ने उसे पढ़कर कहा, "जल्दी-बाजी से काम न लो, केंट! उनकी धमकी को मत भूलो!"

पर तब तक उस ओर से एक शांत स्वर आने लगा था, "यह नेशनल ७११७ है।"

[...म्बर, '७७]

आपके लाड़ले के कोमल भावों की सुरक्षा



आपका लाड़ला आपका ख़ास संसार है. उसका कोमल स्पर्श, उसकी ताज़गी आपको सुख की एक नई दुनिया में पहुंचा देती है. उसके लिए एक ख़ास पाउडर चाहिए–जॉन्सन्स बेबी पाउडर. लाड़ले की वही बातें जो आपका मन मोहती हैं, उसको दुखी भी कर सकती हैं —जैसे, उसकी मुलायम कोमल त्वचा नमी से खुरदरी हो जाती है.

ऐसी हालत में जॉन्सन्स बेबी पाउडर लाड़ले के तन को सुखी रखता है—मन को खुश. ये विशेष रूप से शुद्ध, मुलायम और आरामदेह बनाया जाता है. जॉन्सन्स बेबी पाउडर नमी सोखकर आपके लाड़ले को आराम देता है. और वह आपके प्यार को महसूस करता है. आपका स्पर्श ही लाड़ले के प्यार-दुलार का संसार है. लंगोटी बदलते समय उसकी त्वचा नर्म और शुष्क रखिए. नहलाने के बाद सुखद और ताज़ा—जॉन्सन्स बेबी पाउडर की सहायता से. इसमें आपकी ममता भरी है. वह हमेशा आपको अपने करीब महसूस करता है.

बच्चे की देखभाल की पुस्तिका मुफ़्त:
यह पुस्तिका केवल अंग्रेज़ी में मिलती है.
इसे पाने के लिए इस पते पर लिखिए:-
कंज्यूमर इन्फ़र्मेशन सेण्टर
जॉन्सन ऐण्ड जॉन्सन लिमिटेड
३०, फ़्रेरजेट स्ट्रीट, बम्बई ४०० ०३६.

जॉन्सन्स* बेबी पाउडर शीतल... शुष्क... आरामदेह

कंट, बैठी हुई आवाज में फोन में चिल्लाया, "मुझे एक अपहरण के मामले की रिपोर्ट करनी है। मेरी बच्ची का अपहरण किया गया है। मेरा नाम और पता : कंट क्रायर्स, १३४, ईस्टवुड एविन्यू, ग्रीनवेल, न्यूयार्क है।"

कंट को सलाह दी गयी कि वह फिलहाल कुछ न करे, और कल पचास मील की दूरी पर स्थित एक गांव में एक बार में, एक खास वक्त पर, एक खास आदमी से मिले, जो भूरे रंग का एक सादा सूट पहने होगा।

इस बीच एलिन बुदबुदाती जा रही थी, "वे उसे मार डालेंगे... मार डालेंगे!"

कंट ने भी बुदबुदाते हुए ही उससे कहा, "उन्हें कुछ भी पता न लगेगा, किसी को भी कुछ पता न लगेगा।" फिर रिसीवर नीचे रखकर उसने तेज स्वर में कहा, "वाशिंगटन के ये लोग किसी को कुछ नहीं बताते। इस समय मुझे उनकी मदद की सख्त जरूरत है।"

पर एलिन अपने भयभीत नेत्रों से उसे ताकती हुई कहती रही, "वे उसे मार डालेंगे!"

कंट का मन हो रहा था कि कहीं जाकर अकेले में खूब रोये। पर क्या पुरुष भी कहीं रोते हैं? फिर, एलिन भी तो नहीं रो रही थी। तभी सहसा वे दोनों एक दूसरे से लिपट गये और चुपचाप आंसू बहाने लगे।

कंट को इन्तजार करने की आदत नहीं थी, पर उसे इन्तजार करना पड़ा और एलिन को भी इन्तजार करने में मदद देनी पड़ी। क्योंकि पुरुष महिलाओं से अधिक शक्तिशाली माने जाते हैं न!

जब से उसे फेडरल पुलिस के निर्देश मिले थे, उसे कुछ राहत महसूस हो रही थी। घर में चार नौकर थे, साराह नाम की बावर्चिन, रोज नाम की नौकरानी, आया मौली और माली पीटर। पर इस मामले में मौली को छोड़कर किसी को भी कसूरवार नहीं माना जा सकता था और मौली का कसूर भी इतना ही था कि उसने बेवकूफी से काम लिया था। अब उन्हें यह बताना निहायत जरूरी था कि वे इस घटना के बारे में किसी बाहरी आदमी से कुछ न कहें।

डायनिंग रूम में जाते-जाते कंट ने एलिन से कहा, "सब नौकरों को मेरे पास भेजो।"

दरवाजे पर उसने डरे और कुम्हलाये हुए ब्रूस को देखा, जो पूछ रहा था, "क्या बात है, डैडी? बैटसी कहां है?"

अपने स्वर को शांत रखने की कोशिश करते हुए कंट ने कहा, "हम उसे खोजने की कोशिश कर रहे हैं, बेटा! वह मिल जाएगी। पर तुम उसके खोने के बारे में किसी से न कहना।"

"क्या मैं बाहर जाकर उसे ढूंढ़ सकता हूं?" ब्रूस ने पूछा।

"नहीं, तुम ऊपर अपने कमरे में जाओ। मैं अभी एक मिनट में आया।"

नौकर आने शुरू हो गये। एलिन उन सबके पीछे थी। ब्रूस के साथ जाते-जाते, उसने कहा, "मैं ब्रूस के साथ जाती हूं।" उसका स्वर शांत-संयत था, पर कांपते होंठ बता रहे थे कि वह आतुरता से उसकी प्रतीक्षा करेगी।

कंट ने उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा, "मैं, बस, दो-चार मिनट में ही आता हूं।"

चारों नौकर चुपचाप खड़े थे। सिर्फ मौली बीच-बीच में सुबक उठती थी। उन चारों को देखते ही कंट जान गया कि उन्हें उस कागज के बारे में पता लग गया था। उसने कहा, "जो-कुछ हुआ है, उसके बारे में तुम लोगों को पता ही है।" वे चारों परिचित चेहरे आज उसे न मालूम क्यों, भयानक और खतरनाक लग रहे थे। पीटर और साराह तो बहुत पुराने नौकर थे। उन दोनों को वह वर्षों से जानता था और रोज साराह की भांजी थी। पर इस वक्त वे-सब उसे दुश्मन जैसे लग रहे थे। उसने आवाज को सख्त बनाकर उन-सबसे कहा, "खयाल रहे! इस घटना के बारे में किसी को भी कुछ नहीं बताना है! तुम्हारी चूक से बैटसी की जिंदगी खतरे में पड़ सकती है!"

उसने बड़ी मुश्किल से अपने को चीखने-चिल्लाने से रोका। आज उसे पहली बार महसूस हुआ कि वह भी औरतों की तरह रो सकता है। उसने खंखारकर आगे कहा, "याद रहे! अगले कुछ घंटों में हममें से किसी से भी कोई गलती हुई, तो बैटसी जान से हाथ धो सकती है।"

मौली ने अब जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया था। कंट ने बाहर जाते हुए कहा, "बस, मुझे, इतना ही कहना है! फिलहाल हमें प्रतीक्षा करनी है। इसके अलावा कोई और चारा नहीं है!"

तभी टेलीफोन की घंटी बजी और कंट तेजी से उस ओर लपका। कौन जाने, किसका कैसा संदेश हो!

यह फोन उसके पिता ने किया था। वे पूछ रहे थे, "सब ठीक-ठाक है न, कंट?"

कंट ने अपने पिता को भी कुछ बताना उचित नहीं समझा। उसने कहा, "चिंता की कोई बात नहीं है, डैड! एलिन की तबीयत कुछ खराब थी।"

"डॉक्टर को बुलाया?"

"अभी तो नहीं, पर जरूरत हुई, तो बुला लूंगा," कहकर उसने फोन रख दिया। वह जानता था कि बातचीत चलती रही, तो काफी देर तक चलती रहेगी, और वह इस वक्त बात करने के मूड में न था।

उसे ब्रूस का खयाल आया और वह उसके कमरे की ओर बढ़ा। वह नर्सरी में अपना खाना खा रहा था और एलिन उसके साथ थी। रोज मौली ब्रूस को खाना खिलाती थी, पर आज मौली की सूरत देखने को न एलिन का मन कर रहा था, न कंट का। वैसे अपनी नर्सरी की सूरत देखने को भी उस वक्त उन दोनों का मन नहीं कर रहा था। इस वक्त तक बैटसी नहा-धोकर खाना खाने के लिए तैयार हो जाया करती थी...

"मैं नीचे लायब्रेरी में जाता हूं," कहकर कंट तेजी से नीचे जाने लगा।

एलिन चुप रही।

मगर लायब्रेरी में आकर भी उसे चैन न मिला। वहां का सन्नाटा असह्य था। बस, प्रतीक्षा करो! और, कौन जाने, इस वक्त बेचारी बच्ची पर क्या बीत रही होगी, आज की रात कैसे बीतेगी? आज की रात बच्ची कहां और कैसे सोएगी?

फिर अचानक कंट के दिमाग में बात आयी कि इस तरह चुपचाप बैठने से कुछ न होगा, कुछ-न-कुछ करना चाहिए। यह सोचकर वह उठा और बाहर जाने लगा। हो सकता है, कि अपहरणकर्त्ताओं के पास से कोई और चिट्ठी आयी हो। उसका मन जोर-जोर से चिल्लाने और गाली बकने को कर रहा था, लेकिन उसने बड़ी मुश्किल से अपने को ऐसा करने से रोका। वह अपने को बड़ा लाचार अनुभव कर रहा था, क्योंकि वह कुछ नहीं कर पा रहा था। अपने ऊपर बहुत संयम रखकर उसने सोचा, उसे जो-कुछ करना है, एक सुनिश्चित योजना के अनुसार करना चाहिए।

उसने अहाते का कोना-कोना छान मारा, लेकिन कहीं कोई चिट्ठी नहीं थी।

शाम ढल चुकी थी। उसने अंधेरे में सहसा किसी आदमी को दरवाजे की ओर आते देखा। वह पीटर था, पीटर ने कंट के पास आकर कहा," मिस्टर क्रॉयर्स! मालूम नहीं, क्यों, उन शैतानों ने अपनी योजना को कामयाब बनाने के लिए, मेरी बीवी को ही चुना? मैं शाम को खाना खाने के लिए घर गया, तो मेरी बीवी ने यह कागज मुझे दिया। वह बेचारी तो पढ़ना भी नहीं जानती। मैं दौड़ता हुआ वह चिट्ठी लेकर आया हूं।"

कंट ने उस कागज को पीटर के कांपते हुए हाथों से छीन लिया और उसे लेकर घर की ओर भागा।

हॉल की रोशनी में उसने पढ़ा, 'सारी रकम नोटों में तैयार रखो। तुम उनका नम्बर नोट करोगे, तो हम तुम्हारे दूसरे बच्चे को उठा ले जाएंगे। हमें धोखा देने की कोशिश मत करो। बिना रकम दिये तुम्हारा काम होनेवाला नहीं है। तुम्हारे मिल के पास जो संकरी खाड़ी है, उसके पास एक पुराना पेड़ है। नोट एक बक्से में रखकर उस बक्से को पेड़ के नीचे रख दो। यह काम कल रात के बारह बजे तक पूरा हो जाना चाहिए।'

उस पेड़ के नीचे बैठकर, बचपन में कंट ने कई बार खाड़ी से मछलियां पकड़ी थीं। एक बार मछलियां पकड़ते समय तूफान आ गया था, और वह वहां से भागकर मिल के दरवाजे के नीचे खड़ा हो गया था और वहां से उसने उस पेड़ पर बिजली गिरते देखा था। क्या ये लोग जानते हैं कि वह (कंट) उस पेड़ से परिचित है?

उसने पीटर से पूछा, "यह कागज कौन लाया था?"

"मुझे पता नहीं, हुजूर!" उसने हकलाकर कहा, "मैं... मेरी बीवी को भी, बस, इतना ही याद है कि वह कोई गोरा आदमी था। वह कागज उसके हाथ में थमाकर, यह कहकर चला गया था, 'इसे अपने मालिक के पास भिजवा देना' उसने जैसे ही मुझे यह दिखाया, मैं इसे आपके पास लेकर भागा।"

कंट ने पीटर को गौर से देखा, मानो उसे 'पढ़ने' की कोशिश कर रहा हो। क्या पीटर भी इस साजिश में शामिल है? क्या किसी ने उसे कुछ खिला-पिलाकर अपनी तरफ कर लिया है? क्या यह उस आदमी को जानता है? उसने कहा, "पीटर, अगर तुम उन लोगों से मिले हो, तो मैं खुदा की कसम खाकर कहता हूं, मैं खुद अपने हाथों से तुम्हारा गला घोंट डालूंगा! भले ही बाद में मेरा कुछ भी हश्र हो।"

"खुदा के लिए, ऐसा मत कहिए, मिस्टर क्रॉयर्स! मेरा इस मामले से कोई सम्बन्ध नहीं है। आप मुझे अच्छी तरह जानते हैं। जब से आपकी शादी हुई, तब से मैं आपका माली हूं। उन शैतानों से क्या लेना-देना। आपकी मेहरबानी से मेरे पास एक अच्छा घर है और मैं बड़े आराम से रहता हूं।"

कंट जानता था कि पीटर सच बोल रहा था। पर इस समय उसकी मनःस्थिति ऐसी थी कि वह हर किसी पर संदेह कर रहा था। उसने कहा, "अपनी बीवी से कह देना, पीटर, कि वह इसका जिक्र किसी से भी न करे।"

साफ़ सुन्दर त्वचा, दुल्हन सा रूप रचा



क्लियरेसिल आपके मुंहासों को साफ़ करती है और उन्हें काबू में रखती है.

जब मुंहासे निकल आएं तो आपको मिलती हैं बस ढेर सारी सलाहें.

लेक़िन इस बारे में असली सलाह तो सारी दुनिया के उन करोड़ों जवान लड़के लड़कियों की है, जिन्हें क्लियरेसिल से मदद मिली. क्लियरेसिल सुरक्षित व सुविधापूर्ण दवा है जो मुंहासों की समस्या से निबटने के लिए खास तौर पर बनाई गई है.

ये अब आपके हाथ में है कि क्लियरेसिल से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाएं...अपने मुंहासों को साफ़ करने और काबू में रखने में उसकी मदद आज़माएं; ऐसे—

- क्लियरेसिल हर रोज लगाइए
- क्लियरेसिल पूरे चेहरे पर लगाइए...मुंहासों पर थोड़ी ज़्यादा.

जवानी आती है तो मुंहासे साथ लाती है. मुंहासे इसकी बहार लूट न ले जाएं. इसलिए क्लियरेसिल लगाइए.

क्लियरेसिल ३ तरह से असर दिखाती है.



१. मुंहासों को खोलती है—इसकी खास दवा मुंहासों के मुहं खोलने में मदद करती है.



२. मुंहासों को साफ़ करती है—मुंहासों के भीतर की गंदगी बाहर निकालने में मदद करती है, बिना उन्हें निचोड़े. निचोड़ना नुकसान पहुंचाता है.



३. मुंहासों को सुखा देती है—ज़रूरत से ज़्यादा तेल को सुखाकर मुंहासे मिटाने में मदद करती है.



क्लियरेसिल—दुनिया की नं. १ कील-मुंहासों की दवा

OBM/7130HIN R

"आपके कहने से पहले ही मैंने उसे साफ-साफ बता दिया है कि अगर उसने इसका जिक्र किसी से भी किया, तो मैं उसका सिर फोड़ कर रख दूंगा! आप निश्चिन्त रहें, साहब!"

"अच्छा, अब तुम जा सकते हो। पर, मेरी बात को याद रखना।"

"जी हां, हुजूर!" पीटर ने कहा।

"फिरौती की रकम हम तुम्हें जरूर देंगे, शैतानो!" एलिन ने चीख-कर कहा।

पति-पत्नी अपने कमरे में बैठे बातें कर रहे थे। कमरे का दरवाजा एक संकरी गैलरी में खुलता था। खुले दरवाजे से नर्सरी भी दिखायी पड़ रही थी। दोनों ऐसे स्थान पर बैठे थे, जहां से वे नर्सरी में सोये ब्रूस का सिर देख सकते थे। खुद उन दोनों के लिए तो नींद की कल्पना करना भी असम्भव था। खाने के नाम पर दोनों ने थोड़ासा ठण्डा चिकन लिया था। कंट ने अपने कपड़े नहीं बदले थे, मालूम नहीं, कब कौन आ जाए। हां, एलिन ने कंट के बहुत जिद करने पर गर्म पानी से स्नान करने के बाद, कपड़े बदल लिये थे। कंट ने अपनी पत्नी से कहा, "कल वह आदमी क्या करता है, और हमें क्या करने को कहता है, सब-कुछ इसी पर निर्भर करता है।"

एलिन को यह सोचकर बड़ी तकलीफ हो रही थी कि कंट ने अपनी सारी आशाएं एक ऐसे अनजान आदमी पर केन्द्रित कर दी थीं, जिसे उसने एक बार भी नहीं देखा था। उसे, बस, इतना मालूम था कि वह आदमी भूरे रंग के सूट में होगा, और उसके कोट की जेब में नीले रंग का रूमाल होगा। बैटसी के जीवन के साथ क्या इस तरह का खिलवाड़ करना उचित है? यह शंका कंट के मन में भी कभी-कभी उठती थी, पर वह उसे यह सोचकर दबा देता था कि उस आदमी के पीछे एक बड़ा संगठन है, हजारों-लाखों लोग हैं, जो देश-भर में फैले हैं और खुफियागीरी करते हैं।

एलिन ने पागलों की तरह चिल्लाकर कहा, "उसे पैसे देने ही होंगे! हमें पैसों का मुंह नहीं देखना है!"

एलिन की इस बात से उत्तेजित होकर कंट ने कहा, "क्या तुम समझती हो कि मैं रुपया बचाना चाहता हूं?"

"बैंक के हमारे खाते में करीब बीस हजार जमा हैं। बाकी रकम तुम अपने डैडी से ले सकते हो। अपनी सिक्योरिटी हम उन्हें दे देंगे। अपहरणकर्त्ताओं की मांगी हुई रकम जमा कर सकना हमारे लिए असंभव नहीं है।"

"बेकार की बातें मत करो, एलिन! पहले हमें यह देखना है कि..."

"पहले हमें बैटसी को बचाना है!" एलिन ने गुस्से से तमतमाते हुए कहा, "उसके लिए हम लोग और तुम्हारे डैडी तबाह भी हो जाएं, तो कोई बात नहीं।"

"चुप रहो, एलिन! खुदा के वास्ते, चुप रहो!" उसने पत्नी को डांटते हुए कहा, "क्या तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि मेरे डैडी मेरे मांगने पर मुझे यह रकम न देंगे?"

"तुम अपने डैडी से डरते हो, कंट," एलिन ने उत्तर दिया, "पर मैं उनसे नहीं डरती। मैं मांग लूंगी।"

दोनों पागलों की तरह लड़ रहे थे। दोनों तर्क की सीमाओं को लांघ चुके थे।

सहसा एलिन रोने लगी। रोते-रोते उसने कहा, "उस रात जो कुछ तुमने कहा था, वह अब मुझे याद आ रहा है। तुमने कहा था कि तुम अपने सिद्धांत से नहीं डिगोगे। तुम यह क्यों नहीं सोचते, कंट कि हमारी बच्ची अजनबी और खौफनाक लोगों के हाथ पड़ गयी है। वह रो रही होगी। वे शैतान उसे तरह-तरह से तंग कर रहे होंगे समझो, कंट!"

कंट ने एलिन को अपनी बांहों में ले लिया। वह समय लड़ने का नहीं, एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने का था। उसे एलिन की भावनाओं का भी खयाल रखना होगा। उसने कहा, "मैं सब-कुछ करूंगा, डार्लिंग! सुबह होते ही मैं डैड के पास जाकर उनसे रकम का बन्दोबस्त करने को कहूंगा।"

"काश! उन लोगों को मालूम हो जाता कि हम रकम का बन्दोबस्त कर रहे हैं।"

"अखबार में एक इश्तहार निकलवा देते हैं। इश्तहार का मजमून कुछ ऐसा बनाएंगे कि तीसरे किसी आदमी को बिलकुल पता नहीं चलेगा कि हमने किससे क्या कहा है?"

"आओ, हम मजमून बनाने की कोशिश करें!"

जेब से पेंसिल निकालकर कंट ने उससे एक कागज पर लिखा, 'रात को बारह बजे पेड़ के नीचे...पचास।'

"हां, इस इश्तहार से हमारा काम बन जाएगा, और कोई कुछ जान भी न सकेगा। वे लोग इसे देखते ही समझ जाएंगे कि हमने उनकी शर्तें मान ली हैं।"

"मैं अभी जाकर यह इश्तहार कल के अखबार में छपने के लिए दे देता हूं। खर्चा नकद दे दूंगा, ताकि किसी को यह पता न चल पाए कि इश्तहार किसने दिया?"

"हां, हां, जाओ!" एलिन ने कहा, "यहां बैठने से तो कुछ भी करना अच्छा है।"

अपनी कार से दो मील का फासला तय कर कंट अखबार के दफ्तर में पहुंचा। रास्ते में चारों ओर खामोशी छायी थी। वह जान-बूझकर कार धीरे-धीरे चला रहा था, ताकि यदि बैटसी कहीं रोती-चिल्लाती हो, तो उसे सुनायी पड़ जाए।

क्लर्क ने उसका इश्तहार पढ़कर कहा, "अजीब इश्तहार है। पर, ऐसे अजीब इश्तहार भी कभी-कभी आते हैं। इसका एक डॉलर होगा, मिस्टर!"

कंट ने बिना अपना नाम बताए, एक डॉलर क्लर्क की मेज पर रख दिया।

कार की तरफ जाते-जाते उसने बुदबुदाते हुए स्वयं से कहा, 'पता नहीं, मैंने जो कुछ किया, वह ठीक है, या गलत? पर अब सोचने से क्या लाभ?'

घर आकर कंट ने सोने की कोशिश की। पर नींद न उसे आयी, न एलिन को। जब रात करीब-करीब बीत चुकी थी, तब वे कुछ देर के लिए सोये। सुबह ब्रूस ने दोनों को जगाया। वह अपनी मां से पूछ रहा था, "बैटसी अभी तक नहीं आयी, मम्मी?"

दोनों ने चुपचाप एक-दूसरे को देखा। एलिन ने फुसफुसाते हुए कहा, "इसे क्या बताया जाए?"

"वह आ जाएगी, डियर!" कंट ने उसे समझाया। उसे अत्यधिक थकान अनुभव हो रही थी।

"क्या वह आज आएगी?" ब्रूस ने फिर पूछा।

"हां, बेटे!" कंट ने कहा, और सोचा, आज शनिवार है। ब्रूस स्कूल नहीं जायेगा।

कंट ने एक क्षण सोचकर कहा, "मैं आज उसे लेने जाऊंगा।" और यह कहते ही उसकी सारी थकान जाने कहां और कैसे गायब हो गयी और आशा की एक नयी किरण ने उसके मन पर छाये अंधेरे को दूर कर दिया। आज का दिन उसे नयी आशा के साथ शुरू करना था। डैडी के पास जाकर रकम का बन्दोबस्त करना था। ऊपर से वह एलिन के इच्छानुसार कार्य कर रहा था, पर मन-ही-मन उसे आशा थी कि भूरे रंग के सूटवाला आदमी जरूर उसकी मदद करेगा। अगर उसने रकम न देने की सलाह दी, तो वह उन लोगों को रकम नहीं देगा। और इस बात को एलिन को नहीं बतायेगा। पूरी जिम्मेदारी उसी की होगी।

उसने प्रसन्न मुद्रा में ब्रूस से कहा, "तुम और तुम्हारी मम्मी बैटसी की चीजें तैयार रखना।"

अब वह सचमुच अपने को काफी हल्का अनुभव कर रहा था। नहा-धोकर उसने अपना नया सूट पहना। आज उसे काफी समझदारी से काम लेना होगा। उसे अपने विवेक का ही सहारा था।

दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखते-देखते वह सोच रहा था, अगर उससे कोई गलती हो गयी, तो क्या वह उसे एलिन से छिपा सकेगा? तब क्या होगा, जब बैटसी लौटे ही नहीं, या, वह कहीं गायब हो जाए, या उसे उसका शव कहीं देखने को मिले?

जिन पिताओं के बच्चों का अपहरण हो जाता है, उन्हें भी इसी यातना के दौर से गुजरना पड़ता होगा, जिससे वह इस समय गुजर रहा था। अगर उसने फिरौती की रकम नहीं दी और बैटसी को कुछ हो गया, तो क्या वह एलिन से सच-सच बता सकेगा, या उसमें इतनी हिम्मत होगी कि वह उसे साफ-साफ बता सके कि उससे क्या गलती हुई? दोनों ही विकल्प उसे असंगत लगते थे। उसने सोचा, "मुझे एक बार में एक ही कदम उठाना चाहिए। मैं अब यही करूंगा।"

कपड़े पहनकर जब वह बाहर जाने से पहले एलिन से मिलने जाने लगा, तब यही बात उसके मन में सर्वोपरि थी कि उसे आशावादी रहना है, आशा नहीं खोनी है।

एलिन अपने बिस्तर पर लेटी पड़ी थी, थकी-सी। कंट ने झुककर एलिन का चुम्बन लिया और धीमे से कहा, "मैं तुम्हारा नाश्ता ऊपर भिजवा रहा हूं। पहले मैं जाकर डैडी से मिलूंगा; कोई संदेश इस बीच आया, तो देखूंगा। फिर बैंक जाऊंगा।"

एलिन ने क्षण-भर के लिए अपनी आंखें खोलीं और एक नजर अपने पति को देखकर फौरन बंद कर लीं। यातना के जिस दौर से वह गुजर रही थी, वह उसके चेहरे पर कंट को दिखायी पड़ रही थी। वह जानता था कि ऊपर से शांत दिखायी देनेवाली एलिन के मन में कैसा तूफान चल रहा था।

"अपने को संभालो, एलिन! अभी और संकट आ सकते हैं," उसने एलिन से कहा।

"मैं जानती हूं," एलिन ने फुसफुसाते हुए कहा और फिर वह बोली, "मैं यहां नहीं सो सकती। ऐसा लगता है, जैसे कांटों की सेज पर सो रही हूं। मैं ब्रूस को लेकर नीचे जाती हूं।"


अब आप इसके दांतों को पीड़ादायक
दंतछिद्रों से बचा सकती हैं
सिग्नल 2 लीजिए
इसमें सबसे असरकारक फ़्लोराइड फ़ार्मूला है
जो दांतों को मज़बूत बनाकर सड़न रोकता है
Signal 2 WITH FLUORIDE
SAVES YOUR TEETH FROM CAVITIES
TOOTHPASTE
Signal 2 WITH FLUORIDE
SAVES YOUR TEETH FROM CAVITIES
Signal 2
सिग्नल 2 फ़्लोराइडयुक्त
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन
आपके परिवार के
दंतछिद्र रोकनेवाली
लिंटास-SG2.1-203 HI

वह तेजी से बाथ रूम में घुस गयी। कैन्ट को शावर के जोर से खुलने और पानी के जोर से फर्श पर गिरने की आवाज सुनायी दी।

जाते-जाते कंट ने ब्रूस से कहा, "तुम मां के साथ नीचे चले जाना।"

कंट ने अपने डैडी के पास जाकर कहा, "आप मुझे तीस हजार डॉलर देने की कृपा करें। मैं अपने शेयर बेचकर जल्दी-से-जल्दी आपको यह रकम वापस कर दूंगा।"

उसके डैडी ने चिढ़कर कहा, "मुझे यह चिन्ता नहीं है कि तुम मुझे रकम कब वापस करोगे! सवाल यह है कि आखिर, इतनी बड़ी रकम की जरूरत तुम्हें अचानक क्या आ पड़ी? वैसे, यह पूछने का मुझे कोई हक नहीं है, फिर भी..."

कंट ने घर पर नाश्ता करते समय ही यह निश्चय कर लिया था कि अगर बैटसी के अपहरण का कोई समाचार अखबारों में नहीं छपा, तो वह अपने माता-पिता को भी उसके बारे में नहीं बताएगा। उसने अखबार देखा, तो उसमें बस, उसका छोटा-सा इश्तहार ही छपा था, 'व्यक्तिगत' स्तंभ में। उसने रोज से कहा था, "तुम्हारी मालकिन जल्दी ही नीचे आने वाली हैं। उससे पहले सब नौकरों को यहां आने को कहो।"

चारों नौकर सहमे हुए-से उसके सामने आकर खड़े हो गये थे। मौली रो रही थी।

"प्लीज!" उसने मौली की तरफ देखते हुए कहा था और सोचा था कि क्या भूरे रंग के सूटवाले आदमी के पास मौली को ले जाना ठीक रहेगा? नहीं, शायद ठीक नहीं रहेगा। कल रात उसने पीटर पर भी संदेह किया था, और इस समय पीटर कैसा चुपचाप, दुम दबाये खड़ा था।

उसने अनमने स्वर में नौकरों से कहा था, "अभी तक तुम लोगों ने मेरी बात मानी है, इसके लिए शुक्रिया! अगर अखबारवालों को इस घटना के बारे में पता न चला, तो शायद बैटसी हमें वापस मिल सकती है। बस, यही एक उम्मीद है। अगर तुम सब अंत तक इस खबर को अपने तक ही महदूद रखो, तो मैं तुममें से प्रत्येक को सौ डॉलर बतौर इनाम के दूंगा।"

"शुक्रिया, हुजूर!" रोज और साराह ने कहा था।

मौली फिर रोने लगी और पीटर बुदबुदा रहा था, "मुझे सौ डॉलर नहीं चाहिए, मुझे बैटसी वापस चाहिए!"

पीटर पर जो थोड़ा-बहुत सन्देह कंट के मन में शेष था, वह भी अब दूर हो गया। उसने भावुक होकर हाथ मलते हुए कहा था, "बैटसी वापस आ जाए, मैं भी यही चाहता हूं।"

उसे मालूम था कि उसके डैडी उसे भेदती हुई निगाहों से देख रहे थे। इसके बावजूद, उसने अपना आत्मसंयम कायम रखा। डैडी उससे पूछ रहे थे, "कहीं सट्टेबाजी में तो तुम नहीं हार गये? मुझसे पूछते, तो मैं इसकी सलाह हरगिज न देता! मार्केट की हालत ठीक नहीं है।"

कंट ने गंभीरतापूर्वक मन-ही-मन सोचा, जोखिम तो वह अब लेगा और जोखिम भी कोई मामूली नहीं, वह अपनी बच्ची की जिंदगी के साथ जोखिम लेने जा रहा था।

"मुझे इस रकम की सख्त जरूरत है। आपकी मर्जी न हो, तो मैं अपना मकान गिरवी रख दूंगा।" कंट उत्तेजित-सा होकर बोला।

"क्या बकवास कर रहे हो? कोई सुनेगा, तो क्या कहेगा?"

"शुक्रिया, डैडी!" कंट ने कहा और बैंक की ओर चल दिया।

दिन आगे बढ़ता रहा। कंट को यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि दिन कितनी तेजी से बीत रहा था। एक घंटे बाद दुपहर हो जाएगी और फिर उसे भूरे रंग के सूटवाले आदमी से मिलने जाना होगा। वहां से घर वापस आने पर उसने एलिन को पोर्च में धूप में बैठे पाया। वह एक किताब पढ़ रही थी, और ब्रूस अपने खिलौनों के साथ खेल रहा था। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि इस घर में बच्ची के अपहरण की घटना घटी है।

"रकम का इन्तजाम हुआ?" एलिन ने उससे पूछा।

उसने अपनी जेब को छूते हुए कहा, "हो गया।"

दोनों ने चुपचाप लंच लिया। सिर्फ ब्रूस बीच-बीच में कुछ बोलता जाता था। एलिन ने बहुत कम खाया, पर कंट उसका शुक्रगुजार था कि वह आत्मसंयम से काम ले रही थी और उसके साथ सहयोग कर रही थी।

ब्रूस से लंच के दौरान बातें करते-करते कंट ने एलिन की ओर मुड़कर कहा, "शाबाश! बस, ऐसे ही अपने ऊपर काबू रखना। मैं चलता हूं। काफी नहीं चाहिए।"

"हां," एलिन ने थके स्वर में कहा, "काश! मैं भी कुछ कर सकती!"

एलिन का चुम्बन लेकर कंट जाने लगा।

कल प्रतीक्षा करना उसके लिए असह्य हो गया था। पर, आज जब कि उसे फेडरल पुलिसवालों से मिलना है, उसकी अनिश्चितता समाप्त हो रही थी।

जिस 'बार' में उसे जाने को कहा गया था, वहां के लिए वह अकेले ही रवाना हो गया। वह एक नया मार्ग था। लेकिन जो दृश्य उसे रास्ते में दिखायी दे रहे थे, वे नये न थे, उन्हें वह रोज ही देखता था। दो दिन पहले, अगर कोई उससे कहता कि कोई धन की खातिर उसकी बच्ची को ले जाएगा, तो वह उसपर कतई विश्वास न करता। पर आज वह डरावना खयाल हकीकत बन चुका था।

वह सोच रहा था कि उसकी बच्ची का अपहरण रुपये के लिए ही किया गया है। और कोई कारण नहीं हो सकता था। उसका कोई शत्रु नहीं था। जो दो-चार शत्रु थे भी, वे इस किस्म के लोग नहीं थे, जिनसे यह आशा की जा सके कि वे उससे बदला लेने के लिए, उसकी बच्ची का अपहरण करेंगे। क्या उसके डैडी के किसी शत्रु ने यह जघन्य कार्य किया होगा?

सुस्त कर्मचारियों को उसके डैडी कभी बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। कई ऐसे कर्मचारियों को वे निकाल चुके थे। क्या उनमें से किसी ने यह काम किया होगा? यह संभव तो था, पर इस बारे में निश्चय से कुछ कहना कठिन था।

'बार' के सामने जैसे ही उसने अपनी कार पार्क की, उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। शनिवार का दिन होने से 'बार' में काफी भीड़ थी।

'बार' में घुसते ही उसने भूरे रंग का सूट पहने उस आदमी को देख लिया, जिसकी उसे तलाश थी। जैसा कि उसने फोन पर बताया था, उसके कोट की जेब में नीले रंग का रूमाल दिखायी दे रहा था। उसकी मेज पर बैठकर कैंट ने बेटर को ऑर्डर दिया, "व्हिस्की और सोडा!"

'बार' में बैठे लोग अपनी बातों में मगन थे और उन दोनों की ओर किसी का ध्यान न था।

"इस गांव में ऐसा 'बार' होगा, मुझे कतई उम्मीद न थी।" कैंट ने उस आदमी से कहा, जो उसकी ओर देखकर मुस्करा रहा था।

वह नाटे कद का आदमी बहुत चुस्त और स्वस्थ था। उसका स्वर काफी मधुर था। उसे देखकर यह कल्पना करना कठिन था कि वह फेडरल पुलिस विभाग में किसी महत्वपूर्ण पद पर होगा।

"मेरे साथ चलना पसंद करेंगे?" कैंट ने सहसा उससे पूछा।

"अगर आप साथ ले जाना पसंद करें, तो..." उस आदमी ने उत्तर दिया।

उस आदमी के इस उत्तर से कैंट को लगा कि वह उसे पहले से जानता था। इससे कैंट का दिल बैठ-सा गया। बिल की रकम अदा करके, वह उसके साथ बाहर आया।

'बार' के बाहर आते ही उस नाटे आदमी में बड़ी तब्दीली आ गयी। वह जैसे चूहे से शेर बन गया। उसने कैंट से आदेश के स्वर में कहा, "उत्तरी दिशा में कार को ले चलो! वहां एक कच्चा रास्ता है, उस पर!" उस सड़क पर आने के बाद उसने पूछा, "मिस्टर क्रॉथर्स, अब बताइए कि क्या हुआ था?"

वह आदमी बड़ी गंभीरता से कैंट की कहानी सुनने लगा। कैंट को इस बात की खुशी थी कि वह सब बातों और वाक्यों को संदेह की दृष्टि से देख रहा था। उसे ऐसे ही आदमी की जरूरत थी। अपनी कहानी सुनाने के बाद, कैंट ने उससे पूछा, "आपका नाम क्या है?".

"नाम जानकर आप क्या करेंगे?" उस आदमी ने पूछा, "मैं तुम्हारी मदद के लिए वाशिंगटन से भेजा गया हूं। बस, इतना ही काफी नहीं है क्या?"

"हमारा कोई दुश्मन नहीं है, यह मैं आपको बता ही चुका हूं," कैंट ने कहा।

"बच्चों का अपहरण दुश्मनी की वजह से नहीं किया जाता।"

"आपका क्या खयाल है? क्या यह काम किसी पेशेवर डाकू का है?" कैंट ने उससे पूछा।

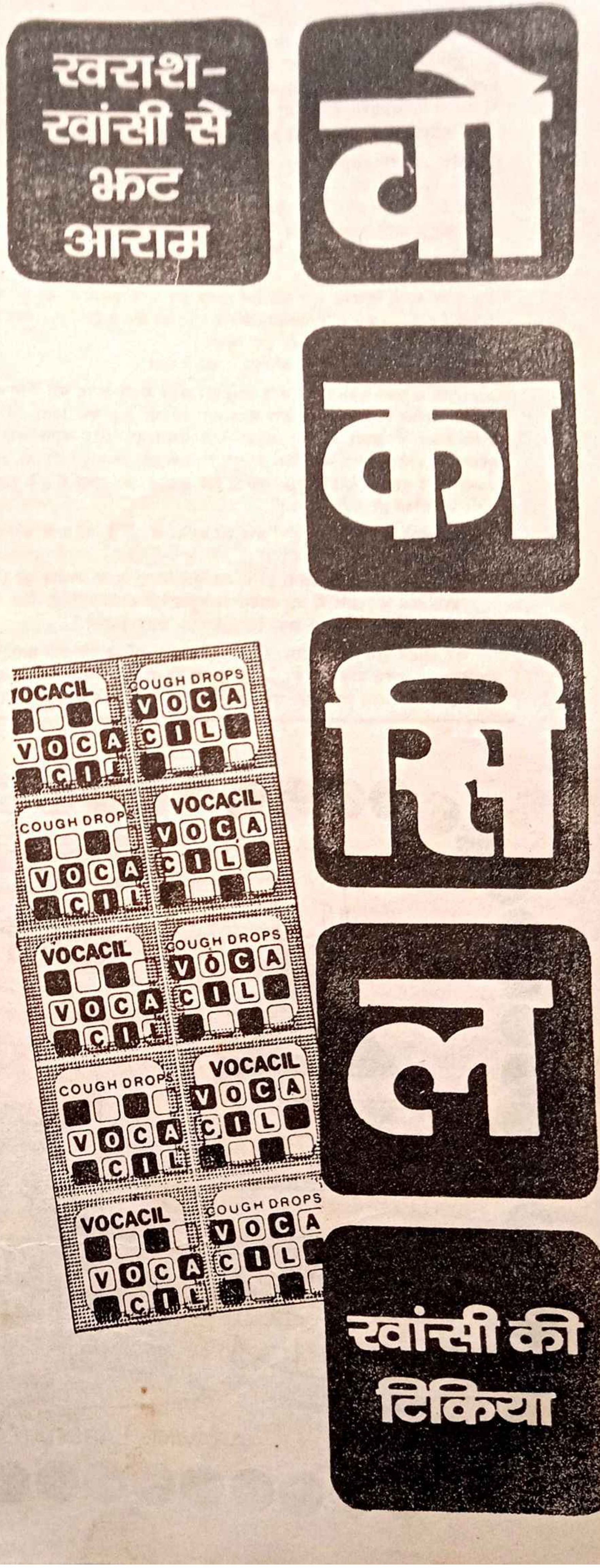
"डाकू लोग बच्चों का अपहरण कभी नहीं करते," उस आदमी ने बुदबुदाते हुए कहा, "अपहरण हमेशा कोई मामूली-से आदमी अपने दो-चार दोस्तों की मदद से करता है।"

"अपहरण को खतरनाक अपराध क्यों माना जाता है?"

"इसलिए कि अपहरणकर्त्ता हमेशा पकड़ा जाता है, हमेशा!" कंधे उचकाकर उस आदमी ने बड़ी लापरवाही से कहा।

कैंट को उसकी यह बात सुनकर बड़ी राहत मिली। उसने कहा, "मेरी पत्नी कहती है कि हमें फिरौती की रकम दे देनी चाहिए। लेकिन मैं ऐसा नहीं मानता। आपका क्या खयाल है?"

"आपकी पत्नी ठीक कहती हैं, मिस्टर क्रॉथर्स, बिलकुल ठीक! हम लोग जादूगर नहीं हैं। जब तक फिरौती नहीं दी जाती, हमारा अपहरणकर्त्ताओं से



सम्पर्क नहीं हो पाता । मुझे ऐसे दो मामलों के बारे में पता है, जिनमें फिरौती नहीं दी गयी और हम कुछ भी न कर पाये । बच्चे भी नहीं मिले ।"

"क्या बच्चों को मार डाला गया था ?" कंट ने पूछा ।

"कौन जाने ? एक तो मर गया था, दूसरे का कुछ पता न चला ।"

एक अजीब खयाल कंट के मन में आया । बेटसी उसे बिलकुल न मिले, इससे तो यह बेहतर होगा कि उसे उसका शव प्राप्त हो जाए । इससे बेटसी के बारे में निश्चयपूर्वक मालूम तो हो जाएगा ।

"बताइए, मुझे क्या करना है, मैं वही करूंगा !" कंट ने कहा ।

एक सिगरेट सुलगाते हुए उस नाटे आदमी ने कहा, "पहली बात तो यह है कि अब जो-कुछ करो, यह सोचकर करो, कि जैसे तुमने हमसे कभी सम्पर्क किया ही न हो । उन लोगों को नोट देने से पहले नोटों के नम्बर नोट कर लेना । उनके पत्र में ऐसा न करने को कहा गया होगा, पर उस पर ध्यान न देना । उन्हें यह कैसे मालूम होगा कि तुमने नम्बर नोट किये हैं या नहीं ? उन्हें रकम दे दो और फिर देखो कि वे आगे क्या करने को कहते हैं ? यह काम करने के बाद, तुम मुझे इस नम्बर पर फोन करना ।" कहकर उसने अपनी जेब से एक कागज निकालकर कंट के कोट की जेब में रख दिया और फिर कहा, "हम तुम्हारे फोन को भी 'टैप' करेंगे ।"

"आपको जो करना हो, कीजिए," कंट ने कहा ।

"हमें आपका ऐसा ही सहयोग चाहिए । जैसा माता-पिता, कहें वैसा करो, हमें यही आदेश दिये जाते हैं । आप समझदार आदमी हैं । एक पिता तो हमें ऐसा देखने में आया था, जो बंदूक लिये घूमता था, और कहता था, 'मुझे पुलिस की कोई जरूरत नहीं है ।' लेकिन फिरौती की रकम देने पर भी उसका बच्चा उसे वापस नहीं मिला--उसकी इस हरकत की वजह से हमें कुछ भी करने का मौका ही नहीं मिला ।"

कुछ सोचकर कंट ने कहा, "आप जो करना चाहते हैं, शौक से कीजिए । पैसों की चिन्ता बिलकुल न करें ।"

"ठीक है । फिलहाल इतना ही । अब मुझे 'बार' के पास छोड़ दो ।"

'बार' तक के रास्ते में वह आदमी बिलकुल नहीं बोला । विदा लेते वक्त उसने इतना ही कहा, "गुड लक ! . . . अच्छा, फिर मिलेंगे !"

घर लौटते समय कंट सोच रहा था कि वह एलिन को क्या बताएगा । बताने लायक उसके पास क्या था ? वह इतना ही तो कह सकेगा कि पुलिस का जो आदमी उसे मिला था, वह उसे विश्वसनीय लगा । उसके पीछे अमरीकी सरकार की पूरी शक्ति थी । सारे देश की पुलिस उसकी बच्ची के लिए सक्रिय थी । यह बड़ी सुकून देनेवाली बात थी ।

घर लौटने पर उसने एलिन को हाल में प्रतीक्षा करते पाया । उसने एलिन को बांहों में लेकर, उसका चुम्बन लेकर कहा, "उस आदमी ने कोई खास बात नहीं की । सिर्फ इतना कहा कि हमें फिरौती की रकम दे देनी चाहिए । इस बारे में वह तुमसे सहमत है । उस अद्भुत आदमी के साथ बातें कर मुझे यकीन हो गया है कि बेटसी हमें जरूर वापस मिल जाएगी । . . . आओ, हम नोटों के नम्बर नोट कर लें ।"

नोटों के नम्बर एलिन को नोट कराता हुआ बीच-बीच में कंट उसे यह भी समझाता जाता था कि वे जो-कुछ कर रहे हैं, ठीक कर रहे हैं ।

सवा बारह बजे कंट उस स्थान की ओर रवाना हुआ, जहां अपहरणकर्त्ताओं ने उसे रकम रखने के लिए कहा था । उस स्थान से वह बचपन से ही परिचित था, इसलिए वहां जाने में उसे कोई कठिनाई नहीं हो रही थी ।

पुराने पेड़ के नीचे खड़े होकर उसने अपनी जेब से कार्डबोर्ड का वह बक्सा निकाला, जिसमें उसने और एलिन ने नोटों को बांधकर रखा था, और पेड़ के नीचे रख दिया । उसके बाद वह अपनी कार की ओर लौटने लगा । वातावरण शांत था । वह जानता था कि उसकी बच्ची के अपहरणकर्त्ता आस-पास ही कहीं-न-कहीं मौजूद होंगे और उसे देख रहे होंगे ।

चलते-चलते सहसा वह ठिठक गया और उसने मुड़कर पीछे देखा । उसे लगा कि बेटसी कहीं दूर से हलके से चिल्लायी थी । पर ध्यान से सुनने पर उसे वह आवाज फिर नहीं सुनायी दी । वह फिर जैसे ही कार की ओर चला, तो उसका एक पांव जमीन पर फैली एक लम्बी सुतली में उलझ गया । तब रस्सी का पीछा करते-करते वह पत्थर के एक टुकड़े के पास आया, जिसके नीचे एक कागज दबा पड़ा था । उसने कागज उठाकर, सिगरेट-लाइटर की रोशनी में पढ़ा कागज पर फूहड़ लिखावट में यह लिखा था--

'अगर सब कुछ वैसे ही घटता रहा, जैसा हम चाहते हैं, तो कल रात बारह बजे तक तुम्हारी बच्ची तुम्हें वापस मिल जाएगी । उसे लेने के लिए तुम्हें अपने नौकर पीटर के घर जाना होगा । अगर तुमने कोई धोखेबाजी की, तो तुम्हें बच्ची मुर्दा मिलेगी ।'

पुर्जा पढ़ने के बाद कंट ने सोचा कि अब सब कुछ उसी पर निर्भर करता है । उसने तय किया कि वह एलिन के पास तभी जाएगा, जब वह तय कर लेगा कि अब उसे कौन से कदम उठाने हैं ।

वह जानता था, कि एलिन उसकी योजना के बारे में सुनकर क्या कहेगी। वह कहेगी, 'अगर बैटसी हमें जिन्दा वापस मिल जाती है, तब तुम कुछ मत करो। हमें सबसे पहले बैटसी के बारे में सोचना है।' शायद उसकी बात ही सही हो। कंट ने सोचा कि उसे चुप ही रहना चाहिए, ताकि अपहरण-कर्त्ताओं को कोई शिकायत न रहे। अगर बैटसी सकुशल मिल गयी, तब उसका हर कदम सही साबित होगा। नहीं तो...

कार ड्राइव करते अब उसके हाथ पहले की भांति कांप नहीं रहे थे। वह सोच रहा था, कि क्या उन लोगों को पता चल जाएगा कि मैंने फेडरल पुलिस से सम्पर्क किया है? तब क्या वे अपनी धमकी पूरी करेंगे और बैटसी को मार डालेंगे? फेडरल पुलिस की जरा सी भी लापरवाही बैटसी की मौत का कारण बन सकती है। वह सब संभावनाओं पर गौर कर रहा था।

विचार-प्रवाह में बहते-बहते उसे सहसा याद आया कि उस नाटे आदमी से मिलकर उसे कितनी राहत मिली थी, कितना बल मिला था! वह जानता था कि उसे क्या करना है। फिर उसे उन माता-पिताओं की याद आयी, जिन्होंने अकेले ही अपने बच्चों के अपहरण की समस्या को हल करने की कोशिश की थी।

घर आने पर उसने एलिन को अपने बिस्तर में लेटे पाया। उसकी आंखें मुंदी थीं, पर अपने पति के मुंह से 'डार्लिंग' सम्बोधन सुनकर, उसने आंखें खोल दीं। कंट ने वह कागज एलिन के हाथ में थमा दिया और आहिस्ता से उसके पास बैठ गया।

"चौबीस घंटे और इंतजार करना होगा? यह मेरे बस का नहीं है!" एलिन ने कहा।

"इन्तजार तो करना ही होगा, डार्लिंग! और कोई चारा नहीं है!" कंट ने तय कर लिया था कि यदि एलिन अब बिखरी, तो वह उसके साथ सख्ती से पेश आएगा।

"इन्तजार नहीं करोगी, तो और क्या करोगी? अगर तुम स्थानीय पुलिस के पास जाओगी, तो कल अखबार शोर मचा देंगे।"

एलिन ने सिर हिलाकर कहा, "मैं कोई गलत काम नहीं करूंगी।"

कंट का मन हो रहा था कि एलिन को अपनी बाहों में ले ले, पर उसे ऐसा करने की हिम्मत न हुई।

कंट सोचने लगा कि जब यह सारा काण्ड समाप्त हो जाएगा, तब वह एलिन से कहेगा, 'तुमने बड़ी हिम्मत से काम लिया था, एलिन! अब मेरी निगाह में तुम्हारी इज्जत पहले से ज्यादा हो गयी है!' पर इस वक्त पर उसकी प्रशंसा करने से कोई लाभ न था। इस वक्त दोनों को शांति से काम लेना था।

"उठकर कुछ खाने को तो दो," कंट ने कहा, "मैंने दिन-भर कुछ नहीं खाया है।"

एलिन ने भी खाना नहीं खाया था। वह यह सोचती हुई उठी कि कुछ करने से उसका जी बहलेगा। उसने कहा, "अच्छा, कंट! मैं ठंडे पानी से मुंह धोकर नीचे जाती हूं।"

"मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगा।" उसने उत्तर दिया।

उसके जाते ही कंट को लगा कि अब वह अवसर आ गया है, जिसकी वह प्रतीक्षा कर रहा था। उसे इस अवसर से लाभ उठाना ही होगा। उन बदमाशों को रकम मिल चुकी होगी और अब देखना था कि वह सरकारी आदमी अब क्या करता है। उसने वह नम्बर डायल किया, जो एक कागज पर लिखकर उस आदमी ने उसकी जेब में डाल दिया था। फोन मिलते ही, उसे उस आदमी की परिचित आवाज सुनायी दी, "हलो!"

"मैं कंट कॉंथर्स बोल रहा हूं। मुझे उन शैतानों का न्यौता मिला है।"

"अच्छा?" उस आदमी ने चौकन्ने स्वर में पूछा।

"कल बारह बजे उन्होंने मुझे बुलाया है।"

"अच्छा? कहां? गालिबन रात के बारह बजे ही बुलाया होगा। ये लोग हमेशा रात को ही बुलाते हैं।"

"उसने मुझे मेरे माली के घर बुलाया है।"

"ठीक है, मिस्टर कॉंथर्स! आप वहां जरूर जाइये और इस बात को बिलकुल भूल जाइए कि आपने मुझे फोन किया था।" कहकर उसने फोन रख दिया।

फोन रखे जाने के बाद भी कंट उस आदमी से कुछ और सुनने की आशा करता रहा। पर उसे अब क्या सुनायी दे सकता था? उसके चारों ओर सब-कुछ उसी प्रकार घट रहा था, जैसे पहले घटता आया था, पर वह जानता था कि बहुत-कुछ बदल गया है।

कंट ने सीढ़ी पर चढ़ती हुई एलिन के पदचाप सुने, तो वह उससे मिलने के लिए उठ खड़ा हुआ। उसके आने पर मुस्कराता हुआ बोला, "मुझे लग रहा है कि..."

"क्या लग रहा है ?" एलिन ने भी मुस्कराते हुए पूछा ।

"यही कि हम जीतनेवाले हैं," उसने एलिन को डाइनिंग रूम की ओर ले जाते हुए कहा । वैसे, मन-ही-मन वह सोच रहा था कि मालूम नहीं बैटसी जीवित है या नहीं ? उसने तय किया कि वह अब बैटसी के बारे में बिलकुल नहीं सोचेगा । उसने एलिन से कहा, "मुझे भूख लगी है । तुम भी अब खा लो । कल तक हम जीत जाएंगे और बैटसी हमें मिल जाएगी ।"

पर जब कल आया, तो कैंट को जीत उतनी ही दूर लगी, जितनी पहले थी । वक्त जैसे ठहर गया था और किसी भी भांति उसे गतिमान नहीं किया जा सकता था । इस अन्तराल को काटने के लिए पति-पत्नी ने घर के छोटे-मोटे काम करने में मन लगाया । उनके सौभाग्य से उस दिन रविवार था । कैंट की माता ने फोन किया था कि वह और उसके पिता सर्दी की वजह से नहीं आ सकेंगे । वे हर रविवार अपने बेटे के साथ ही गुजारते थे ।

पूरे दिन कैंट, एलिन और ब्रूस एक साथ रहे । दुपहर तक कैंट ने घर के वे सब छोटे-मोटे काम निबटा दिये थे, जो वह पिछले एक वर्ष से निबटाने की सोच रहा था । लेकिन अभी भी सूरज डूबने में कई घंटे शेष थे ।

इन घंटों को मनोरंजन के साथ व्यतीत करने के लिए दोनों ने ब्रूस के साथ खेलना आरंभ किया । परन्तु उसके साथ वे कब तक खेलते ? जब उसके खाने का समय हुआ, तो वह खाना खाकर सो गया । उसे नर्सरी में सुलाकर वे दोनों उसके पासवाले बेडरूम में बैठकर कुछ पढ़ने लगे ।

कैंट को लग रहा था कि जैसे उसका सोच-विचार शांत हो गया है । कल वह जरूर कुछ सोच सकेगा, कुछ कर सकेगा । पर इस वक्त वह बस आधी रात का इंतजार ही कर सकता था ।

जैसे ही रात के ग्यारह बजे, वह उठ खड़ा हुआ और झुककर एलिन का चुम्बन लेकर बोला, "अब मैं जाता हूं ।"

एलिन एक क्षण के लिए उससे चिपटी रही और फिर अलग हो गयी । दोनों के बीच यह मूक समझौता अभी तक कायम था कि बैटसी के वापस आने तक उन्हें अपना मानसिक संतुलन नहीं खोना है ।

वह अपनी कार बड़ी शांति के साथ चला रहा था । सड़क के अंत पर, जो पीटर के घर से सिर्फ छह घर दूर था, उसने कार रोक दी और उतरकर पैदल चलने लगा । चलते-चलते वह पीटर के टूटे-फूटे दरवाजे के पास आ गया । पीटर के घर में कोई रोशनी नहीं थी । उसने हल्के से दरवाजे को थपथपाया । अंदर से पीटर की आवाज सुनायी दी, "कौन है ?"

कैंट ने धीमे स्वर में कहा, "मुझे अन्दर आने दो," दरवाजा खुलते ही कैंट ने कहा, "मैं हूं, पीटर ! क्रांथर्स ! मुझे घर के अन्दर आने दो । वे लोग बच्ची को तुम्हारे घर लानेवाले हैं !"

"मेरे घर में ? ठहरिए, मैं बत्ती जला दूं ।"

"नहीं, पीटर, बत्ती मत जलाओ । मैं यहां अंधेरे में बैठना पसंद करूंगा । दरवाजे में ताला भी मत लगाना । मैं दरवाजे के पास बैठा रहूंगा । कोई कुर्सी है क्या ?"

पीटर ने एक कुर्सी लाकर उसके सामने रख दी । वह उस पर बैठ गया । तब उसने अनुभव किया कि वह कांप रहा है ।

"मिस्टर क्रांथर्स, क्या आप कुछ पीना पसंद करेंगे ? मेरे पास थोड़ी 'कॉर्न लिकर' है ।"

"शुक्रिया, पीटर !"

कुछ सेकण्ड बाद पीटर ने टिन का एक प्याला उसके हाथों में थमा दिया । वह उस बदबूदार शराब को एक घूंट में पी गया और उसे फौरन पेट में एक जलन-सी अनुभव हुई, पर उसका यह लाभ अवश्य हुआ कि उसका कंपन रुक गया ।

पास ही अंधेरे में खड़ा पीटर कैंट को एक भूत के समान लग रहा था । उसने पीटर को फुसफुसाते सुना, "मैं और क्या कर सकता हूं, सरकार ?"

"बस, और कुछ नहीं । अब तो सिर्फ इन्तजार करना है ।"

"मैं भी आपके साथ इन्तजार करूंगा । मेरी बीवी इस वक्त तो सो रही है । मुझे नींद नहीं आ रही है ।"

कैंट ने बुदबुदाते हुए कहा, "हमें चुप रहना चाहिए । कुछ बोलो मत ।"

"नहीं बोलूंगा, सरकार !"

अब कैंट को फिर यातना के उसी दौर से गुजरना पड़ रहा था, जिससे वह सारे दिन गुजरा था । उसे चुप रहना था । और चुप रहते हुए इन्तजार करना था कि अब क्या होता है ?

खाली दिमाग से कैंट सोचने लगा, मान लो उस भूरे रंग के सूटवाले उस आदमी से कोई गलती हो जाए, और उसकी वजह से बैंटसी को वहां लानेवाला आदमी घबरा जाये, तो क्या होगा ? तब वह सारी रात बैठा बैंटसी के आने का इन्तजार करता रहेगा और उधर घर पर एलिन अपनी बेटी का इन्तजार करती रहेगी और ज्यों-ज्यों देर होगी उसकी आशंका और चिन्ता बढ़ती जाएगी ।

दिन की अपेक्षा उसे रात का इन्तजार अधिक कष्टदायक लग रहा था । वह पीछे मुड़कर अपने जीवन की ओर देख रहा था और सोच रहा था कि वह और एलिन कैसे वर्तमान परिस्थितियों में फंस गये ? अमरीका को एक आजाद मुल्क कहा जाता है । यह आजादी कैसी, जिसमें कुछ बोलने की आजादी भी न हो, और आपके होंठों पर अपराध के खिलाफ कुछ कहने के लिए ताला लगा दिया गया हो । वह कुछ बोल सकने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था, क्योंकि उसे डर था कि ऐसा करते ही वह संकट में घिर जाएगा और उसकी बेटी को जान से मार दिया जाएगा । खुदा न करे, बैटसी उसे मृतावस्था में मिले ! तब वह एलिन को हर्गिज यह नहीं बताएगा कि उसने भूरे रंग के सूटवाले आदमी से सम्पर्क किया था । आखिर, उस जैसे इज्जतदार आदमी को किसी ऐसे-वैसे आदमी के सामने झुकने की क्या जरूरत है ? लेकिन यदि बैटसी उसे जिन्दा न मिली, तो उस आदमी से मिलने से पहले, वह खुद अपनी ही जान ले लेगा ।

वह अपने दोनों हाथ, एक दूसरे में उलझाये हुए बैठा था और अपने को काफी अशक्त और अस्वस्थ अनुभव कर रहा था । इसके बावजूद, वह उठ नहीं सकता था ।

तभी उसे किसी के गाने की आवाज सुनायी दी ।

पीटर ने फुसफुसाते हुए उससे कहा, "शायद कोई शराबी है ।"

कैंट ने कोई जवाब नहीं दिया । सड़क पर फिर खामोशी छा गयी ।

और तभी अंधेरे में, आधी रात बीत जाने के कई घंटे बाद, उसने दरवाजे पर किसी कार के रुकने की आवाज सुनी । फिर दरवाजे के खुलने और बंद होने की आवाज हुई और फिर कार के जाने की आवाज सुनायी दी ।

कैंट ने उठकर पीटर से कहा, "मुझे सीढ़ियों के पास ले चलो ।"

आज से ज्यादा अंधेरी रात उसके जीवन में पहले कभी नहीं आयी थी । बाहर आने पर उसे आकाश में कुछ तारे चमकते दिखायी पड़े । दरवाजे के पास आकर पीटर रुक गया और उसने कैंट को आगे बढ़ने से रोकते हुए कहा, "अरे, यह तो बच्ची ही है !"

कैंट ने बैटसी को अपनी गोद में उठाया, तो उसका दिल धड़क रहा था । उसने बच्ची को अपने कांपते हाथों से टो-टोकर देखा, बच्ची जीवित थी । उसने बुदबुदाते हुए पीटर को बताया । वह बच्ची को लेकर घर के अन्दर आया । पीटर ने मोमबत्ती जलाकर रोशनी की । अब कैंट ने अपनी प्यारी बेटी बैटसी को देखा । उसकी सफेद पोशाक काफी गंदी हो गयी थी और उसके शरीर पर किसी आदमी का स्वैटर पड़ा था । वह गहरी सांसें ले रही थी ।

"लगता है, उन लोगों ने बेचारी को कुछ दिया है," पीटर ने बुदबुदाते हुए कहा ।

"मैं इसे घर ले जाता हूं । आओ, मुझे मेरी कार तक पहुंचा दो ।" कैंट ने धीमे से कहा ।

"बहुत अच्छा," कहकर पीटर ने मोमबत्ती बुझा दी ।

दोनों धीरे-धीरे चलते हुए सड़क पर आये और उस ओर जाने लगे, जहां कार खड़ी थी । पीटर के हाथ कैंट की बाहों पर थे । कैंट सोच रहा था, घर पहुंच कर मैं...

"आप कहें, तो मैं आप को घर तक छोड़ आऊं ?" पीटर ने पूछा ।

"हां, यही बेहतर होगा," कैंट ने उत्तर दिया और वह बैटसी को गोदी में लिये कार की पीछे की सीट पर बैठ गया । बैटसी की शिथिल अवस्था देखकर उसे डर लग रहा था । पर खुदा का लाख-लाख शुक्र कि वह सांसें ले रही थी । बस कुछ मिनटों में ही बैटसी अपनी मां की गोदी में खेल रही होगी ।

"वहां रुकना मत, पीटर ।" कैंट ने कहा ।

"जी, बिलकुल नहीं," पीटर ने जवाब दिया ।

एलिन दरवाजे पर खड़ी उनका इन्तजार कर रही थी । कार को देखते ही उसने दरवाजा खोलकर, बिना कुछ बोले, बैटसी को अपनी गोदी में ले लिया । कैंट ने दरवाजा बंद कर दिया । वह अपने को बहुत कमजोर और बीमार-सा महसूस कर रहा था । उसने हांफते-हांफते कहा, "मैं तुमसे कहना चाहता था... मालूम नहीं, मुझे तुमसे कहना चाहिए या नहीं ?..." आगे वह कुछ न कह पाया । उसे लगा, उसे चक्कर आ रहा है और वह जमीन पर गिर पड़ेगा ।

एलिन ने सचमुच कमाल कर दिया था । वाकई, कमाल की औरत थी वह ! इस नाजुक मौके पर भी वह चट्टान की भांति अडिग रही ।

अगले दिन सुबह जब कैंट सोकर उठा, तो उसने अपनी प्यारी पत्नी को, जो पिछले दो दिनों में असह्य यातनाओं के दौर से गुजरी थी, अपने पास लेटे पाया । वह मुस्करा रही थी । वह पहले-जैसी ही प्रसन्न थी । हां, उसका रंग थोड़ा पीला पड़ गया था ।

एलिन ने उससे कहा, "डार्लिंग, तुम आज काम पर नहीं जाओगे... डाक्टर ने कहा है..."

"डाक्टर ने ?" उसने आश्चर्य से पूछा ।

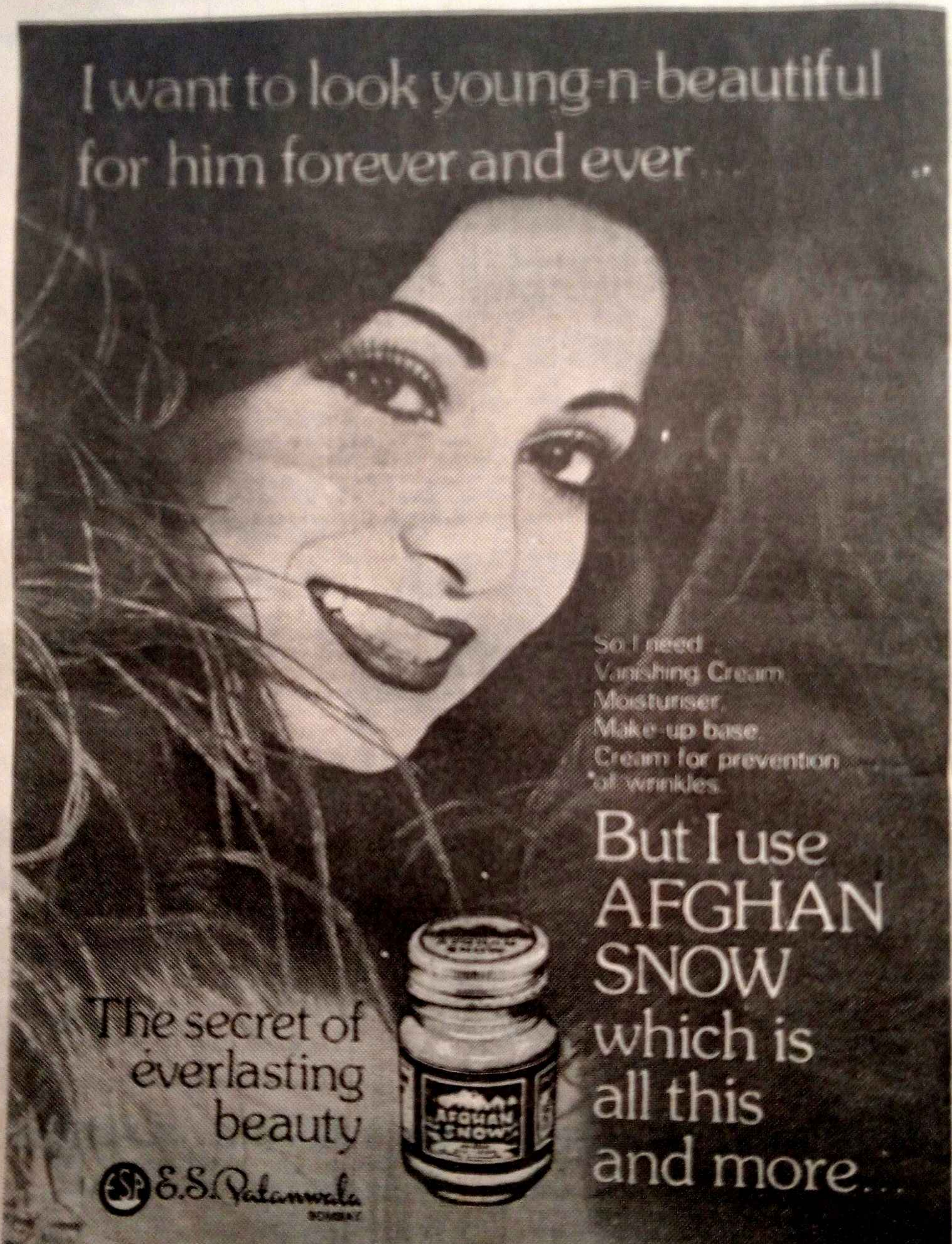
"हां, मैंने रात तुम्हें और बैटसी को देखने के लिए डाक्टर को बुलाया था । उसने वायदा किया है कि वह बैटसी की बात किसी को नहीं बताएगा ।"

"मैं वाकई पागल हूं," कैंट ने स्तब्ध होकर कहा, "बैटसी कहां है ? कैसी है ?"

"वह ठीक हो जाएगी," एलिन ने कहा ।

"नहीं, तुम मुझे ठीक-ठीक बता नहीं रही हो ।"

"आओ, खुद अपनी आंखों से देख लो ।"


I want to look young-n-beautiful
for him forever and ever...
So I need
Vanishing Cream,
Moisturiser,
Make-up base,
Cream for prevention
of wrinkles.
But I use
AFGHAN
SNOW
which is
all this
and more...
The secret of
everlasting
beauty
E.S. Patanwala
BOMBAY
AFGHAN SNOW

वह लड़खड़ाता हुआ उठा। उसे याद आया, कल रात उसके पैरों ने बिल्कुल जवाब दे दिया था। वे दोनों नर्सरी में आये। वहां पलंग पर उसकी प्यारी बच्ची बेटसी सो रही थी। वह बड़े स्वाभाविक ढंग से सो रही थी। चेहरा थोड़ा पीला जरूर पड़ गया था।

"उसे इस काण्ड की याद भी नहीं रहेगी। अच्छा हुआ, वे लोग ब्रूस को नहीं ले गये।" एलिन ने कहा।

पर केंट ने कोई जवाब नहीं दिया। वह कुछ सोच नहीं सकता था। सोचने की कुछ जरूरत भी नहीं थी।

"जाओ, वापस जाकर सो जाओ। मैं तुम्हारा नाश्ता लाती हूं। ब्रूस अपना नाश्ता नीचे ले रहा है।" एलिन ने कहा।

बिस्तर पर जाते हुए केंट को बड़ी शर्म लग रही थी। शर्म इसलिए कि वह बहुत कमजोरी महसूस कर रहा था। उसने सोचा, 'कॉफी पीकर मैं ठीक हो जाऊंगा। फिर शायद मैं बैठ भी सकूंगा।'

फिलहाल बिस्तर पर लेटे-लेटे उसे बड़ा अच्छा लग रहा था। वह अत्यन्त कृतज्ञ अनुभव कर रहा था, सबके प्रति कृतज्ञ। पर केंट जब तक जिन्दा रहेगा, इस काण्ड की याद से ही उसे पसीने छूटने लगेंगे, इसमें कोई संदेह न था।

उसके पलंग के पास रखे फोन की घंटी बजी, तो उसने रिसीवर उठाकर कहा, "हलो!"

"हलो, मिस्टर कांबर्स! लड़की की हालत अब ठीक है न।" आवाज भूरे रंग के सूटवाले आदमी की थी।

"वह बिलकुल ठीक है," केंट ने लगभग चिल्लाकर कहा।

"बड़ी खुशी की बात है। खैर, वह आदमी पकड़ा गया।"

"पकड़ा गया?" केंट ने बिस्तर पर बैठते हुए कहा, "कमाल है!"

"हमने उस स्थान को चारों ओर से घेर रखा था। इसलिए वह आसानी से हमारी गिरफ्त में आ गया। आपका सारा पैसा भी मिल जाएगा।"

"वह... उसकी ऐसी जल्दी नहीं है! मगर वह आदमी था कौन?"

"वह दवा की दुकान में काम करता है। उसका नाम हैरी ब्राउन है।"

"मैंने कभी उसके बारे में नहीं सुना।"

"उसका कहना है कि आप उसे नहीं जानते। पर उसके पिता आपके पिता के साथ पढ़े थे। आपके बारे में उसके घर में अक्सर बातें होती रहती थीं। लगता है, उसका पिता आपके पिता से ईर्ष्या करता था। इस आदमी का कहना है कि जो रकम उसने आपसे मांगी थी, उस पर उसके परिवार का अधिकार था। पागल कहीं का! खुशकिस्मती से वह आदमी 'स्मार्ट' नहीं था और डरा हुआ भी था। नहीं तो यह मामला इतनी आसानी से हल न हो सकता था। इसके अलावा, आपने भी बड़े ठंडे दिमाग से और समझदारी से काम लिया। कुछ लोग ऐसे मामलों में बौखला जाते हैं। खैर, मुझे खुशी है कि मामला सन्तोषजनक ढंग से हल हो गया। गुड बाय, मिस्टर कांबर्स!" कहकर उसने फोन रख दिया।

केंट को सब-कुछ अविश्वसनीय और असंभव लग रहा था। उसने कमरे में चारों ओर अपनी निगाह घुमाते हुए सोचा, 'क्या सचमुच बेटसी के अपहरण की घटना घटी थी? हां, घटी थी। मगर अब सब ठीक हो चुका है।'

यह घटना अमेरिका में घटनेवाली उन कुछ बाल-अपहरण की घटनाओं में से थी, जिनके बारे में लोगों को अपराधी के गिरफ्तार होने के बाद ही सुनने को मिला था।

केंट ने तय किया कि जब वह नीचे जाएगा, हर नौकर को सौ-सौ डालर देगा। मौली का सचमुच इस घटना में कोई हाथ न था। सुबह होते ही जैसे ओस गायब हो जाती है, ठीक उसी प्रकार इस घटना का दुख सहसा गायब हो गया था।

उसने एलिन को नाश्ते की ट्रे लिये दरवाजे पर खड़े देखा। उसके पीछे ब्रूस खड़ा था, जो स्कूल जाने के लिए तैयार था। एलिन ने साधारण स्वर में उससे कहा, "अगर पीटर ब्रूस को स्कूल छोड़ आये, तो कोई हर्ज है? क्या ऐसा करना उचित न होगा? तब हम क्या करें?"

केंट सोच रहा था, उस भूरे रंग के सूटवाले दुर्दम्य आदमी के बारे में, जिसके नाम का पता उसे कभी नहीं लग पाएगा, लेकिन जो उन असंख्य लोगों में से एक था, जो देश-भर में न्याय की प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्नशील हैं। उस दिन उस आदमी ने उससे कार में कहा था, "हम अमरीकी लोग कानून का पालन करना नहीं जानते। अगर हम फिरौती के धन के बारे में कोई कानून पारित कर दें, तो कोई उसका पालन नहीं करेगा, ठीक उसी तरह, जैसे हमने नशाबंदी के कानून का पालन और आदर नहीं किया। हम अमरीकी लोगों को जो कानून पसंद नहीं आता, उसे हम तोड़ देते हैं। इसलिए अगर अपहरण-कर्ताओं के खिलाफ कानून पास हो भी जाए, तो भी अपहरण होते रहेंगे। जनतंत्र के लिए इतनी कीमत तो हमें चुकानी ही पड़ती है।"

हां, केंट ने भी यह कीमत चुकायी थी। उसने क्या, सबने ही चुकायी थी, एलिन ने भी, उसकी बच्ची ने भी और उस आदमी ने भी जो अब जेल में बंद था।

उसने एलिन से कहा, "ब्रूस को इसी देश में रहना है और इसलिए उसे अकेले ही स्कूल जाना चाहिए। तुम अकेले स्कूल जाओगे बेटे?"

"हां, जरूर जाऊंगा!" ब्रूस ने दृढ़ता से कहा। ●

(कथा में प्रकाशित चित्र चित्रकार-द्वारा कल्पना के आधार पर बनाये गये हैं।)



श्री यशपाल कपूर।



श्री राजमंगल पाण्डेय।

राजनीतिक नेताओं के तांत्रिक गुरु पी० एन० कपूर

(पृष्ठ ३६ से आगे)

चलाते रहे। १९५५ आते-आते वे एक तांत्रिक के रूप में प्रसिद्ध हो गये।

आजकल वे बड़े-बड़े राजनीतिक नेताओं के गुरु हैं।

श्री कपूर के बारे में इधर जो नयी जानकारी मिली है, उसके अनुसार, कहा जाता है कि वर्ष १९५० में चौक मोहल्ले में जहां वे रहते हैं, एक स्थान पर एक पत्थर रखकर उन्होंने प्रचार करवाया कि वहां शंकरजी ने अवतार लिया है। यह बात अधिकारियों तक पहुंची, तो सी० आई० डी० के जांच करने के बाद श्री कपूर को गिरफ्तार कर लिया गया। फिर २०-२२ दिन के बाद वे जमानत पर छूटे।

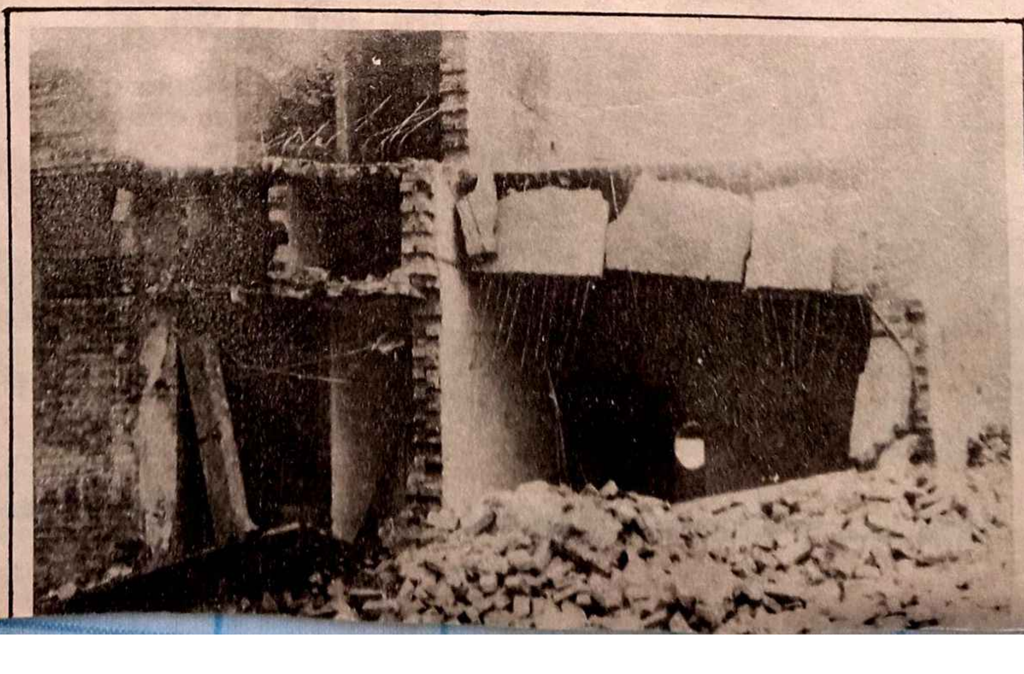
लखनऊ के पश्चिमी क्षेत्र के तत्कालीन विधायक श्री शकील अहमद और कांग्रेस के एक महामंत्री श्री छेदालाल चौधरी ने तत्कालीन स्वायत्त शासन मंत्री श्रीमती राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी को एक ज्ञापन दिया था। एक महिला श्रीमती शैल टण्डन का मकान श्री कपूर के कहने से महापालिका प्रशासक और अभियन्ता ने स्वयं खड़े होकर गिरवाया था, ज्ञापन में इसी के बारे में शिकायत थी।

श्री कपूर के विरुद्ध आपात स्थिति के दौरान इस प्रकार के दर्जनों प्रार्थना-पत्र सरकार को दिये गये थे, लेकिन उनके विरुद्ध कोई भी कार्यवाही नहीं हुई।

हैदर मंजिल की निवासिनी आफताब आरा ने २२ अगस्त, १९७६ को तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी को एक प्रार्थना-पत्र देकर यह शिकायत की थी कि श्री कपूर ने उसके स्वर्गीय पिता की १७९४० वर्ग फुट जमीन, जिसे उन्होंने केवल सात रुपये माहवार किराये पर ले रखी थी, हड़प ली थी और जमीन के आधे भाग पर दुकानें बनवाकर तीन सौ रुपये प्राप्त कर रहे थे।

१० फरवरी, १९७७ को सराय माली खां मोहल्ले के लगभग एक दर्जन व्यक्तियों ने भू० पू० प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के पास श्री कपूर के विरुद्ध लिखित शिकायत की थी, जिसमें तांत्रिक कपूर पर अनेक घृणित आरोप लगाये गये थे।

श्रीमती टंडन का मकान।



पता चला है कि श्री कपूर के विरुद्ध इटावा के एक व्यापारी विनोद कुमार जैन ने ठगी का एक मुकद्दमा कायम कर रखा था। कपूर ने उक्त व्यापारी से एम० डी० ए० ८४८४ नम्बर की फियेट गाड़ी खरीदी थी। उसका बकाया तीन हजार रुपये उन्होंने अदा नहीं किये। २३ जुलाई १९७७ को उस मुकद्दमे में तांत्रिक महोदय के विरुद्ध फैसला हुआ था।

गत विधान सभा के चुनावों के बाद गुरुजी दिल्ली से लौटे। गुरु-भक्तों का दावा है कि गुरुजी ने चुनाव से पूर्व ही परिणामों की जो घोषणा की थी, वह अक्षरशः सत्य निकली थी। जिस समय चुनाव-परिणाम सामने आ रहे थे, उस समय गुरुजी बार-बार केवल यही वाक्य दोहरा रहे थे, "मां! तेरी महिमा सर्वोपरि ... अम्बे! तू बड़ी कृपालु!" उस समय उनका दर्शन करने के लिए लोगों का तांता लगा हुआ था। वे दर्शन देकर, मुस्कान बिखेरकर सबको कृतार्थ कर रहे थे।

अब तक उनका परिचय जनता पार्टी के दर्जनों संसद सदस्यों और नेताओं से हो चुका था। भक्तों का कहना है कि लोकसभा-चुनाव के बाद जब चौधरी चरण सिंह बीमार पड़े थे, तो गुरुजी चौबीसों घण्टे अस्पताल में उन्हीं के पास रहते थे। कहा जाता है कि वह बीमारी थोड़ी शारीरिक और थोड़ी राजनीतिक थी। गुरुजी रात्रि में एक कोने में आसन लगाकर मंत्र-जाप करते थे। कहते हैं कि मंत्र-साधना चौधरी साहब के स्वास्थ्य एवं दीर्घ आयु के लिए थी, जब कि तंत्र-साधना उनके प्रधान मंत्री बनने के मार्ग में आनेवाले अवरोधों को दूर करने के लिए थी। श्री मोरारजी देसाई जब प्रधान मंत्री निर्वाचित हो गये, तो तांत्रिक श्री कपूर लखनऊ लौट आये।

लखनऊ में श्री रामनरेश यादव मुख्य मंत्री पद के लिए जनता पार्टी विधान मण्डल दल की बैठक में बहुमत से चुने गये। कहते हैं कि गुरुजी ने ही चौधरी चरण सिंह से श्री यादव को मुख्य मंत्री बनाने की सिफारिश की थी। इसलिए शपथ ग्रहण करने से पूर्व गुरुजी का आशीर्वाद लेना लाजिमी था। लखनऊ में इस बात की चर्चा आज भी है और स्वयं गुरुजी के मोहल्ले के कई जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं तथा नेताओं का कहना है कि शपथ ग्रहण करने के पूर्व लगभग तीन घण्टे तक मुख्य मंत्री गुरुजी के यहां रहे थे। उधर उनकी खोज हो रही थी और दिल्ली को फोन किया जा रहा था। जब श्री राजनारायण से सम्पर्क स्थापित किया गया, तो उन्होंने सूचना दी कि रामनरेश यादव चौक में गुरुजी के पास हैं। तब लोग आश्वस्त हुए।

अभी श्री यादव को मुख्य मंत्री का पद संभाले हुए मुश्किल से एक माह बीता था कि अचानक २६ जुलाई को लखनऊ के समाचार-पत्रों में यह समाचार छपा, 'लखनऊ का तांत्रिक जाली पास पर सफर करते बन्दी, राजनारायण के हस्तक्षेप पर रिहा।' यह समाचार गोण्डा से मिला था जिसके अनुसार, 'केन्द्र और प्रदेश के नेताओं पर प्रभाव रखने वाले लखनऊ के तांत्रिक श्री पुरुषोत्तम-नाथ कपूर को एक युवती के साथ अवैध रेलवे-पास पर वातानुकूलित डिब्बे में सफर करते हुए पकड़ लिया गया। रेलवे के साथ धोखा-धड़ी करने के आरोप में तांत्रिक कपूर और उनके साथ सफर कर रही युवती को हिरासत में ले लिया गया। रेलवे पुलिस की हवालात में उनकी तलाशी ली गयी। उनके सामान में विदेशी शराब की एक बोतल बरामद हुई। रेलवे पुलिस की जनरल डायरी में दर्ज रिपोर्ट के अनुसार श्री कपूर ने वहीं से केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री राज-नारायण से टेलीफोन पर दिल्ली सम्पर्क किया। श्री राजनारायण ने श्री कपूर को तत्काल जमानत पर छोड़ने का निर्देश दिया। रेलवे मजिस्ट्रेट ने गुरुजी तथा उनकी शिष्या को दो-दो हजार रुपये के निजी मुचलके पर छोड़ दिया। बाद में राजनीतिक नेताओं की दिलचस्पी देख कर श्री कपूर को उक्त युवती के साथ फिर वातानुकूलित डिब्बे से ही लखनऊ भेज दिया गया।'

यह समाचार मिलते ही मुझे 'इंटरव्यू' की बात अचानक याद आ गयी। सुबह आठ बजे ही कैमरा लेकर मैं उनकी कोठी पर जा पहुंचा। बरामदे में गुरुजी किसी से बातें करने में मशगूल थे। बाहर सड़क पर एक पुलिस-अधिकारी की कार खड़ी थी, जिसे देखकर मैंने अन्दाज लगा लिया कि गुरुजी जरूर किसी वरिष्ठ पुलिस-अधिकारी से ही बातें कर रहे होंगे।

मुझे देखते ही गुरुजी तपाक से बोल उठे, "अरे, आओ, भाई! क्या नाराज हो गये थे, जो इतने दिन नहीं आये?"

मुझे उम्मीद नहीं थी कि गुरुजी मुझे पहचान लेंगे। मैंने कहा, "मैं बाहर गया था, इसी कारण आपके दर्शन न कर सका।"

"कोई बात नहीं! आओ, बैठो। इनसे मिलो! ये मेरे शिष्य श्री त्रिपाठी डी० आई० जी०, पी० ए० सी० हैं।"

शरीर पर एक बनियान, सूती जर्सी और मटमैली धोती पहने चश्माधारी श्री कपूर आराम से सोफे पर बैठकर बातें कर रहे थे। उनके सामने ही टेलीफोन रखा हुआ था।

मैं चार घण्टे तक उनके बंगले पर रहा। इस बीच उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री रामनरेश यादव, रेलवे बोर्ड के सचिव श्री महन्ती, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री राजनारायण और उत्तर प्रदेश की भूतपूर्व खाद्य मंत्री श्रीमती राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी आदि के फोन श्री कपूर के पास आये।

श्रीमती बाजपेयी से उन्होंने फोन पर बातचीत के दौरान कहा, "इस बारे में मैं फिर बात करूंगा। वैसे रात में मधु दण्डवते से मेरी बात हो गयी है। उन्होंने पर्सनल लेवल पर मामले को डील करने को कहा है।"

एक घण्टे की बातचीत के बाद गुरुजी ने डी० आई० जी० श्री त्रिपाठी को विदा कर दिया। फिर उन्होंने कालबेल बजायी। भीतर से एक नौकर आया, तो गुरुजी ने उससे 'एनासिन' की दो टिकियां और एक गिलास पानी लाने को कहा। मेरे लिए चाय लाने का भी उन्होंने आदेश दिया।

'एनासिन' की दो गोलियां पानी के साथ गले के नीचे उतारने के बाद सिर थामकर वे बोले, "सिर में बड़ा दर्द हो रहा है। अब ठीक हो जाएगा। पूछो क्या पूछना चाहते हो?"

"तंत्र और साधना के बारे में आपके विचार जानना चाहता हूं।"

यह सुनते ही गुरुजी बोले, "जो शक्ति ज्ञानेन्द्रियों में बंटी है, मनुष्य उसे समेट ले, तो वही उसकी सच्ची साधना होती है। कुछ लोग मुझे बिना परखे ही मेरे बारे में तमाम ऊल-जलूल बातें किया करते हैं। कुछ लोग अनावश्यक रूप से मेरे ऊपर कीचड़ भी उछालते रहे हैं। इन्दिराजी का मैं गुरु रहा हूं। चाहता, तो उनसे दस-बीस लाख रुपये ले सकता था। लेकिन मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। यहां तक कि मैंने किसी की एक बीड़ी भी नहीं पी। उल्टे अनुष्ठान तथा जाप में दस-बीस रुपये मेरे ही लग जाते हैं।"

बात हो ही रही थी कि मुख्य मंत्री निवास से फोन आया। बातचीत से जाहिर हो गया कि दूसरी ओर फोन पर स्वयं मुख्य मंत्री श्री यादव थे। फोन पर गुरुजी ने अपनी गिरफ्तारी और रिहाई के बारे में श्री यादव से खुलकर बात की। श्री यादव को उन्होंने यह भी बताया कि रात में रेलवे बोर्ड के सचिव तथा रेलमंत्री से मैंने दोषी अधिकारी को दण्डित करने की बात भी की थी।

रिसीवर रखकर गुरुजी बोले, "यह सब यशपाल कपूर की बदमाशी लगती है। शुक्रवार को ही वह मुझसे मिलने आया था और कह रहा था कि श्रीमती गांधी ने बुलाया है। मैंने इनकार कर दिया। मुझसे यह गलती हो गयी कि मैंने उसे यह बता दिया कि मैं चौधरी साहब के काम से शनिवार को गोहाटी जा रहा हूं। कपूर ने इसी कारण अपने मित्र चीफ विजिलेंस इंस्पेक्टर पी० के० टकरू को मेरे पीछे लगा कर यह हरकत करा दी। मैंने चौधरी साहब से कह दिया है कि अब मैं उनका काम करने असम नहीं जाऊंगा।"

"गुरुजी, यह सब कैसे हो गया? क्या वास्तव में आपका रेलवे पास फर्जी था?"

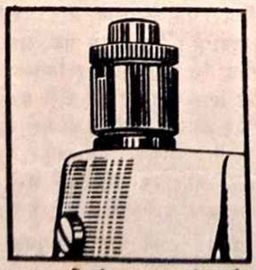
प्रश्न सुनते ही वे क्रोधित होकर बोले, "यह-सब गलत है, बकवास है। मेरे पास एयर कंडीशंड का पास है। २२ सितम्बर, १९७५ को भूतपूर्व रेलवे मंत्री पण्डित कमलापति त्रिपाठी के आदेश से वह पास मुझे मिला था। २२ सितम्बर, १९७६ को उसका नवीनीकरण श्री यशपाल कपूर ने कराया था। वह पास २१ सितम्बर, १९७७ तक वैध है। उसी पास पर चार दिन पूर्व मैं दिल्ली से लौटा था। मेरा यह पास मिस्टर एण्ड मिसेज पी० एन० कपूर के नाम से है। पास का नम्बर ११५२ है। २३ जून को मैं गोहाटी मेल से असम के लिए चारबाग स्टेशन पर चढ़ा था। मैंने अपना पास वातानु-कूलित डिब्बे के कंडक्टर को दे दिया था। उसके बाद एक कूपे में सामान लगा कर बैठ गया था। मेरे पीछे विजिलेंस इंसपेक्टर पी० के० टकरू भी चढ़े थे। मैं उन्हें जानता नहीं था। गोण्डा स्टेशन पर गाड़ी पहुंचते ही टकरू ने कंडक्टर से मेरा पास ले लिया और मेरे निकट आकर बोले 'आपका यह पास रद्द हो गया है। इस ट्रेन से अब आप लोग यात्रा नहीं कर सकते।' मैंने उन्हें बताया कि मेरा पास २१ सितम्बर तक मान्य है। लेकिन वे यही कहते रहे कि मेरा पास रद्द होनेवाले पासों की सूची में है। मेरे बार-बार आग्रह करने पर भी उन्होंने वह सूची मुझे नहीं दिखायी। विवश होकर मैंने कहा, 'ठीक है, आप लिखकर दे दीजिए। मधु दण्डवते लखनऊ में ही हैं। मैं उनसे बात कर लूंगा।' किन्तु टकरू ने मेरी एक न सुनी। गोण्डा स्टेशन पर मुझे उतार कर जी० आर० पी० थाने ले जाया गया।"

"गुरुजी, शायद आपके साथ कोई युवती भी..."

"हां-हां, मेरे साथ एक शिष्या तारा कपूर भी थी, वह मेरे साथ जा रही थी। उसे भी रोक लिया गया था। मेरी अटैची की तलाशी ली गयी। उसमें अंग्रेजी शराब की एक बोतल थी। मैंने थाने पर बार-बार आग्रह किया कि मुझे ट्रंक काल कर लेने दिया जाए। लेकिन मेरी बात सुने बिना ही मुझे चार्जशीट दे दी गयी। मुझे तीन घण्टे तक थाने पर बैठाये रखा गया। मांगने पर मुझे पानी भी नहीं मिला। लगभग चार बजे शाम को वहां एक सब-इंसपेक्टर आया, जो मुझे जानता था। मैंने जब उससे अनुरोध किया, तो उसने कहा, 'आप खर्चा देकर ट्रंक काल कर सकते हैं।' मैंने तत्काल मुख्य मंत्री श्री यादव को लाइटनिंग काल मिलाया। उस समय श्री यादव सदन में थे। उनसे बात न हो सकी। श्री सत्यप्रकाश मालवीय भी सदन में ही थे। फिर मैंने चौधरी साहब को दिल्ली फोन मिलाया। दुर्भाग्य से वे भी नहीं मिले। अन्त में मैंने राजनारायण का फोन मिलाया। वह मिल गया।



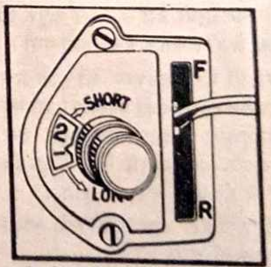
आकर्षक। चमकदार। दो रंगों वाली। उषा स्ट्रीमलाइन्ड एक ऐसी सिलाई मशीन है जों इस कीमत की सभी उपलब्ध सिलाई मशीनों में वेजोड़ है। इसकी विशिष्टताओं का मुकाबला कोई और मशीन नही कर सकती। और साथ में ५ वर्ष की गारंटी भी।



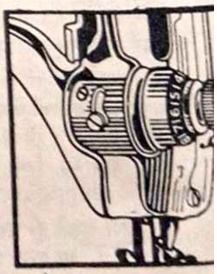
आसानी से रफू करने और कपड़े पर दाब को तत्काल व्यवस्थित करने के लिए पेच डार्नर।



फीड-डाग पोजीशन को आसानी से बदलने के लिए. ३ पोजीशन वाला ड्राप-फीड।



सीधी और उल्टी सिलाई करने के लिए लीवरयुक्त डायल टाइप स्टिच रेंगुलेटर और लाकिंग व्यवस्था



धागे का तनाव बनाए रखने के लिए थ्रेड टेन्सन ऐडजस्टर।

उषा स्ट्रीमलाइन्ड खूबियों से भरपूर बेहतर सिलाई मशीन

फोन पर उसने कहा, 'आप किराया अदा करके आ जाइए, बाद में मैं देख लूंगा।' मैंने कहा, 'ये लोग किराया लेकर भी छोड़ने को तैयार नहीं हैं।' इस पर राजनारायण ने कहा, 'ठीक है, मैं अभी इंतजाम करता हूं।' लगभग आधे घण्टे बाद गोण्डा के जिलाधिकारी का फोन थाने पर आया। उन्होंने मुझे तत्काल व्यक्तिगत मुचलके पर छोड़ने का आदेश दिया था। तब जाकर मुझे तथा मेरी शिष्या को दो-दो हजार रुपये के मुचलके पर छोड़ा गया।"

गुरुजी ने आगे बताया, "मुझे बाद में पता चला कि राजनारायण ने सीधे मुख्य सचिव से बात की थी और मुख्य सचिव ने गोण्डा के जिलाधिकारी को मुझे छोड़ने का निर्देश दिया था। लखनऊ लौटते ही मैंने रेलवे बोर्ड के सचिव श्री महन्ती से फोन पर बात की। उन्होंने मुझसे स्पष्ट शब्दों में कहा कि दोषी अधिकारी के खिलाफ कठोर कार्यवाही की जाएगी। मंत्री-स्तर से भी उक्त अधिकारी के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने के आदेश जारी हो गये हैं।"

"गुरुजी, टकरू की इस हरकत से तो फिजूल में आपकी बड़ी बदनामी हो गयी ?"

"कैसी बदनामी ? मैं उसे छोड़ने वाला नहीं हूं !" गुरुजी ताव में बोले, "भले मेरी बदनामी हो, मैं तो उस वेश्या की तरह हूं, जिससे सब छिप-छिप कर मिलना चाहते हैं। जो भी मुझसे मिलता है, अपने स्वार्थ के लिए मिलता है। लोग चाहे मेरे ऊपर जितना कीचड़ उछालें, गरज पड़ने पर मेरे पास ही दौड़ कर आएंगे।"

"चौधरी चरण सिंह के लिए कौन-सा महत्वपूर्ण अनुष्ठान करने आप गोहाटी जा रहे थे ?"

पहले तो उन्होंने कुछ बताने से इनकार कर दिया। फिर कहने लगे, "मेरा क्या जाता है ? अगर तुम छाप दोगे, तो मैं खण्डन कर दूंगा !"

एक क्षण बाद वे बुदबुदाये, "मां ! तेरी इच्छा सर्वोपरि है ! सच बोलने में क्या हानि ?" फिर उन्होंने कहा, "वर्तमान केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के एक महत्वपूर्ण सदस्य चौधरी साहब के विरुद्ध नेपाल में कोई घातक अनुष्ठान करा रहे हैं। यह जानकारी जब चौधरी साहब को मिली, तो उन्होंने उसका प्रभाव नष्ट करने के लिए श्री राजनारायण से मुझसे गोहाटी जाकर अनुष्ठान करने का आग्रह कराया था। मैं उसी काम से कामाख्या देवी की पूजा करने जा रहा था। इधर काफी दिनों से चौधरी साहब को प्रधान मंत्री बनाने के लिए मैं विपरीत ग्रहों को अनुकूल करने का प्रयास कर रहा था।"

उन्होंने दावा किया, "ये सारे अनुष्ठान, पूजा-पाठ एवं मंत्र-जाप मैं चौधरी साहब के इच्छानुसार ही कर रहा हूं।"

क्षण-भर मौन रहने के बाद मैंने पुनः छेड़ा, "गुरुजी, आपके तो बहुत-से राजनीतिक चेले मालूम देते हैं ?"

उन्होंने ऊपर आये सभी राजनीतिक दिग्गजों के नाम गिनाने के बाद कहा, "केन्द्रीय इस्पात मंत्री श्री बीजू पटनायक भी मेरे शिष्य हैं। उत्तर प्रदेश सरकार के गठन के पूर्व मैंने मुख्य मंत्री तथा कई अन्य मंत्रियों को भी आशीर्वाद दिया था।"

इसके बाद वे दीवार की ओर घूरते हुए बोले, "मैं जब लोगों की दृष्टि में घोर व्यभिचारी, शराबी और फ्राडियल हूं, तो फिर लोग क्यों मेरे पास आते हैं ? आज ही मैंने राजनारायण से फोन पर स्पष्ट कह दिया है कि अब मेरा पीछा छोड़ दो।" उन्होंने आगे कहा, "किसी भी तांत्रिक प्रक्रिया के लिए जहां फूल, रोली, चावल, लकड़ी, घी और अग्नि जरूरी होती है, वहीं सुरा और सुन्दरी भी अति आवश्यक है।"

उन्होंने अपने को उत्तर भारत का सबसे अच्छा तांत्रिक होने का दावा किया।

गुरुजी ने बताया कि उन्होंने श्री राजनारायण को फोन पर उस समय फटकार दिया था, जब 'नेताजी' ने उनसे यह अनुरोध किया था कि वे अपने सम्बन्ध में घटी घटनाओं के बारे में अखबारवालों को कोई जानकारी न दें, क्योंकि इस सम्बन्ध में राज्य सभा में कांग्रेस सदस्य श्री हर्षदेव मालवीय ने कोई सवाल उठाया था।

श्री राजनारायण ने राज्य सभा में इस समाचार का खण्डन किया कि रेलवे के मुख्य सतर्कता अधिकारी पी० के० टकरू द्वारा कथित जाली रेलवे पास पर यात्रा करने के अपराध में पकड़े गये तांत्रिक पी० एन० कपूर को छुड़वाने के लिए उन्होंने लखनऊ के रेलवे अधिकारियों को टेलीफोन किया था। लेकिन उन्होंने राज्य सभा में यह स्वीकार किया कि रेलमंत्री श्री मधु दण्डवते से श्री कपूर के रेलवे पास के विषय में उन्होंने पूछ-ताछ की थी। बाद में अधिकारियों ने उन्हें यह सूचना दी थी कि श्री कपूर का पास वैध था।

लेकिन गोण्डा रेलवे पुलिस के रोजनामचे नम्बर ३५, दिनांक २३ जुलाई, १९७७ पर निम्नलिखित वाक्य अंकित हैं—

"मुलजिम पी० एन० कपूर ने थाने के फोन नम्बर २२४ से लाइटनिंग काल बुक कराया है। दिल्ली का फोन नम्बर ३७५४५७ है। काल मिलने पर पहले पी० एन० कपूर ने बात की। बाद में मुझ हेड मोहर्रिर श्याम बहादुर से बात करायी। दूसरी ओर से मुझसे कहा गया, "मैं स्वास्थ्य मंत्री राजनारायण बोल रहा हूं। पी० एन० कपूर को छोड़ दिया जाए।" इसपर मुझ हेड मोहर्रिर ने जवाब दिया कि सारी लिखा-पढ़ी हो चुकी है। इसके बाद पी० एन० कपूर ने बात की। बाद में रेलवे मजिस्ट्रेट ने मुलजिम पी० एन० कपूर तथा तारा कपूर को दो-दो हजार रुपये के मुचलके पर छोड़ दिया।'

रोजनामचे के अनुसार, 'सायंकाल सवा छः बजे श्री चरणसिंह का भी फोन थाने पर आया। उन्होंने तांत्रिक कपूर की रिहाई के बारे में जानकारी प्राप्त की। लेकिन तब तक मुल्जिम पी० एन० कपूर को जमानत पर रिहा किया जा चुका था। इसलिए श्री चरणसिंह को बता दिया गया कि उन्हें (कपूर और तारा कपूर) को रिहा कर दिया गया है।"

गोण्डा रेलवे पुलिस में जी० डी० नम्बर ७९ तथा अपराध संख्या १३६ पर दिनांक २३ जुलाई, १९७७ को पी० एन० कपूर, निवासी चौक, लखनऊ के विरुद्ध रेलवे कानून की धारा ११२ तथा १३१ के अन्तर्गत मुकद्दमा कायम किया गया। यह मुकद्दमा रेलवे के मुख्य सतर्कता निरीक्षक श्री टकरू द्वारा दर्ज कराया गया।

रेल विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने लखनऊ में मुझे बताया कि लोक सभा में रेलमंत्री श्री मधु दण्डवते की इस घोषणा के बाद कि जिन लोगों के कब्जे में अनावश्यक रूप से रेलवे पास हैं, उन्हें रद्द कर दिया जाएगा, रेल मंत्रालय ने तुरन्त सभी पासों की जांच-पड़ताल कर उन पर 'प्रमाणित है' की मोहर लगा दी थी। अधिकारी ने बताया कि श्री कपूर के पास पर यद्यपि 'प्रमाणित है' की मोहर नहीं लगी थी, फिर भी उनका पास इसलिए वैध था कि उसके समाप्त होने की अन्तिम तिथि २१ सितम्बर, १९७७ थी।

श्री कपूर जिस युवती के साथ वातानुकूलित डिब्बे में सफर करते हुए गिरफ्तार किये गये थे, गोण्डा रेलवे पुलिस के अनुसार, उसकी अवस्था लगभग ३५ वर्ष थी। ६० वर्षीय श्री कपूर ने उक्त युवती का नाम 'श्रीमती तारा कपूर' लिखाया था। यह नाम उनकी पत्नी का है, अवस्था लगभग ५५ वर्ष है और वह पिछले कई महीनों से काफी बीमार चल रही हैं।

उक्त युवती के बारे में छानबीन करने पर पता चला है कि वह कोई डाक्टर सक्सेना है, जो संभवतः बाराबंकी के एक अस्पताल में कार्यरत है। उसके साथ श्री कपूर की दोस्ती काफी पुरानी है। पहले यह युवती लखनऊ में ही थी। कहते हैं कि उसको सोलहों शृंगार कराकर गुरुजी उस पर तांत्रिक साधना करते थे। सतर्कता विभाग के इंसपेक्टर टकरू ने उक्त युवती के हस्तरेखाओं की छाप भी ले ली है। पता चला है कि २६ जुलाई की रात्रि में ही डा० सक्सेना गुरुजी के पास लखनऊ आयी थी और घटना से सम्बन्धित किसी बात को लेकर उनसे उलझ गयी थी।

धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलने वाले श्री कपूर सिर्फ कक्षा आठ तक ही पढ़े हुए हैं। शानदार बंगले, कार और तेजाब की फैक्टरी के मालिक श्री कपूर ने कहा, "मेरे चार सिद्धान्त हैं। पैर छुआने से मैं घृणा करता हूं, किसी को शिष्य नहीं बनाता, अपनी जिह्वा का सौदा नहीं करता और न स्त्रियों को अपने पास फटकने देता हूं।"

यह सुनकर मैंने तुरन्त पूछा, "तब फिर आप क्यों श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा श्रीमती राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी के पास जाते थे ? क्यों अपने साथ युवती को लेकर सफर कर रहे थे ?"

उत्तर में उन्होंने कहा, "कभी-कभी बुलाने पर मैं चला जाता हूं।"

"राजनीतिक नेताओं के सम्पर्क में आप कैसे आये ?"

श्री कपूर ने बताया, "राजनीतिज्ञों के साथ मेरा परिचय बहुत पुराना नहीं है। जनवरी, १९७३ में चौधरी चरणसिंह ने मेरा प्रचार सुनकर एक दूत के माध्यम से बुला भेजा। कई बार आग्रह करने पर मैं उनके यहां गया। वे बार-बार मुझसे राजनीतिक परिवर्तन के बारे में पूछते रहे और मैं टालता रहा। जब चौधरी साहब ने बहुत जोर देकर पूछा, तो मैंने कह दिया कि कमलापति त्रिपाठी अब मुख्य मंत्री नहीं रहेंगे। एक बड़ा बवंडर होगा, जिसे वे संभाल नहीं पाएंगे और इस्तीफा दे देंगे। बाद में यही हुआ। पी० ए० सी० विद्रोह के कारण उन्हें पद से हटना पड़ा।"

उन्होंने आगे बताया, "उसके बाद १५ मई, १९७३ को मेरी लड़की की शादी दिल्ली में थी। मैंने चौधरी साहब को निमंत्रित किया। वे शादी में शामिल हुए। उनके साथ कई बड़े-बड़े नेता भी आये थे। चौधरी साहब ने मुझसे आग्रह किया कि मैं किसी दिन उनके घर पर दर्शन दूं। एक दिन उन्होंने गाड़ी भेज कर मुझे बुलवा ही लिया। बातचीत के दौरान उन्होंने जोर देकर कहा, 'आज कुछ बताओ।' मैं बार-बार टालता रहा। लेकिन चौधरी साहब जिद पर अड़े रहे, तो मैंने कह दिया, 'इन्दिराजी को गुजरात में बड़ी परेशानी उठानी पड़ेगी। दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में या जनवरी में उन्हें अपमानित होना पड़ेगा।' उस समय विधान सभा के चुनाव भी होने वाले थे। मैंने गणना करके चौधरी साहब को बताया, 'आपकी पार्टी को १०५ सीटें मिलेंगी।' ये दोनों बातें सत्य निकलीं। नागपुर में श्रीमती गांधी पर २ जनवरी को चप्पलों की वर्षा हुई और बी० के० डी० को १०६ सीटें मिलीं।

गले की ख़राश ? खांसी ?



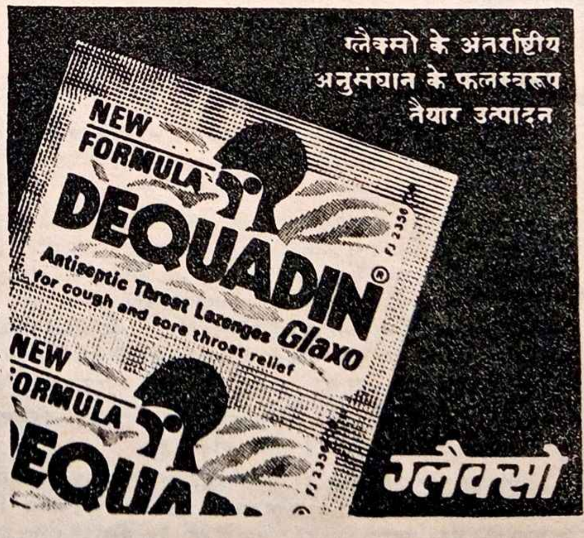
सिर्फ़ ग्लैक्सो की
डेक्वाडिन
दोहरे असरवाली डेक्वाडिन

गले के कीटाणुओं को नष्ट करती है, दर्द में आराम पहुंचाती है.

सिर्फ़ डेक्वाडिन ही एक ऐसी लाजेंज है जो गले में ख़राश पैदा करनेवाले कीटाणुओं को नष्ट करने के साथ-साथ गले के दर्द में भी आराम पहुंचाती है. इसका कारण है इस में मौजूद डेक्वालिनियम क्लोराईड. ग्लैक्सो के अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान की खोज डेक्वाडिन एक प्रभावशाली ऐंटिसेप्टिक और दर्द में आराम पहुंचानेवाली दवा है. डाक्टर भी इस बात को मानते हैं.

जैसे ही आप डेक्वाडिन लेते हैं, डेक्वालिनियम क्लोराईड अपना काम फ़ौरन शुरू कर देती है. ख़राश पैदा करनेवाले कीटाणुओं को नष्ट करने के साथ ही यह गले के दर्द में आराम भी पहुंचाती है. दूसरी कोई भी लाजेंज इतनी प्रभावशाली नहीं जो इतनी तेजी से और ऐसा स्थायी आराम पहुंचाए.

गले की ख़राश और खांसी में आराम पहुंचानेवाली ग्लैक्सो की डेक्वाडिन.



GLD-8783

बम्बई के एक साप्ताहिक के अनुसार, 'उत्तर प्रदेश में जब चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में पहली संयुक्त विधायक दल की सरकार बनी थी, तब इस तांत्रिक के खिलाफ कई अभियोग लगाये गये थे। तांत्रिक ने न सिर्फ उन अभियोगों की जांच ही रुकवा दी थी, वरन विश्वासपात्र ज्योतिषी के रूप में चरण सिंह का कृपापात्र भी बन बैठा था। बाद में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने प्रदेश की एक मंत्री डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी और राज्यसभा के कांग्रेसी सदस्य श्री यशपाल कपूर की मदद से इस तांत्रिक को अपनी ओर मिला लिया। उस समय चौधरी चरण सिंह के प्रेमी यही गुरुजी संविद सरकार को गिराने के लिए श्री यशपाल कपूर के साथ, जो बलरामपुर अस्पताल में बीमारी का बहाना बनाकर डेरा डाले हुए थे, अस्पताल में लम्बी बैठकें करते थे और विधायकों की खरीद-फरोख्त एवं बोलियां लगाने में मदद करते थे।'

श्री राजनारायण और श्रीमती इन्दिरा गांधी दोनों के गुरु श्री कपूर ने दावे के साथ कहा, "श्रीमती राजेन्द्र कुमारी के माध्यम से श्रीमती गांधी ने २८ मई, १९७५ को मुझे हवाई जहाज से दिल्ली बुलवाया। इसके पूर्व यशपाल कपूर मेरे यहां बराबर माथा टेकने आते थे। श्रीमती गांधी मुझसे बात करने के बाद चुनाव दौरे पर फिर गुजरात गयीं। उनके पूछने पर मैंने गणना कर बता दिया था कि उन्हें ७०–७५ सीटें मिलेंगी। मेरी यह वाणी सच निकली, तो इन्दिराजी का विश्वास मुझ पर जम गया। फिर तो उनकी ओर से बराबर आशीर्वाद की मांग होने लगी।"

जब भी कोई राजनीतिक गुत्थी उलझती, उसे सुलझाने के लिए कपूर को दिल्ली बुलवाया जाता। कहते हैं कि बहुगुणा-विरोधी अभियान के समय यशपाल कपूर ने गुरुजी का भरपूर उपयोग किया था। श्रीमती इन्दिरा गांधी तक पहुंच होने के कारण गुरुजी काफी असरदार और शक्तिशाली बन बैठे थे। राजनीति में उनकी दखलन्दाजी धीरे-धीरे बढ़ती गयी थी। बम्बई के एक साप्ताहिक पत्र के अनुसार, 'गुरुजी को इस बात के लिए काफी रकम भी दी जाती थी कि वे इन्दिरा की शान बनाये रखने के लिए भारत के धार्मिक और पवित्र स्थानों पर जाकर तांत्रिक विधियां पूरी करें।'

कहते हैं कि एमरजेंसी के दौरान गुरुजी ने अपनी बीमार पत्नी (?) के साथ हवाई जहाज से श्रीनगर, गोहाटी, रामेश्वरम, कन्याकुमारी और बम्बई आदि की यात्राएं। नवम्बर, १९७५ से फरवरी, १९७६ तक ये प्रायः यात्राएं ही करते रहे।

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के विशेष सचिव धवन और संजय गांधी से गुरुजी की काफी निकटता थी। जिस तरह संजय धीरेन्द्र ब्रह्मचारी से खौफ खाता था, उसी तरह गुरुजी के सामने भी उसकी बोलती बन्द रहती थी। गुरुजी जब भी दिल्ली फोन करते थे, तो धवन 'गुरुजी-गुरुजी' की रट लगाया करते थे।

गुरुजी के असर का प्रमाण इस घटना से भी मिलता है। १५ मई, १९७६ को उनके छोटे पुत्र राजेन्द्रनाथ कपूर की शादी थी। बारात को फर्रुखाबाद जाना था, जिसके लिए बोगियां रिजर्व थीं। एक डिब्बे में बार था, जिसमें तरह-तरह की शराबों की चुनिन्दा किस्में मौजूद थीं। बारात को रेलवे स्टेशन पर 'गार्ड आफ आनर' दिया गया। उसमें उत्तर प्रदेश के आधा दर्जन मंत्री शामिल थे, जिनमें तत्कालीन जेल राज्य मंत्री श्रीकृष्ण गोयल भी थे।

गुरुजी ने बताया, "एक दिन राजनारायण मेरे पास भागा हुआ आया और बोला, 'गुरुजी, कुछ ऐसा करें कि मुकद्दमे में मेरी 'ब्लू बुक' खुल जाए!' ध्यान करने के बाद मैंने कहा, 'ठीक है, हाई कोर्ट में जीत जाएगा, लेकिन ऊपर नहीं बढ़ पाएगा।'

श्री कपूर ने आगे बताया, "इसके बाद यशपाल कपूर भागे-भागे आये। इन्दिराजी की ओर से उन्होंने दुहाई दी, 'गुरुजी, कुछ कीजिए! मुकद्दमा उलटा जा रहा है!' मैं बड़े चक्कर में पड़ गया। मैं राजनारायण से कह चुका था कि वह जीत जाएगा। अब इन्दिराजी भी आशीर्वाद मांग रही थीं। मैंने यशपाल से कह दिया, 'इन्दिराजी हार जाएंगी, लेकिन कुर्सी नहीं जाएगी।'"

श्रीमती गांधी के मुकद्दमे में सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद जब श्री यशपाल कपूर लखनऊ गुरुजी के घर आये, तो सात किस्म के बैण्ड बज रहे थे तथा सड़क के दोनों ओर एक कन्या विद्यालय की लड़कियां पंक्तिबद्ध होकर उन पर पुष्पवर्षा कर रही थीं।"

फिर श्री कपूर एक लम्बी सांस लेकर बोले, "सर्वोच्च न्यायालय से जीतने के बाद श्रीमती इन्दिरा गांधी ने मुझे फोन तक नहीं किया। यही नहीं, प्रधान मंत्री निवास में मैंने जाप करने के लिए जो वस्तुएं रखी थीं, उन्हें भी उन्होंने यमुना में फेंकवा दिया।"

श्री कपूर ने आगे बताया, "लेकिन जब श्रीमती गांधी की परेशानी बढ़ गयी, तो उन्होंने ६ जनवरी को रेलमंत्री पण्डित कमलापति त्रिपाठी के माध्यम से मुझे फिर बुलवाया। मैंने पण्डितजी से पहले ही कह दिया, 'ये दो महीने देवीजी के लिए घातक हैं। इन्दिराजी का मुंह घूम जाएगा। आप उनसे जाकर इसी तरह कह दीजिए!' लेकिन पण्डितजी बोले, 'कपूर साहब, मैं पी० एम० से इस तरह नहीं कह पाऊंगा। आप ही चलकर कह दीजिए!' लेकिन मैंने स्पष्ट कह दिया, 'मैं नहीं जाऊंगा।'"

यह भी पढ़िये

लखनऊ के तांत्रिक श्री पुरुषोत्तमनाथ कपूर ने आज (अगस्त ७, १९७७) बताया कि जिस 'सतर्कता निरीक्षक' ने उन्हें अपमानित किया था, वह श्रीमती इन्दिरा गांधी का एक सम्बन्धी था।

श्री कपूर ने स्वीकार किया कि वे स्वयं अपना आध्यात्मिक स्तर ऊंचा उठाने के लिए एक तांत्रिक मिशन पर कामाख्या जा रहे थे। . . . उन्होंने इस बात को एकदम निराधार बताया कि वे गृह मंत्री श्री चरण सिंह के लिए कोई तांत्रिक क्रिया करने कामाख्या जा रहे थे। उन्होंने कहा, "मैं एक मामूली आदमी हूं, किसी को भी उसके बुरे ग्रहों के प्रभाव से बचाने की, या किसी को कोई पद दिलाने की या किसी को भी किसी पद पर बनाये रखने की शक्ति मुझ में नहीं है। अगर मुझ में ये शक्तियां होतीं, तो न तो मैं कास्टिक सोडा का धन्धा न करता और मोतियाबिन्द से पीड़ित होता।

कपूर ने श्रीमती गांधी की कोई सेवा करने या उनसे निजी तौर पर मिलने से भी इनकार किया। . . .

—'इंडियन एक्सप्रेस' से साभार

श्री कपूर ने यह भी बताया, "१९ जनवरी को श्रीमती गांधी ने लोकसभा चुनाव की घोषणा कर दी, तो श्रीमती बाजपेयी फिर मुझे बुलाने आयीं। हवाई जहाज से मैं दिल्ली गया। श्रीमती गांधी ने मिलते ही मुझसे कहा, 'गुरुजी, मैंने संकल्प दूसरे को दे दिया है। आप राजेन्द्रीजी से संकल्प ले लें और चुनाव में जीतने के लिए अनुष्ठान करें।' इस पर मैं बिगड़ कर चला आया। २० जनवरी को राजनारायण जेल से छूट कर सीधे मेरे पास दौड़ा आया, तो मैंने पूछा, 'क्या इरादा है?' वह बोला, 'इस बार नहीं लड़ूंगा।' मैंने कहा, 'लड़ जा, अच्छा मौका है!' वह बोला, 'लड़ना होगा, तो मैं वाराणसी से लड़ूंगा।' मैंने कहा, 'गलती मत कर, जा रायबरेली से ही लड़। इस बार तेरी विजय निश्चित है!'"

गुरुजी का आदेश पाने के बाद राजनारायण ने तुरन्त घोषणा कर दी कि वे इन्दिरा गांधी के खिलाफ रायबरेली से चुनाव लड़ेंगे।

सत्ताधारियों के निकट बने रहने के लिए श्री कपूर ने आपात स्थिति के दौरान श्रीमती इन्दिरा गांधी का राज स्थायी बनाये रखने के लिए प्रदेशों की राजधानियों में मंत्र-सिद्ध 'कीलें' गाड़ी थीं। इसी अनुष्ठान के लिए तत्कालीन रेल मंत्री पण्डित कमलापति त्रिपाठी ने श्री कपूर को वातानुकूलित पास दिया था।

उन्हीं दिनों यह अफवाह फैली थी कि सतना के निकट स्वामी पूर्णानन्द द्वारा एक मुख्यमंत्री के कहने से श्रीमती इन्दिरा गांधी के विरुद्ध अनुष्ठान किया जा रहा है। इस अफवाह को बम्बई के एक साप्ताहिक ने 'ए शेकी सी० एम०' शीर्षक से एक समाचार नवम्बर, १९७५ में प्रकाशित किया। उसी के उपरान्त गुरुजी को उस अनिष्ट अनुष्ठान का प्रभाव नष्ट करने के लिए दिल्ली बुलाया गया। तभी राज्यों की राजधानियों में तंत्र-मंत्र सिद्ध 'कीलें' गाड़ने की योजना बनी थी और संजय गांधी तथा यशपाल ने स्वामीजी को 'मीसा' के अन्तर्गत गिरफ्तार करा लिया था।

कहा जाता है कि स्वामीजी से जेल में मिलने के लिए यशपाल कपूर ने एक तांत्रिक 'चन्द्रा' को भेजा था। यह चन्द्रा कौन था? यह आज भी मालूम नहीं है। लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि चन्द्रा और कोई नहीं, ये गुरुजी ही थे। साथ ही अब यह भी खुले रूप से कहा जाने लगा है कि स्वामी पूर्णानन्दजी के बारे में दिल्ली से प्रकाशित उस गन्दी कहानी के निर्माण में भी गुरुजी का ही हाथ था।

बम्बई के एक साप्ताहिक के अनुसार, 'इस धूर्त और शेखीबाज तांत्रिक के पास स्टील की बाल्टियां बनाने का एक लायसंस भी था, लेकिन फैक्टरी का कहीं कोई नामो-निशान नहीं था। कहा जाता है कि एमरजेंसी के दौरान उसने शराब की दुकान का एक लायसेंस हथिया लिया था।'

इसी साप्ताहिक के अनुसार, 'इस तांत्रिक के खिलाफ काफी शिकायतें रही हैं। इसने लखनऊ मेडिकल कालेज की एक क्रिश्चियन नर्स से दोस्ती गांठ रखी है, और उसकी सहायता से गर्भ गिराने का एक केन्द्र भी खोल रखा है। राजनारायण ने जगजीवनराम से अनुरोध किया था कि इस तांत्रिक से मिलकर उसका आशीर्वाद हासिल कर लें। मगर बहुगुणा इस तांत्रिक की धूर्तता से वाकिफ थे और उन्होंने बाबूजी को आगाह कर दिया कि वह राजनारायण के इस अनुरोध को ठुकरा दें।'

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री रामनरेश यादव ने तांत्रिक श्री कपूर के खिलाफ प्राप्त सूचनाओं के आधार पर जांच करने का वायदा किया है। देखना है कि 'भारतीय राजनीति के कर्णधारों के गुरु श्री कपूर' के खिलाफ कब जांच शुरू होती है।

— कर्नल आनन्द —

(पृष्ठ १६ से आगे)

सांप का खून था। सांप की लाश भी मिल गयी। खून आलूदा मिट्टी जांच के लिए भेजी गयी, तो विशेषज्ञों ने बताया कि खून सांप का ही था। इस तरह महिन्दरपाल सिंह उलझते-उलझते बच गये।

सच क्या है : हत्या या आत्महत्या ?

जितनी बातें अभी तक प्रकट हुई हैं, उनसे पुलिस या सी० बी० आई० यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकती कि कर्नल आनन्द ने आत्महत्या की या उनकी हत्या की गयी। पुलिस इसे निम्नलिखित कारणों से आत्महत्या मानती है :—

१. कर्नल आनन्द के शव पर ऐसे कोई चिन्ह नहीं मिले जिनसे यह पता चलता कि उनके और हत्यारों के बीच कोई संघर्ष हुआ हो। कर्नल को सीधे लिटा कर कनपटी पर गोली मारने के लिए कम-से-कम तीन आदमी होने जरूरी थे: दो आदमी शरीर को दबाये रखने के लिए और एक गोली मारने के लिए। इसमें काफी संघर्ष लाजमी था।

२. कर्नल आनन्द को २ जून की शाम ७ बजे प्यारेलाल ने जीवित देखा। प्यारेलाल को घटना-स्थल से हटाने के लिए ही कर्नल ने उसे छुट्टी कर घर जाने के लिए कह दिया था। उस समय प्यारेलाल ने उनकी बगल में अखबारों में लिपटी कोई 'चीज' देखी थी जो 'तोशीबा आनन्द' की बैटरियों के डिब्बे में रखी हुई थी। कर्नल आनन्द 'तोशीबा आनन्द' के डायरेक्टर थे। वह चीज रिवाल्वर ही होगी।

३. शव जिस स्थिति में मिला, उससे यही लगता है कि रिवाल्वर स्वयं कर्नल आनन्द ने चलाया था।

४. शरीर खुले में पाया गया, सिर सिंचाई की नाली की मेंड पर टिका था, इसका अर्थ यह है कि कर्नल आनन्द ने वहां लेटते समय सिर आराम से थोड़ी ऊंचाई पर रखने का ध्यान रखा था। अगर किसी ने हत्या की होती तो वह शव को सूखी नहर में या झाड़ियों के पीछे छिपा देता, ताकि शव पर आसानी से लोगों की निगाह न पड़े।

मगर पुलिस के इन प्रमाणों में बड़ी खामियां हैं, जिनसे यह शक होता है कि वह जानबूझ कर सचाई पर परदा डाल रही है। उदाहरण के लिए पुलिस ने पहले दिन स्वयं इसे हत्या की घटना बताया था। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का कहना है कि एक पुलिस अफसर के अनुसार कर्नल आनन्द को पहले कहीं गैरकानूनी रूप से रोक कर रखा गया था और फिर उनकी हत्या कर वहां लाकर डाल दिया गया था। कर्नल का मृत शरीर जिस स्थिति में मिला था, उससे लगता था कि उसे वहां लाकर लिटाया गया था। आत्महत्या करने के बाद न तो किसी शव का हाथ सीधा रह सकता है और न टांगें सीधी रह सकती हैं।

पुलिस अधिकारी शनिवार से मंगल तक सम्भावित हत्या की बात करते रहे। मगर मंगल के बाद वे उतने ही जोर-शोर से यह कहने लगे कि प्राप्त प्रमाणों से आत्महत्या ही सिद्ध होती है।

इस मामले में सबसे बड़ा घपला यह हुआ कि पुलिस ने शव के दाहिने हाथ का परीक्षण नहीं करवाया, जिससे इस बात का प्रमाण मिल सकता था कि कर्नल आनन्द ने स्वयं रिवाल्वर चलाया था कि नहीं।

यह भी आश्चर्य की बात है कि पुलिस ने ४ जून की रात को प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज की थी और मामला ताजीरात हिन्द की दफा ३०२ में बनाया था, लेकिन ६ जून तक उसने किसी मजिस्ट्रेट को इसकी सूचना नहीं दी थी, जब कि दफा १५७ के अनुसार उन्हें फौरन इसकी रिपोर्ट भेजनी चाहिए थी।

घटना-स्थल से कुछ दूर माली के निवास-स्थल पर जो खून के निशान पाये गये थे, उसके बारे में पहले तो डी० आई० जी० मैंदर ने कोई जानकारी होने से इनकार किया। जब पत्रकारों ने जोर दिया तो उन्होंने कहा कि किसी भेड़ के खून के हो सकते हैं। पत्रकारों ने पता किया, तो मालूम हुआ कि उस गांव में कोई भेड़ नहीं थी, तो श्री मैंदर ने कहा कि किसी बेवकूफ पुलिस अफसर ने यों ही खून के निशानों की बात कह दी होगी। ७ जून को 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के संवाददाता ने लिखा कि आज श्री मैंदर ने क्राइम ब्रांच के अफसरों को डांट पिलायी कि यह खून के निशान पाये जाने की सूचना अखबारवालों के पास कैसे पहुंची?

आत्महत्या के पक्ष में सबसे बड़ा सबूत वह कागज का पुर्जा माना जाता है, जिसमें संजय की समस्याओं के प्रति चिन्ता की बात लिखी गयी। लेकिन अगर वह पुर्जा आत्महत्या की सूचना देने के लिए लिखा गया था, तो कर्नल आनन्द ने उसमें यह क्यों नहीं लिखा कि वे आत्म-हत्या करने जा रहे थे और इसके लिए अन्य कोई दोषी या जिम्मेवार नहीं है? फिर उस पुर्जे पर कर्नल ने अपने दस्तखत क्यों नहीं किये? क्या यह सम्भव नहीं है कि कातिलों ने वह पुर्जा उनसे जबरदस्ती लिखा लिया हो?

पुलिस की इन कारगुजारियों से एक निष्पक्ष पर्यवेक्षक को सहज ही यह लग सकता है कि या तो पुलिस निकम्मी और मूर्ख है या वह जानबूझकर लीपा-पोती कर रही है।

क्या सी० आई० ए० का हाथ था ?

इस सन्दर्भ में यह प्रश्न भी उठाना असंगत नहीं है कि कर्नल आनन्द की यह 'हत्या' या 'आत्महत्या' कहीं उस बड़ी कार्यवाही का अंग तो नहीं है, जो एमरजेंसी के पर्दे के पीछे संजय गांधी और सी० आई० ए० की साठगांठ को छिपाने के लिए किया जा रहा है? संजय गांधी और सी० आई० ए० के बीच एक कड़ी कुलदीप नारंग था, जो सी० आई० ए० के दिल्ली स्थित अधिकारी फ्राइसबर्ग के बीच संजय का सम्बन्ध बनाये रखता था। मार्च में संसद के चुनाव के नतीजे आते ही फ्राइसबर्ग एकदम गायब हो गया और कुलदीप नारंग भी अमेरिका भाग गया, जहां किसी विश्वविद्यालय में उसे अध्यापक का काम दे दिया गया है। सी० आई० ए० और संजय के बीच एक और कड़ी शायद खुद कर्नल आनन्द थे। कर्नल आनन्द कैबिनेट सेक्रेटेरियट में आने से पहले सीमा सुरक्षा दल में थे और उसके सीमावर्ती जासूसी विभाग में काम करते थे। उस समय सीमावर्ती सूचनाएं पाने के लिए भारत अक्सर सी० आई० ए० की सूचनाओं पर भरोसा करता था। हो सकता है कि उस बीच कर्नल आनन्द को सी० आई० ए० के साथ साठ-गांठ करने का अवसर मिला हो। फिर कैबिनेट सेक्रेटेरियट से रिटायर होने के बाद कर्नल आनन्द भारत में ऐसी कुछ अमेरिकी कम्पनियों के भी 'प्रतिनिधि' रहे थे जो सी० आई० ए० को 'आवरण' प्रदान करती हैं। उन्हें उनका 'प्रतिनिधि' बनाने में फ्राइसबर्ग की प्रमुख भूमिका थी। इस स्थिति में यह संभव ही है कि कर्नल आनन्द को इन्दिरा गांधी के सत्तामहल की तमाम कोठरियों में फैले सी० आई० ए० के जाल की जानकारी हो और इसी कारण उनको रास्ते से हटाने या हट जाने के लिए मजबूर किया गया हो।

पुलिस इस रहस्यमय, संगीन मामले पर लीपा-पोती क्यों कर रही है, यह समझ में आनेवाली बात नहीं है। जो हो, आनन्द की हत्या या आत्महत्या का रहस्य इस तरह खुलना चाहिए कि उस पर जनता विश्वास कर सके।

कर्नल आनन्द के रिवाल्वर का रहस्य

कर्नल आनंद की सनसनीखेज मृत्यु के सम्बन्ध में सबसे अधिक रहस्यमय वह रिवाल्वर लगता है, जिसकी गोली से उनकी जान गयी थी। कर्नल आनंद की मौत हुए आज तीन महीने होने जा रहे हैं, मगर उस रिवाल्वर का पता नहीं चला है। गृह मन्त्री श्री चरण सिंह ने भी संसद में स्वीकार किया है कि कर्नल आनन्द का वह रिवाल्वर अभी तक बरामद नहीं हो सका है।

आखिर वह रिवाल्वर कहां गया ?

यह बात तो निश्चित हो चुकी है कि कर्नल आनन्द की मृत्यु ·३२ बोर के रिवाल्वर से हुई थी। इसकी पुष्टि ·३२ बोर की उस गोली से हुई, जो कर्नल आनन्द के मृत्यु-स्थल से बरामद हुई थी। गोली के घाव की जांच से भी यही बात सिद्ध हुई कि कर्नल आनन्द की मृत्यु ·३२ बोर की गोली से हुई थी। गोली का मिलना इस कांड की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, मगर उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण वह रिवाल्वर है, जिससे वह गोली निकली थी। लेकिन अभी तक रिवाल्वर नहीं मिला है। इससे केस और अधिक जटिल और रहस्यमय बन गया है।

सहज ही लोगों के दिमाग में यह सवाल उठता है कि उस रिवाल्वर का क्या हुआ?

विश्वस्त सूत्रों से हमें इस बात का पता चला है कि नवम्बर, १९७६ में कर्नल आनन्द अपनी विदेश यात्रा से जब भारत लौटे, तो उनके पास ·३२ बोर का एक नया रिवाल्वर था। इस रिवाल्वर की जानकारी कर्नल आनन्द की पत्नी और परिवार के अन्य सदस्यों को भी थी। कर्नल आनन्द को भूतपूर्व सैनिक अफसर होने के कारण केवल एक दिन में उस रिवाल्वर का लायसेंस मिल गया था। इस लायसेंस की सभी प्रविष्टियां सरकारी कागजात में मौजूद हैं।

सरकारी कागजात की जांच करने के पश्चात जब पुलिस को यह विश्वास हो गया कि कर्नल आनन्द के पास ·३२ बोर का एक रिवाल्वर था, तो उन्होंने आनन्द-परिवार के सदस्यों से पूछ-ताछ की। पुलिस के लिए उस रिवाल्वर को प्राप्त करना बहुत जरूरी था, क्योंकि उसके बिना जांच-कार्य को आगे बढ़ाना कठिन था।

जब श्रीमती आनन्द से रिवाल्वर के सम्बन्ध में पूछ-ताछ की गयी, तो उन्होंने उसके बारे में कुछ भी जानने से साफ इनकार कर दिया। उन्होंने इस बात के बारे में भी अपनी अज्ञानता प्रगट की कि कर्नल आनन्द अपनी विदेश-यात्रा से ३२ बोर का कोई रिवाल्वर लाये थे।

श्रीमती आनन्द का यह रवैया काफी आश्चर्यजनक लगता है। उनके पति विदेश से अपने साथ रिवाल्वर लाये थे, इसकी जानकारी उन्हें न हो, यह कैसे हो सकता है? मजे की बात तो यह है कि आनन्द-परिवार के अन्य सदस्यों ने भी उस रिवाल्वर के बारे में श्रीमती आनन्द की ही तरह कुछ भी जानने से इनकार किया।

कर्नल आनन्द के नौकर प्यारेलाल ने बताया था कि ड्राइवर गुरुदेव सिंह ने कोई रिवाल्वर जैसी चीज मृत्यु-स्थल से उठायी थी। इसी के आधार पर पुलिस ने गुरुदेव सिंह को गिरफ्तार किया था और उससे पूछ-ताछ की थी। मगर सारी कोशिशों के बावजूद पुलिस उससे रिवाल्वर के बारे में कोई सूचना पाने में असफल रही।

जांच के दौरान पता चला था कि १६ अप्रैल, १९७७ को कर्नल आनन्द ने दिल्ली के कैपिटल गन हाउस से .३२ बोर की दस गोलियां खरीदी थीं। मगर कर्नल आनन्द के घर से कोई भी गोली बरामद नहीं हुई। फिर वे गोलियां कहां गयीं?

हमें विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि कर्नल आनन्द का वह रिवाल्वर श्रीमती आनन्द के कब्जे में होना चाहिए। ऐसा भी सुना गया कि जांच के दौरान पुलिस भी ऐसा ही सोच रही थी। कर्नल आनन्द के भाई श्री जे० एस० आनन्द, जो इन दिनों पंजाब में डी० आई० जी० हैं, से जब पुलिस अधिकारियों ने इस बात पर विचार किया कि वह रिवाल्वर श्रीमती आनन्द के कब्जे में ही है, तो वे पुलिस अधिकारियों के साथ सहयोग करने का तैयार हो गये। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को विश्वास दिलाया कि रिवाल्वर उनकी भाभी (श्रीमती आनन्द) के पास होगा, तो वह उसे जरूर बरामद करवा देंगे।

एक दिन दिल्ली-पुलिस के कुछ वरिष्ठ अधिकारी तथा श्री जे० एस० आनन्द कर्नल आनंद के घर गये। श्री जे० एस० आनन्द पुलिस-अधिकारियों को एक कमरे में बैठाकर अपनी भाभी से मिलने अन्दर चले गये। पुलिस अधिकारी चुपचाप इन्तजार करने लगे। उस समय घर में शोक प्रकट करने बाहर के कुछ लोग भी आए हुए थे।

एक कमरे में श्री जे० एस० आनंद और श्रीमती आनन्द को खुसर-फुसर करते देखा गया। लगभग २० मिनट तक दोनों में बातचीत होती रही।

उसके बाद श्री जे० एस० आनन्द बाहर के कमरे में आये और वहां बैठे पुलिस अधिकारियों को उन्होंने हाथ का पंजा दिखाकर संकेत किया कि वे पांच मिनट और रुकें।

उन पांच मिनटों के अन्दर कर्नल आनन्द के घर पर दो रहस्यमय फोन आये, जिन्हें स्वयं श्रीमती आनन्द ने सुना।

इसके दो-तीन मिनट बाद श्री जे० एस० आनन्द फिर पुलिस अधिकारियों के पास आये, तो उनका मुंह लटका था। मतलब साफ था कि इस मामले में उनकी भाभी ने उनके साथ सहयोग नहीं किया था।

पुलिस अधिकारी निराश होकर लौट गये।

कर्नल आनन्द का वह रिवाल्वर आज तक बरामद नहीं हो सका है।

यहां सहज ही यह प्रश्न उठता है कि श्रीमती आनंद ने रिवाल्वर और उसकी गोलियों को क्यों दबा रखा है? क्या वे रिवाल्वर को रहस्यमय बनाकर कर्नल की मृत्यु को चर्चा का विषय बनाये रखना चाहती हैं, ताकि लोगों को उनके साथ सहानुभूति बनी रहे? अथवा वे हत्या का रूप देने की कोशिश कर रही हैं; ताकि उनके विरुद्ध सरकार कोई कार्यवाही न करे।

मेनका गांधी ने एक भेंट में 'करेंट' साप्ताहिक को बताया है कि उसके पिता की हत्या की गयी है। जो हो, पुलिस और सी० बी० आई० को वह रिवाल्वर जैसे भी हो प्राप्त करना ही चाहिए, ताकि आनन्द की मृत्यु की गुत्थी सुलझ सके।

यह भी सुना गया है कि कर्नल आनन्द की मृत्यु से कुछ दिन पूर्व तक यशपाल कपूर और मुहम्मद यूनुस नियमित रूप से कर्नल आनन्द के घर आते-जाते थे और श्रीमती आनन्द के साथ खुसर-फुसर किया करते थे।

ऐसा भी सुनने में आया है कि श्रीमती आनन्द भी श्रीमती इन्दिरा गांधी की कृपापात्री थीं। कर्नल आनन्द की मृत्यु के बाद श्रीमती गांधी शोक प्रकट करने कई बार आनन्द के घर गयी थीं।

इस-सब से साफ मालूम होता है कि कर्नल की मृत्यु को लेकर लगातार दो तरह की कोशिशें हो रही हैं। एक तो यह कि अगर कर्नल आनन्द ने आत्म-हत्या की है, तो उसे हत्या का रूप दिया जाए और दूसरी यह कि यदि कर्नल आनन्द की हत्या की गयी है, तो उसे आत्महत्या का रूप दिया जाए। पहली तरह की कोशिश तो स्पष्ट ही कर्नल आनन्द की पत्नी, उनके परिवार के लोग तथा सम्बन्धी कर रहे हैं और दूसरी तरह की कोशिश जो लोग कर रहे हैं, वे अभी पर्दे के पीछे हैं। पुलिस, सी० बी० आई० को जैसे भी हो इस मामले को सुलझाना ही चाहिए, वर्ना उस पर कलंक का टीका लगे बिना न रहेगा। ●

– चार्ल्स शोभराज –

(पृष्ठ ३५ से आगे)

इसके बाद चार्ल्स ने अपने तीनों साथियों के साथ ३२५ नम्बर के कमरे का बिल चुकाया और चलता बना। १२५ नम्बर के कमरे का बिल उसने नहीं चुकाया, ताकि होटलवाला यही समझ कि वह कमरा अभी वे लोग रख रहे थे।

दो दिन बाद होटल वालों ने १२५ नम्बर के कमरे में नग्नावस्था में सोलो-मन को बेहोश पड़े देखा! तत्काल उसे अस्पताल पहुंचाया गया। लेकिन २ जुलाई, १९७६ को उसकी मृत्यु हो गयी।

उपर्युक्त अपराध के पश्चात चार्ल्स ने विक्रम होटल में ६० फ्रांसीसियों के एक दल पर अपना जाल फेंका। वहां वह कैसे गिरफ्तार हुआ, इसकी कथा ऊपर आ चुकी है।

चार्ल्स शोभराज चार बार भारत आया था और कोई-न-कोई अपराध करके भाग गया था! मगर इस बार उसका आना और अपराध करना उसके लिए महंगा पड़ गया।

पूरे आठ देशों की पुलिस उसके पीछे पड़ी हुई थी। जून, १९७६ में इंटरपोल ने भारतीय पुलिस को सूचित किया था कि इस बात की संभावना है कि चार्ल्स शोभराज अपने गिरोह के साथ भारत में प्रवेश करेगा। फिर दिल्ली पुलिस को पता चला था कि चार्ल्स ने ४ जून को वाघा सीमा से भारत में प्रवेश किया था। इसपर दिल्ली-पुलिस ने चार्ल्स के चित्र देश-भर में पुलिस थानों, होटलों, क्लबों और अन्य आमोद-प्रमोद के स्थानों पर भेज दिये थे। मगर कोई लाभ न हुआ था, क्योंकि दिल्ली-पुलिस ने चार्ल्स का जो चित्र वितरित किया था, उसमें उसकी दाढ़ी नहीं थी, जब कि उस समय चार्ल्स ने दाढ़ी रख ली थी।

इस बीच दिल्ली-पुलिस ने एक अन्य विदेशी ठग पकड़ लिया था। पुलिस का ख्याल था कि वह कहीं चार्ल्स के गिरोह का न हो। उससे पूछ-ताछ की गयी, तो उसने बताया कि हालांकि वह चार्ल्स के गिरोह का नहीं है, मगर उसे इतनी जानकारी जरूर है कि इन दिनों चार्ल्स दिल्ली में ही है।

पुलिस को चार्ल्स की कार्य-पद्धति के विषय में पता था। अतः दिल्ली के होटलों पर कड़ी नजर रखी जाने लगी। आखिर वह एक होटल में ही पकड़ा गया। बाद में उसके गिरोह के अन्य सदस्य भी गिरफ्तार कर लिये गये।

मेरी अलन ईथर और बारबरा स्मिथ चार्ल्स शोभराज आदि के विरुद्ध सरकारी गवाह बन गयीं।

इस बीच मेरी अलन ईथर और बारबरा ने जेल में आत्महत्या करने का प्रयत्न किया। हुआ यह कि २० मई, १९७७ को मेरी अलन ईथर ने जेल के मेडिकल अफसर की आलमारी से 'फियोन हरबिटो' नामक गोलियों की एक शीशी चुरा ली। अलन एक प्रशिक्षित नर्स थी, वह मेडिकल अफसर की कभी-कभार सहायता किया करती थी। उसने डाक्टर का विश्वास अर्जित कर लिया था।

२० मई को अलन ने डाक्टर से यह कहकर दवाइयों की आलमारी की चाभी मांगी कि उसे कुछ रूई चाहिए। डाक्टर ने चाभी दे दी और अलन ने नींद की गोलियों की पूरी शीशी मार दी!

बाद में अलन और बारबरा ने मिलकर वे नींदवाली सारी गोलियां खा लीं। शीशी में कुल १६६ गोलियां थीं। वे जब बेहोश हो गयीं, तो उन्हें इर्विन अस्पताल पहुंचाया गया। जहां उपचार के बाद वे स्वस्थ हो गयीं।

जब उन दोनों से पूछ-ताछ की गयी, तो अलन ईथर ने बताया कि वह जेल जीवन से ऊब गयी थी। वहां के दमघोंटू वातावरण में वह अपने को अत्यन्त असहाय और हताश महसूस करने लगी थी।

बारबरा की भी यही मनोस्थिति थी। जीवन से ऊबकर ही उन दोनों ने आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया था।

चार्ल्स शोभराज कांड का एक रोचक पक्ष यह भी है कि आपात स्थिति के दौरान इस कांड को समाचार-पत्रों में रिपोर्ट करने पर सेंसर लगा दिया गया था। क्यों? ऐसा कहा जाता है कि यह सब अजय चौधरी के कारण हुआ। अखबारों में जब चार्ल्स के साथ अजय चौधरी का भी नाम उछलने लगा, तो कुछ राजनीतिक नेताओं, प्रसिद्ध उद्योगपतियों एवं उच्च सरकारी अधिकारियों को चिन्ता हुई, क्योंकि उन लोगों के सुपुत्र किसी समय अजय चौधरी के निकटतम मित्रों में थे। उन लोगों को भय था कि अजय चौधरी के नाम के साथ उनके बेटों के भी नाम न जुड़ जाएं। अतः साजिश करके 'चार्ल्स शोभराज कांड' के प्रकाशन पर सेंसर लगा दिया गया!

बहरहाल, इन दिनों दिल्ली की अदालत में चार्ल्स शोभराज और उसके साथियों पर ठगी, मादक द्रव्य, चोरी, डकैती, हत्या आदि अपराधों के लिए कई मुकद्दमे चल रहे हैं।

अलन ईथर और बारबरा स्मिथ सरकारी गवाह बन गयी हैं। निचली अदालतों में उन्होंने चार्ल्स शोभराज के कृत्यों का कच्चा चिट्ठा खोला था। मगर सेशन अदालत में मेरी अलम ईथर ने अपने पूर्व के बयानों में कुछ बदल दिया।

खैर। इस समय चार्ल्स शोभराज अपने साथियों के साथ जेल में बन्द है और मुकद्दमों के फैसले का इन्तजार कर रहा है। इस हालत में भी कुछ दिन हुए उसने उच्च न्यायालय में आवेदन दिलाया कि उसे जेल में अपने साथ एक रेकार्ड प्लेयर रखने की अनुमति दी जाए, क्योंकि वह पाश्चात्य संगीत का प्रेमी है और जेल में वह संगीत के बिना बेहद सूनापन महसूस करता है। साथ ही उसने एक टाइप-राइटर की भी मांग की थी, ताकि वह अपने बयान में अपने वकीलों की मदद के लिए नोट्स तैयार कर सके।

ऐसा व्यक्तित्व है चार्ल्स शोभराज का! ●

संस्थापक : स्वर्गीय श्री क्षितीन्द्रमोहन मित्र। सम्पादक : आलोक मित्र। श्री वीरेन्द्रनाथ घोष द्वारा मित्र प्रकाशन प्रा० लि० के लिए प्रकाशित तथा माया प्रेस प्रा० लि०, इलाहाबाद-३ में मुद्रित।

Rs. 2.00 Per Copy : Ma[illegible]har Kahani[illegible]an : September, 1977 : Regd. No. A[illegible]

